जैशर



अध्याय 1

1 और परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया।
2 और परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि से बनाया, और उसके नथुनों में जीवन की सांस फूँकी, और मनुष्य बोलने वाला एक जीवित प्राणी बन गया।
3 और यहोवा ने कहा, मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक सहायक बनाऊंगा।
4 और यहोवा ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और वह सो गया, और उसने उसकी एक पसली निकाल ली, और उस पर मांस बनाया, और उसे आकार देकर आदम के पास ले आया, और आदम अपनी नींद से जागा, और देखो, एक औरत उसके सामने खड़ी थी।
5 और उसने कहा, यह मेरी हड्डियों में से एक हड्डी है, और इसका नाम औरत होगा, क्योंकि यह आदमी से ली गई है; और आदम ने उसका नाम हव्वा रखा, क्योंकि वह सब जीवित प्राणियों की माँ थी।
6 और परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया और जिस दिन उसने उन्हें बनाया, उस दिन उनके नाम आदम और हव्वा रखे; और यहोवा परमेश्वर ने कहा, फलो-फूलो, बढ़ो और धरती को भर दो।
7 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी को लेकर, उन्हें अदन के बाग में रख दिया, कि वे उसकी देखभाल करें और उसकी देखभाल करें; और उसने उन्हें आज्ञा दी, कि तुम बाग के हर पेड़ का फल खा सकते हो, लेकिन अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल मत खाना, क्योंकि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम ज़रूर मर जाओगे।
8 और जब परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया और आज्ञा दी, तो वह उनके पास से चला गया, और आदम और उसकी पत्नी उस आज्ञा के अनुसार जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी, बाग में रहने लगे।
9 और वह साँप, जिसे परमेश्वर ने उनके साथ धरती पर बनाया था, उनके पास आया ताकि उन्हें परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए उकसाए जो उसने उन्हें दी थी।
10 और साँप ने औरत को ज्ञान के पेड़ का फल खाने के लिए बहकाया और मना लिया, और औरत ने साँप की बात मानकर परमेश्वर की बात तोड़ दी, और अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल तोड़कर खा लिया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।
11 और आदम और उसकी पत्नी ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया जो उसने उन्हें दी थी, और परमेश्वर यह जानता था, और उसका क्रोध उन पर भड़क उठा, और उसने उन्हें शाप दिया।
12 और उस दिन यहोवा परमेश्वर ने उन्हें अदन के बाग से निकाल दिया, ताकि वे उस ज़मीन पर खेती करें जहाँ से उन्हें निकाला गया था, और वे जाकर अदन के बाग के पूरब में रहने लगे; और आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को जाना और उसने दो बेटे और तीन बेटियाँ पैदा कीं।
13 और उसने बड़े बेटे का नाम कैन रखा, यह कहकर कि मुझे प्रभु से एक पुरुष मिला है; और दूसरे बेटे का नाम हाबिल रखा, क्योंकि उसने कहा, हम व्यर्थ ही धरती पर आए हैं, और व्यर्थ ही इससे उठाए जाएंगे।
14 और लड़के बड़े हो गए और उनके पिता ने उन्हें ज़मीन पर ज़मीन दी; और कैन ज़मीन का किसान था, और हाबिल भेड़ों का चरवाहा था।
15 और कुछ साल बाद, वे यहोवा के लिए एक लगभग भेंट लाए, और कैन ने ज़मीन की उपज में से, और हाबिल ने अपने झुंड के पहिलौठों में से उसकी चर्बी में से भेंट लाई, और परमेश्वर ने हाबिल और उसकी भेंट की ओर ध्यान दिया, और यहोवा की ओर से स्वर्ग से आग उतरी और उसे भस्म कर दिया।
16 और कैन और उसकी भेंट की तरफ यहोवा ने ध्यान नहीं दिया, और न ही उसने उसकी तरफ़ ध्यान दिया, क्योंकि उसने यहोवा के सामने ज़मीन की घटिया फसल चढ़ाई थी, और इस वजह से कैन को अपने भाई हाबिल से जलन हुई, और उसने उसे मार डालने का बहाना ढूँढ़ा।
17 कुछ समय बाद, कैन और उसका भाई हाबिल एक दिन अपना काम करने के लिए खेत में गए; और वे दोनों खेत में थे, कैन अपनी ज़मीन जोत रहा था और हाबिल अपने झुंड को चरा रहा था; और झुंड उस ज़मीन के पास से गुज़रा जिसे कैन ने ज़मीन में जोता था, और इस वजह से कैन को बहुत दुख हुआ।
18 तब कैन गुस्से में अपने भाई हाबिल के पास गया और उससे कहा, "मेरे और तुम्हारे बीच क्या है कि तुम मेरे देश में रहने और अपने झुंड को चराने के लिए लाए हो?"
19 तब हाबिल ने अपने भाई कैन से कहा, "मेरे और तुम्हारे बीच क्या है कि तुम मेरे झुंड का मांस खाओगे और उनके ऊन से कपड़े पहनोगे?"
20 इसलिए अब, मेरी भेड़ों का ऊन उतार दे, जिससे तूने खुद को ढक रखा है, और मुझे उनके फल और मांस का बदला दे जो तूने खाया है, और जब तू यह कर लेगा, तो मैं तेरे कहे अनुसार तेरे देश से चला जाऊंगा?
21 तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, "अगर मैं आज तुझे मार डालूं, तो तेरा खून मुझसे कौन मांगेगा?"
22 और हाबिल ने कैन को जवाब दिया, "ज़रूर, जिस परमेश्वर ने हमें धरती पर बनाया है, वही मेरे मुकद्दमे का बदला लेगा, और अगर तू मुझे मार डाले तो वह तुझसे मेरे खून का बदला लेगा, क्योंकि यहोवा ही जज और मध्यस्थ है, और वही इंसान को उसकी बुराई के हिसाब से, और बुरे इंसान को उसकी बुराई के हिसाब से सज़ा देगा जो वह धरती पर करेगा।"
23 और अब, अगर तू मुझे यहीं मार डाले, तो ज़रूर भगवान तेरे राज़ जानता है, और जो बुराई तूने आज मेरे साथ करने का वादा किया है, उसके लिए तुझे सज़ा देगा।
24 जब कैन ने अपने भाई हाबिल की बातें सुनीं, तो कैन का गुस्सा अपने भाई हाबिल पर भड़क उठा, क्योंकि उसने यह बात कही थी।
25 और कैन जल्दी से उठा, और अपने हल चलाने वाले औज़ार का लोहे का हिस्सा लिया, जिससे उसने अचानक अपने भाई को मारा और उसे मार डाला, और कैन ने अपने भाई हाबिल का खून ज़मीन पर बहा दिया, और हाबिल का खून झुंड के सामने ज़मीन पर बहने लगा।
26 इसके बाद कैन को अपने भाई को मारने का पछतावा हुआ, और वह बहुत दुखी हुआ, और उसके लिए रोया, और उसे बहुत गुस्सा आया।
27 तब कैन उठा और खेत में एक गड्ढा खोदा, जिसमें उसने अपने भाई की लाश को रखा, और उस पर धूल डाल दी।

28 और यहोवा को पता चल गया कि कैन ने अपने भाई के साथ क्या किया है, और यहोवा ने कैन को दर्शन देकर पूछा, तेरा भाई हाबिल जो तेरे साथ था, वह कहां है?
29 तब कैन ने धोखा देकर कहा, “मुझे नहीं मालूम, क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?” तब प्रभु ने उससे कहा, “तूने क्या किया है? तेरे भाई के खून की आवाज़ ज़मीन से मुझे पुकार रही है जहाँ तूने उसे मारा है।”
30 क्योंकि तूने अपने भाई को मार डाला है और मेरे सामने धोखा किया है, और अपने मन में यह सोचा है कि मैंने तुझे नहीं देखा, और न तेरे सब कामों को जानता हूँ।
31 लेकिन तुमने यह काम किया और अपने भाई को बिना वजह और इसलिए मार डाला क्योंकि उसने तुमसे सही बात कही थी, और अब, इसलिए उस ज़मीन की तरफ से तुम शापित हो जिसने तुम्हारे भाई का खून तुम्हारे हाथ से पीने के लिए अपना मुँह खोला, और जिसमें तुमने उसे दफ़नाया।
32 और जब तुम उस पर खेती करोगे, तो वह तुम्हें पहले जैसी ताकत नहीं देगी, क्योंकि ज़मीन कांटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तुम अपनी मौत के दिन तक धरती पर घूमते-फिरते रहोगे।
33 उस समय कैन यहोवा के सामने से, उस जगह से जहाँ वह था, निकल गया, और वह और उसका सारा सामान अदन के पूरब की तरफ़ के देश में घूमता और भटकता रहा।
34 और उन दिनों में कैन अपनी पत्नी के पास गया, और वह गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम हनोक रखा, यह कहकर, कि उस समय प्रभु ने उसे धरती पर आराम और शांति देना शुरू किया।
35 और उस समय कैन ने भी एक शहर बनाना शुरू किया: और उसने शहर बनाया और उसने शहर का नाम अपने बेटे के नाम पर हनोक रखा; क्योंकि उन दिनों में प्रभु ने उसे धरती पर आराम दिया था, और वह शुरू की तरह इधर-उधर नहीं भटकता था।
36 और हनोक से इराद पैदा हुआ, और इराद से मखूयाएल पैदा हुआ और मखूयाएल से मतूशाएल पैदा हुआ।

अध्याय दो

1 और जब आदम धरती पर था, तो उसकी ज़िंदगी के एक सौ तीसवें साल में उसने अपनी पत्नी हव्वा को फिर से जाना, और वह प्रेग्नेंट हुई और उसके जैसा और उसकी छवि में एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम सेठ रखा, यह कहकर, कि क्योंकि परमेश्वर ने हाबिल की जगह मेरे लिए एक और वंश ठहराया है, क्योंकि कैन ने उसे मार डाला था।
2 जब सेठ एक सौ पांच साल का हुआ, तो उसके एक बेटा हुआ; और सेठ ने अपने बेटे का नाम एनोश रखा, यह कहकर, कि उस समय में मनुष्य बढ़ने लगे, और परमेश्वर के विरुद्ध पाप और विद्रोह करके अपने मन और आत्मा को दुख देने लगे।
3 और एनोश के दिनों में इंसानों ने परमेश्वर के खिलाफ बगावत और पाप करना जारी रखा, जिससे इंसानों के खिलाफ यहोवा का गुस्सा और बढ़ गया।
4 और इंसान दूसरे देवताओं की पूजा करने लगे, और उस प्रभु को भूल गए जिसने उन्हें धरती पर बनाया था: और उन दिनों में इंसान पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर की मूर्तियाँ बनाने लगे, और वे उनके आगे झुककर उनकी पूजा करने लगे।
5 और हर आदमी ने अपना देवता बनाया और वे उनके आगे झुके, और एनोश और उसके बच्चों के सारे दिनों में इंसानों ने यहोवा को छोड़ दिया; और उनके कामों और धरती पर किए गए घिनौने कामों की वजह से यहोवा का गुस्सा भड़क उठा।
6 और यहोवा ने गीहोन नदी का पानी उन पर डाल दिया, और उन्हें खत्म कर दिया, और धरती का एक तिहाई हिस्सा खत्म कर दिया, और इसके बावजूद, इंसान अपने बुरे कामों से नहीं मुड़े, और उनके हाथ यहोवा की नज़र में बुरा करने के लिए बढ़ते रहे।
7 और उन दिनों धरती पर न तो बोया जाता था और न ही काटा जाता था; और इंसानों के लिए कुछ खाना नहीं था और उन दिनों अकाल बहुत ज़्यादा था।
8 और जो बीज उन्होंने उन दिनों ज़मीन में बोए थे, वे कांटे, ऊँटकटारे और झाड़ियाँ बन गए; क्योंकि आदम के दिनों से ही धरती के बारे में यह ऐलान था, कि परमेश्वर ने धरती को श्राप दिया, क्योंकि आदम ने प्रभु के सामने पाप किया था।
9 और जब इंसान परमेश्वर के खिलाफ बगावत करते रहे और पाप करते रहे, और अपने रास्ते बिगाड़ते रहे, तो धरती भी बिगड़ गई।
10 जब एनोश नब्बे वर्ष का हुआ, तब उसने केनान को जन्म दिया।
11 और केनान बड़ा हुआ और वह चालीस साल का था, और वह बुद्धिमान हो गया और उसे हर तरह की समझ और हुनर आ गया, और उसने सभी इंसानों पर राज किया, और उसने इंसानों को बुद्धि और ज्ञान की ओर बढ़ाया; क्योंकि केनान बहुत बुद्धिमान आदमी था और उसे हर तरह की समझ थी, और अपनी बुद्धि से उसने आत्माओं और शैतानों पर राज किया;
12 और केनान अपनी बुद्धि से जानता था कि परमेश्वर धरती पर पाप करने वाले इंसानों को खत्म कर देगा, और प्रभु आने वाले दिनों में उन पर बाढ़ लाएगा।
13 और उन दिनों केनान ने पत्थर की पट्टियों पर लिखा कि आने वाले समय में क्या-क्या होने वाला है, और उन्हें अपने खजाने में रख लिया।
14 और केनान ने पूरी धरती पर राज किया, और उसने कुछ इंसानों को परमेश्वर की सेवा में लगा दिया।
15 जब केनान सत्तर साल का हुआ, तो उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुईं।
16 और केनान के बच्चों के नाम ये हैं; जेठे का नाम महल्लेल, दूसरे का एनान, तीसरे का मेरेद, और उनकी बहनों का नाम आदा और ज़िल्ला था; ये केनान के पाँच बच्चे थे जो उससे पैदा हुए थे।
17 और मतूशाएल के बेटे लेमेक की शादी केनान से हुई, और उसने उसकी दोनों बेटियों से शादी कर ली, और आदा गर्भवती हुई और लेमेक से एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम याबाल रखा।
18 और वह फिर से गर्भवती हुई और एक बेटे को जन्म दिया, और उसका नाम जुबाल रखा; और उसकी बहन ज़िल्ला उन दिनों बांझ थी, और उसके कोई बच्चा नहीं था।
19 क्योंकि उन दिनों में इंसान परमेश्वर के खिलाफ़ गुनाह करने लगे, और उन आज्ञाओं को तोड़ने लगे जो उसने आदम को दी थीं, कि वह धरती पर फले-फूले और बढ़े।

20 और कुछ मर्दों ने अपनी पत्नियों को ऐसा ड्रिंक पिलाया जिससे वे बांझ हो जाएं, ताकि उनका फिगर बना रहे और उनकी खूबसूरती फीकी न पड़े।
21 और जब आदमियों ने अपनी कुछ पत्नियों को शराब पिलाई, तो ज़िल्ला ने भी उनके साथ शराब पी।
22 और बच्चे पैदा करने वाली औरतें अपने पतियों की नज़र में विधवा के तौर पर घिनौनी लगती थीं, जब तक उनके पति ज़िंदा थे, क्योंकि वे सिर्फ़ बांझ औरतों से ही जुड़ी रहती थीं।
23 और दिनों और सालों के आखिर में, जब ज़िल्ला बूढ़ी हो गई, तो यहोवा ने उसकी कोख खोली।
24 और वह प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम तूबल कैन रखा, यह कहकर कि, मैं मर गई थी, फिर मैंने इसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर से पाया है।
25 और वह फिर से प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटी हुई, और उसने उसका नाम नामा रखा, क्योंकि उसने कहा, 'मेरे मरने के बाद मुझे खुशी और आनंद मिला है।'
26 लेमेक बूढ़ा हो गया था और उसकी आँखें धुंधली हो गई थीं, इसलिए वह देख नहीं सकता था। उसका बेटा टुबल कैन उसे ले जा रहा था। एक दिन लेमेक खेत में गया और उसका बेटा टुबल कैन उसके साथ था। जब वे खेत में चल रहे थे, तो आदम का बेटा कैन उनकी तरफ बढ़ा। लेमेक बहुत बूढ़ा था और उसे ज़्यादा दिखाई नहीं देता था। उसका बेटा टुबल कैन बहुत छोटा था।
27 तब तूबल कैन ने अपने पिता से कहा कि अपना धनुष खींचो, और उसने तीरों से कैन को मारा, जो अभी दूर था, और उसे मार डाला, क्योंकि वह उन्हें एक जानवर जैसा लग रहा था।
28 और तीर कैन के शरीर में घुस गए, हालाँकि वह उनसे दूर था, और वह ज़मीन पर गिरकर मर गया।
29 और यहोवा ने कैन को उसकी बुराई का बदला दिया, जो उसने अपने भाई हाबिल के साथ की थी, और यहोवा के कहे हुए वचन के अनुसार।
30 और जब कैन मर गया, तो लेमेक और तूबल उस जानवर को देखने गए जिसे उन्होंने मारा था, और उन्होंने देखा कि उनका दादा कैन ज़मीन पर मरा पड़ा था।
31 और लेमेक को यह काम करके बहुत दुख हुआ, और उसने ताली बजाकर अपने बेटे को मारा, जिससे उसकी मौत हो गई।
32 और लेमेक की पत्नियों ने सुना कि लेमेक ने क्या किया है, और वे उसे मार डालना चाहती थीं।
33 और उस दिन से लेमेक की पत्नियाँ उससे नफ़रत करने लगीं, क्योंकि उसने कैन और तूबल को मार डाला था, और लेमेक की पत्नियाँ उससे अलग हो गईं, और उन दिनों में उसकी बात नहीं मानती थीं।
34 तब लेमेक अपनी पत्नियों के पास गया, और उसने उनसे इस विषय में उसकी बात सुनने के लिए कहा।
35 और उसने अपनी पत्नियों आदा और ज़िल्ला से कहा, "लेमेक की पत्नियों, मेरी बात सुनो, मेरी बातों पर ध्यान दो, क्योंकि अब तुमने सोचा है और कहा है कि मैंने अपने ज़ख्मों से एक आदमी को और अपने घावों से एक बच्चे को मार डाला, क्योंकि उन्होंने कोई जुल्म नहीं किया था, लेकिन अब तुम यह ज़रूर जानती हो कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, और उम्र की वजह से मेरी आँखें भारी हो गई हैं, और मैंने यह काम अनजाने में किया है।"
36 और लेमेक की पत्नियों ने इस मामले में उसकी बात मानी, और वे अपने पिता आदम की सलाह पर उसके पास लौट आईं, लेकिन उस समय से उनके कोई बच्चे नहीं हुए, क्योंकि वे जानती थीं कि उन दिनों परमेश्वर का गुस्सा इंसानों पर बढ़ रहा था, ताकि उनके बुरे कामों की वजह से उन्हें बाढ़ के पानी से खत्म कर दे।
37 जब केनान का बेटा महल्लेल 65 साल का हुआ, तो उससे येरेद पैदा हुआ; और जब येरेद 62 साल का हुआ, तो उससे हनोक पैदा हुआ।

अध्याय 3

1 जब हनोक पैंसठ साल का हुआ, तो उसने मतूशेलह को जन्म दिया; और मतूशेलह को जन्म देने के बाद हनोक परमेश्वर के साथ चलता रहा, और उसने प्रभु की सेवा की, और मनुष्यों के बुरे मार्गों से घृणा की।
2 और हनोक की आत्मा प्रभु की शिक्षा, ज्ञान और समझ में डूबी रही; और वह बुद्धिमानी से मनुष्यों से दूर रहा, और बहुत दिनों तक उनसे छिपा रहा।
3 और कई सालों के बाद, जब वह प्रभु की सेवा कर रहा था और अपने घर में उसके सामने प्रार्थना कर रहा था, तो प्रभु के एक दूत ने स्वर्ग से उसे पुकारा, और उसने कहा, मैं यहाँ हूँ।
4 और उसने कहा, उठो, अपने घर से और उस जगह से जहाँ तुम छिपते हो, बाहर जाओ, और इंसानों को दिखाओ, ताकि तुम उन्हें वह रास्ता सिखा सको जिस पर उन्हें चलना चाहिए और वह काम जो उन्हें परमेश्वर के मार्गों में जाने के लिए पूरा करना होगा।
5 और हनोक यहोवा की बात मानकर उठा, और अपने घर से, अपनी जगह से और उस कमरे से जिसमें वह छिपा हुआ था, बाहर निकला; और वह इंसानों के पास गया और उन्हें यहोवा के रास्ते सिखाए, और उसी समय इंसानों को इकट्ठा करके उन्हें यहोवा की शिक्षा से परिचित कराया।
6 और उसने हुक्म दिया कि जहाँ-जहाँ इंसान रहते थे, वहाँ-वहाँ ऐलान किया जाए, कि वह आदमी कहाँ है जो यहोवा के रास्ते और अच्छे काम जानना चाहता है? वह हनोक के पास आए।
7 और तब सब मनुष्य उसके पास इकट्ठे हुए, क्योंकि जो कोई यह काम चाहता था, वह हनोक के पास जाता था, और हनोक यहोवा के वचन के अनुसार मनुष्यों पर राज्य करता था, और वे उसके पास आकर उसके आगे झुकते थे, और उसका वचन सुनते थे।
8 और परमेश्वर की आत्मा हनोक पर थी, और उसने अपने सभी आदमियों को परमेश्वर की बुद्धि और उसके मार्ग सिखाए, और मनुष्य हनोक के सारे दिनों में यहोवा की सेवा करते रहे, और वे उसकी बुद्धि सुनने आए।
9 और इंसानों के सभी राजा, पहले और आखिरी, अपने हाकिमों और जजों के साथ, जब उन्होंने हनोक की समझदारी के बारे में सुना, तो उसके पास आए। उन्होंने उसे प्रणाम किया, और हनोक से यह भी कहा कि वह उन पर राज करे, जिसके लिए वह मान गया।
10 और उन्होंने कुल मिलाकर एक सौ तीस राजाओं और राजकुमारों को इकट्ठा किया, और उन्होंने हनोक को अपना राजा बनाया और वे सब उसके अधिकार और हुक्म के नीचे थे।

11 और हनोक ने उन्हें बुद्धि, ज्ञान और प्रभु के मार्ग सिखाए; और उसने उनके बीच शांति स्थापित की, और हनोक के जीवन के दौरान पूरी पृथ्वी पर शांति रही।
12 और हनोक ने दो सौ तैंतालीस साल तक इंसानों पर राज किया, और उसने अपनी सारी प्रजा के साथ न्याय और नेकी की, और उन्हें प्रभु के मार्गों पर चलाया।
13 और ये हनोक, मतूशेलह, एलीशा और एलीमेलेक के वंश हैं, ये तीन बेटे थे; और उनकी बहनें मेल्का और नहमाह थीं, और मतूशेलह सत्तासी साल का था जब उससे लेमेक पैदा हुआ।
14 और जब आदम की मौत हुई, तो लेमेक की उम्र छप्पन साल थी; मौत के समय वह नौ सौ तीस साल का था, और उसके दोनों बेटों ने, हनोक और उसके बेटे मतूशेलह के साथ मिलकर, उसे बड़ी धूमधाम से, राजाओं की तरह दफ़नाया, उस गुफा में जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे बताया था।
15 और उस जगह आदम के कारण सब इंसानों ने बहुत दुख मनाया और रोया; इसलिए यह आज तक इंसानों के बीच एक रिवाज बन गया है।
16 और आदम इसलिए मर गया क्योंकि उसने ज्ञान के पेड़ का फल खाया था; वह और उसके बाद उसके बच्चे, जैसा कि यहोवा परमेश्वर ने कहा था।
17 और यह आदम की मौत के साल की बात है, जो हनोक के राज का 243वां साल था, उस समय हनोक ने इंसानों से खुद को अलग करने और पहले की तरह खुद को छिपाकर रखने का फैसला किया ताकि वह प्रभु की सेवा कर सके।
18 और हनोक ने वैसा ही किया, लेकिन उनसे पूरी तरह छिपा नहीं रहा, बल्कि तीन दिन तक इंसानों से दूर रहा और फिर एक दिन के लिए उनके पास गया।
19 और तीन दिन तक जब वह अपने कमरे में था, उसने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की और उसकी तारीफ़ की, और जिस दिन वह गया और अपनी प्रजा के सामने आया, उसने उन्हें यहोवा के रास्ते सिखाए, और जो कुछ उन्होंने उससे यहोवा के बारे में पूछा, उसने उन्हें बताया।
20 और उसने कई सालों तक ऐसा ही किया, और उसके बाद वह छह दिनों तक छिपा रहा, और सात में से एक दिन अपने लोगों को दिखाई दिया; और उसके बाद हर महीने में एक बार, और फिर हर साल एक बार, जब तक कि सभी राजाओं, राजकुमारों और इंसानों ने उसे ढूंढा, और फिर से हनोक का चेहरा देखने और उसकी बात सुनने की इच्छा नहीं की; लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि सभी इंसान हनोक से बहुत डरते थे, और उसके चेहरे पर भगवान जैसा डर होने के कारण वे उसके पास जाने से डरते थे; इसलिए कोई भी आदमी उसे देख नहीं सकता था, इस डर से कि उसे सज़ा मिल सकती है और वह मर सकता है।
21 और सभी राजाओं और राजकुमारों ने इंसानों को इकट्ठा करने और हनोक के पास जाने का फैसला किया, यह सोचकर कि जब वह उनके बीच आएगा तो वे सब उससे बात कर सकेंगे, और उन्होंने ऐसा ही किया।
22 और वह दिन आया जब हनोक बाहर गया और वे सब इकट्ठा होकर उसके पास आए, और हनोक ने उनसे प्रभु की बातें कहीं और उसने उन्हें बुद्धि और ज्ञान सिखाया, और वे उसके सामने झुके और कहने लगे, राजा जीवित रहे! राजा जीवित रहे!
23 और कुछ समय बाद, जब राजा, राजकुमार और इंसान हनोक से बात कर रहे थे, और हनोक उन्हें परमेश्वर के मार्ग सिखा रहा था, तो देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वर्ग से हनोक को पुकारा, और उसे स्वर्ग में ले जाना चाहा ताकि वह वहाँ परमेश्वर के बेटों पर राज करे, जैसे उसने धरती पर इंसानों पर राज किया था।
24 उस समय जब हनोक ने यह सुना, तो वह गया और धरती के सभी रहने वालों को इकट्ठा किया, और उन्हें बुद्धि और ज्ञान सिखाया और उन्हें भगवान की शिक्षाएँ दीं, और उनसे कहा, "मुझे स्वर्ग पर चढ़ने के लिए कहा गया है, इसलिए मैं नहीं जानता कि मैं किस दिन जाऊँगा।"
25 और अब मैं तुम्हें बुद्धि और ज्ञान सिखाऊंगा और तुम्हें छोड़ने से पहले तुम्हें निर्देश दूंगा कि धरती पर कैसे काम करना है जिससे तुम जी सको; और उसने वैसा ही किया।
26 और उसने उन्हें बुद्धि और ज्ञान सिखाया, और उन्हें निर्देश दिए, और उन्हें डांटा, और उनके सामने धरती पर करने के लिए नियम और नियम रखे, और उनके बीच शांति स्थापित की, और उन्हें हमेशा की ज़िंदगी सिखाई, और कुछ समय तक उनके साथ रहा और उन्हें ये सब बातें सिखाईं।
27 और उस समय मनुष्य के पुत्र हनोक के साथ थे, और हनोक उनसे बात कर रहा था, और उन्होंने अपनी आँखें उठाईं और एक बड़े घोड़े जैसा कुछ स्वर्ग से उतरा, और घोड़ा हवा में चलने लगा;
28 और उन्होंने हनोक को बताया कि उन्होंने क्या देखा था, और हनोक ने उनसे कहा, "मेरे ही कारण यह घोड़ा धरती पर उतरा है; वह समय आ गया है जब मुझे तुम्हारे पास से जाना होगा और मैं तुम्हें फिर कभी दिखाई नहीं दूँगा।"
29 और उसी समय घोड़ा उतरकर हनोक के सामने खड़ा हो गया, और हनोक के साथ जो भी आदमी थे, उन्होंने उसे देखा।
30 तब हनोक ने फिर से ऐलान करने का हुक्म दिया, "वह आदमी कहाँ है जो अपने भगवान के रास्ते जानना चाहता है, वह आज ही हनोक के पास आए, इससे पहले कि वह हमसे छीन लिया जाए।"
31 और उस दिन सब लोग इकट्ठा होकर हनोक के पास आए; और धरती के सब राजा अपने हाकिमों और सलाहकारों के साथ उस दिन उसके साथ रहे; और हनोक ने तब लोगों को बुद्धि और ज्ञान सिखाया, और उन्हें भगवान की शिक्षा दी; और उसने उनसे कहा कि वे अपनी पूरी ज़िंदगी भगवान की सेवा करें और उसके मार्गों पर चलें, और वह उनके बीच शांति बनाए रखता रहा।
32 इसके बाद वह उठा और घोड़े पर सवार होकर चला गया; और सब लोग, लगभग आठ लाख आदमी, उसके पीछे चले; और वे उसके साथ एक दिन का सफर तय करके चले।
33 दूसरे दिन उसने उनसे कहा, "अपने-अपने तंबुओं को लौट जाओ, क्यों जाते हो? कहीं मर न जाओ।" तब उनमें से कुछ उसके पास से चले गए, और जो बचे रहे, वे उसके साथ छह दिन के सफ़र पर चले गए। और हनोक ने उनसे हर दिन कहा, "अपने-अपने तंबुओं को लौट जाओ, कहीं मर न जाओ।" लेकिन वे लौटने को तैयार नहीं हुए, और उसके साथ चले गए।
34 और छठे दिन कुछ आदमी वहीं रह गए और उससे लिपट गए, और उससे कहा, "हम तुम्हारे साथ उस जगह चलेंगे जहाँ तुम जा रहे हो; प्रभु के जीवन की शपथ, केवल मृत्यु ही हमें अलग करेगी।"

35 और उन्होंने उसके साथ चलने के लिए इतना ज़ोर दिया कि उसने उनसे बात करना बंद कर दिया; और वे उसके पीछे चले गए और वापस नहीं लौटे;
36 और जब राजा लौटे तो उन्होंने हनोक के साथ गए बाकी आदमियों की गिनती करवाई; और सातवें दिन हनोक आग के घोड़ों और रथों के साथ एक बवंडर में स्वर्ग में चढ़ गया।
37 और आठवें दिन हनोक के साथ रहने वाले सभी राजाओं ने उन आदमियों को वापस बुलाने के लिए भेजा जो हनोक के साथ उस जगह पर थे जहाँ से वह स्वर्ग में गया था।
38 और वे सभी राजा उस जगह गए और उन्होंने देखा कि वहाँ ज़मीन बर्फ़ से भरी हुई है, और बर्फ़ पर बर्फ़ के बड़े-बड़े पत्थर थे, और एक ने दूसरे से कहा, आओ, हम बर्फ़ तोड़कर देखें, शायद हनोक के साथ जो आदमी बचे थे वे मर गए हों, और अब बर्फ़ के पत्थरों के नीचे हों, और उन्होंने उसे ढूँढ़ा लेकिन वह नहीं मिला, क्योंकि वह स्वर्ग में चला गया था।

अध्याय 4

1 और हनोक धरती पर कुल तीन सौ पैंसठ साल तक जीवित रहा।
2 और जब हनोक स्वर्ग में चला गया, तो पृथ्वी के सभी राजा उठे और उसके बेटे मतूशेलह को लेकर उसका अभिषेक किया, और उसे उसके पिता की जगह पर अपने ऊपर राज करने के लिए नियुक्त किया।
3 और मतूशेलह ने परमेश्वर की नज़र में ईमानदारी से काम किया, जैसा उसके पिता हनोक ने उसे सिखाया था, और उसने भी अपनी पूरी ज़िंदगी इंसानों को समझदारी, ज्ञान और परमेश्वर का डर सिखाया, और वह अच्छे रास्ते से न तो दाएँ मुड़ा और न बाएँ।
4 लेकिन मतूशेलह के आखिरी दिनों में, इंसान यहोवा से दूर हो गए, उन्होंने धरती को बिगाड़ दिया, उन्होंने एक-दूसरे को लूटा और लूटा, और उन्होंने परमेश्वर के खिलाफ बगावत की और पाप किया, और उन्होंने अपने रास्ते बिगाड़ लिए, और मतूशेलह की बात नहीं सुनी, बल्कि उसके खिलाफ बगावत की।
5 और यहोवा उन पर बहुत ज़्यादा गुस्सा हुआ, और यहोवा उन दिनों बीज को नष्ट करता रहा, जिससे धरती पर न तो बोया जा सका और न ही काटा जा सका।
6 क्योंकि जब उन्होंने अपने पेट भरने के लिए ज़मीन में बीज बोए, तो देखो, कांटे और ऊँटकटारे उग आए, जिन्हें उन्होंने नहीं बोया था।
7 और फिर भी इंसान अपने बुरे कामों से नहीं मुड़े, और उनके हाथ परमेश्वर की नज़र में बुराई करने के लिए फैले रहे, और उन्होंने अपने बुरे कामों से प्रभु को गुस्सा दिलाया, और प्रभु बहुत गुस्सा हुए, और उन्हें पछतावा हुआ कि उन्होंने इंसान को बनाया था।
8 और उसने उन्हें खत्म करने और मिटाने का सोचा और उसने वैसा ही किया।
9 उन्हीं दिनों जब मतूशेलह का बेटा लेमेक एक सौ साठ साल का था, आदम का बेटा शेत मर गया।
10 और शेत कुल नौ सौ बारह साल तक ज़िंदा रहा, फिर वह मर गया।
11 जब लेमेक एक सौ अस्सी साल का था, तब उसने अपने चाचा हनोक के बेटे एलीशा की बेटी अश्मुआ से शादी की, और वह प्रेग्नेंट हो गई।
12 उस समय इंसानों ने ज़मीन में बीज बोए, और थोड़ा सा खाना पैदा हुआ, फिर भी इंसान अपने बुरे कामों से नहीं मुड़े, और उन्होंने गुनाह किया और परमेश्वर के खिलाफ बगावत की।
13 और लेमेक की पत्नी गर्भवती हुई और उसी समय, यानी नए साल के शुरू होने पर, उसके एक बेटे को जन्म दिया।
14 और मतूशेलह ने उसका नाम नूह रखा, यह कहकर कि उसके दिनों में धरती आराम में थी और खराब होने से बची हुई थी, और उसके पिता लेमेक ने उसका नाम मनखेम रखा, यह कहकर कि यह हमें उस धरती पर हमारे कामों और मुश्किल मेहनत में आराम देगा, जिसे परमेश्वर ने श्राप दिया था।
15 और बच्चा बड़ा हो गया और उसका दूध छूट गया, और वह अपने पिता मतूशेलह के रास्ते पर चला, और परमेश्वर के साथ सच्चा और सीधा रहा।
16 और उन दिनों में जब धरती पर उनके बेटे-बेटियाँ बहुत बढ़ गए, तो सभी इंसान यहोवा के रास्ते से भटक गए। वे एक-दूसरे को अपने बुरे काम सिखाते रहे और यहोवा के खिलाफ पाप करते रहे।
17 और हर आदमी ने अपने लिए एक देवता बना लिया, और हर आदमी ने अपने पड़ोसी और अपने रिश्तेदारों को लूटा और लूटा, और उन्होंने धरती को बिगाड़ दिया, और धरती हिंसा से भर गई।
18 और उनके जज और शासक इंसानों की बेटियों के पास गए और उनकी पसंद के हिसाब से उनके पतियों से ज़बरदस्ती उनकी पत्नियाँ ले लीं, और उन दिनों इंसानों के बेटों ने धरती के मवेशियों, मैदान के जानवरों और हवा के पक्षियों में से कुछ ले लिया, और एक तरह के जानवरों को दूसरी तरह के जानवरों के साथ मिलाना सिखाया, ताकि भगवान को गुस्सा दिला सकें; और भगवान ने पूरी धरती को देखा और वह खराब हो गई थी, क्योंकि धरती पर सभी इंसानों और सभी जानवरों ने अपने तौर-तरीके खराब कर लिए थे।
19 और प्रभु ने कहा, मैं उस इंसान को जिसे मैंने बनाया है, धरती से मिटा दूँगा, हाँ, इंसान से लेकर हवा के पक्षियों तक, और मवेशियों और मैदान के जानवरों को भी मिटा दूँगा क्योंकि मुझे पछतावा है कि मैंने उन्हें बनाया।
20 और जो लोग प्रभु के मार्गों पर चलते थे, वे उन दिनों मर गए, इससे पहले कि प्रभु ने इंसानों पर वह बुराई लाई जिसके बारे में उन्होंने कहा था, क्योंकि यह प्रभु की ओर से था, ताकि वे उस बुराई को न देखें जिसके बारे में प्रभु ने इंसानों के बारे में कहा था।
21 और नूह पर प्रभु की कृपा हुई, और प्रभु ने उसे और उसके बच्चों को चुना ताकि उनसे सारी धरती पर वंश बढ़ाए।

अध्याय 5

1 नूह की उम्र के चौरासी साल में शेत का बेटा हनोक मर गया। मरने के समय वह नौ सौ पांच साल का था।
2 और नूह की ज़िंदगी के एक सौ उनहत्तर साल में एनोश का बेटा केनान मर गया। और केनान की कुल उम्र नौ सौ दस साल की हुई, फिर वह मर गया।

3 और नूह की उम्र के दो सौ चौंतीसवें साल में केनान का बेटा महल्लेल मर गया, और महल्लेल की उम्र आठ सौ पंचानबे साल की हुई, फिर वह मर गया।
4 और उन्हीं दिनों, यानी नूह की उम्र के तीन सौ छत्तीसवें साल में महल्लेल का बेटा येरेद मर गया; और येरेद की कुल उम्र नौ सौ बासठ साल थी, और वह मर गया।
5 और जो लोग प्रभु के पीछे चले, वे उन दिनों मर गए, इससे पहले कि उन्होंने वह बुराई देखी जिसे परमेश्वर ने धरती पर करने का ऐलान किया था।
6 और कई साल बीतने के बाद, नूह की ज़िंदगी के चार सौ अस्सीवें साल में, जब वे सभी लोग जो यहोवा के पीछे चले थे, इंसानों में से मर गए थे, और सिर्फ़ मतूशेलह बचा था, तो परमेश्वर ने नूह और मतूशेलह से कहा,
7 तुम लोगों से कहो, और ऐलान करो, कि यहोवा यह कहता है, अपने बुरे रास्तों से लौटो और अपने काम छोड़ दो, और यहोवा उस बुराई के लिए पछताएगा जो उसने तुम्हारे साथ करने की बात कही थी, ताकि वह न हो।
8 क्योंकि यहोवा यों कहता है, देखो, मैं तुम्हें एक सौ बीस साल का समय देता हूँ; अगर तुम मेरी ओर फिरो और अपने बुरे रास्ते छोड़ दो, तो मैं भी उस बुराई से दूर हो जाऊँगा जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था, और वह रहेगी ही नहीं, यहोवा यही कहता है।
9 और नूह और मतूशेलह ने यहोवा की सारी बातें इंसानों को बताईं, हर दिन वे उनसे लगातार बातें करते रहे।
10 लेकिन इंसानों ने उनकी बात नहीं मानी, न ही उनकी बातों पर कान लगाया, और वे अड़ियल बन गए।
11 और प्रभु ने उन्हें एक सौ बीस साल का समय दिया, और कहा, अगर वे लौट आएं, तो परमेश्वर बुराई से पछताएगा, ताकि पृथ्वी को नष्ट न करे।
12 लेमेक के बेटे नूह ने उन दिनों बच्चे पैदा करने के लिए शादी करने से मना कर दिया, क्योंकि उसने कहा, "अब तो भगवान धरती को खत्म कर देंगे, तो फिर मैं बच्चे क्यों पैदा करूँ?"
13 और नूह एक नेक आदमी था, वह अपनी पीढ़ी में एकदम सही था, और भगवान ने उसे धरती पर अपने वंश से वंश बढ़ाने के लिए चुना।
14 और प्रभु ने नूह से कहा, "एक पत्नी ले लो और बच्चे पैदा करो, क्योंकि मैंने तुम्हें इस पीढ़ी में अपने सामने नेक देखा है।"
15 और तू धरती के बीच में अपने वंश और अपने बच्चों को पालेगा; और नूह ने जाकर एक पत्नी ले ली, और उसने हनोक की बेटी नामा को चुना, और वह पाँच सौ अस्सी साल की थी।
16 जब नूह ने नामा से शादी की, तब वह चार सौ अट्ठानवे साल का था।
17 और नामाह प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम येपेत रखा, यह कहकर कि परमेश्वर ने मुझे धरती पर बढ़ाया है; और वह फिर प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम शेम रखा, यह कहकर कि परमेश्वर ने मुझे धरती के बीच वंश बढ़ाने के लिए एक बचा हुआ हिस्सा बनाया है।
18 जब नामा ने शेम को जन्म दिया, तब नूह पाँच सौ दो साल का था। लड़के बड़े हुए और यहोवा के मार्गों पर चले, और वे सब कुछ जो मतूशेलह और उनके पिता नूह ने उन्हें सिखाया था।
19 और नूह का पिता लेमेक उन्हीं दिनों मर गया; फिर भी वह अपने पिता के रास्तों पर पूरे दिल से नहीं चला, और नूह की ज़िंदगी के एक सौ पंचानवे साल में उसकी मौत हो गई।
20 और लेमेक की कुल आयु सात सौ सत्तर वर्ष की हुई, तब वह मर गया।
21 और जितने भी इंसान यहोवा को जानते थे, वे उस साल मर गए, इससे पहले कि यहोवा उन पर बुरा लाए; क्योंकि यहोवा चाहता था कि वे मर जाएं, ताकि वे उस बुराई को न देखें जो परमेश्वर उनके भाइयों और रिश्तेदारों पर लाएगा, जैसा कि उसने कहा था।
22 उस समय, प्रभु ने नूह और मतूशेलह से कहा, "खड़े हो जाओ और इंसानों को वे सारी बातें बताओ जो मैंने उन दिनों में तुमसे कही थीं, शायद वे अपने बुरे कामों से फिर जाएं, और मैं उस बुराई के लिए पछताऊंगा और उसे दोबारा नहीं लाऊंगा।"
23 तब नूह और मतूशेलह ने खड़े होकर, मनुष्यों के कानों में वह सब कहा जो परमेश्वर ने उनके विषय में कहा था।
24 लेकिन इंसानों ने उनकी बात नहीं मानी, और न ही उनकी सारी बातों पर कान लगाया।
25 इसके बाद प्रभु ने नूह से कहा, "सब प्राणियों का अंत मेरे सामने आ गया है, उनके बुरे कामों के कारण, और देखो, मैं पृथ्वी को नष्ट कर दूंगा।"
26 और तुम गोफर की लकड़ी ले लो, और एक जगह जाओ, और एक बड़ा जहाज़ बनाओ, और उसे उस जगह पर रख दो।
27 और तुम इसे इस तरह बनाना; इसकी लंबाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ होगी।
28 और तू अपने लिए एक दरवाज़ा बनाना, जो किनारे से खुला हो, और ऊपर से एक हाथ तक उसे खत्म करना, और उसे अंदर और बाहर से राल से ढक देना।
29 और देखो, मैं धरती पर बाढ़ लाऊंगा, और सब जीव-जंतु खत्म हो जाएंगे, और धरती पर जो कुछ है, वह सब आसमान के नीचे से खत्म हो जाएगा।
30 और तुम और तुम्हारा घराना जाकर सब तरह के जीवों में से दो-दो जोड़े, नर और मादा, इकट्ठा करके उन्हें जहाज़ में ले आना, ताकि उनसे धरती पर बच्चे पैदा हों।
31 और सब जानवरों का खाया हुआ सारा खाना अपने लिए इकट्ठा कर लो, ताकि तुम्हारे और उनके लिए खाना हो।
32 और तू अपने बेटों के लिए मर्दों की बेटियों में से तीन लड़कियाँ चुन लेना, और वे तेरे बेटों की पत्नियाँ होंगी।
33 तब नूह उठा, और उसने उस जगह पर जहाज़ बनाया जहाँ परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी, और नूह ने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी।
34 जब नूह पाँच सौ पंचानवे साल का था, तो उसने जहाज़ बनाना शुरू किया, और उसने पाँच साल में जहाज़ बना लिया, जैसा कि यहोवा ने हुक्म दिया था।
35 तब नूह ने मतूशेलह के बेटे एलियाकीम की तीन बेटियों को अपने बेटों के लिए पत्नियों के रूप में लिया, जैसा कि यहोवा ने नूह को आज्ञा दी थी।
36 और उसी समय हनोक का बेटा मतूशेलह मर गया, उसकी मौत के समय वह नौ सौ साठ साल का था।

अध्याय 6

1 उस समय, मतूशेलह की मौत के बाद, प्रभु ने नूह से कहा, "तू अपने परिवार के साथ जहाज़ में जा; देख, मैं धरती के सभी जानवरों, मैदान के जानवरों और हवा के पक्षियों को तेरे पास इकट्ठा करूँगा, और वे सब आकर जहाज़ को घेर लेंगे।"
2 और तू जाकर जहाज़ के दरवाज़ों के पास बैठ जाएगा, और सारे जानवर, जानवर और पक्षी इकट्ठा होकर तेरे सामने खड़े हो जाएंगे, और जो कोई तेरे सामने आकर बैठे, उसे तू अपने बेटों के हाथों में सौंप देगा, जो उन्हें जहाज़ के पास ले जाएंगे, और जो कोई तेरे सामने खड़ा होगा, उसे तू छोड़ देगा।
3 और अगले दिन यहोवा ने ऐसा ही किया, और जानवर, पशु और पक्षी बहुत सारे झुंड में आए और जहाज़ को घेर लिया।
4 तब नूह गया और जहाज़ के दरवाज़े के पास बैठ गया। जो भी जानवर उसके सामने झुके थे, उन्हें वह जहाज़ में ले आया और जो भी उसके सामने खड़े थे, उन्हें वह धरती पर छोड़ गया।
5 और एक शेरनी अपने दो बच्चों, एक नर और एक मादा के साथ आई, और तीनों नूह के सामने झुक गए, और दोनों बच्चों ने शेरनी पर हमला किया, और उसे अपनी जगह से भगा दिया, और वह चली गई, और वे अपनी जगहों पर लौट आए, और नूह के सामने ज़मीन पर झुक गए।
6 और शेरनी भागकर शेरों की जगह खड़ी हो गई।
7 यह देखकर नूह को बहुत हैरानी हुई, और वह उठा और उन दोनों बच्चों को लेकर जहाज़ में ले गया।
8 और नूह ने धरती के सभी जीव-जंतुओं को जहाज़ में डाल दिया, यहाँ तक कि कोई भी ऐसा नहीं बचा जिसे नूह ने जहाज़ में डाला हो।
9 नूह के पास दो-दो जोड़े जहाज़ में गए, लेकिन उसने साफ़ जानवरों और साफ़ पक्षियों में से सात जोड़े जोड़े, जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी।
10 और सभी जानवर, जानवर और पक्षी अभी भी वहीं थे, और उन्होंने हर जगह जहाज़ को घेर लिया था, और सात दिन बाद तक बारिश नहीं हुई थी।
11 और उस दिन, प्रभु ने पूरी धरती को हिला दिया, और सूरज अंधेरा हो गया, और दुनिया की नींव हिल गई, और पूरी धरती ज़ोर से हिल गई, और बिजली चमकने लगी, और बादल गरजने लगे, और धरती के सारे झरने टूट गए, जैसा कि पहले रहने वालों को पता नहीं था; और परमेश्वर ने यह बड़ा काम किया, ताकि इंसानों को डरा सके, ताकि धरती पर फिर कोई बुराई न रहे।
12 फिर भी इंसान अपने बुरे कामों से नहीं लौटे, और उन्होंने उस समय यहोवा का गुस्सा और बढ़ा दिया, और अपना दिल भी इन सब बातों पर नहीं लगाया।
13 और सात दिन के आखिर में, यानी नूह की ज़िंदगी के छह सौवें साल में, धरती पर बाढ़ का पानी आया।
14 और गहरे समुद्र के सारे झरने फूट पड़े, और स्वर्ग की खिड़कियाँ खुल गईं, और धरती पर चालीस दिन और चालीस रात बारिश होती रही।
15 और नूह और उसका परिवार, और उसके साथ के सभी जीव-जंतु बाढ़ के पानी के कारण जहाज़ में आ गए, और प्रभु ने उसे अंदर बंद कर दिया।
16 और धरती पर बचे हुए सभी इंसान बारिश की वजह से बुरी तरह थक गए, क्योंकि पानी धरती पर तेज़ी से आ रहा था, और जानवर और जानवर अब भी जहाज़ को घेरे हुए थे।
17 और लगभग सात लाख पुरुष और स्त्रियाँ इकट्ठा होकर नूह के पास जहाज़ के पास आए।
18 तब उन्होंने नूह को पुकारा, और कहा, हमारे लिए जहाज खोल दे, कि हम तेरे पास जहाज में आ जाएं, और हम क्यों मरें?
19 और नूह ने जहाज़ से ऊँची आवाज़ में उन्हें जवाब दिया, "क्या तुम सबने प्रभु के खिलाफ़ बगावत नहीं की, और कहा कि वह है ही नहीं? और इसलिए प्रभु ने तुम पर यह मुसीबत ला दी, ताकि तुम्हें खत्म कर दे और धरती से मिटा दे।"
20 क्या यह वही बात नहीं है जिसके बारे में मैंने तुमसे एक सौ बीस साल पहले कहा था, और तुमने प्रभु की बात नहीं मानी, और अब तुम धरती पर रहना चाहते हो?
21 और उन्होंने नूह से कहा, "हम यहोवा के पास लौटने को तैयार हैं; बस हमारे लिए रास्ता खोल दो ताकि हम जी सकें और मरें नहीं।"
22 नूह ने उनसे कहा, "देखो, अब जब तुम अपनी तकलीफ़ देख रहे हो, तो तुम यहोवा के पास लौटना चाहते हो; तो तुम इन एक सौ बीस सालों में क्यों नहीं लौटे, जो यहोवा ने तुम्हें तय समय के तौर पर दिए थे?"
23 लेकिन अब तुम अपनी तकलीफ़ों की वजह से आकर मुझे यह बताओ, तो भी यहोवा तुम्हारी नहीं सुनेगा, न ही आज तुम्हारी बात सुनेगा, ताकि तुम अपनी ख्वाहिशों में कामयाब न हो सको।
24 और लोग बारिश के डर से जहाज़ तोड़ने के लिए पास आए, क्योंकि वे बारिश को अपने ऊपर बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।
25 और प्रभु ने उन सभी जानवरों और पशुओं को भेजा जो जहाज़ के चारों ओर खड़े थे। और जानवरों ने उन पर काबू पा लिया और उन्हें उस जगह से भगा दिया, और हर आदमी अपने रास्ते चला गया और वे फिर से धरती पर बिखर गए।
26 और बारिश धरती पर लगातार गिरती रही, और चालीस दिन और चालीस रात तक होती रही, और धरती पर पानी बहुत बढ़ गया; और धरती पर या पानी में जो भी था, सब मर गया, चाहे इंसान हों, जानवर हों, रेंगने वाले जीव हों या हवा के पक्षी हों, और सिर्फ़ नूह और वे लोग जो उसके साथ जहाज़ में थे, बचे रहे।
27 और पानी बढ़ गया और धरती पर बहुत बढ़ गया, और उन्होंने जहाज़ को ऊपर उठा लिया और वह धरती से ऊपर उठ गया।
28 और जहाज़ पानी के ऊपर तैरता रहा, और वह पानी पर उछलता रहा, जिससे उसमें मौजूद सभी जीव-जंतु कड़ाही में रखे हुए खिचड़ी की तरह इधर-उधर हो गए।
29 और जहाज़ में रहने वाले सभी जीव-जंतुओं को बहुत चिंता होने लगी, और जहाज़ टूटने ही वाला था।
30 और जहाज़ में जितने भी जीव थे, वे डर गए, और शेर दहाड़ने लगे, और बैल रंभाने लगे, और भेड़िये चिल्लाने लगे, और जहाज़ में हर जीव अपनी-अपनी भाषा में बोलने और दुख जताने लगा, जिससे उनकी आवाज़ें बहुत दूर तक पहुँच गईं, और नूह और उसके बेटे अपनी परेशानियों में रोए और विलाप करने लगे; वे बहुत डर गए थे कि वे मौत के दरवाज़े पर पहुँच गए हैं।
31 और नूह ने इस वजह से प्रभु से प्रार्थना की और उससे कहा, हे प्रभु हमारी मदद कर, क्योंकि इस मुसीबत को सहने की हममें ताकत नहीं है जिसने हमें घेर लिया है, क्योंकि पानी की लहरों ने हमें घेर लिया है, खतरनाक बाढ़ों ने हमें डरा दिया है, मौत के जाल हमारे सामने आ गए हैं; हे प्रभु, हमें जवाब दे, अपना चेहरा

हमारी तरफ चमका और हम पर मेहरबान हो, हमें छुड़ा और हमें छुटकारा दिला।
32 और यहोवा ने नूह की बात सुनी, और यहोवा ने उसे याद रखा।
33 और धरती पर एक हवा चली, और पानी शांत हो गया और जहाज़ आराम से बैठ गया।
34 और गहरे पानी के झरने और आसमान की खिड़कियाँ बंद हो गईं, और आसमान से बारिश रुक गई।
35 उन दिनों पानी कम हो गया, और जहाज़ अरारात के पहाड़ों पर आ टिका।
36 और तब नूह ने जहाज़ की खिड़कियाँ खोल दीं, और उस समय भी नूह ने प्रभु को पुकारा और कहा, हे प्रभु, जिसने धरती और आसमान और उसमें जो कुछ भी है, उसे बनाया है, हमारी आत्माओं को इस कैद से, और उस जेल से बाहर निकालो जिसमें तुमने हमें रखा है, क्योंकि मैं आहें भरते-भरते बहुत थक गया हूँ।
37 और यहोवा ने नूह की बात सुनकर उससे कहा, "जब पूरा साल पूरा हो जाएगा, तब तुम निकल जाना।"
38 और जब साल का दूसरा महीना शुरू हुआ, जब नूह को जहाज़ में रहते हुए पूरा एक साल हो गया, तो धरती से पानी सूख गया, और नूह ने जहाज़ का ढक्कन हटा दिया।
39 उस समय, दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन, धरती सूखी थी, लेकिन नूह और उसके बेटे, और जो लोग उसके साथ थे, वे तब तक जहाज़ से बाहर नहीं निकले जब तक प्रभु ने उन्हें नहीं बताया।
40 और वह दिन आया जब यहोवा ने उन्हें बाहर जाने को कहा, और वे सब जहाज़ से बाहर निकल गए।
41 और वे सब अपने-अपने रास्ते और अपनी जगह पर लौट आए, और नूह और उसके बेटे उस देश में रहने लगे जिसके बारे में परमेश्वर ने उन्हें बताया था, और उन्होंने अपने सारे जीवन यहोवा की सेवा की, और यहोवा ने नूह और उसके बेटों को जहाज़ से बाहर निकलने पर आशीर्वाद दिया।
42 और उसने उनसे कहा, "फूलो-फलो और सारी धरती को भर दो; ताकतवर बनो और धरती पर खूब बढ़ो और उसमें बढ़ो।"

अध्याय 7

1 नूह के बेटों के नाम ये हैं: येपेत, हाम और शेम; और उनके बच्चे बाढ़ के बाद पैदा हुए, क्योंकि उन्होंने बाढ़ से पहले ही पत्नियाँ कर ली थीं।
2 येपेत के बेटे ये थे: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास, ये सात बेटे थे।
3 और गोमेर के बेटे थे अस्कीनाज़, रेपात और तेगरमा।
4 और मागोग के बेटे एलीकनाफ और लूबाल थे।
5 और मादै के बच्चे आखोन, ज़ीलो, हज़ोनी और लूत थे।
6 और यावान के बेटे एलीशा, तर्शीश, चित्तिम और दुदोनी थे।
7 और तूबल के बेटे अरीपी, केसेद और तारी थे।
8 और मेशेक के बेटे थे देदोन, ज़ारोन और शेबाशनी।
9 और तीरास के बेटे बेनीब, गेरा, लुपिरियन और गिलाक थे; ये येपेत के बेटे थे, उनके कुलों के अनुसार, और उन दिनों उनकी गिनती लगभग चार सौ साठ आदमी थी।
10 और हाम के बेटे ये थे: कूश, मित्ज़रैम, फुट और कनान, ये चार बेटे थे; और कूश के बेटे सबा, हवीला, सबता, रामा और सतेचा थे, और रामा के बेटे शेबा और ददान थे।
11 और मित्ज़रैम के बेटे थे लूद, अनोम, पत्रोस, चासलोत और चप्तोर।
12 और फूत के बेटे गेबुल, हादान, बेना और आदान थे।
13 और कनान के बेटे थे: सीदोन, हेथ, अमोरी, गेरगाशी, हिवी, अर्की, सेनी, अरोदी, जिमोदी और चामोती।
14 ये हाम के बेटे थे, उनके घरानों के हिसाब से, और उन दिनों उनकी गिनती लगभग सात सौ तीस आदमी थी।
15 और शेम के बेटे ये थे: एलाम, अशूर, अर्पक्षद, लूद और आराम, पाँच बेटे; और एलाम के बेटे शूशन, माकुल और हारमोन थे।
16 और अशर के बेटे मिरूस और मोकील थे, और अर्पक्षद के बेटे शेलक, अनार और अश्कोल थे।
17 और लूद के बेटे पेथोर और बिज़ायोन थे, और अराम के बेटे ऊज़, चूल, गेदर और मश थे।
18 ये शेम के बेटे थे, उनके घरानों के हिसाब से; और उन दिनों उनकी गिनती लगभग तीन सौ आदमी थी।
19 शेम की वंशावली ये है; शेम से अर्पक्षद पैदा हुआ, अर्पक्षद से शेलक पैदा हुआ, और शेलक से एबर पैदा हुआ, और एबर से दो बच्चे हुए, एक का नाम पेलेग था, क्योंकि उसके दिनों में इंसान बँट गए थे, और बाद के दिनों में धरती बँट गई।
20 और दूसरे का नाम योक्तान था, जिसका मतलब था कि उसके दिनों में इंसानों की ज़िंदगी कम होती गई।
21 योक्तान के बेटे ये हैं: अल्मोदाद, शेलाफ़, हज़रमोवेत, येराक, हदूरोम, ओज़ेल, दिक्ला, ओबाल, अबीमाएल, शेबा, ओपीर, हवीला और योबाब; ये सब योक्तान के बेटे हैं।
22 और उसके भाई पेलेग से येन पैदा हुआ, और येन से सरूग पैदा हुआ, और सरूग से नाहोर पैदा हुआ, और नाहोर से तेराह पैदा हुआ, और तेराह अड़तीस साल का था, और उससे हारान और नाहोर पैदा हुए।
23 और नूह के बेटे हाम के बेटे कूश ने उन दिनों अपने बुढ़ापे में एक पत्नी से शादी की, और उसने एक बेटे को जन्म दिया, और उन्होंने उसका नाम निम्रोद रखा, यह कहकर कि उस समय इंसानों के बेटे फिर से बगावत करने लगे और परमेश्वर के खिलाफ़ गुनाह करने लगे, और बच्चा बड़ा हो गया, और उसके पिता ने उसे बहुत प्यार किया, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का बेटा था।
24 और चमड़े के जो कपड़े परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए बनाए थे, जब वे बाग से बाहर निकले थे, वे कूश को दिए गए।
25 क्योंकि आदम और उसकी पत्नी की मौत के बाद, ये कपड़े येरेद के बेटे हनोक को दिए गए, और जब हनोक को परमेश्वर के पास ले जाया गया, तो उसने उन्हें अपने बेटे मतूशेलह को दे दिया।
26 और मतूशेलह की मौत पर, नूह उन्हें लेकर जहाज़ के पास गया, और वे तब तक उसके साथ रहे जब तक वह जहाज़ से बाहर नहीं निकल गया।
27 और जब वे बाहर जा रहे थे, तो हाम ने अपने पिता नूह से वे कपड़े चुरा लिए, और उन्हें अपने भाइयों से छिपा दिया।

28 और जब हाम ने अपने जेठे बेटे कूश को जन्म दिया, तो उसने उसे कपड़े चुपके से दे दिए, और वे बहुत दिनों तक कूश के पास रहे।
29 और कूश ने भी उन्हें अपने बेटों और भाइयों से छिपाकर रखा, और जब कूश से निम्रोद पैदा हुआ, तो उसने उससे प्यार करके उसे वे कपड़े दिए, और निम्रोद बड़ा हुआ, और जब वह बीस साल का हुआ तो उसने वे कपड़े पहन लिए।
30 और जब निम्रोद ने कपड़े पहने तो वह ताकतवर हो गया, और परमेश्वर ने उसे ताकत और शक्ति दी, और वह धरती पर एक ताकतवर शिकारी बन गया, हाँ, वह मैदान में एक ताकतवर शिकारी बन गया, और उसने जानवरों का शिकार किया और वेदियाँ बनाईं, और उसने उन पर यहोवा के सामने जानवरों की बलि दी।
31 और निम्रोद ने खुद को मज़बूत किया, और वह अपने भाइयों के बीच से उठ खड़ा हुआ, और उसने अपने भाइयों के आस-पास के सभी दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
32 और प्रभु ने उसके भाइयों के सभी दुश्मनों को उसके हाथों में सौंप दिया, और परमेश्वर ने समय-समय पर उसकी लड़ाइयों में उसे सफलता दिलाई, और वह धरती पर राज करने लगा।
33 इसलिए उन दिनों यह बात आम हो गई थी कि जब कोई आदमी उन लोगों को लड़ाई के लिए तैयार करता था जिन्हें उसने लड़ाई के लिए तैयार किया था, तो वह उनसे कहता था, जैसे भगवान ने निम्रोद के साथ किया था, जो धरती पर एक ताकतवर शिकारी था, और जो अपने भाइयों के खिलाफ़ लड़ाइयों में कामयाब हुआ था, कि उसने उन्हें उनके दुश्मनों के हाथों से बचाया, वैसे ही भगवान आज हमें ताकत दे और बचाए।
34 जब निम्रोद चालीस साल का था, उस समय उसके भाइयों और येपेत के बच्चों के बीच लड़ाई हुई, जिससे वे अपने दुश्मनों के कब्ज़े में आ गए।
35 और उस समय निम्रोद निकला, और उसने कूश के सभी बेटों और उनके परिवारों को इकट्ठा किया, जो लगभग चार सौ साठ आदमी थे, और उसने अपने कुछ दोस्तों और जान-पहचान वालों में से भी लगभग अस्सी आदमी किराए पर लिए, और उन्हें उनका किराया दिया, और वह उनके साथ लड़ाई में गया, और जब वह रास्ते में था, तो निम्रोद ने अपने साथ जाने वाले लोगों का दिल मज़बूत किया।
36 और उसने उनसे कहा, "डरो मत, घबराओ मत, क्योंकि हमारे सभी दुश्मन हमारे हाथ में सौंप दिए जाएँगे, और तुम उनके साथ जैसा चाहो वैसा कर सकते हो।"
37 और जो आदमी गए थे, उनकी संख्या लगभग पाँच सौ थी, और उन्होंने अपने दुश्मनों से लड़ाई की, और उन्हें खत्म कर दिया, और उन्हें अपने काबू में कर लिया, और निम्रोद ने उनकी जगह पर पहरेदार तैनात कर दिए।
38 और उसने उनके कुछ बच्चों को गिरवी रख लिया, और वे सब निम्रोद और उसके भाइयों के दास हो गए, और निम्रोद और उसके साथ के सब लोग घर लौट गए।
39 और जब निम्रोद अपने दुश्मनों को हराकर खुशी-खुशी लड़ाई से लौटा, तो उसके सभी भाई और जो लोग उसे पहले से जानते थे, वे सब उसे अपना राजा बनाने के लिए इकट्ठा हुए, और उन्होंने उसके सिर पर शाही ताज रखा।
40 और उसने अपनी प्रजा और लोगों पर हाकिमों, जजों और शासकों को नियुक्त किया, जैसा कि राजाओं के बीच रिवाज है।
41 और उसने नाहोर के बेटे तेराह को अपनी सेना का प्रधान बनाया, और उसे बड़ाई दी और अपने सब हाकिमों से ऊपर रखा।
42 और जब वह अपने मन की इच्छा के अनुसार राज कर रहा था, तो उसने अपने आस-पास के सभी दुश्मनों को हराकर, अपने सलाहकारों से अपने महल के लिए एक शहर बनाने की सलाह ली, और उन्होंने वैसा ही किया।
43 और उन्हें पूरब की तरफ एक बड़ी घाटी मिली, और उन्होंने उसके लिए एक बड़ा और फैला हुआ शहर बनाया, और निम्रोद ने उस शहर का नाम शिनार रखा, क्योंकि यहोवा ने उसके दुश्मनों को बुरी तरह हिलाकर उन्हें खत्म कर दिया था।
44 और निम्रोद शिनार में रहता था, और उसने सुरक्षित रूप से राज किया, और उसने अपने दुश्मनों से लड़ाई की और उन्हें हरा दिया, और वह अपनी सभी लड़ाइयों में कामयाब रहा, और उसका राज्य बहुत बड़ा हो गया।
45 और सभी देशों और भाषाओं के लोगों ने उसकी शोहरत सुनी, और वे उसके पास इकट्ठा हुए, और उन्होंने धरती पर सिर झुकाया, और वे उसे भेंट लाए, और वह उनका मालिक और राजा बन गया, और वे सब उसके साथ शिनार शहर में रहने लगे, और निम्रोद ने धरती पर नूह के सभी बेटों पर राज किया, और वे सब उसकी ताकत और सलाह के नीचे थे।
46 और सारी धरती पर एक ही भाषा और एक ही बात थी, लेकिन निम्रोद यहोवा के रास्ते पर नहीं चला, और वह बाढ़ के दिनों से लेकर उन दिनों तक अपने से पहले के सभी लोगों से ज़्यादा बुरा था।
47 और उसने लकड़ी और पत्थर के देवता बनाए, और उनके आगे झुक गया, और उसने यहोवा के खिलाफ बगावत की, और अपनी सारी प्रजा और धरती के लोगों को अपने बुरे रास्ते सिखाए; और उसका बेटा मरदोन अपने पिता से भी ज़्यादा बुरा था।
48 और जो कोई भी निम्रोद के बेटे मरदोन के कामों के बारे में सुनता था, वह उसके बारे में कहता था, बुरे लोगों से ही बुराई निकलती है; इसलिए यह पूरी धरती पर एक कहावत बन गई, कि बुरे लोगों से ही बुराई निकलती है, और यह उस समय से लेकर आज तक लोगों की बातों में आम है।
49 और नाहोर का बेटा तेराह, जो निम्रोद की सेना का राजकुमार था, उन दिनों राजा और उसकी प्रजा की नज़र में बहुत बड़ा था, और राजा और राजकुमार उससे प्यार करते थे, और उन्होंने उसे बहुत ऊँचा पद दिया।
50 और तेराह ने एक पत्नी से विवाह किया, जिसका नाम अमथेलो था, जो कोरनेबो की बेटी थी; और तेराह की पत्नी गर्भवती हुई और उन्हीं दिनों उसके एक पुत्र को जन्म दिया।
51 जब तेराह पैदा हुआ, तब वह सत्तर साल का था। तेराह ने अपने बेटे का नाम अब्राम रखा, क्योंकि राजा ने उसे उन दिनों पाला-पोसा था, और अपने साथ के सभी हाकिमों से ज़्यादा बड़ा किया था।

अध्याय 8

1 और जिस रात अब्राम पैदा हुआ, उसी रात तेराह के सभी सेवक, और निम्रोद के सभी बुद्धिमान, और उसके जादूगर आए और तेराह के घर में खाए-पीए, और उस रात उन्होंने उसके साथ खुशी मनाई।

2 और जब सभी ज्ञानी और जादूगर तेरह के घर से बाहर निकले, तो उन्होंने उस रात आसमान की तरफ़ अपनी नज़रें उठाकर तारों को देखा, और उन्होंने देखा, और देखो, एक बहुत बड़ा तारा पूरब से आया और आसमान में दौड़ गया, और उसने आसमान के चारों तरफ़ से चार तारों को निगल लिया।
3 और राजा के सभी बुद्धिमान लोग और उसके जादूगर यह देखकर हैरान रह गए, और ऋषियों ने यह बात समझ ली, और वे इसका मतलब भी जान गए।
4 और उन्होंने एक-दूसरे से कहा, यह तो बस उस बच्चे की निशानी है जो आज रात तेराह के यहाँ पैदा हुआ है, जो बड़ा होकर फलेगा-फूलेगा, और बढ़ेगा, और सारी धरती पर कब्ज़ा करेगा, वह और उसके बच्चे हमेशा के लिए, और वह और उसका वंश बड़े-बड़े राजाओं को मार डालेगा, और उनकी ज़मीनों का वारिस होगा।
5 और उस रात वे ज्ञानी और जादूगर घर चले गए, और सुबह ये सभी ज्ञानी और जादूगर जल्दी उठे, और एक तय घर में इकट्ठा हुए।
6 और वे आपस में कहने लगे, देखो, जो नज़ारा हमने कल रात देखा, वह राजा से छिपा हुआ है, उसे बताया नहीं गया।
7 और अगर यह बात बाद के दिनों में राजा को पता चल गई, तो वह हमसे कहेगा, 'तुमने यह बात मुझसे क्यों छिपाई, नहीं तो हम सब मर जाएँगे; इसलिए, अब हम जाकर राजा को वह नज़ारा बताएँ जो हमने देखा था, और उसका मतलब भी बताएँ, और तब हम बेदाग रहेंगे।'
8 और उन्होंने ऐसा ही किया, और सब लोग राजा के पास गए, और भूमि पर गिरकर उसे दण्डवत् किया, और कहने लगे, राजा जीवित रहे, राजा जीवित रहे।
9 हमने सुना कि तेरी सेना के राजकुमार नाहोर के बेटे तेराह के यहाँ एक बेटा हुआ है, और हम कल रात उसके घर गए, और उस रात हमने उसके साथ खाया-पिया और खुशियाँ मनाईं।
10 और जब तेरे सेवक तेराह के घर से अपने-अपने घर रात बिताने के लिए निकले, तो हमने अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाईं, और हमने पूरब से एक बड़ा तारा आते देखा, और वही तारा बहुत तेज़ी से दौड़ा, और आसमान के चारों तरफ से चार बड़े तारों को निगल गया।
11 और तेरे सेवक जो नज़ारा हमने देखा, उसे देखकर हैरान रह गए, और बहुत डर गए, और हमने उस नज़ारे के आधार पर अपना फ़ैसला किया, और अपनी समझ से उसका सही मतलब समझा, कि यह बात तेराह के पैदा होने वाले बच्चे पर लागू होती है, जो बड़ा होकर बहुत बढ़ेगा, और ताकतवर बनेगा, और धरती के सभी राजाओं को मार डालेगा, और उनकी सारी ज़मीनों का वारिस होगा, वह और उसका वंश हमेशा के लिए।
12 और अब हमारे मालिक और राजा, देखो, हमने तुम्हें इस बच्चे के बारे में जो कुछ देखा है, वह सच-सच बता दिया है।
13 अगर राजा को यह अच्छा लगे कि वह इस बच्चे के लिए उसके पिता को कीमत दे, तो हम उसे मार डालेंगे, इससे पहले कि वह बड़ा होकर देश में बढ़े, और उसका बुरा काम हमारे खिलाफ बढ़े, और हम और हमारे बच्चे उसके बुरे कामों की वजह से खत्म हो जाएं।
14 राजा ने उनकी बातें सुनीं और वे उसे अच्छी लगीं, इसलिए उसने तेरह को बुलवाया, और तेरह राजा के सामने आया।
15 राजा ने तेराह से कहा, "मुझे बताया गया है कि कल रात तुम्हारे यहाँ एक बेटा पैदा हुआ है, और उसके जन्म के समय स्वर्ग में यह बात देखी गई।"
16 इसलिए अब तुम मुझे वह बच्चा दे दो, ताकि हम उसे मार डालें, इससे पहले कि उसकी बुराई हम पर आए, और मैं उसकी कीमत के बदले तुम्हें तुम्हारा घर सोने-चांदी से भर दूंगा।
17 तब तेराह ने राजा को उत्तर दिया, और उससे कहा, हे मेरे प्रभु, हे राजा, मैंने आपकी बातें सुन ली हैं, और आपका सेवक वह सब करेगा जो उसका राजा चाहता है।
18 लेकिन मेरे मालिक और राजा, मैं आपको बताता हूँ कि कल रात मेरे साथ क्या हुआ, ताकि मैं देख सकूँ कि राजा अपने नौकर को क्या सलाह देते हैं, और फिर मैं राजा को उनकी कही बात का जवाब दूँगा; और राजा ने कहा, बोलो।
19 और तेराह ने राजा से कहा, "मोरेद का बेटा अयोन कल रात मेरे पास आया था और उसने कहा,
20 राजा ने जो बड़ा और सुंदर घोड़ा तुम्हें दिया है, वह मुझे दे दो, और मैं उसकी कीमत के बदले तुम्हें सोना-चांदी, भूसा और चारा दूंगा; और मैंने उससे कहा, जब तक मैं राजा से तुम्हारी बातों के बारे में न मिलूं, तब तक रुको, और देखो, राजा जो कुछ भी कहेंगे, मैं वही करूंगा।
21 और अब मेरे मालिक और राजा, देखो मैंने तुम्हें यह बात बता दी है, और जो सलाह मेरे राजा अपने नौकर को देंगे, मैं उसी पर चलूंगा।
22 राजा ने तेराह की बातें सुनीं, और उसका गुस्सा भड़क उठा, और उसने उसे मूर्ख समझा।
23 राजा ने जवाब में तेरह से कहा, "क्या तुम इतने बेवकूफ़, नासमझ या कम समझ वाले हो कि अपना सुंदर घोड़ा सोने-चांदी या भूसे और चारे के बदले में दे रहे हो?"
24 क्या तुम्हारे पास सोने-चांदी की इतनी कमी है कि तुम यह काम कर रहे हो, क्योंकि तुम्हें अपने घोड़े को खिलाने के लिए भूसा और चारा नहीं मिल रहा है? और तुम्हारे लिए सोना-चांदी या भूसा और चारा क्या है कि तुम वह बढ़िया घोड़ा दे दो जो मैंने तुम्हें दिया था, जिसके जैसा पूरी धरती पर कोई नहीं है?
25 जब राजा ने कहना बन्द किया, तब तेरह ने राजा को उत्तर दिया, कि राजा ने अपने दास से ऐसी ही बातें कहीं हैं,
26 हे मेरे मालिक और राजा, मैं आपसे पूछता हूँ कि आपने मुझसे यह क्या कहा था, कि अपना बेटा दे दो कि हम उसे मार डालें, और मैं उसकी कीमत के बदले तुम्हें सोना-चाँदी दूँगा; अपने बेटे के मरने के बाद मैं चाँदी-सोने का क्या करूँगा? मेरा वारिस कौन होगा? तो फिर मेरी मौत पर चाँदी-सोना मेरे राजा को वापस मिल जाएगा जिसने उसे दिया था।
27 जब राजा ने तेराह की बातें और राजा के बारे में बताई गई कहानी सुनी, तो उसे बहुत दुख हुआ और वह इस बात से बहुत नाराज़ हुआ, और उसका गुस्सा अंदर ही अंदर भड़क उठा।
28 जब तेराह ने देखा कि राजा का गुस्सा उस पर भड़क उठा है, तो उसने राजा को जवाब दिया, "मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब राजा के हाथ में है; राजा अपने नौकर के साथ जो कुछ करना चाहे, वह करे, हाँ, मेरा बेटा भी राजा के हाथ में है, वह और उसके दोनों भाई जो उससे बड़े हैं, बिना किसी कीमत के हैं।"
29 राजा ने तेरह से कहा, नहीं, मैं तेरे छोटे बेटे को दाम देकर खरीद लूंगा।

30 तब तेराह ने राजा को जवाब दिया, "मेरे मालिक और राजा, मैं आपसे गुज़ारिश करता हूँ कि आप अपने सेवक को आपसे एक बात कहने दें, और राजा अपने सेवक की बात सुनें।" तब तेराह ने कहा, "मेरे राजा, मुझे तीन दिन का समय दें, ताकि मैं इस मामले पर खुद सोच-विचार करूँ, और अपने परिवार के साथ अपने राजा की बातों पर सलाह करूँ।" उसने राजा पर इस बात के लिए बहुत ज़ोर दिया कि वह मान जाए।
31 राजा ने तेराह की बात मान ली और उसे तीन दिन का समय दिया। तब तेराह राजा के पास से चला गया, और अपने घर जाकर अपने परिवार के पास आकर उन्हें राजा की सारी बातें बताईं; और लोग बहुत डर गए।
32 और तीसरे दिन राजा ने तेराह के पास यह संदेश भेजा, "जैसा मैंने तुमसे कहा था, अपने बेटे को मुझे कीमत पर भेज दो; और अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारे घर में जितने भी लोग हैं, उन सबको भेजकर मरवा दूँगा, ताकि तुम्हारा एक कुत्ता भी न बचे।"
33 और तेरह जल्दी से गया (क्योंकि यह बात राजा की तरफ से ज़रूरी थी), और उसने अपने एक नौकर से एक बच्चा लिया, जो उसकी दासी ने उसी दिन पैदा किया था, और तेरह उस बच्चे को राजा के पास ले गया और उसके बदले में कीमत ली।
34 और इस मामले में यहोवा तेराह के साथ था, ताकि निम्रोद अब्राम की मौत का कारण न बने, और राजा ने बच्चे को तेराह से लिया और पूरी ताकत से उसका सिर ज़मीन पर पटक दिया, क्योंकि उसे लगा कि वह अब्राम है; और यह बात उस दिन से उससे छिपी रही, और राजा इसे भूल गया, क्योंकि भगवान की यही मर्ज़ी थी कि अब्राम की मौत न हो।
35 और तेराह ने अपने बेटे अब्राम को, उसकी माँ और दाई को चुपके से एक गुफा में छिपा दिया, और वह हर महीने उनके लिए खाना लाता था।
36 और यहोवा गुफा में अब्राम के साथ था और वह बड़ा हुआ, और अब्राम गुफा में दस साल रहा, और राजा और उसके हाकिमों, ज्योतिषियों और ज्ञानियों ने सोचा कि राजा ने अब्राम को मार डाला है।

अध्याय 9

1 उन दिनों में अब्राम के बड़े भाई तेराह के बेटे हारान ने एक औरत से शादी कर ली।
2 जब हारान ने उससे शादी की, तब वह उनतीस साल का था; और हारान की पत्नी गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम लूत रखा।
3 और वह फिर से गर्भवती हुई और उसके एक बेटी हुई, और उसने उसका नाम मिल्का रखा; और वह फिर से गर्भवती हुई और उसके एक बेटी हुई, और उसने उसका नाम सारै रखा।
4 जब हारान ने सारै को जन्म दिया, तब वह बयालीस साल का था, जो अब्राम की ज़िंदगी का दसवां साल था; और उन्हीं दिनों अब्राम और उसकी माँ और दाई गुफा से बाहर निकले, क्योंकि राजा और उसकी प्रजा अब्राम की बात भूल गए थे।
5 और जब अब्राम गुफा से बाहर आया, तो वह नूह और उसके बेटे शेम के पास गया, और वह उनके साथ रहा ताकि यहोवा की शिक्षा और उसके मार्ग सीख सके, और कोई नहीं जानता था कि अब्राम कहाँ है, और अब्राम ने बहुत समय तक नूह और उसके बेटे शेम की सेवा की।
6 और अब्राम नूह के घर में उनतीस साल रहा, और अब्राम तीन साल की उम्र से ही प्रभु को जानता था, और वह अपनी मौत के दिन तक प्रभु के मार्गों पर चला, जैसा नूह और उसके बेटे शेम ने उसे सिखाया था; और उन दिनों धरती के सभी बेटों ने प्रभु के खिलाफ बहुत बड़ा पाप किया, और उन्होंने उसके खिलाफ बगावत की और दूसरे देवताओं की सेवा की, और वे उस प्रभु को भूल गए जिसने उन्हें धरती पर बनाया था; और धरती के रहने वालों ने, उस समय, अपने लिए अपना-अपना देवता बना लिया; लकड़ी और पत्थर के देवता जो न बोल सकते थे, न सुन सकते थे, और न बचा सकते थे, और इंसानों के बेटों ने उनकी सेवा की और वे उनके देवता बन गए।
7 और राजा और उसके सभी सेवक, और तेराह अपने पूरे घराने के साथ लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करने वालों में सबसे आगे थे।
8 और तेराह के पास साल के बारह महीनों के हिसाब से लकड़ी और पत्थर के बने हुए बड़े-बड़े बारह देवता थे, और वह हर महीने हर एक की सेवा करता था, और तेराह हर महीने अपने देवताओं के लिए खाने-पीने का चढ़ावा और पानी चढ़ाता था; और तेराह हमेशा ऐसा ही करता था।
9 और उस पीढ़ी के सभी लोग यहोवा की नज़र में बुरे थे, और इसलिए उन्होंने हर आदमी को अपना भगवान बना लिया, लेकिन उन्होंने उस यहोवा को छोड़ दिया जिसने उन्हें बनाया था।
10 और उन दिनों पूरी धरती पर कोई भी ऐसा आदमी नहीं था जो यहोवा को जानता हो (क्योंकि हर कोई अपने-अपने परमेश्वर की सेवा करता था) सिवाय नूह और उसके घराने के, और जितने लोग उसकी सलाह के मुताबिक थे, वे उन दिनों यहोवा को जानते थे।
11 और उन दिनों में तेराह का बेटा अब्राम नूह के घराने में बहुत बड़ा हो रहा था, और किसी को पता नहीं था, और यहोवा उसके साथ था।
12 और यहोवा ने अब्राम को समझदार दिल दिया, और वह जान गया कि उस पीढ़ी के सारे काम बेकार हैं, और उनके सारे देवता बेकार हैं और किसी काम के नहीं हैं।
13 और अब्राम ने सूरज को धरती पर चमकते देखा, और अब्राम ने मन में कहा, पक्का यह सूरज जो धरती पर चमक रहा है, वही भगवान है, और मैं उसी की सेवा करूंगा।
14 और उस दिन अब्राम ने सूरज की पूजा की और उससे प्रार्थना की, और जब शाम हुई तो सूरज हमेशा की तरह डूब गया, और अब्राम ने मन में कहा, क्या यह भगवान नहीं हो सकता?
15 और अब्राम अपने मन में सोचता रहा, वह कौन है जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया? जिसने पृथ्वी पर सृष्टि की? वह कहां है?
16 और रात उसके ऊपर छा गई, और उसने अपनी आँखें पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और पूरब की ओर उठाईं, और उसने देखा कि सूरज धरती से गायब हो गया है, और दिन में अंधेरा हो गया है।
17 और अब्राम ने अपने सामने तारे और चाँद देखे, और उसने कहा, ज़रूर यही वह परमेश्वर है जिसने पूरी धरती और इंसान को बनाया है, और देखो, ये उसके सेवक उसके चारों ओर के देवता हैं: और अब्राम ने चाँद की सेवा की और उस पूरी रात उससे प्रार्थना की।

18 और सुबह जब उजाला हुआ और सूरज हमेशा की तरह धरती पर चमका, तो अब्राम ने वे सब चीज़ें देखीं जो यहोवा परमेश्वर ने धरती पर बनाई थीं।
19 और अब्राम ने खुद से कहा, पक्का ये वो भगवान नहीं हैं जिन्होंने धरती और सारे इंसानों को बनाया, बल्कि ये भगवान के सेवक हैं, और अब्राम नूह के घराने में रहा और वहीं उसने भगवान और उसके तरीकों को जाना और उसने अपनी ज़िंदगी भर भगवान की सेवा की, और उस पीढ़ी के सभी लोग भगवान को भूल गए, और लकड़ी और पत्थर के दूसरे भगवानों की सेवा की, और अपनी ज़िंदगी भर बगावत करते रहे।
20 और राजा निम्रोद ने सुरक्षित रूप से राज किया, और सारी धरती उसके नियंत्रण में थी, और सारी धरती पर एक ही भाषा और एक ही बात थी।
21 और निम्रोद के सभी हाकिमों और उसके बड़े आदमियों ने आपस में सलाह की; फूत, मिज़्रैम, कूश और कनान अपने-अपने परिवारों के साथ, और उन्होंने एक-दूसरे से कहा, आओ हम अपने लिए एक शहर बनाएं और उसमें एक मज़बूत मीनार बनाएं, जिसकी चोटी आसमान तक पहुंचे, और हम अपना नाम रोशन करें, ताकि हम पूरी दुनिया पर राज कर सकें, ताकि हमारे दुश्मनों की बुराई हमसे दूर हो जाए, ताकि हम उन पर मज़बूती से राज कर सकें, और हम उनकी लड़ाइयों की वजह से पूरी धरती पर बिखर न जाएं।
22 और वे सब राजा के सामने गए, और उन्होंने राजा को ये बातें बताईं, और राजा इस मामले में उनसे सहमत हो गया, और उसने वैसा ही किया।
23 और सभी परिवार इकट्ठा हुए, जिनमें लगभग छह लाख आदमी थे, और वे शहर और मीनार बनाने के लिए ज़मीन का एक बड़ा टुकड़ा ढूंढने गए, और उन्होंने पूरी धरती पर ढूंढा और उन्हें शिनार देश के पूरब में, लगभग दो दिन चलने पर, एक भी घाटी जैसी कोई जगह नहीं मिली, और वे वहाँ गए और वहीं रहने लगे।
24 और उन्होंने ईंटें बनाना और आग जलाना शुरू कर दिया ताकि वे उस शहर और उस मीनार को बना सकें जिसे पूरा करने की उन्होंने कल्पना की थी।
25 और टावर बनाना उनके लिए गुनाह और पाप था, और उन्होंने इसे बनाना शुरू कर दिया, और जब वे स्वर्ग के भगवान के खिलाफ बना रहे थे, तो उन्होंने अपने दिलों में उसके खिलाफ लड़ने और स्वर्ग पर चढ़ने की कल्पना की।
26 और ये सारे लोग और सारे परिवार तीन हिस्सों में बंट गए; पहले हिस्से ने कहा, हम स्वर्ग में चढ़ेंगे और उससे लड़ेंगे; दूसरे हिस्से ने कहा, हम स्वर्ग में चढ़ेंगे और वहां अपने देवताओं को रखेंगे और उनकी सेवा करेंगे; और तीसरे हिस्से ने कहा, हम स्वर्ग में चढ़ेंगे और उसे धनुष और भालों से मारेंगे; और परमेश्वर उनके सब कामों और उनके सब बुरे विचारों को जानता था, और उसने उस शहर और उस मीनार को देखा जो वे बना रहे थे।
27 और जब वे बना रहे थे, तो उन्होंने अपने लिए एक बड़ा शहर और एक बहुत ऊँचा और मज़बूत टावर बनाया; और उसकी ऊँचाई की वजह से, गारा और ईंटें बनाने वालों तक तब तक नहीं पहुँचीं जब तक कि ऊपर चढ़ने वालों ने पूरा एक साल पूरा नहीं कर लिया, और उसके बाद, वे बनाने वालों के पास पहुँचे और उन्हें गारा और ईंटें दीं; ऐसा रोज़ होता था।
28 और देखो, ये लोग तो दिन भर चढ़ते रहे, और कुछ लोग उतरते रहे; और अगर उनके हाथ से कोई ईंट गिरकर टूट जाती, तो वे सब उस पर रोते थे, और अगर कोई आदमी गिरकर मर जाता, तो उनमें से कोई उसकी तरफ नहीं देखता था।
29 और यहोवा उनके विचार जानता था, और जब वे बना रहे थे, तो उन्होंने तीर आसमान की ओर चलाए, और सारे तीर खून से भरकर उन पर गिरे, और जब उन्होंने उन्हें देखा तो एक-दूसरे से कहने लगे, "ज़रूर हमने आसमान में रहने वाले सभी लोगों को मार डाला है।"
30 क्योंकि यह यहोवा की तरफ से था ताकि वे भटक जाएं, और उन्हें धरती से मिटा दें।
31 और उन्होंने मीनार और शहर बनाया, और वे यह काम रोज़ करते रहे जब तक कि कई दिन और साल बीत नहीं गए।
32 और परमेश्वर ने उन सत्तर फ़रिश्तों से जो उसके सामने सबसे आगे खड़े थे, कहा, "आओ हम नीचे उतरकर उनकी ज़बान में गड़बड़ी पैदा करें, ताकि एक आदमी अपने पड़ोसी की ज़बान न समझे," और उन्होंने उनके साथ वैसा ही किया।
33 और उस दिन से, वे हर आदमी अपने पड़ोसी की भाषा भूल गया, और वे एक भाषा में बात करना नहीं समझ सके, और जब बनाने वाला अपने पड़ोसी के हाथ से चूना या पत्थर लेता था, जो उसने नहीं मंगवाया था, तो बनाने वाला उसे फेंक देता था और अपने पड़ोसी पर फेंक देता था, जिससे वह मर जाता था।
34 और उन्होंने कई दिनों तक ऐसा ही किया, और इस तरह उनमें से बहुतों को मार डाला।
35 और प्रभु ने वहां मौजूद तीन ग्रुप को मारा, और उन्हें उनके कामों और इरादों के हिसाब से सज़ा दी; जो कहते थे, हम स्वर्ग पर चढ़ेंगे और अपने देवताओं की सेवा करेंगे, वे बंदरों और हाथियों जैसे हो गए; और जो कहते थे, हम स्वर्ग को तीरों से मारेंगे, प्रभु ने उन्हें मार डाला, एक आदमी को उसके पड़ोसी के हाथ से; और जो कहते थे, हम स्वर्ग पर चढ़ेंगे और उससे लड़ेंगे, प्रभु ने उन्हें पूरी धरती पर बिखेर दिया।
36 और जो लोग उनके बीच बचे रहे, जब उन्होंने अपने ऊपर आने वाली मुसीबत को जान लिया और समझ लिया, तो उन्होंने उस इमारत को छोड़ दिया, और वे भी पूरी धरती पर बिखर गए।
37 और उन्होंने शहर और मीनार बनाना बंद कर दिया; इसलिए उसने उस जगह का नाम बाबेल रखा, क्योंकि वहाँ यहोवा ने पूरी धरती की भाषा में गड़बड़ी पैदा कर दी थी; देखो, वह शिनार देश के पूरब में था।
38 और जो मीनार इंसानों ने बनाई थी, धरती ने अपना मुँह खोला और उसका एक तिहाई हिस्सा निगल लिया, और आसमान से आग गिरी और एक तिहाई हिस्सा जला दिया, और बाकी एक तिहाई हिस्सा आज तक बचा हुआ है, और यह उसी हिस्से का है जो ऊपर था, और उसका घेरा तीन दिन चलने जितना है।
39 और उस मीनार में बहुत से लोग मारे गए, उनकी गिनती बहुत ज़्यादा थी।

अध्याय 10

1 और उन्हीं दिनों, यानी तेराह के बेटे अब्राम की उम्र के अड़तालीसवें साल में एबर का बेटा पेलेग मर गया, और पेलेग की कुल उम्र दो सौ उनतीस साल की हुई।

2 और जब प्रभु ने इंसानों को उनके पाप की वजह से टावर पर तितर-बितर कर दिया, तो देखो वे कई हिस्सों में बंट गए, और सभी इंसान धरती के चारों कोनों में फैल गए।
3 और सभी परिवार अपनी-अपनी भाषा, अपनी ज़मीन या अपने शहर के हिसाब से बन गए।
4 और इंसानों ने अपने-अपने परिवारों के हिसाब से बहुत से शहर बसाए, उन सभी जगहों पर जहाँ वे गए, और पूरी धरती पर जहाँ-जहाँ प्रभु ने उन्हें बिखेरा था।
5 और उनमें से कुछ ने उन जगहों पर शहर बसाए जहाँ से बाद में उन्हें निकाल दिया गया था, और उन्होंने इन शहरों का नाम अपने नाम पर, या अपने बच्चों के नाम पर, या अपनी खास घटनाओं के नाम पर रखा।
6 और नूह के बेटे येपेत के बेटों ने जाकर उन जगहों पर अपने लिए शहर बनाए जहाँ वे बिखरे हुए थे, और उन्होंने अपने सभी शहरों का नाम अपने नाम पर रखा, और येपेत के बेटे धरती पर कई हिस्सों और भाषाओं में बंट गए।
7 और येपेत के बेटे अपने-अपने खानदानों के हिसाब से ये हैं: गोमेर, मागोग, मेदाई, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास; येपेत के बच्चे अपनी-अपनी पीढ़ियों के हिसाब से ये हैं।
8 और गोमेर के बच्चे, अपने शहरों के हिसाब से, फ्रैंकम थे, जो फ्रांज़ा नदी के पास, सेना नदी के पास, फ्रांज़ा देश में रहते थे।
9 और रेपात के बच्चे बार्टोनिम हैं, जो लेदा नदी के पास बार्टोनिया देश में रहते हैं, जिसका पानी बड़े समुद्र गीहोन, यानी ओसियेनस में मिलता है।
10 और तुगरमा के बच्चे दस घराने थे, और उनके नाम ये थे: बुज़र, परज़ुनाक, बलगर, एलीकानम, रगबीब, तारकी, बिद, ज़ेबुक, ओंगल और तिलमाज़; ये सब उत्तर में फैल गए और बस गए और अपने लिए शहर बनाए।
11 और उन्होंने अपने शहरों का नाम अपने ही नामों पर रखा, वे वही हैं जो आज तक हिथला और इतालक नदियों के किनारे बसे हुए हैं।
12 लेकिन अंगोली, बालगर और परज़ुनाक के परिवार बड़ी नदी दुबनी के किनारे रहते हैं; और उनके शहरों के नाम भी उनके अपने नामों के अनुसार हैं।
13 और यावान के बच्चे यावानी हैं जो मकदूनिया की ज़मीन में रहते हैं, और मेदाइरे के बच्चे ओरेलम हैं जो कुर्सन की ज़मीन में रहते हैं, और तूबल के बच्चे वे हैं जो पशिया नदी के पास तुस्काना की ज़मीन में रहते हैं।
14 और मेशेक के बच्चे शिबाशनी हैं और तीरास के बच्चे रुशाश, कूशनी और ओंगोलिस हैं; इन सबने जाकर अपने लिए शहर बनाए; ये वे शहर हैं जो याबूस समुद्र के किनारे, कूरा नदी के पास बसे हैं, जो त्रागान नदी में मिल जाती है।
15 और एलीशा के बच्चे अल्मानिम हैं, और उन्होंने भी जाकर अपने लिए शहर बसाए; ये शहर अय्यूब और शिबाथमो के पहाड़ों के बीच बसे हुए हैं; और उनमें से लुम्बार्डी के लोग थे जो अय्यूब और शिबाथमो के पहाड़ों के सामने रहते हैं, और उन्होंने इटालिया की ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया और आज तक वहीं रहते हैं।
16 और चित्तिम के बच्चे रोमिम हैं जो तिब्रू नदी के पास कनोपिया घाटी में रहते हैं।
17 और दुदोनीम के बच्चे वे हैं जो बोरदना देश में गीहोन समुद्र के किनारे के शहरों में रहते हैं।
18 ये येपेत के बच्चों के परिवार हैं, उनके शहरों और भाषाओं के हिसाब से, जब वे टावर के बाद बिखर गए थे, और उन्होंने अपने शहरों का नाम उनके नाम और जगहों के हिसाब से रखा; और ये उनके सभी शहरों के नाम हैं, उनके परिवारों के हिसाब से, जिन्हें उन्होंने टावर के बाद उन दिनों में बसाया था।
19 और हाम के बच्चे कूश, मिट्ज़रैम, फूत और कनान थे, उनके वंश और शहरों के अनुसार।
20 इन सबने जाकर अपने लिए सही जगहें बनाकर शहर बसाए, और अपने शहरों का नाम अपने पुरखों के नाम पर कूश, मिज़राईम, फूट और कनान रखा।
21 और मिट्ज़रैम के बच्चे ये हैं: लूदी, अनामी, लेहाबी, नप्तूकी, पत्रूसी, कस्लूकी और कप्तूरी, ये सात कुल हैं।
22 ये सभी लोग सीहोर नदी के किनारे रहते हैं, जो मिस्र का नाला है, और उन्होंने अपने लिए शहर बसाए और उनके नाम अपने रखे।
23 और पथ्रोस और कास्लोक के बच्चों ने आपस में शादियां कीं, और उनसे पलिश्तिम, अज़ातिम, गेरारिम, गीतिम और एक्रोनिम, कुल पांच परिवार निकले; इन लोगों ने भी अपने लिए शहर बसाए, और उन्होंने अपने शहरों का नाम अपने पुरखों के नाम पर रखा, जो आज तक हैं।
24 और कनान के लोगों ने भी अपने लिए शहर बसाए, और अपने शहरों का नाम अपने नाम पर रखा, ग्यारह शहर और अनगिनत दूसरे शहर।
25 और हाम के परिवार के चार आदमी मैदान की ज़मीन पर गए; उन चारों आदमियों के नाम ये हैं: सदोम, अमोरा, अदमा और सबोयीम।
26 और इन लोगों ने मैदानी इलाके में अपने लिए चार शहर बसाए, और अपने शहरों के नाम अपने ही नाम पर रखे।
27 और वे और उनके बच्चे और उनके सभी लोग उन शहरों में रहने लगे, और वे फलने-फूलने लगे, उनकी संख्या बहुत बढ़ गई और वे शांति से रहने लगे।
28 और सेईर, जो कनान के बेटे हिवी का बेटा और हूर का बेटा था, गया और पारान पहाड़ के सामने एक घाटी ढूंढी, और वहां एक शहर बनाया, और वह और उसके सात बेटे और उसका परिवार वहां रहने लगे, और उसने जो शहर बनाया उसका नाम सेईर रखा, जो आज तक सेईर की ज़मीन है।
29 ये हाम के बच्चों के परिवार हैं, उनकी भाषाओं और शहरों के अनुसार, जब वे मीनार के बाद अपने देशों में बिखर गए थे।
30 और नूह के बेटे शेम के कुछ बच्चे, जो एबर के सभी बच्चों का पिता था, भी गए और उन जगहों पर अपने लिए शहर बनाए जहाँ वे बिखरे हुए थे, और उन्होंने अपने शहरों का नाम अपने नाम पर रखा।
31 और शेम के बेटे एलाम, अशूर, अर्पक्षद, लूद और अराम थे, और उन्होंने अपने लिए शहर बसाए और अपने सभी शहरों के नाम अपने नाम पर रखे।
32 और उस समय शेम का बेटा अशूर और उसके बच्चे और घराने के लोग, जो बहुत बड़े थे, निकले। वे एक दूर देश में गए जो उन्हें मिला। जिस देश में वे गए, वहाँ उन्हें एक बहुत बड़ी घाटी मिली। उन्होंने अपने लिए चार शहर बनाए और उनका नाम अपने नाम और जगहों के नाम पर रखा।

33 और अशूर के बच्चों ने जो शहर बनाए, उनके नाम ये हैं: निनवे, रेसेन, कलक और रहोबोथर; और अशूर के बच्चे आज तक वहीं रहते हैं।
34 और अराम के बच्चों ने भी जाकर अपने लिए एक शहर बसाया, और उस शहर का नाम अपने बड़े भाई के नाम पर ऊज़ रखा, और वे उसमें रहने लगे; वही आज तक ऊज़ की ज़मीन है।
35 और टावर के बाद दूसरे साल अशूर के घराने का एक आदमी, जिसका नाम बेला था, निनवेह देश से चला गया ताकि अपने परिवार के साथ जहाँ भी जगह मिले, वहाँ रहने लगे; और वे सदोम के सामने मैदान के शहरों के सामने पहुँचे, और वहीं रहने लगे।
36 तब उस आदमी ने वहाँ एक छोटा सा शहर बसाया और उसका नाम अपने नाम पर बेला रखा; वही आज तक सोअर की ज़मीन है।
37 और शेम के बच्चों के परिवार ये हैं, उनकी भाषा और शहरों के हिसाब से, जब वे टावर के बाद धरती पर बिखर गए।
38 इसके बाद नूह के बच्चों के हर राज्य, शहर और परिवार ने अपने लिए कई शहर बनाए।
39 और उन्होंने अपने सभी शहरों में सरकारें बनाईं, ताकि उनके आदेशों के अनुसार काम हो सके; नूह के बच्चों के सभी परिवार हमेशा के लिए ऐसा ही करते रहे।

अध्याय 11

1 और कूश का बेटा निम्रोद अब भी शिनार देश में था, और वह उस पर राज करता रहा और वहीं रहता था, और उसने शिनार देश में शहर बसाए।
2 और ये उन चार शहरों के नाम हैं जिन्हें उसने बनाया था, और उसने उनके नाम उन घटनाओं के आधार पर रखे जो मीनार बनाते समय उनके साथ हुईं।
3 और उसने पहले का नाम बाबेल रखा, यह कहकर, कि वहां यहोवा ने सारी पृथ्वी की भाषा में गड़बड़ी डाल दी; और दूसरे का नाम उसने एरेक रखा, क्योंकि वहां से परमेश्वर ने उन्हें फैलाया।
4 और तीसरे का नाम उसने एचेद रखा, यह कहकर कि उस जगह पर बहुत बड़ी लड़ाई हुई है; और चौथे का नाम उसने कलना रखा, क्योंकि उसके हाकिम और ताकतवर आदमी वहाँ मारे गए थे, और उन्होंने यहोवा को परेशान किया, उन्होंने बगावत की और उसके खिलाफ़ गुनाह किया।
5 और जब निम्रोद ने शिनार देश में ये शहर बनाए, तो उसने अपने बाकी लोगों, अपने हाकिमों और अपने ताकतवर आदमियों को, जो उसके राज्य में बचे थे, उनमें बसाया।
6 और निम्रोद बाबेल में रहने लगा, और वहाँ उसने अपनी बाकी प्रजा पर फिर से राज किया, और वह सुरक्षित रूप से राज करता रहा, और निम्रोद की प्रजा और हाकिमों ने उसका नाम अम्राफेल रखा, यह कहते हुए कि टावर पर उसके हाकिम और आदमी उसके हाथों मारे गए थे।
7 और इसके बावजूद, निम्रोद यहोवा के पास वापस नहीं लौटा, और वह बुराई करता रहा और इंसानों को बुराई सिखाता रहा; और उसका बेटा मरदोन अपने पिता से भी बुरा था, और अपने पिता के घिनौने कामों में इज़ाफ़ा करता रहा।
8 और उसने इंसानों से पाप करवाया, इसलिए कहा जाता है, बुरे लोगों से ही बुराई निकलती है।
9 उस समय हाम के बच्चों के परिवारों के बीच लड़ाई हो रही थी, क्योंकि वे अपने बनाए शहरों में रह रहे थे।
10 और एलाम का राजा कदोर्लाओमेर हाम के बच्चों के परिवारों से दूर चला गया, और उनसे लड़ा और उन्हें हरा दिया, और वह मैदान के पाँच शहरों में गया और उनसे लड़ा और उन्हें हरा दिया, और वे उसके कब्ज़े में आ गए।
11 और उन्होंने बारह साल तक उसकी सेवा की, और उसे सालाना टैक्स दिया।
12 उस समय सेरूग का बेटा नाहोर, तेराह के बेटे अब्राम की उम्र के उनतालीसवें साल में मर गया।
13 और तेराह के बेटे अब्राम की ज़िंदगी के पचासवें साल में, अब्राम नूह के घर से निकलकर अपने पिता के घर चला गया।
14 और अब्राम यहोवा को जानता था, और उसके मार्गों और निर्देशों पर चलता था, और उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ था।
15 और उन दिनों उसका पिता तेराह राजा निम्रोद की सेना का सेनापति था, और वह अब भी अजीब देवताओं को मानता था।
16 और अब्राम अपने पिता के घर आया और वहाँ उसने बारह देवताओं को उनके मंदिरों में खड़े देखा, और जब अब्राम ने अपने पिता के घर में इन मूर्तियों को देखा तो उसका गुस्सा भड़क उठा।
17 और अब्राम ने कहा, "प्रभु के जीवन की शपथ, ये मूर्तियाँ मेरे पिता के घर में नहीं रहेंगी; और जिस प्रभु ने मुझे बनाया है, वह मेरे साथ ऐसा ही करेगा, यदि मैं तीन दिन के भीतर इन सबको न तोड़ दूँ।"
18 तब अब्राम उनके पास से चला गया, और उसका गुस्सा उसके अंदर भड़क उठा। और अब्राम जल्दी से कमरे से अपने पिता के बाहरी आँगन में गया, और उसने अपने पिता को आँगन में बैठे हुए पाया, और उसके साथ उसके सभी नौकर भी थे, और अब्राम आया और उसके सामने बैठ गया।
19 और अब्राम ने अपने पिता से पूछा, "पिताजी, मुझे बताइए कि वह परमेश्वर कहाँ है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को, और पृथ्वी पर सभी मनुष्यों को बनाया, और जिसने आपको और मुझे बनाया।" और तेराह ने अपने बेटे अब्राम को उत्तर दिया, "देखिए, जिन्होंने हमें बनाया है, वे सब हमारे साथ घर में हैं।"
20 तब अब्राम ने अपने पिता से कहा, हे मेरे स्वामी, मुझे उन्हें दिखाइए; और तेराह अब्राम को भीतरी आंगन के कमरे में ले गया, और अब्राम ने देखा, और देखो, पूरा कमरा लकड़ी और पत्थर के देवताओं से भरा हुआ था, बारह बड़ी मूर्तियां और उनसे भी छोटी अनगिनत मूर्तियां थीं।
21 और तेराह ने अपने बेटे से कहा, "देखो, ये वही लोग हैं जिन्होंने धरती पर जो कुछ भी तुम देखते हो, उसे बनाया है, और जिन्होंने मुझे, तुम्हें और सारी इंसानियत को बनाया है।"
22 तब तेराह ने अपने देवताओं को प्रणाम किया, और फिर वह उनसे दूर चला गया, और उसका बेटा अब्राम भी उसके साथ चला गया।
23 और जब अब्राम उनके पास से चला गया, तो वह अपनी माँ के पास गया और उसके सामने बैठ गया, और उसने अपनी माँ से कहा, "देखो, मेरे पिता ने मुझे उन लोगों को दिखाया है जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया, और सभी इंसानों को भी।"
24 इसलिए अब जल्दी से झुंड में से एक बकरी का बच्चा ले आओ और उसका स्वादिष्ट मांस बनाओ, ताकि मैं उसे अपने

पिता के देवताओं को भेंट के रूप में खिला सकूँ; शायद मैं उनके लिए स्वीकार्य हो जाऊँ।
25 और उसकी माँ ने वैसा ही किया, और वह एक बकरी का बच्चा लेकर आई, और उसका स्वादिष्ट मांस बनाकर अब्राम के पास ले आई। अब्राम ने अपनी माँ से स्वादिष्ट मांस लिया और उसे अपने पिता के देवताओं के सामने ले गया, और वह उनके पास गया ताकि वे खा सकें; और उसके पिता तेराह को इसका पता नहीं था।
26 और जिस दिन अब्राम उनके बीच बैठा था, उसने देखा कि उनकी आवाज़ नहीं है, न सुनने की शक्ति है, न कोई हरकत है, और उनमें से कोई भी खाने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता।
27 और अब्राम ने उनका मज़ाक उड़ाया और कहा, "ज़रूर, मैंने जो स्वादिष्ट मांस बनाया है, वह उन्हें पसंद नहीं आया, या शायद वह उनके लिए बहुत कम था, और इसी वजह से उन्होंने नहीं खाया; इसलिए कल मैं ताज़ा स्वादिष्ट मांस बनाऊँगा, जो इससे बेहतर और ज़्यादा होगा, ताकि मैं नतीजा देख सकूँ।"
28 और अगले दिन अब्राम ने अपनी माँ को नमकीन खाने के बारे में बताया, और उसकी माँ उठी और झुंड में से तीन बढ़िया बकरियाँ ले आई, और उनसे कुछ बढ़िया नमकीन खाना बनाया, जैसा उसके बेटे को पसंद था, और उसने वह अपने बेटे अब्राम को दिया; और उसके पिता तेराह को इस बारे में पता नहीं था।
29 और अब्राम ने अपनी माँ से स्वादिष्ट खाना लिया, और उसे अपने पिता के देवताओं के सामने कमरे में ले आया; और वह उनके पास गया ताकि वे खा सकें, और उसने उसे उनके सामने रख दिया, और अब्राम पूरे दिन उनके सामने बैठा रहा, यह सोचते हुए कि शायद वे खा सकें।
30 अब्राम ने उन्हें देखा, और देखा कि उनमें न तो आवाज़ थी, न सुनने की शक्ति थी, और न ही उनमें से किसी ने खाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।
31 और उसी दिन शाम को उस घर में अब्राम को परमेश्वर की आत्मा मिली।
32 और उसने चिल्लाकर कहा, हाय मेरे पिता और इस बुरी पीढ़ी पर, जिनके दिल बेकार की बातों में लगे हुए हैं, जो लकड़ी और पत्थर की इन मूर्तियों की सेवा करते हैं जो न खा सकती हैं, न सूंघ सकती हैं, न सुन सकती हैं, न बोल सकती हैं, जिनके मुंह बोल नहीं सकते, आंखें देख नहीं सकतीं, कान सुन नहीं सकते, हाथ महसूस नहीं कर सकते, और पैर हिल नहीं सकते; उनके बनाने वाले और उन पर भरोसा करने वाले भी उनके जैसे ही हैं।
33 जब अब्राम ने ये सब बातें देखीं, तो उसका गुस्सा अपने पिता पर भड़क उठा। वह जल्दी से हाथ में कुल्हाड़ी लेकर देवताओं के कमरे में गया और अपने पिता के सभी देवताओं को तोड़ डाला।
34 और जब उसने मूर्तियों को तोड़ दिया, तो उसने कुल्हाड़ी उस बड़े देवता के हाथ में रख दी जो उनके सामने था, और वह बाहर चला गया; और उसका पिता तेराह घर आया, क्योंकि उसने दरवाज़े पर कुल्हाड़ी के टकराने की आवाज़ सुनी थी; इसलिए तेराह यह जानने के लिए घर में आया कि यह क्या हुआ था।
35 और तेरह ने मूर्तियों वाले कमरे में कुल्हाड़ी की आवाज़ सुनी, तो वह मूर्तियों वाले कमरे की तरफ दौड़ा, और बाहर जाते हुए अब्राम से मिला।
36 और तेराह कमरे में गया और देखा कि सारी मूर्तियाँ गिरी हुई और टूटी हुई थीं, और सबसे बड़ी मूर्ति के हाथ में कुल्हाड़ी, जो टूटी नहीं थी, और उसका स्वादिष्ट मांस जो उसके बेटे अब्राम ने बनाया था, अभी भी उनके सामने था।
37 जब तेराह ने यह देखा तो उसका गुस्सा बहुत भड़क गया, और वह जल्दी से कमरे से निकलकर अब्राम के पास गया।
38 और उसने अपने बेटे अब्राम को घर में बैठा हुआ पाया; और उससे पूछा, "तूने मेरे देवताओं के साथ यह क्या काम किया है?"
39 अब्राम ने अपने पिता तेराह को जवाब दिया, "ऐसा नहीं है मेरे मालिक, क्योंकि मैं उनके सामने स्वादिष्ट खाना लाया था, और जब मैं उनके खाने के लिए खाना लेकर उनके पास गया, तो उन सबने खाने के लिए तुरंत हाथ बढ़ा दिए, इससे पहले कि बड़े ने खाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।"
40 और बड़े ने उनके काम देखे जो उन्होंने उसके सामने किए थे, और उसका गुस्सा उन पर बहुत भड़क उठा, और वह गया और घर में रखी कुल्हाड़ी ले आया, और उनके पास आकर उन सब को तोड़ दिया, और देखो, कुल्हाड़ी अब भी उसके हाथ में है जैसा तुम देख रहे हो।
41 जब तेराह ने यह बात कही, तो उसका गुस्सा उसके बेटे अब्राम पर भड़क उठा; और तेराह ने गुस्से में अपने बेटे अब्राम से कहा, "यह क्या कहानी है जो तूने कही है? तू मुझसे झूठ बोल रहा है।"
42 क्या इन देवताओं में आत्मा, प्राण या शक्ति है जो तुमने मुझसे कहा है? क्या वे लकड़ी और पत्थर नहीं हैं, और क्या मैंने खुद उन्हें नहीं बनाया है, और तुम यह झूठ बोल सकते हो कि उनके साथ जो बड़ा देवता था, उसने उन्हें मारा? यह तुम ही हो जिसने उनके हाथों में कुल्हाड़ी दी, और फिर कहते हो कि उसने उन सभी को मारा।
43 अब्राम ने अपने पिता से कहा, "तो फिर तुम इन मूर्तियों की सेवा कैसे कर सकते हो जिनमें कुछ भी करने की ताकत नहीं है? क्या वे मूर्तियाँ जिन पर तुम भरोसा करते हो, तुम्हें बचा सकती हैं? क्या वे तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुन सकती हैं जब तुम उन्हें पुकारते हो? क्या वे तुम्हें तुम्हारे दुश्मनों के हाथों से बचा सकती हैं, या वे तुम्हारे दुश्मनों के खिलाफ़ तुम्हारी लड़ाई लड़ेंगी, कि तुम लकड़ी और पत्थर की सेवा करो जो न बोल सकते हैं और न सुन सकते हैं?"
44 और अब ये काम करना न तो तुम्हारे लिए अच्छा है और न ही तुम्हारे साथ रहने वाले आदमियों के लिए; क्या तुम इतने बेवकूफ़, इतने नासमझ या इतने नासमझ हो कि लकड़ी और पत्थर की सेवा करोगे, और इस तरह का काम करोगे?
45 और उस प्रभु परमेश्वर को भूल गए जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया, और जिसने तुम्हें पृथ्वी पर बनाया, और इस तरह पत्थर और लकड़ी की सेवा करके अपनी आत्माओं पर बड़ी बुराई लाते हो?
46 क्या हमारे पूर्वजों ने पुराने दिनों में इस मामले में पाप नहीं किया था, और दुनिया के प्रभु परमेश्वर ने उन पर बाढ़ का पानी लाकर पूरी धरती को नष्ट नहीं कर दिया था?
47 और तुम ऐसा कैसे करते रह सकते हो और लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा कर सकते हो, जो सुन नहीं सकते, बोल नहीं सकते, या तुम्हें ज़ुल्म से नहीं बचा सकते, जिससे दुनिया के भगवान का गुस्सा तुम पर बरसता है?
48 इसलिए अब मेरे पिता, ऐसा मत करो, और अपनी और अपने घराने की जान पर बुरा असर मत डालो।

49 और अब्राम जल्दी से अपने पिता के सामने से भागा, और अपने पिता की सबसे बड़ी मूर्ति से कुल्हाड़ी ले ली, जिससे अब्राम ने उसे तोड़ दिया और भाग गया।
50 और तेराह ने यह सब देखा जो अब्राम ने किया था, वह जल्दी से अपने घर से निकला, और राजा के पास गया। वह निम्रोद के सामने खड़ा हुआ, और उसने राजा को प्रणाम किया; और राजा ने पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए?"
51 और उसने कहा, मेरे मालिक, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरी बात सुन लें—पचास साल पहले मेरे यहाँ एक बच्चा पैदा हुआ था, और उसने मेरे देवताओं के साथ ऐसा ही किया और ऐसी बातें कहीं; और अब, मेरे मालिक और राजा, उसे बुलाइए ताकि वह आपके सामने आए, और कानून के हिसाब से उसका इंसाफ करे, ताकि हम उसकी बुराई से बच सकें।
52 तब राजा ने अपने तीन सेवकों को भेजा, और वे जाकर अब्राम को राजा के सामने ले आए। और उस दिन निम्रोद और उसके सभी हाकिम और सेवक उसके सामने बैठे थे, और तेराह भी उनके सामने बैठा था।
53 तब राजा ने अब्राम से पूछा, "यह क्या है जो तुमने अपने पिता और उनके देवताओं के साथ किया है?" अब्राम ने राजा को वही जवाब दिया जो उसने अपने पिता से कहा था, और उसने कहा, "जो बड़ा देवता उनके साथ घर में था, उसने उनके साथ वही किया जो तुमने सुना है।"
54 तब राजा ने अब्राम से कहा, "क्या उनमें बोलने, खाने और वैसा करने की शक्ति थी जैसा तुमने कहा है?" अब्राम ने राजा को उत्तर दिया, "और यदि उनमें कोई शक्ति नहीं है, तो तुम उनकी सेवा क्यों करते हो और अपनी मूर्खताओं के कारण मनुष्यों को भटकाते हो?"
55 क्या तुम सोचते हो कि वे तुम्हें बचा सकते हैं या कुछ भी छोटा या बड़ा कर सकते हैं, कि तुम्हें उनकी सेवा करनी चाहिए? और तुम पूरे ब्रह्मांड के भगवान को क्यों नहीं समझते, जिसने तुम्हें बनाया है और जिसके पास मारने और ज़िंदा रखने की शक्ति है?
56 हे मूर्ख, सीधे-सादे और अज्ञानी राजा, तुझ पर सदा के लिए हाय!
57 मैंने सोचा था कि तू अपने सेवकों को सीधा रास्ता सिखाएगा, लेकिन तूने ऐसा नहीं किया, बल्कि पूरी धरती को अपने पापों और अपने लोगों के पापों से भर दिया है जो तेरे रास्ते पर चले हैं।
58 क्या तुम नहीं जानते, या तुमने सुना नहीं, कि यह बुराई जो तुम कर रहे हो, हमारे पुरखों ने पुराने दिनों में पाप किया था, और हमेशा रहने वाले भगवान ने उन पर बाढ़ का पानी लाकर उन सबको खत्म कर दिया, और उनकी वजह से पूरी धरती को भी खत्म कर दिया? और क्या तुम और तुम्हारे लोग अब उठकर ऐसा ही काम करेंगे, ताकि दुनिया के भगवान का गुस्सा भड़के, और तुम पर और पूरी धरती पर बुराई आए?
59 इसलिए अब यह बुरा काम जो तुम करते हो, छोड़ दो और दुनिया के भगवान की सेवा करो, क्योंकि तुम्हारी आत्मा उनके हाथों में है, और तब तुम्हारा भला होगा।
60 और अगर तुम्हारा बुरा दिल मेरी बातें नहीं सुनेगा, ताकि तुम अपने बुरे रास्ते छोड़कर हमेशा रहने वाले परमेश्वर की सेवा न करो, तो तुम, तुम्हारे लोग और वे सभी जो तुम्हारे साथ हैं, जो तुम्हारी बातें सुनते हैं या तुम्हारे बुरे रास्तों पर चलते हैं, आने वाले दिनों में शर्म से मर जाओगे।
61 जब अब्राम ने राजा और हाकिमों के सामने बोलना बंद कर दिया, तो अब्राम ने अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाकर कहा, "यहोवा सब बुरे लोगों को देखता है, और वह उनका न्याय करेगा।"

अध्याय 12

1 जब राजा ने अब्राम की बातें सुनीं, तो उसने उसे जेल में डालने का आदेश दिया; और अब्राम दस दिन तक जेल में रहा।
2 और उन दिनों के आखिर में राजा ने हुक्म दिया कि सभी राजा, राजकुमार और अलग-अलग प्रांतों के गवर्नर और ज्ञानी उसके सामने आएं, और वे उसके सामने बैठ गए, और अब्राम अभी भी कैदखाने में था।
3 और राजा ने हाकिमों और ज्ञानियों से कहा, "क्या तुमने सुना है कि तेराह के बेटे अब्राम ने अपने पिता के साथ क्या किया है? उसने उसके साथ ऐसा ही किया है, और मैंने उसे मेरे सामने लाने का हुक्म दिया, और उसने ऐसा ही कहा; उसका दिल नहीं पसीजा, न ही वह मेरे सामने हिला, और देखो अब वह जेल में बंद है।"
4 इसलिए तय करो कि इस आदमी को क्या सज़ा मिलनी चाहिए जिसने राजा की बुराई की; जिसने वही सब बातें कहीं और कीं जो तुमने सुनीं।
5 और सबने राजा को जवाब दिया, "जो आदमी राजा को बुरा-भला कहता है, उसे पेड़ पर लटका देना चाहिए; लेकिन उसने जो कुछ कहा है, वह सब किया है और हमारे देवताओं को बुरा-भला कहा है, इसलिए उसे जलाकर मार डालना चाहिए, क्योंकि इस मामले में यही कानून है।"
6 अगर राजा को यह अच्छा लगे, तो वह अपने नौकरों को हुक्म दे कि तुम्हारी ईंट की भट्टी में दिन-रात आग जलाई जाए, और फिर हम इस आदमी को उसमें डाल देंगे। और राजा ने वैसा ही किया, और उसने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे तीन दिन और तीन रात राजा की भट्टी में, जो कासदीम में है, आग तैयार रखें; और राजा ने उन्हें हुक्म दिया कि अब्राम को जेल से निकालकर जलाने के लिए बाहर ले आओ।
7 और राजा के सभी सेवक, हाकिम, सरदार, गवर्नर, जज और देश के सभी निवासी, जो लगभग नौ लाख आदमी थे, अब्राम को देखने के लिए भट्टी के सामने खड़े हो गए।
8 और सब औरतें और बच्चे यह देखने के लिए छतों और मीनारों पर जमा हो गए कि अब्राम के साथ क्या हो रहा है, और वे सब दूर-दूर खड़े रहे; और उस दिन ऐसा कोई आदमी नहीं बचा जो यह नज़ारा देखने न आया हो।
9 और जब अब्राम आया, तो राजा के जादूगरों और ज्ञानियों ने अब्राम को देखा, और वे राजा से चिल्लाकर बोले, हे हमारे मालिक, ज़रूर यह वही आदमी है जिसके बारे में हम जानते हैं कि यह वही बच्चा था जिसके जन्म के समय बड़े तारे ने उन चार तारों को निगल लिया था, जिनके बारे में हमने पचास साल पहले राजा को बताया था।
10 और अब देखो, उसके पिता ने भी तुम्हारी आज्ञाओं का उल्लंघन किया है, और तुम्हारा मज़ाक उड़ाया है, और तुम्हारे लिए एक और बच्चा लाया है, जिसे तुमने मार डाला।
11 जब राजा ने उनकी बातें सुनीं, तो वह बहुत गुस्सा हुआ, और उसने तेराह को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

12 राजा ने कहा, "क्या तुमने सुना है कि जादूगरों ने क्या कहा? अब मुझे सच-सच बताओ, तुमने कैसे सुना; और अगर तुम सच बोलोगे तो तुम बरी हो जाओगे।"
13 और यह देखकर कि राजा का गुस्सा बहुत ज़्यादा भड़क गया है, तेराह ने राजा से कहा, मेरे मालिक और राजा, आपने सच सुना है, और जो ज्ञानियों ने कहा है वह सही है। और राजा ने कहा, तुम ऐसा कैसे कर सकते हो, कि मेरे हुक्म को तोड़कर मुझे एक बच्चा दे दो जो तुमने पैदा नहीं किया, और उसका दाम ले लो?
14 और तेराह ने राजा को जवाब दिया, "उस समय मेरे बेटे के लिए मेरे दिल में बहुत प्यार था, इसलिए मैंने अपनी दासी के एक बेटे को लिया और उसे राजा के पास ले गया।"
15 राजा ने कहा, "तुम्हें यह सलाह किसने दी? मुझे बताओ, मुझसे कुछ मत छिपाओ, तब तुम नहीं मरोगे।"
16 और तेराह राजा के सामने बहुत डर गया, और उसने राजा से कहा, यह मेरे बड़े बेटे हारान ने मुझे यह सलाह दी थी; और जिन दिनों अब्राम का जन्म हुआ था, उन दिनों हारान बत्तीस साल का था।
17 लेकिन हारान ने अपने पिता को कुछ भी सलाह नहीं दी, क्योंकि तेराह ने राजा से अपनी जान बचाने के लिए यह बात कही थी, क्योंकि वह बहुत डर गया था; और राजा ने तेराह से कहा, तेरा बेटा हारान, जिसने तुझे यह सलाह दी है, अब्राम के साथ आग में जलाकर मार डाला जाएगा; क्योंकि उसने यह काम करके राजा की इच्छा के खिलाफ बगावत की है, इसलिए उसे मौत की सज़ा दी जाएगी।
18 उस समय हारान का मन अब्राम की तरह चलने का हुआ, लेकिन उसने इसे अपने तक ही रखा।
19 हारान ने मन में कहा, "देखो, राजा ने अब्राम को इन कामों की वजह से पकड़ लिया है जो अब्राम ने किए हैं। अगर अब्राम राजा पर जीत गया तो मैं उसके पीछे चलूँगा, लेकिन अगर राजा जीत गया तो मैं राजा के पीछे चलूँगा।"
20 जब तेराह ने अपने बेटे हारान के बारे में राजा से यह बात कही, तो राजा ने हुक्म दिया कि हारान को अब्राम के साथ पकड़ लिया जाए।
21 और वे उन दोनों को, यानी अब्राम और उसके भाई हारान को, आग में डालने के लिए ले आए; और देश के सब रहने वाले, राजा के सेवक, हाकिम, सब औरतें और बच्चे उस दिन उन पर खड़े थे।
22 और राजा के सेवकों ने अब्राम और उसके भाई को पकड़ लिया, और उनके सारे कपड़े उतार दिए, सिवाय उनके नीचे के कपड़ों के जो उन्होंने पहने हुए थे।
23 और उन्होंने उनके हाथ-पैर लिनन की डोरियों से बांध दिए, और राजा के सेवकों ने उन्हें उठाकर भट्टी में डाल दिया।
24 और यहोवा को अब्राम से प्यार था और उसने उस पर दया की, और यहोवा नीचे आया और अब्राम को आग से बचाया और वह जला नहीं।
25 लेकिन वे सभी रस्सियाँ जिनसे उसे बाँधा गया था, जल गईं, जबकि अब्राम वहीं रहा और आग में घूमता रहा।
26 और जब हारान को आग में डाला गया, तो वह जलकर राख हो गया, क्योंकि उसका दिल यहोवा के साथ पूरी तरह एक नहीं था; और जिन लोगों ने उसे आग में डाला था, आग की लपटें उन पर फैल गईं, और वे जल गए, और उनमें से बारह आदमी मर गए।
27 और अब्राम तीन दिन और तीन रात आग के बीच में घूमता रहा, और राजा के सभी सेवकों ने उसे आग में चलते हुए देखा, और वे राजा के पास आए और कहा, देखो हमने अब्राम को आग के बीच में घूमते हुए देखा है, और उसके नीचे के कपड़े भी नहीं जले हैं, लेकिन जिस रस्सी से उसे बांधा गया था वह जल गई है।
28 और जब राजा ने उनकी बातें सुनीं तो उसका दिल बैठ गया और उसने उन पर यकीन नहीं किया; इसलिए उसने दूसरे वफ़ादार राजकुमारों को यह मामला देखने के लिए भेजा, और उन्होंने जाकर देखा और राजा को बताया; और राजा यह देखने के लिए उठा, और उसने अब्राम को आग के बीच इधर-उधर घूमते हुए देखा, और उसने हारान के शरीर को जलते हुए देखा, और राजा को बहुत हैरानी हुई।
29 और राजा ने अब्राम को आग से बाहर निकालने का आदेश दिया; और उसके सेवक उसे बाहर निकालने के लिए पास गए, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके, क्योंकि आग चारों ओर थी और भट्टी से लपटें उनकी ओर उठ रही थीं।
30 और राजा के सेवक वहाँ से भाग गए, और राजा ने उन्हें डाँटकर कहा, "जल्दी करो और अब्राम को आग से बाहर निकालो, ताकि तुम मरो नहीं।"
31 और राजा के सेवक फिर से अब्राम को बाहर लाने के लिए पास आए, और आग उन पर लगी और उनके चेहरे जल गए, जिससे उनमें से आठ मर गए।
32 और जब राजा ने देखा कि उसके सेवक आग के पास नहीं जा सकते, कहीं वे जल न जाएं, तो राजा ने अब्राम को पुकारा, हे स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर के सेवक, आग के बीच से निकलकर मेरे सामने यहां आओ; और अब्राम ने राजा की बात मानकर आग से निकलकर राजा के सामने खड़ा हो गया।
33 और जब अब्राम बाहर आया, तो राजा और उसके सभी सेवकों ने देखा कि अब्राम अपने निचले कपड़े पहने हुए राजा के सामने आ रहा है, क्योंकि वे जले नहीं थे, लेकिन जिस रस्सी से वह बंधा था वह जल गई थी।
34 तब राजा ने अब्राम से कहा, "तुम आग में क्यों नहीं जले?"
35 और अब्राम ने राजा से कहा, "आसमान और धरती का परमेश्वर, जिस पर मुझे भरोसा है और जिसके पास सब कुछ है, उसी ने मुझे उस आग से बचाया जिसमें तूने मुझे डाल दिया था।"
36 और अब्राम का भाई हारान जलकर राख हो गया, और उन्होंने उसका शरीर ढूंढा, और वह जला हुआ पाया।
37 और जब हारान कसदीम की आग में मरा, तब वह बयासी साल का था। और राजा, हाकिम और देश के रहने वाले, यह देखकर कि अब्राम आग से बच गया है, वे आए और अब्राम को प्रणाम किया।
38 और अब्राम ने उनसे कहा, मेरे सामने मत झुको, बल्कि दुनिया के उस भगवान के सामने झुको जिसने तुम्हें बनाया है, और उसकी सेवा करो, और उसके रास्ते पर चलो क्योंकि उसी ने मुझे इस आग से बचाया है, और उसी ने सभी इंसानों की आत्मा और रूह को बनाया है, और इंसान को उसकी माँ के पेट में बनाया है, और उसे दुनिया में लाया है, और वही उन लोगों को हर दर्द से बचाएगा जो उस पर भरोसा करते हैं।
39 और यह बात राजा और हाकिमों को बहुत अजीब लगी कि अब्राम आग से बच गया और हारान जल गया; और राजा ने अब्राम को बहुत सारे तोहफ़े दिए और उसे राजघराने से अपने दो

मुख्य नौकर दिए; एक का नाम ओनी था और दूसरे का नाम एलीएज़र था।
40 और सभी राजाओं, हाकिमों और सेवकों ने अब्राम को चाँदी, सोना और मोती के बहुत सारे तोहफ़े दिए, और राजा और उसके हाकिमों ने उसे विदा किया, और वह शांति से चला गया।
41 और अब्राम शांति से राजा के पास से चला गया, और राजा के बहुत से सेवक उसके पीछे चले गए, और लगभग तीन सौ आदमी उसके साथ हो लिए।
42 और अब्राम उसी दिन लौट आया और अपने पिता के घर गया, वह और उसके पीछे आए लोग, और अब्राम ने अपनी पूरी ज़िंदगी अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा की, और उसके मार्गों पर चला और उसके नियमों का पालन किया।
43 और उस दिन से अब्राम ने लोगों के दिलों को यहोवा की सेवा करने के लिए तैयार किया।
44 उस समय नाहोर और अब्राम ने अपने भाई हारान की बेटियों से शादी कर ली; नाहोर की पत्नी का नाम मिल्का था और अब्राम की पत्नी का नाम सारै था। और अब्राम की पत्नी सारै बांझ थी; उन दिनों उसके कोई बच्चा नहीं था।
45 और अब्राम के आग से निकलने के दो साल बाद, यानी उसकी ज़िंदगी के बावनवें साल में, देखो राजा निम्रोद बाबेल में राजगद्दी पर बैठा था, और राजा सो गया और उसने सपना देखा कि वह अपनी सेना और फौज के साथ राजा की भट्टी के सामने एक घाटी में खड़ा है।
46 और उसने अपनी आँखें उठाकर देखा कि अब्राम जैसा एक आदमी भट्टी से निकल रहा है, और वह अपनी खींची हुई तलवार लेकर राजा के सामने खड़ा हो गया, और जब राजा डरकर उस आदमी से भागा, तो वह अपनी तलवार लेकर राजा पर झपटा; और जब वह भाग रहा था, तो उस आदमी ने राजा के सिर पर एक अंडा फेंका, और अंडा एक बड़ी नदी बन गया।
47 और राजा ने सपना देखा कि उसके सारे सैनिक उस नदी में डूबकर मर गए हैं, और राजा अपने आगे चल रहे तीन आदमियों के साथ भाग गया और बच निकला।
48 और राजा ने उन आदमियों को देखा, और वे राजाओं जैसे शाही कपड़े पहने हुए थे, और उनका रूप और शान राजाओं जैसी थी।
49 और जब वे दौड़ रहे थे, तो नदी फिर से राजा के सामने एक अंडे में बदल गई, और अंडे से एक छोटा पक्षी निकला जो राजा के सामने आया, और उसके सिर पर उड़कर राजा की आँख निकाल ली।
50 यह देखकर राजा बहुत दुखी हुआ, और वह नींद से जाग गया, और उसका मन घबरा गया; और उसे बहुत डर लगा।
51 सुबह राजा डर के मारे अपने बिस्तर से उठा, और उसने सभी ज्ञानियों और जादूगरों को अपने सामने आने का आदेश दिया, और राजा ने उन्हें अपना सपना बताया।
52 और राजा के एक समझदार सेवक, जिसका नाम अनुकी था, ने राजा को जवाब दिया, "यह अब्राम और उसके वंश की बुराई के अलावा और कुछ नहीं है, जो आने वाले दिनों में मेरे प्रभु और राजा के खिलाफ़ होगी।"
53 और देखो, वह दिन आएगा जब अब्राम और उसके वंश और उसके घराने के बच्चे मेरे राजा से युद्ध करेंगे, और वे राजा की सारी सेना और उसके सैनिकों को हरा देंगे।
54 और तुमने उन तीन आदमियों के बारे में जो कहा है जिन्हें तुमने अपने जैसे देखा था, और जो बच गए, इसका मतलब है कि सिर्फ़ तुम ही बच पाओगे और धरती के उन राजाओं में से तीन राजा बच जाओगे जो लड़ाई में तुम्हारे साथ होंगे।
55 और जो तुमने नदी को देखा जो पहले अंडे में बदल गई, और एक छोटे पक्षी ने तुम्हारी आँख निकाल ली, इसका मतलब और कुछ नहीं बल्कि अब्राम का वंश है जो बाद के दिनों में राजा को मार डालेगा।
56 यह मेरे राजा का सपना है, और इसका मतलब यह है, और सपना सच है, और जो मतलब तेरे दास ने तुझे बताया है वह सही है।
57 तो अब मेरे राजा, आप तो जानते ही होंगे कि अब 52 साल हो गए हैं जब आपके ज्ञानियों ने अब्राम के जन्म के समय यह देखा था, और अगर मेरे राजा अब्राम को धरती पर रहने देंगे तो यह मेरे मालिक और राजा के लिए नुकसानदायक होगा, क्योंकि जब तक अब्राम ज़िंदा रहेगा, न तो आप और न ही आपका राज्य कायम रहेगा, क्योंकि यह बात उसके जन्म के समय ही पता थी; और मेरे राजा उसे क्यों नहीं मार डालते, ताकि बाद के दिनों में उसकी बुराई आपसे दूर रहे?
58 और निम्रोद ने अनुकी की बात मानकर अपने कुछ सेवकों को चुपके से भेजा कि जाकर अब्राम को पकड़ लें, और उसे राजा के सामने ले जाकर मौत की सज़ा दें।
59 और एलीएजेर, जो अब्राम का नौकर था और राजा ने उसे दिया था, उस समय राजा के सामने था, और उसने सुना कि अनुकी ने राजा को क्या सलाह दी थी, और राजा ने अब्राम की मौत का कारण क्या कहा था।
60 तब एलीएजेर ने अब्राम से कहा, जल्दी कर, उठ और अपनी जान बचा, ताकि तू राजा के हाथों न मारा जाए, क्योंकि उसने तेरे बारे में सपने में ऐसा ही देखा था, और अनुकी ने उसका मतलब ऐसा ही बताया था, और अनुकी ने भी राजा को तेरे बारे में ऐसी ही सलाह दी थी।
61 और अब्राम ने एलीएजेर की बात सुनी, और अब्राम जल्दी से भागकर नूह और उसके बेटे शेम के घर गया, और वहाँ छिप गया और उसे एक सुरक्षित जगह मिल गई; और राजा के सेवक उसे ढूंढने के लिए अब्राम के घर आए, लेकिन वे उसे नहीं ढूंढ पाए, और उन्होंने पूरे देश में ढूंढा लेकिन वह नहीं मिला, और वे हर तरफ गए और उसे ढूंढा लेकिन वह नहीं मिला।
62 जब राजा के सेवकों को अब्राम नहीं मिला, तो वे राजा के पास लौट आए। लेकिन अब्राम को न पाकर राजा का गुस्सा शांत हो गया, और राजा ने अब्राम के बारे में यह बात अपने मन से निकाल दी।
63 और अब्राम एक महीने तक नूह के घर में छिपा रहा, जब तक कि राजा यह बात भूल नहीं गया, लेकिन अब्राम अब भी राजा से डरता था; और तेराह अपने बेटे अब्राम से मिलने नूह के घर में चुपके से आया, और तेराह राजा की नज़र में बहुत बड़ा था।
64 और अब्राम ने अपने पिता से कहा, क्या तुम नहीं जानते कि राजा अपने बुरे सलाहकारों की सलाह से मुझे मार डालना चाहता है, और धरती से मेरा नाम मिटा देना चाहता है?
65 अब यहाँ तेरा कौन है और इस देश में तेरा क्या है? उठो, चलो हम सब मिलकर कनान देश चलें, ताकि हम उसके हाथ से बच सकें, कहीं ऐसा न हो कि आने वाले दिनों में तू भी उसके कारण खत्म हो जाए।

66 क्या तुम नहीं जानते या तुमने नहीं सुना कि निम्रोद तुम्हें यह सारा सम्मान प्यार से नहीं दे रहा है, बल्कि यह सिर्फ़ उसके फ़ायदे के लिए है कि वह तुम्हें यह सब अच्छाई दे रहा है?
67 और अगर वह तुम्हारे साथ इससे भी ज़्यादा अच्छा करे, तो भी ये दुनिया की बेकार की बातें हैं, क्योंकि गुस्से और क्रोध के दिन में दौलत और दौलत काम नहीं आ सकती।
68 इसलिए अब मेरी बात सुनो, और चलो उठकर कनान देश में चलें, जो निम्रोद से नुकसान की पहुँच से दूर है; और उस प्रभु की सेवा करो जिसने तुम्हें धरती पर बनाया है और तुम्हारा भला होगा; और उन सभी बेकार चीज़ों को छोड़ दो जिनके पीछे तुम भागते हो।
69 जब नूह और उसके बेटे शेम ने तेराह को जवाब दिया, तो अब्राम ने बोलना बंद कर दिया, "अब्राम ने जो बात तुमसे कही है, वह सच है।"
70 और तेराह ने अपने बेटे अब्राम की बात मान ली, और तेराह ने वह सब किया जो अब्राम ने कहा था, क्योंकि यह यहोवा की इच्छा थी कि राजा अब्राम को न मारे।

अध्याय 13

1 और तेराह अपने बेटे अब्राम और अपने पोते लूत, जो हारान का बेटा था, और अपनी बहू सारै, जो उसके बेटे अब्राम की पत्नी थी, और अपने घर के सभी लोगों को लेकर उर कसदीम से कनान देश जाने के लिए निकल पड़ा। और जब वे हारान देश तक पहुँचे तो वहीं रुक गए, क्योंकि वह चरागाह के लिए बहुत अच्छी ज़मीन थी, और उनके साथ आने वालों के लिए भी काफी जगह थी।
2 और हारान देश के लोगों ने देखा कि अब्राम परमेश्वर और इंसानों के साथ अच्छा और सीधा है, और उसका परमेश्वर यहोवा उसके साथ है, और हारान देश के कुछ लोग आकर अब्राम से मिल गए, और उसने उन्हें परमेश्वर की शिक्षा और अपने मार्ग सिखाए; और ये लोग अब्राम के साथ उसके घर में रहे और उसके साथ रहे।
3 और अब्राम उस देश में तीन साल रहा, और तीन साल के बाद प्रभु ने अब्राम को दर्शन दिया और उससे कहा; मैं वही प्रभु हूँ जिसने तुम्हें ऊर कसदीम से निकाला, और तुम्हारे सभी दुश्मनों के हाथों से छुड़ाया।
4 और अब अगर तुम मेरी बात सुनोगे और मेरे हुक्मों, मेरे नियमों और मेरे कानूनों को मानोगे, तो मैं तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे सामने हरा दूंगा, और मैं तुम्हारे वंश को आसमान के तारों की तरह बढ़ा दूंगा, और मैं तुम्हारे हाथों के सभी कामों पर अपनी आशीष भेजूंगा, और तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।
5 अब उठ, अपनी पत्नी और अपना सब कुछ लेकर कनान देश में जा और वहीं रह, और मैं वहाँ तेरा परमेश्वर ठहरूंगा, और तुझे आशीर्वाद दूंगा। और अब्राम उठा और अपनी पत्नी और अपना सब कुछ लेकर कनान देश में चला गया, जैसा यहोवा ने उससे कहा था; और जब अब्राम हारान से चला, तब वह पचास साल का था।
6 और अब्राम कनान देश में आया और शहर के बीच में रहने लगा, और वहाँ उसने कनान के लोगों के बीच अपना तंबू खड़ा किया, जो उस देश के रहने वाले थे।
7 और जब अब्राम कनान देश में आया, तो यहोवा ने उसे दर्शन दिए और उससे कहा, यह वह देश है जो मैंने तुझे और तेरे बाद तेरे वंश को हमेशा के लिए दिया है, और मैं तेरे वंश को आकाश के तारों जैसा बनाऊंगा, और तेरे वंश को वह सारी ज़मीन विरासत में दूंगा जिसे तू देख रहा है।
8 और अब्राम ने उस जगह पर एक वेदी बनाई जहाँ परमेश्वर ने उससे बात की थी, और अब्राम ने वहाँ यहोवा का नाम पुकारा।
9 उस समय, कनान देश में अब्राम के रहने के तीन साल पूरे होने पर, उसी साल नूह की मौत हो गई, जो अब्राम की ज़िंदगी का अट्ठावनवां साल था; और नूह कुल नौ सौ पचास साल जीया और फिर उसकी मौत हो गई।
10 और अब्राम, उसकी पत्नी, और उसके सारे लोग, और उसके साथ के सब लोग, और देश के लोगों में से जो लोग उसके साथ आए थे, वे सब कनान देश में रहने लगे; लेकिन अब्राम का भाई नाहोर, उसका पिता तेराह, और हारान का बेटा लूत और उनके सारे लोग हारान में ही रहने लगे।
11 कनान देश में अब्राम के रहने के पाँचवें साल में, सदोम और अमोरा के लोगों और मैदान के सभी शहरों ने एलाम के राजा कदोर्लाओमेर के खिलाफ बगावत कर दी; क्योंकि मैदान के सभी शहरों के राजाओं ने बारह साल तक कदोर्लाओमेर की सेवा की थी, और उसे सालाना टैक्स दिया था, लेकिन उन दिनों तेरहवें साल में, उन्होंने उसके खिलाफ बगावत कर दी।
12 और कनान देश में अब्राम के रहने के दसवें साल में शिनार के राजा निम्रोद और एलाम के राजा कदोर्लाओमेर के बीच लड़ाई हुई, और निम्रोद कदोर्लाओमेर से लड़ने और उसे हराने आया।
13 क्योंकि कदोर्लाओमेर उस समय निम्रोद की सेना के हाकिमों में से एक था, और जब मीनार पर मौजूद सभी लोग तितर-बितर हो गए और जो बचे थे वे भी धरती पर बिखर गए, तो कदोर्लाओमेर एलाम देश में गया और वहाँ राज करने लगा और अपने मालिक के खिलाफ बगावत कर दी।
14 और उन दिनों जब निम्रोद ने देखा कि मैदान के शहरों ने बगावत कर दी है, तो वह घमंड और गुस्से में कदोर्लाओमेर से लड़ने गया। निम्रोद ने अपने सभी हाकिमों और प्रजा को, जो लगभग सात लाख आदमी थे, इकट्ठा किया और कदोर्लाओमेर के खिलाफ गया। कदोर्लाओमेर पाँच हज़ार आदमियों के साथ उससे मिलने निकला। उन्होंने बाबेल की घाटी में लड़ाई की तैयारी की जो एलाम और शिनार के बीच में है।
15 और वे सभी राजा वहाँ लड़े, और निम्रोद और उसके लोग कदोर्लाओमेर के लोगों से हार गए, और निम्रोद के आदमियों में से लगभग छह लाख लोग मारे गए, और राजा का बेटा मरदोन भी उनमें मारा गया।
16 और निम्रोद भाग गया और शर्मिंदा होकर अपने देश लौट आया, और वह लंबे समय तक कदोर्लाओमेर के अधीन रहा, और कदोर्लाओमेर अपने देश लौट आया और उसने अपने आस-पास रहने वाले राजाओं, एलासर के राजा अर्योक और गोयिम के राजा टिडाल के पास अपनी सेना के हाकिमों को भेजा, और उनके साथ एक समझौता किया, और वे सभी उसकी आज्ञा मानने लगे।
17 और यह कनान देश में अब्राम के रहने के पंद्रहवें साल की बात है, जो अब्राम की ज़िंदगी का सत्तरवां साल है, और उसी साल प्रभु अब्राम को दिखाई दिए और उन्होंने उससे कहा, मैं वही प्रभु हूँ जो तुम्हें यह ज़मीन विरासत में देने के लिए उर कसदीम से बाहर लाया हूँ।

18 इसलिए अब मेरे सामने चलो और सही बनो और मेरी आज्ञाओं का पालन करो, क्योंकि मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश को यह देश विरासत में दूंगा, मिस्र नदी से लेकर बड़ी नदी फरात तक।
19 और तुम शांति और अच्छी उम्र में अपने पुरखों के पास लौटोगे, और चौथी पीढ़ी इसी देश में लौटेगी और हमेशा के लिए इसकी वारिस होगी; और अब्राम ने एक वेदी बनाई, और उसने यहोवा का नाम पुकारा जो उसे दिखाई दिया था, और उसने वेदी पर यहोवा के लिए बलिदान चढ़ाए।
20 उस समय अब्राम हारान लौट आया और अपने पिता, माता और अपने पिता के घराने से मिलने के लिए गया। अब्राम और उसकी पत्नी और उसका सारा सामान हारान लौट आया। अब्राम हारान में पाँच साल रहा।
21 और हारान के बहुत से लोग, लगभग बहत्तर आदमी, अब्राम के पीछे हो लिए और अब्राम ने उन्हें यहोवा की शिक्षा और उसके मार्ग सिखाए, और उसने उन्हें यहोवा को जानना सिखाया।
22 उन्हीं दिनों यहोवा हारान में अब्राम को दिखाई दिया, और उससे कहा, "देख, मैंने बीस साल पहले तुमसे कहा था,
23 अपनी ज़मीन, अपनी जन्म की जगह और अपने पिता के घर को छोड़कर उस ज़मीन पर जाओ जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को देने के लिए दिखाई है, क्योंकि उस ज़मीन में मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा, और तुम्हें एक महान राष्ट्र बनाऊँगा, और तुम्हारा नाम महान करूँगा, और तुम्हारे ज़रिए धरती के परिवार आशीर्वाद पाएंगे।
24 इसलिए अब उठो, इस जगह से निकल जाओ, तुम, तुम्हारी पत्नी, और तुम्हारे जो भी लोग हैं, और तुम्हारे घर में पैदा हुए सभी लोग और जितने भी जीव तुमने हारान में पैदा किए हैं, उन सबको अपने साथ यहां से ले जाओ, और कनान देश लौट जाओ।
25 तब अब्राम उठा और अपनी पत्नी सारै, और अपना सारा सामान, और अपने घर में पैदा हुए सब लोगों, और हारान में पैदा हुए जीवों को लेकर कनान देश जाने के लिए निकल पड़ा।
26 और अब्राम यहोवा की बात मानकर कनान देश में लौट आया। और उसके भाई हारान का बेटा लूत भी उसके साथ गया, और जब अब्राम हारान से कनान देश लौटने के लिए निकला, तब वह पचहत्तर साल का था।
27 और वह यहोवा की बात मानकर कनान देश में आया, और उसने अपना तंबू खड़ा किया, और मम्रे के मैदान में रहने लगा, और उसके साथ उसका भाई लूत और उसका सारा सामान था।
28 और यहोवा ने फिर अब्राम को दर्शन देकर कहा, "यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा।" और उसने वहां यहोवा के लिए एक वेदी बनाई, जो उसे दर्शन दिया था। वह वेदी आज भी मम्रे के मैदान में है।

अध्याय 14

1 उन दिनों शिनार देश में एक बुद्धिमान आदमी रहता था जो हर तरह की समझ रखता था और दिखने में सुंदर था, लेकिन वह गरीब और दरिद्र था; उसका नाम रिकायन था और उसे अपना गुज़ारा करने में बहुत मुश्किल होती थी।
2 और उसने मिस्र के राजा अनोम के बेटे ओस्विरिस के पास जाने का फैसला किया, ताकि राजा को अपनी समझदारी दिखा सके; शायद वह उसकी नज़र में कृपा पा सके, उसे ऊपर उठा सके और उसका गुज़ारा कर सके; और रिकायन ने वैसा ही किया।
3 और जब रिकायन मिस्र आया तो उसने मिस्र के लोगों से राजा के बारे में पूछा, और मिस्र के लोगों ने उसे मिस्र के राजा का रिवाज बताया, क्योंकि उस समय मिस्र के राजा का रिवाज था कि वह अपने शाही महल से बाहर जाता था और साल में सिर्फ़ एक दिन बाहर देखा जाता था, और उसके बाद राजा अपने महल में वापस आकर वहीं रहता था।
4 और जिस दिन राजा बाहर गया, उसने देश में फैसला सुनाया, और जिस किसी के पास कोई मामला था, वह उसी दिन राजा के सामने अपनी मांग पूरी करने आया।
5 जब रिकायन ने मिस्र के रिवाज के बारे में सुना और यह भी कि वह राजा के सामने नहीं जा सकता, तो उसे बहुत दुख हुआ और वह बहुत दुखी हुआ।
6 और शाम को रिकायन बाहर गया और उसे एक खंडहर घर मिला, जो पहले मिस्र में एक बेकरी था, और वह पूरी रात वहीं रहा, मन की कड़वाहट और भूख से परेशान, और उसकी आँखों से नींद गायब हो गई थी।
7 और रिकायन ने मन ही मन सोचा कि जब तक राजा न आ जाए, उसे शहर में क्या करना चाहिए, और वह वहाँ कैसे अपना गुज़ारा कर सकता है।
8 सुबह वह उठा और घूमने लगा। रास्ते में उसे कुछ लोग मिले जो सब्ज़ियाँ और तरह-तरह के बीज बेच रहे थे, जिनसे वे वहाँ के लोगों को खाना देते थे।
9 रिकायन भी शहर में गुज़ारा करने के लिए ऐसा ही करना चाहता था, लेकिन उसे लोगों के रीति-रिवाज़ के बारे में पता नहीं था, और वह उनके बीच अंधे आदमी जैसा था।
10 और वह गया और अपने गुज़ारे के लिए सब्ज़ियाँ बेचने के लिए लाया; और भीड़ उसके चारों ओर इकट्ठा हो गई और उसका मज़ाक उड़ाया, और उससे सब्ज़ियाँ ले लीं और उसके लिए कुछ भी नहीं छोड़ा।
11 और वह मन की कड़वाहट के साथ वहाँ से उठा, और आहें भरता हुआ उस बेकरी में गया जहाँ वह पिछली रात पूरी रात रुका था, और दूसरी रात भी वहीं सोया।
12 और उस रात उसने फिर से अपने मन में सोचा कि वह खुद को भुखमरी से कैसे बचा सकता है, और उसने एक योजना बनाई कि कैसे काम किया जाए।
13 और वह सुबह उठा और उसने होशियारी से काम किया, और जाकर भीड़ में से तीस ताकतवर आदमियों को काम पर रखा, जिनके हाथों में उनके लड़ाई के हथियार थे, और वह उन्हें मिस्र की कब्र के ऊपर ले गया, और उन्हें वहाँ रख दिया।
14 और उसने उन्हें हुक्म दिया, "राजा कहता है, हिम्मत रखो और बहादुर बनो, और जब तक दो सौ चांदी के सिक्के न दिए जाएं, तब तक किसी को यहां न दफनाया जाए, और तब उसे दफनाया जा सकता है; और उन लोगों ने उस पूरे साल मिस्र के लोगों के साथ रिकायन के हुक्म के मुताबिक ही किया।"
15 और आठ महीने में रिकायन और उसके आदमियों ने चांदी और सोने का बहुत सारा धन इकट्ठा कर लिया, और रिकायन ने बहुत सारे घोड़े और दूसरे जानवर ले लिए, और उसने और आदमियों को काम पर रखा, और उन्हें घोड़े दिए और वे उसके पास रहे।

16 और जब साल पूरा हुआ, तो जिस समय राजा शहर में गया, मिस्र के सभी निवासी रिकायन और उसके आदमियों के काम के बारे में उससे बात करने के लिए इकट्ठा हुए।
17 और राजा तय दिन पर निकला, और सब मिस्री उसके सामने आए और उससे चिल्लाकर कहने लगे,
18 राजा हमेशा ज़िंदा रहें। आप शहर में अपने नौकरों के साथ यह क्या कर रहे हैं कि जब तक इतना सोना-चांदी न दिया जाए, तब तक किसी लाश को दफ़नाने नहीं देते? क्या पूरी धरती पर, पहले के राजाओं के दिनों से लेकर, यानी आदम के दिनों से लेकर आज तक कभी ऐसा हुआ है कि मरे हुए को सिर्फ़ एक तय कीमत पर दफ़नाया न जाए?
19 हम जानते हैं कि राजाओं का रिवाज है कि वे ज़िंदा लोगों से हर साल टैक्स लेते हैं, लेकिन तुम सिर्फ़ यही नहीं करते, बल्कि मरे हुओं से भी हर दिन टैक्स लेते हो।
20 अब, हे राजा, हम इसे और नहीं सह सकते, क्योंकि इस वजह से पूरा शहर बर्बाद हो गया है, और क्या तुम्हें इसका पता नहीं है?
21 जब राजा ने उनकी सारी बातें सुनीं, तो उसे बहुत गुस्सा आया, और इस बात पर उसका गुस्सा अंदर ही अंदर भड़क उठा, क्योंकि उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था।
22 राजा ने कहा, "मेरे देश में मेरी आज्ञा के बिना यह बुरा काम करने की हिम्मत किसने और कहाँ की है? तुम मुझे ज़रूर बताओगे।"
23 और उन्होंने उसे रिकायन और उसके आदमियों के सारे काम बता दिए, और राजा का गुस्सा भड़क उठा, और उसने रिकायन और उसके आदमियों को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।
24 और रिकायन ने करीब एक हज़ार बच्चों, बेटों और बेटियों को लिया, और उन्हें रेशम और कढ़ाई के कपड़े पहनाए, और उन्हें घोड़ों पर बिठाकर अपने आदमियों के ज़रिए राजा के पास भेजा, और उसने राजा के लिए तोहफ़े के तौर पर बहुत सारा चाँदी, सोना और कीमती पत्थर, और एक मज़बूत और सुंदर घोड़ा भी लिया, जिसे लेकर वह राजा के सामने आया और उसके सामने ज़मीन पर झुक गया; और राजा, उसके नौकर और मिस्र के सभी रहने वाले रिकायन के काम को देखकर हैरान रह गए, और उन्होंने उसकी दौलत और वह तोहफ़ा देखा जो वह राजा के लिए लाया था।
25 और राजा को यह बात बहुत अच्छी लगी और वह इस पर हैरान हुआ; और जब रिकायन उसके सामने बैठा तो राजा ने उससे उसके सभी कामों के बारे में पूछा, और रिकायन ने राजा, उसके नौकरों और मिस्र के सभी रहने वालों के सामने अपनी सारी बातें समझदारी से कहीं।
26 और जब राजा ने रिकायन की बातें और उसकी समझदारी सुनी, तो रिकायन को राजा की नज़र में कृपा मिली, और उसकी समझदारी और अच्छी बातों की वजह से, राजा के सभी नौकरों और मिस्र के सभी निवासियों ने उस पर कृपा और दया की, और उस समय से वे उससे बहुत प्यार करने लगे।
27 राजा ने जवाब में रिकायन से कहा, "अब से तेरा नाम रिकायन नहीं रहेगा, बल्कि तेरा नाम फिरौन होगा, क्योंकि तूने मरे हुओं से टैक्स लिया है।" इसलिए उसने उसका नाम फिरौन रखा।
28 राजा और उसकी प्रजा रिकायन को उसकी बुद्धिमानी के कारण पसंद करते थे, और उन्होंने मिस्र के सभी निवासियों से सलाह ली कि उसे राजा के अधीन प्रधान बनाया जाए।
29 और मिस्र के सभी निवासियों और उसके बुद्धिमान लोगों ने ऐसा ही किया, और यह मिस्र में एक कानून बन गया।
30 और उन्होंने मिस्र के राजा ओस्विरिस के अंडर रिकायन फिरौन को प्रीफेक्ट बनाया, और रिकायन फिरौन मिस्र पर राज करता था, और रोज़ पूरे शहर में इंसाफ़ करता था, लेकिन राजा ओस्विरिस साल में एक दिन देश के लोगों का इंसाफ़ करता था, जब वह अपनी मौजूदगी के लिए बाहर जाता था।
31 और रिकायन फिरौन ने चालाकी से मिस्र की सरकार पर कब्ज़ा कर लिया, और उसने मिस्र के सभी निवासियों से टैक्स वसूला।
32 और मिस्र के सभी रहने वाले रिकायन फिरौन से बहुत प्यार करते थे, और उन्होंने यह हुक्म दिया कि मिस्र में जो भी राजा उन पर और उनकी संतान पर राज करेगा, उसका नाम फिरौन रखा जाए।
33 इसलिए उस समय से लेकर आज तक मिस्र में राज करने वाले सभी राजाओं को फिरौन कहा जाता है।

अध्याय 15

1 उस साल पूरे कनान देश में भारी अकाल पड़ा, और उस देश के लोग अकाल की वजह से नहीं रह सके, क्योंकि वह बहुत भयानक था।
2 अब्राम और उसके सारे लोग अकाल की वजह से मिस्र चले गए, और जब वे मित्ज़रायम नदी पर पहुँचे, तो रास्ते की थकान से आराम करने के लिए कुछ समय वहीं रुके।
3 अब्राम और सारै मित्ज़रायम नदी के किनारे टहल रहे थे, और अब्राम ने अपनी पत्नी सारै को देखा, कि वह बहुत सुंदर है।
4 और अब्राम ने अपनी पत्नी सारै से कहा, "क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें इतना सुंदर बनाया है, इसलिए मुझे मिस्रियों से डर लगता है कि कहीं वे मुझे मारकर तुम्हें न ले जाएं, क्योंकि इन जगहों में परमेश्वर का डर नहीं है।"
5 तो फिर तुम यह ज़रूर करना, जो कोई तुमसे पूछे, उससे कहना कि तुम मेरी बहन हो, ताकि मेरा भला हो, और हम ज़िंदा रहें और मारे न जाएं।
6 और अब्राम ने उन सभी को यही आज्ञा दी जो अकाल के कारण उसके साथ मिस्र आए थे; और अपने भतीजे लूत को भी उसने यही आज्ञा दी, कि अगर मिस्री लोग तुमसे सारै के बारे में पूछें तो कह देना कि वह अब्राम की बहन है।
7 फिर भी इन सब आदेशों के बावजूद अब्राम ने उन पर भरोसा नहीं किया, बल्कि उसने सारै को ले जाकर एक संदूक में रखा और उसे उनके बर्तनों के बीच छिपा दिया, क्योंकि मिस्रियों की बुराई के कारण अब्राम सारै के बारे में बहुत चिंतित था।
8 अब्राम और उसके सारे लोग मिस्र नदी से निकलकर मिस्र पहुँचे; और वे शहर के फाटकों के अंदर घुसे ही थे कि पहरेदारों ने उन्हें खड़ा करके कहा, "जो कुछ तुम्हारे पास है, उसमें से राजा को दसवाँ हिस्सा दो, और फिर तुम शहर में आ सकते हो।" अब्राम और उसके साथियों ने वैसा ही किया।
9 अब्राम और उसके साथ के लोग मिस्र आए। जब वे आए, तो वे उस संदूक को ले आए जिसमें सारै छिपी हुई थी। मिस्रियों ने उस संदूक को देखा।
10 तब राजा के सेवकों ने अब्राम के पास जाकर कहा, "इस संदूक में तुम्हारे पास ऐसा क्या है जो हमने नहीं देखा? अब तुम

संदूक खोलो और इसमें जो कुछ है उसका दसवाँ हिस्सा राजा को दो।"
11 अब्राम ने कहा, "मैं यह संदूक नहीं खोलूंगा, लेकिन तुम जो कुछ भी मांगोगे, मैं दूंगा।" फिरौन के अधिकारियों ने अब्राम को जवाब दिया, "यह कीमती पत्थरों का संदूक है, हमें इसका दसवां हिस्सा दे दो।"
12 अब्राम ने कहा, "जो कुछ तुम चाहोगी, मैं दूँगा, लेकिन तुम संदूक मत खोलना।"
13 तब राजा के अधिकारियों ने अब्राम को दबाया, और वे संदूक तक पहुंचे और उसे ज़ोर से खोला, और उन्होंने देखा कि संदूक में एक सुंदर स्त्री थी।
14 और जब राजा के अधिकारियों ने सारै को देखा, तो वे उसकी खूबसूरती देखकर हैरान रह गए। फिरौन के सभी हाकिम और नौकर सारै को देखने के लिए इकट्ठा हुए, क्योंकि वह बहुत खूबसूरत थी। और राजा के अधिकारी दौड़कर फिरौन को वह सब बता गए जो उन्होंने देखा था, और उन्होंने राजा के सामने सारै की तारीफ़ की; और फिरौन ने उसे लाने का हुक्म दिया, और वह औरत राजा के सामने आई।
15 और फिरौन ने सारै को देखा और वह उसे बहुत पसंद आई, और वह उसकी खूबसूरती से हैरान रह गया, और राजा उसके कारण बहुत खुश हुआ, और जो लोग उसके बारे में खबर लाते थे, उन्हें तोहफ़े देता था।
16 तब उस औरत को फिरौन के घर लाया गया, और अब्राम अपनी पत्नी के कारण दुखी हुआ, और उसने यहोवा से प्रार्थना की कि वह उसे फिरौन के हाथों से छुड़ाए।
17 और उस समय सारै ने भी प्रार्थना की और कहा, हे प्रभु परमेश्वर, आपने मेरे प्रभु अब्राम से कहा था कि वह अपनी ज़मीन और अपने पिता के घर को छोड़कर कनान देश चला जाए, और आपने वादा किया था कि अगर वह आपकी आज्ञा मानेगा तो आप उसके साथ अच्छा करेंगे; अब देखिए हमने वही किया है जो आपने हमें आज्ञा दी थी, और हमने अपनी ज़मीन और अपने परिवारों को छोड़ दिया, और हम एक अजनबी देश और ऐसे लोगों के पास चले गए जिन्हें हम पहले नहीं जानते थे।
18 और हम अकाल से बचने के लिए इस देश में आए थे, और यह बुरी घटना मुझ पर आ पड़ी है; इसलिए अब, हे प्रभु परमेश्वर, हमें इस अत्याचारी के हाथ से छुड़ा और अपनी दया के कारण मेरे साथ भलाई कर।
19 और यहोवा ने सारै की बात मान ली, और यहोवा ने सारै को फिरौन के हाथ से छुड़ाने के लिए एक फ़रिश्ता भेजा।
20 और राजा आया और सारै के सामने बैठ गया। और देखो, प्रभु का एक दूत उनके ऊपर खड़ा था। वह सारै को दिखाई दिया और उससे कहा, "डरो मत, क्योंकि प्रभु ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है।"
21 तब राजा ने सारै के पास जाकर उससे पूछा, वह आदमी जो तुम्हें यहां लाया है, तुम्हारा क्या काम है? उसने कहा, वह मेरा भाई है।
22 और राजा ने कहा, यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उसे बड़ा बनाएं, उसे ऊपर उठाएं और उसके साथ वह सब अच्छा करें जो आप हमें हुक्म दें; और उस समय राजा ने अब्राम के लिए बहुत सारा सोना, चांदी और कीमती पत्थर, साथ ही मवेशी, नौकर-चाकर और नौकरानियां भेजीं; और राजा ने अब्राम को लाने का हुक्म दिया, और वह राजा के घर के आंगन में बैठ गया, और राजा ने उस रात अब्राम की बहुत तारीफ़ की।
23 और राजा सारै से बात करने के लिए उसके पास गया, और उसे छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, तभी स्वर्गदूत ने उसे ज़ोर से मारा, और वह डर गया और उसने सारै तक पहुँचने से खुद को रोक लिया।
24 और जब राजा सारै के पास पहुँचा, तो स्वर्गदूत ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया, और पूरी रात उसके साथ ऐसा ही करता रहा, और राजा डर गया।
25 और उस रात स्वर्गदूत ने सारै के कारण राजा के सभी सेवकों और उसके पूरे घराने को बहुत मारा, और उस रात फिरौन के घराने के लोगों में बड़ा शोक हुआ।
26 फिरौन ने अपने साथ हुई मुसीबत को देखकर कहा, "ज़रूर इसी औरत की वजह से मेरे साथ ऐसा हुआ है।" फिर वह उससे कुछ दूर हो गया और उससे अच्छी बातें कहने लगा।
27 तब राजा ने सारै से कहा, "कृपया मुझे उस आदमी के बारे में बता जिसके साथ तुम यहाँ आई हो।" सारै ने कहा, "यह आदमी मेरा पति है, और मैंने तुमसे कहा था कि यह मेरा भाई है, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं तुम उसे गलत काम करके मार न डालो।"
28 और राजा सारै से दूर हो गया, और यहोवा के दूत की मुसीबतें उस पर और उसके घराने पर से खत्म हो गईं; और फिरौन जान गया कि सारै की वजह से उस पर मुसीबत आई है, और राजा इस बात से बहुत हैरान हुआ।
29 सुबह राजा ने अब्राम को बुलाया और उससे कहा, "तूने मेरे साथ यह क्या किया है? तूने क्यों कहा कि वह मेरी बहन है, जिसके लिए मैंने उसे अपनी पत्नी बनाया था, और इसलिए मुझ पर और मेरे घराने पर यह बड़ी मुसीबत आ गई है।"
30 इसलिए अब यह तुम्हारी पत्नी है, इसे लेकर हमारे देश से चले जाओ, नहीं तो हम सब इसकी वजह से मर जाएँगे। फिरौन ने अब्राम को देने के लिए और जानवर, नौकर-चाकर, और सोना-चाँदी ले ली, और उसे उसकी पत्नी सारै लौटा दी।
31 और राजा ने एक लड़की ली, जो उसकी रखैलों से पैदा हुई थी, और उसे सारै को दासी बनाकर दे दिया।
32 तब राजा ने अपनी बेटी से कहा, "बेटी, इस आदमी के घर में दासी बनकर रहना तेरे लिए मेरे घर की मालकिन बनने से अच्छा है, क्योंकि इस औरत की वजह से हम पर जो मुसीबतें आई हैं, वे सब देख चुके हैं।"
33 तब अब्राम उठा, और वह और उसका सारा सामान मिस्र से चला गया; और फिरौन ने अपने कुछ आदमियों को उसके और उसके साथ जाने वाले सभी लोगों के साथ जाने का आदेश दिया।
34 और अब्राम कनान देश में उसी जगह लौट आया जहाँ उसने वेदी बनाई थी, जहाँ उसने पहले अपना तंबू लगाया था।
35 और अब्राम के भाई हारान के बेटे लूत के पास बहुत सारे मवेशी, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और तंबू थे, क्योंकि अब्राम की वजह से यहोवा ने उन पर बहुत मेहरबानी की थी।
36 और जब अब्राम उस देश में रहता था, तो लूत के चरवाहों ने अब्राम के चरवाहों से झगड़ा किया, क्योंकि उनकी ज़मीन इतनी ज़्यादा थी कि वे उस देश में एक साथ नहीं रह सकते थे, और उनके मवेशियों की वजह से ज़मीन उन्हें सह नहीं सकती थी।
37 और जब अब्राम के चरवाहे अपने झुंड को चराने जाते थे, तो वे उस देश के लोगों के खेतों में नहीं जाते थे, लेकिन लूत के

चरवाहों के जानवर ऐसा नहीं करते थे, क्योंकि उन्हें उस देश के लोगों के खेतों में चरने दिया जाता था।
38 और देश के लोग यह घटना रोज़ देखते थे, और वे अब्राम के पास आकर लूत के चरवाहों के कारण उससे झगड़ा करने लगे।
39 अब्राम ने लूत से कहा, "तुम मेरे साथ ऐसा क्या कर रहे हो कि इस देश के लोग मुझे नीचा दिखा रहे हैं, कि तुम अपने चरवाहे को दूसरे लोगों के खेतों में अपने जानवर चराने का हुक्म दे रहे हो? क्या तुम नहीं जानते कि मैं इस देश में कनान के लोगों के बीच एक अजनबी हूँ, और तुम मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो?"
40 इस बात पर अब्राम रोज़ लूत से झगड़ा करता था, लेकिन लूत अब्राम की बात नहीं सुनता था, और वह ऐसा ही करता रहा। और उस देश के रहने वालों ने आकर अब्राम को यह बात बता दी।
41 अब्राम ने लूत से कहा, "तुम कब तक इस देश के लोगों के लिए मेरे लिए ठोकर का कारण बने रहोगे? अब मैं तुमसे विनती करता हूँ कि हमारे बीच और झगड़ा न हो, क्योंकि हम रिश्तेदार हैं।"
42 लेकिन मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि तुम मुझसे अलग हो जाओ, जाओ और एक ऐसी जगह चुनो जहाँ तुम अपने जानवरों और अपने सभी सामान के साथ रह सको, लेकिन तुम और तुम्हारा घराना मुझसे दूर रहो।
43 और मेरे पास से जाते हुए मत डर, क्योंकि अगर कोई तेरा कुछ बिगाड़े, तो मुझे बता देना, और मैं उससे तेरा बदला लूंगा, बस तू मेरे पास से चला जा।
44 जब अब्राम ने लूत से ये सारी बातें कहीं, तो लूत उठा और उसने अपनी आँखें यरदन के मैदान की ओर उठाईं।
45 और उसने देखा कि यह पूरी जगह पानी से भरी हुई थी, और इंसानों के लिए अच्छी थी, साथ ही मवेशियों के लिए भी चारागाह थी।
46 और लूत अब्राम के पास से उस जगह गया, और वहाँ अपना तंबू लगाया, और वह सदोम में रहने लगा, और वे एक दूसरे से अलग हो गए।
47 अब्राम हेब्रोन के मम्रे के मैदान में रहने लगा, और उसने वहीं अपना तंबू लगाया, और अब्राम कई सालों तक उसी जगह पर रहा।

अध्याय 16

1 उस समय एलाम के राजा कदोर्लाओमेर ने आस-पास के सभी राजाओं के पास, शिनार के राजा निम्रोद के पास, जो उस समय उसके अधिकार में था, और गोयम के राजा तिदाल के पास, और एलासार के राजा अर्योक के पास, जिनके साथ उसने एक वादा किया था, यह कहकर संदेश भेजा, "मेरे पास आओ और मेरी मदद करो, ताकि हम सदोम के सभी शहरों और उनके निवासियों को हरा सकें, क्योंकि उन्होंने पिछले तेरह सालों से मेरे खिलाफ बगावत की है।"
2 और ये चारों राजा अपने सारे कैंप, यानी करीब आठ लाख आदमियों के साथ ऊपर चढ़ गए, और जैसे थे वैसे ही चले, और अपने रास्ते में जो भी आदमी मिला, उसे मार डाला।
3 और सदोम और अमोरा के पाँचों राजा, अदमा का राजा शिनाब, ज़ेबोयम का राजा शेमेबेर, सदोम का राजा बेरा, अमोरा का राजा बेरशा, और सोअर का राजा बेला, उनसे मिलने के लिए निकले, और वे सब सिद्दीम की घाटी में एक साथ इकट्ठा हुए।
4 और इन नौ राजाओं ने सिद्दीम घाटी में युद्ध किया; और सदोम और अमोरा के राजा एलाम के राजाओं से हार गए।
5 और सिद्दीम की घाटी चूने के गड्ढों से भरी हुई थी और एलाम के राजाओं ने सदोम के राजाओं का पीछा किया, और सदोम के राजा अपने कैंपों के साथ भाग गए और चूने के गड्ढों में गिर गए, और जो कुछ बचा वह सुरक्षा के लिए पहाड़ पर चला गया, और एलाम के पाँचों राजा उनके पीछे आए और सदोम के फाटकों तक उनका पीछा किया, और उन्होंने सदोम में जो कुछ भी था, सब ले लिया।
6 और उन्होंने सदोम और अमोरा के सभी शहरों को लूट लिया, और वे अब्राम के भाई के बेटे लूत और उसकी संपत्ति को भी ले गए, और उन्होंने सदोम के शहरों का सारा सामान ज़ब्त कर लिया, और वे चले गए; और अब्राम के नौकर यूनिक ने, जो लड़ाई में था, यह देखा, और अब्राम को सब कुछ बताया कि राजाओं ने सदोम के शहरों के साथ क्या किया था, और लूत को उनके द्वारा बंदी बना लिया गया था।
7 और अब्राम ने यह सुना, और वह अपने साथ के करीब तीन सौ अठारह आदमियों के साथ उठा, और उसने उसी रात उन राजाओं का पीछा किया और उन्हें मार डाला, और वे सब अब्राम और उसके आदमियों के सामने गिर पड़े, और चारों राजाओं के अलावा कोई नहीं बचा जो भाग गए, और वे सब अपने-अपने रास्ते चले गए।
8 और अब्राम ने सदोम की सारी जायदाद वापस ले ली, और उसने लूत और उसकी जायदाद, उसकी पत्नियों, बच्चों और उसकी सारी चीज़ों को भी वापस ले लिया, ताकि लूत को किसी चीज़ की कमी न हो।
9 और जब वह इन राजाओं को मारकर लौटा, तो वह और उसके आदमी सिद्दीम घाटी से गुज़रे जहाँ राजाओं ने आपस में लड़ाई की थी।
10 और सदोम का राजा बेरा और उसके साथ के बाकी आदमी, उन चूने के गड्ढों से बाहर निकले जिनमें वे गिर गए थे, अब्राम और उसके आदमियों से मिलने के लिए।
11 और यरूशलेम का राजा अदोनिजेडेक, जो शेम भी कहलाता था, अपने आदमियों के साथ अब्राम और उसके लोगों से मिलने के लिए रोटी और दाखमधु लेकर निकला, और वे मेलेक की घाटी में एक साथ रहे।
12 और अदोनीज़ेदेक ने अब्राम को आशीर्वाद दिया, और अब्राम ने उसे अपने दुश्मनों की लूट से जो कुछ लाया था, उसका दसवां हिस्सा दिया, क्योंकि अदोनीज़ेदेक परमेश्वर के सामने एक पुजारी था।
13 और सदोम और अमोरा के सभी राजा जो वहाँ थे, अपने सेवकों के साथ अब्राम के पास आए और उससे विनती की कि वह उनके सेवकों को, जिन्हें उसने बंदी बनाया था, लौटा दे, और सारी जायदाद अपने पास रख ले।
14 और अब्राम ने सदोम के राजाओं को जवाब दिया, "यहोवा की ज़िंदगी की कसम, जिसने आसमान और धरती को बनाया, और जिसने मेरी जान को सब दुखों से बचाया, और जिसने आज मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ाकर मेरे हाथ में कर दिया, मैं तुम्हारी कोई चीज़ नहीं लूँगा, ताकि तुम कल यह कहकर घमंड न करो कि अब्राम हमारी बचाई हुई ज़मीन से अमीर हुआ है।"

15 क्योंकि मेरे परमेश्वर यहोवा, जिस पर मैं भरोसा करता हूँ, ने मुझसे कहा है, कि तुझे किसी बात की कमी न होगी, क्योंकि मैं तेरे हाथ के सब कामों में तुझे आशीष दूंगा।
16 और अब देखो, यह तुम्हारा सब कुछ है, इसे ले लो और जाओ; यहोवा की शपथ, मैं तुमसे एक भी जीवित प्राणी का एक जूता या धागा तक नहीं लूंगा, सिवाय उन लोगों के खाने के खर्च के जो मेरे साथ लड़ाई में गए थे, और उन आदमियों के हिस्से जो मेरे साथ गए थे, अनार, अश्कोल, और मम्रे, वे और उनके आदमी, और वे भी जो सामान की रखवाली करने के लिए रह गए थे, वे लूट का अपना हिस्सा लेंगे।
17 और सदोम के राजाओं ने अब्राम को उसकी कही हर बात के अनुसार दिया, और उससे ज़ोर डाला कि वह जो चाहे ले ले, लेकिन उसने नहीं लिया।
18 और उसने सदोम के राजाओं और उनके बाकी आदमियों को भेज दिया, और उन्हें लूत के बारे में आदेश दिया, और वे अपने-अपने स्थानों पर चले गए।
19 और उसने अपने भाई के बेटे लूत को भी उसकी जायदाद के साथ भेज दिया, और वह उनके साथ चला गया। लूत अपने घर, सदोम को लौट गया, और अब्राम और उसके लोग मम्रे के मैदानों में, जो हेब्रोन में है, अपने घर लौट आए।
20 उस समय प्रभु फिर से हेब्रोन में अब्राम के सामने आए, और उन्होंने उससे कहा, डरो मत, तुम्हारा इनाम मेरे सामने बहुत बड़ा है, क्योंकि मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूंगा, जब तक मैं तुम्हें गुणा न कर दूं, और तुम्हें आशीर्वाद न दे दूं और तुम्हारे वंश को आकाश के तारों जैसा न बना दूं, जिन्हें मापा या गिना नहीं जा सकता।
21 और मैं तेरे वंश को ये सारी ज़मीनें दूँगा जिन्हें तू अपनी आँखों से देखता है, मैं उन्हें हमेशा के लिए विरासत में दूँगा, बस इतना करना कि मज़बूत बनो और डरो मत, मेरे सामने चलो और सही बनो।
22 और अब्राम की उम्र के अठहत्तरवें साल में, पेलेग का बेटा रू मर गया, और रू की कुल उम्र दो सौ उनतीस साल की हुई, और वह मर गया।
23 और उन दिनों में हारान की बेटी सारै, जो अब्राम की पत्नी थी, बांझ थी; उसके अब्राम को न तो बेटा हुआ और न बेटी।
24 जब उसने देखा कि उसके कोई बच्चा नहीं है, तो उसने अपनी दासी हागार को, जिसे फिरौन ने उसे दिया था, अपने पति अब्राम को पत्नी के रूप में दे दिया।
25 क्योंकि हागार ने सारै के सारे तौर-तरीके सीख लिए थे, जैसे सारै ने उसे सिखाए थे, और वह उसके अच्छे तौर-तरीकों पर चलने में किसी भी तरह से पीछे नहीं हटी।
26 और सारै ने अब्राम से कहा, "देख, मेरी दासी हागार यहाँ है; उसके पास जा, वह मेरे घुटनों पर बच्चे को जन्म देगी, और मैं भी उसके द्वारा बच्चे को जन्म दूँगी।"
27 और जब अब्राम कनान देश में दस साल रहा, जो अब्राम की ज़िंदगी का 85वां साल था, तो सारै ने उसे हागार दे दी।
28 अब्राम ने अपनी पत्नी सारै की बात मानकर अपनी दासी हागार को साथ लिया और अब्राम उसके पास गया और वह गर्भवती हो गई।
29 और जब हागार ने देखा कि वह प्रेग्नेंट हो गई है, तो वह बहुत खुश हुई, और उसकी मालकिन उसकी नज़रों में नीची हो गई, और उसने मन में कहा, यह तो हो सकता है कि मैं अपनी मालकिन सारै से भगवान के सामने बेहतर हूँ, क्योंकि जितने दिन मेरी मालकिन मेरे मालिक के साथ रही, वह प्रेग्नेंट नहीं हुई, लेकिन मुझे भगवान ने इतने कम समय में प्रेग्नेंट कर दिया है।
30 और जब सारै ने देखा कि हागार अब्राम से प्रेग्नेंट हो गई है, तो सारै को अपनी दासी से जलन हुई, और सारै ने मन में कहा, यह तो पक्का है कि वह मुझसे बेहतर होगी।
31 तब सारै ने अब्राम से कहा, "मेरा गुनाह तुम पर हो, क्योंकि जब तुमने बच्चों के लिए यहोवा से प्रार्थना की थी, तो तुमने मेरे लिए प्रार्थना क्यों नहीं की कि यहोवा मुझे तुमसे संतान दे?"
32 और जब मैं तेरे सामने हागार से बात करता हूँ, तो वह मेरी बातों को तुच्छ समझती है, क्योंकि वह गर्भवती है, और तू उससे कुछ नहीं कहता; जो कुछ तूने मेरे साथ किया है, उसके लिए प्रभु मेरे और तेरे बीच न्याय करे।
33 तब अब्राम ने सारै से कहा, "देख, तेरी दासी तेरे हाथ में है, जैसा तुझे अच्छा लगे वैसा ही उसके साथ कर।" तब सारै ने उसे दुख दिया, और हागार उसके पास से जंगल में भाग गई।
34 और प्रभु के एक दूत ने उसे उसी जगह, जहाँ वह भाग गई थी, एक कुएँ के पास पाया, और उससे कहा, डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे वंश को बढ़ाऊँगा, क्योंकि तुम एक बेटे को जन्म दोगी और उसका नाम इश्माएल रखना; अब अपनी मालकिन सारै के पास लौट जाओ, और उसके अधीन रहो।
35 और हागार ने उस कुएं की जगह का नाम बेर-लहै-रोई रखा, यह कादेश और बेरेद के जंगल के बीच में है।
36 उस समय हागार अपने मालिक के घर लौट गई, और कुछ दिनों के आखिर में हागार ने अब्राम को एक बेटा दिया, और अब्राम ने उसका नाम इश्माएल रखा; और जब अब्राम ने उसे जन्म दिया तब वह छियासी साल का था।

अध्याय 17

1 और उन दिनों में, अब्राम की ज़िंदगी के 91वें साल में, चित्तिम के बच्चों ने तूबल के बच्चों से लड़ाई की, क्योंकि जब भगवान ने इंसानों को धरती पर बिखेर दिया था, तो चित्तिम के बच्चे कैनोपिया के मैदान में जाकर बस गए, और उन्होंने वहाँ अपने लिए शहर बनाए और तिब्रू नदी के किनारे रहने लगे।
2 और तूबल के बच्चे तुस्काना में रहने लगे, और उनकी सीमा तिब्रू नदी तक पहुँच गई, और तूबल के बच्चों ने तुस्काना में एक शहर बसाया, और उन्होंने अपने पिता तूबल के बेटे सबीना के नाम पर उसका नाम सबीना रखा, और वे आज तक वहीं रहते हैं।
3 और उसी समय चित्तिम के लोगों ने तूबल के लोगों से लड़ाई की, और तूबल के लोग चित्तिम के लोगों से हार गए, और चित्तिम के लोगों ने तूबल के लोगों में से तीन सौ सत्तर आदमियों को मार डाला।
4 उस समय तूबल के बच्चों ने चित्तिम के बच्चों से कसम खाई, कि तुम हमारे बीच शादी नहीं करोगे, और कोई भी आदमी अपनी बेटी चित्तिम के किसी बेटे को नहीं देगा।
5 क्योंकि उन दिनों तूबल की सभी बेटियाँ सुंदर थीं, क्योंकि उस समय पूरी धरती पर तूबल की बेटियों जितनी सुंदर कोई औरत नहीं थी।
6 और जो लोग औरतों की खूबसूरती से खुश होते थे, वे सब तूबल की बेटियों के पास जाकर उनसे शादी कर लेते थे, और जो

आदमी, राजा और राजकुमार औरतों की खूबसूरती से बहुत खुश होते थे, वे भी उन दिनों तूबल की बेटियों से शादी कर लेते थे।
7 और जब तूबल के बच्चों ने चित्तिम के बच्चों से कसम खाई कि वे अपनी बेटियों को उन्हें ब्याहने के लिए नहीं देंगे, तो तीन साल बाद चित्तिम के बच्चों में से लगभग बीस आदमी तूबल की कुछ बेटियों को लेने गए, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिली।
8 क्योंकि तूबल के बच्चों ने उनसे शादी न करने की कसमें पूरी कीं, और उन्होंने अपनी कसमें नहीं तोड़ीं।
9 और फसल के दिनों में जब तूबल के लोग अपनी फसल काटने के लिए खेतों में गए, तो चित्तिम के जवान लड़के इकट्ठा होकर सबीना शहर गए, और हर आदमी तूबल की बेटियों में से एक लड़की को लेकर अपने शहरों में आ गया।
10 और तूबल के लोगों ने यह सुना और उनसे लड़ने गए, लेकिन वे उन पर जीत नहीं पाए, क्योंकि पहाड़ उनसे बहुत ऊँचा था, और जब उन्होंने देखा कि वे उन पर जीत नहीं सकते, तो वे अपने देश लौट गए।
11 और साल के आखिर में तूबल के लोग गए और अपने पास के शहरों से करीब दस हज़ार आदमियों को काम पर रखा, और वे चित्तिम के लोगों से लड़ने चले गए।
12 और तूबल के लोग चित्तिम के लोगों से लड़ने गए, ताकि उनकी ज़मीन को तबाह कर दें और उन्हें परेशान कर दें। इस लड़ाई में तूबल के लोग चित्तिम के लोगों पर हावी हो गए। चित्तिम के लोगों ने यह देखकर कि वे बहुत परेशान हैं, तूबल की बेटियों से पैदा हुए अपने बच्चों को तूबल के लोगों की नज़रों के सामने खड़ी दीवार पर खड़ा कर दिया।
13 और चित्तिम के बच्चों ने उनसे कहा, "क्या तुम अपने बेटे-बेटियों से लड़ने आए हो? और क्या हम उस समय से लेकर अब तक तुम्हारे मांस और हड्डियों के समान नहीं समझे गए?"
14 जब तूबल के लोगों ने यह सुना तो उन्होंने चित्तिम के लोगों से लड़ना छोड़ दिया और चले गए।
15 और वे अपने शहरों को लौट गए, और उस समय चित्तिम के लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने समुद्र के किनारे दो शहर बनाए, और एक का नाम पुर्तु और दूसरे का नाम अरिज़ा रखा।
16 उस समय तेराह का बेटा अब्राम निन्यानवे साल का था।
17 उस समय प्रभु ने उसे दर्शन दिया और उससे कहा, "मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा बाँधूँगा, और मैं तुम्हारे वंश को बहुत बढ़ाऊँगा, और जो वाचा मैं अपने और तुम्हारे बीच बाँधता हूँ वह यह है कि हर लड़के का खतना किया जाए, तुम और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश का।"
18 आठ दिन की उम्र में उसका खतना किया जाएगा, और यह करार तुम्हारे शरीर में हमेशा के लिए करार बन जाएगा।
19 इसलिए अब तेरा नाम अब्राम नहीं बल्कि अब्राहम होगा, और तेरी पत्नी का नाम सारै नहीं बल्कि सारा होगा।
20 क्योंकि मैं तुम दोनों को आशीर्वाद दूंगा, और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश को इतना बढ़ाऊंगा कि तुम एक बड़ी जाति बनोगे, और तुम्हारे वंश में राजा पैदा होंगे।

अध्याय 18

1 तब अब्राहम उठा और उसने वह सब किया जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा था; और उसने अपने घर के आदमियों को और उन लोगों को जिन्हें उसने अपने पैसे से खरीदा था, ले जाकर उनका खतना किया, जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी।
2 और ऐसा कोई नहीं बचा जिसका उसने खतना न किया हो, और अब्राहम और उसके बेटे इश्माएल का खतना उनकी चमड़ी के मांस में किया गया; इश्माएल की उम्र तेरह साल थी जब उसका खतना उसकी चमड़ी के मांस में किया गया।
3 और तीसरे दिन अब्राहम अपने तंबू से बाहर निकला और दरवाज़े पर बैठ गया ताकि अपने शरीर में दर्द के दौरान धूप की गर्मी का मज़ा ले सके।
4 और प्रभु मम्रे के मैदान में उसके सामने आए, और अपने तीन सेवा करने वाले स्वर्गदूतों को उससे मिलने के लिए भेजा, और वह तंबू के दरवाज़े पर बैठा था, और उसने अपनी आँखें उठाकर देखा, और देखो, तीन आदमी दूर से आ रहे थे, और वह उठा और उनसे मिलने के लिए दौड़ा, और उसने उन्हें प्रणाम किया और उन्हें अपने घर ले आया।
5 और उसने उनसे कहा, "अगर अब तुम पर मेरी कृपा हो गई है, तो अंदर आकर एक टुकड़ा रोटी खा लो।" तब उसने उन्हें दबाया, और वे अंदर आए, और उसने उन्हें पानी दिया, और उन्होंने उनके पैर धोए, और उसने उन्हें तंबू के दरवाज़े पर एक पेड़ के नीचे बिठा दिया।
6 तब अब्राहम दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लिया, और उसे जल्दी से मारकर अपने नौकर एलीएजेर को दे दिया, ताकि वह उसे पकाए।
7 तब अब्राहम सारा के पास तंबू में आया, और उससे कहा, "जल्दी से तीन सेर बढ़िया आटा तैयार करो, उसे गूंधकर मांस वाले बर्तन को ढकने के लिए रोटियां बनाओ," और उसने वैसा ही किया।
8 अब्राहम जल्दी से उनके सामने मक्खन, दूध, बीफ़ और मटन ले आया, और बछड़े का मांस पूरी तरह पकने से पहले उन्हें खाने के लिए दिया, और उन्होंने खाया।
9 जब वे खाना खा चुके, तो उनमें से एक ने उससे कहा, "मैं तुम्हारे जीवन के समय पर तुम्हारे पास लौट आऊँगा, और तुम्हारी पत्नी सारा के एक बेटा होगा।"
10 इसके बाद वे लोग वहाँ से चले गए और उन जगहों पर चले गए जहाँ उन्हें भेजा गया था।
11 उन दिनों सदोम और अमोरा और उन पाँचों शहरों के सभी लोग यहोवा के खिलाफ़ बहुत बुरे और पापी थे। वे अपने घिनौने कामों से यहोवा को गुस्सा दिलाते थे। वे यहोवा के सामने घिनौने और बेइज़्ज़ती करने वाले बन गए थे। उन दिनों उनकी बुराई और जुर्म यहोवा के सामने बहुत बढ़ गए थे।
12 और उनके देश में एक बहुत बड़ी घाटी थी, जो लगभग आधे दिन की पैदल दूरी पर थी, और उसमें पानी के झरने थे और पानी के चारों ओर बहुत सारी घास-फूस थी।
13 और सदोम और अमोरा के सभी लोग साल में चार बार अपनी पत्नियों, बच्चों और अपने सभी सामान के साथ वहाँ जाते थे, और वहाँ डफली बजाकर और नाचकर खुशियाँ मनाते थे।
14 और खुशी के समय वे सब उठकर अपने पड़ोसियों की पत्नियों को पकड़ लेते थे, और कुछ तो अपने पड़ोसियों की कुंवारी बेटियों को भी पकड़ लेते थे, और उनके साथ मज़े करते थे, और हर आदमी अपनी पत्नी और बेटी को अपने पड़ोसी के हाथों में देखकर एक शब्द भी नहीं कहता था।

15 और वे सुबह से रात तक ऐसा ही करते थे, और फिर हर आदमी अपने घर और हर औरत अपने डेरे पर लौट जाती थी; और वे साल में हमेशा चार बार ऐसा करते थे।
16 और जब कोई अजनबी उनके शहरों में आता और अपना सामान वहाँ बेचने के लिए खरीदता, तो उन शहरों के लोग इकट्ठा हो जाते, आदमी, औरतें, बच्चे, जवान और बूढ़े, और उस आदमी के पास जाकर उसका सामान ज़बरदस्ती ले लेते, और हर आदमी को थोड़ा-थोड़ा देते, जब तक कि मालिक का सारा सामान खत्म न हो जाए जो वह देश में लाया था।
17 और अगर माल का मालिक उनसे झगड़ा करता और कहता, 'तुमने मेरे साथ यह क्या किया है?' तो वे एक-एक करके उसके पास आते और हर कोई उसे वह थोड़ा-सा दिखाता जो उसने लिया था और उसे चिढ़ाते हुए कहता, 'मैंने तो बस वही थोड़ा-सा लिया जो तुमने मुझे दिया था।' और जब वह उन सबसे यह सुनता, तो वह दुख और मन की कड़वाहट के साथ उनके पास से उठकर चला जाता, और वे सब उठकर उसके पीछे जाते और उसे बड़े शोर-शराबे और शोर-शराबे के साथ शहर से बाहर निकाल देते।
18 और एलाम देश का एक आदमी था जो अपने गधे पर बैठा आराम से सड़क पर जा रहा था, जिसने अलग-अलग रंगों का एक बढ़िया लबादा ओढ़ रखा था, और लबादा गधे पर एक रस्सी से बंधा हुआ था।
19 और वह आदमी शाम को सूरज डूबने पर सदोम की सड़क से गुज़र रहा था, और वह रात बिताने के लिए वहीं रुका, लेकिन किसी ने उसे अपने घर में नहीं आने दिया; और उस समय सदोम में एक बुरा और शरारती आदमी था, जो बुरे काम करने में माहिर था, और उसका नाम हेदाद था।
20 और उसने अपनी आँखें उठाकर शहर की सड़क पर एक यात्री को देखा, और उसके पास आकर पूछा, तू कहाँ से आया है और कहाँ जा रहा है?
21 उस आदमी ने उससे कहा, "मैं हेब्रोन से एलाम जा रहा हूँ, जहाँ मेरा घर है। जैसे ही मैं वहाँ से गुज़रा, सूरज डूब गया और किसी ने मुझे अपने घर में आने नहीं दिया, हालाँकि मेरे पास रोटी, पानी और अपने गधे के लिए भूसा और चारा था, और मेरे पास किसी चीज़ की कमी नहीं थी।"
22 हेदाद ने जवाब दिया, "तुम्हें जो कुछ भी चाहिए, मैं तुम्हें दे दूँगा, लेकिन तुम्हें पूरी रात सड़क पर नहीं रहना पड़ेगा।"
23 और हेदाद उसे अपने घर ले गया, और उसने गधे से रस्सी समेत चादर उतार दी, और उन्हें अपने घर ले आया, और उसने गधे को भूसा और चारा दिया, जबकि यात्री हेदाद के घर में खाता-पीता रहा, और वह उस रात वहीं रहा।
24 और सुबह यात्री अपना सफ़र जारी रखने के लिए जल्दी उठा, जब हेदाद ने उससे कहा, रुको, एक टुकड़ा रोटी खाकर अपना दिल शांत करो और फिर जाओ, और उस आदमी ने वैसा ही किया; और वह उसके साथ रहा, और जब वह आदमी जाने के लिए उठा, तो वे दोनों दिन में साथ में खाते-पीते रहे।
25 और हेदाद ने उससे कहा, "देखो, अब दिन ढल रहा है, इसलिए अच्छा होगा कि तुम पूरी रात यहीं रुको ताकि तुम्हारे दिल को तसल्ली मिले।" उसने उस पर इतना ज़ोर दिया कि वह पूरी रात वहीं रुका रहा। दूसरे दिन जब वह जाने के लिए सुबह जल्दी उठा, तो हेदाद ने उससे ज़ोर देकर कहा, "एक टुकड़ा रोटी खाकर अपने दिल को तसल्ली दो और फिर जाओ।" वह दूसरे दिन भी उसके साथ रहा और खाया, और फिर वह आदमी अपना सफ़र जारी रखने के लिए उठ गया।
26 हेदाद ने उससे कहा, "देखो, अब दिन ढल रहा है, इसलिए मेरे साथ रहो और अपने दिल को तसल्ली दो और सुबह जल्दी उठकर चले जाओ।"
27 लेकिन वह आदमी रुका नहीं, बल्कि उठा और अपने गधे पर काठी कसी। जब वह अपने गधे पर काठी कस रहा था, तो हेदाद की पत्नी ने अपने पति से कहा, "देखो, यह आदमी दो दिन से हमारे साथ खा-पी रहा है और उसने हमें कुछ नहीं दिया, तो अब क्या वह हमें बिना कुछ दिए चला जाएगा?" हेदाद ने उससे कहा, "चुप हो जाओ।"
28 और उस आदमी ने जाने के लिए अपने गधे पर काठी कसी, और हेदाद से कहा कि वह उसे गधे पर बाँधने के लिए रस्सी और लबादा दे।
29 हेदाद ने उससे पूछा, "तुम क्या कहते हो?" उसने उससे कहा, "मेरे मालिक, मुझे वह डोरी और अलग-अलग रंगों का बना हुआ लबादा दीजिए, जिसे आपने अपने घर में इसकी देखभाल के लिए छिपाया था।"
30 और हेदाद ने उस आदमी से कहा, "तुम्हारे सपने का मतलब यह है, जो डोरी तुमने देखी है, उसका मतलब है कि तुम्हारी ज़िंदगी डोरी की तरह लंबी होगी, और हर तरह के रंगों से रंगा हुआ लबादा देखने का मतलब है कि तुम्हारे पास एक अंगूर का बाग होगा जिसमें तुम हर तरह के फल वाले पेड़ लगाओगे।"
31 तब यात्री ने जवाब दिया, "ऐसा नहीं है मेरे मालिक, क्योंकि जब मैंने तुम्हें रस्सी और अलग-अलग रंगों से बुना हुआ एक लबादा दिया था, तब मैं जाग रहा था, जिसे तुमने मेरे लिए गधे पर से उतारकर पहनाया था।" हेदाद ने जवाब दिया, "ज़रूर मैंने तुम्हें तुम्हारे सपने का मतलब बता दिया है और यह एक अच्छा सपना है, और इसका मतलब यह है।"
32 अब इंसान मुझे चार चाँदी के टुकड़े देते हैं, जो सपनों का मतलब बताने के लिए मेरा काम है, और मैं तुमसे सिर्फ़ तीन चाँदी के टुकड़े माँगता हूँ।
33 और वह आदमी हेदाद की बातों से बहुत गुस्सा हुआ, और फूट-फूट कर रोने लगा, और हेदाद को सदोम के जज सेराक के पास ले गया।
34 और उस आदमी ने जज सेराक के सामने अपनी बात रखी, तो हेदाद ने जवाब दिया, ऐसा नहीं है, बल्कि मामला ऐसा है; और जज ने यात्री से कहा, यह आदमी हेदाद तुमसे सच कह रहा है, क्योंकि वह सपनों का सही मतलब बताने के लिए शहरों में मशहूर है।
35 और जज की बात सुनकर वह आदमी चिल्लाया, "ऐसा नहीं है मेरे मालिक, क्योंकि उसी दिन मैंने उसे गधे पर रस्सी और लबादा दिया था, ताकि वह उसे अपने घर में रखे।" और वे दोनों जज के सामने बहस करने लगे, एक ने कहा, "बात ऐसी ही थी," और दूसरे ने कुछ और कहा।
36 और हेदाद ने उस आदमी से कहा, "मुझे चार चाँदी के सिक्के दो, जो मैं सपनों का मतलब बताने के लिए लूँगा; मैं कोई छूट नहीं दूँगा; और मेरे घर में तुमने जो चार बार खाना खाया, उसका खर्च भी मुझे दो।"
37 और उस आदमी ने हेदाद से कहा, "मैंने तेरे घर में जो खाया, उसका पूरा दाम तुझे दे दूँगा, बस मुझे वह रस्सी और चादर दे दे जो तूने अपने घर में छिपाई थी।"

38 और हेदाद ने जज के सामने उस आदमी से कहा, क्या मैंने तुम्हें तुम्हारे सपने का मतलब नहीं बताया था? रस्सी का मतलब है कि तुम्हारी उम्र रस्सी की तरह लंबी होगी, और लबादे का मतलब है कि तुम्हारे पास एक अंगूर का बाग होगा जिसमें तुम हर तरह के फलदार पेड़ लगाओगे।
39 तुम्हारे सपने का यही मतलब है, अब मुझे चार चांदी के सिक्के दे दो जो मैं हर्जाने के तौर पर मांगता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें कोई छूट नहीं दूँगा।
40 और वह आदमी हेदाद की बातों पर रो पड़ा और वे दोनों जज के सामने झगड़ने लगे, और जज ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, जिन्होंने उन्हें घर से निकाल दिया।
41 जब सदोम के लोगों ने उनकी बात सुनी, तो वे जज से झगड़ते हुए चले गए। वे उनके आस-पास जमा हो गए और उस अजनबी के ख़िलाफ़ चिल्लाने लगे, और उसे शहर से तेज़ी से भगा दिया।
42 और वह आदमी दुख के साथ अपने गधे पर सवार होकर, रोता हुआ, दुख मनाता हुआ अपनी यात्रा जारी रखता रहा।
43 और जब वह जा रहा था, तो वह सदोम के भ्रष्ट शहर में उसके साथ जो हुआ था, उस पर रो रहा था।

अध्याय 19

1 और सदोम के चार शहरों के लिए चार जज थे, और उनके नाम ये थे: सदोम शहर में सेराक, अमोरा में शर्कद, अदमा में ज़बनाक, और ज़ेबोयीम में मेनोन।
2 और अब्राहम के सेवक एलीएजेर ने उनके अलग-अलग नाम रखे, और उसने सेराक का नाम बदलकर शकरा, शर्कद का नाम बदलकर शकरूरा, ज़ेबनाक का नाम बदलकर केज़ोबिम और मेनोन का नाम बदलकर मत्ज़लोदिन रख दिया।
3 और सदोम और अमोरा के लोगों ने अपने चार जजों की मर्ज़ी से शहरों की सड़कों पर बिस्तर लगवा दिए थे, और अगर कोई आदमी इन जगहों पर आता था, तो वे उसे पकड़कर अपने बिस्तरों में से किसी एक पर ले आते थे, और ज़बरदस्ती उसे उन पर लिटा देते थे।
4 और जब वह लेटता, तो तीन आदमी उसके सिरहाने और तीन उसके पैरों के पास खड़े होकर बिस्तर की लंबाई नापते, और अगर वह आदमी बिस्तर से छोटा होता तो ये छह आदमी उसे दोनों सिरों से खींच लेते, और जब वह उन्हें पुकारता तो वे जवाब नहीं देते।
5 और अगर वह बिस्तर से लंबा होता तो वे बिस्तर के दोनों किनारों को एक-दूसरे के सिरों से तब तक खींचते रहते जब तक वह आदमी मौत के दरवाज़े तक न पहुँच जाए।
6 और अगर वह उन्हें पुकारता रहता, तो वे उसे जवाब देते, 'हमारे देश में आने वाले आदमी के साथ ऐसा ही किया जाएगा।'
7 जब लोगों ने सदोम के शहरों के लोगों की ये सब बातें सुनीं, तो वे वहाँ जाने से रुक गए।
8 और जब कोई गरीब आदमी उनके इलाके में आता, तो वे उसे सोना-चाँदी दे देते थे, और पूरे शहर में ऐलान करवा देते थे कि उसे खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा भी न दिया जाए, और अगर वह अजनबी कुछ दिन वहाँ रहता, और भूख से मर जाता, और उसे रोटी का एक टुकड़ा भी न मिलता, तो उसकी मौत पर शहर के सभी लोग आकर अपना सोना-चाँदी ले लेते थे जो उन्होंने उसे दिया था।
9 और जो लोग उसे दिया गया चाँदी या सोना पहचान सकते थे, उन्होंने उसे वापस ले लिया, और उसकी मौत पर उन्होंने उसके कपड़े भी उतार लिए, और वे उनके लिए लड़ने लगे, और जो अपने पड़ोसी पर हावी हो जाता था, वह उन्हें ले लेता था।
10 इसके बाद वे उसे ले जाकर रेगिस्तान में झाड़ियों के नीचे दफ़ना देते थे; और जो कोई उनके पास आता और उनके देश में मर जाता, उसके साथ वे हमेशा ऐसा ही करते थे।
11 और कुछ समय बाद सारा ने एलीएजेर को लूत से मिलने और उसका हालचाल पूछने के लिए सदोम भेजा।
12 तब एलीएजेर सदोम गया, और उसे सदोम का एक आदमी मिला जो किसी अजनबी से लड़ रहा था, और सदोम के उस आदमी ने उस बेचारे आदमी के सारे कपड़े उतार दिए और चला गया।
13 और इस गरीब आदमी ने एलीएजेर से रोते हुए विनती की कि सदोम के आदमी ने उसके साथ जो किया था, उसके लिए वह दया करे।
14 तब उसने उससे कहा, "तुम उस गरीब आदमी के साथ ऐसा क्यों करते हो जो तुम्हारे देश में आया है?"
15 तब सदोम के आदमी ने एलीएजेर से कहा, "क्या यह आदमी तेरा भाई है, या सदोम के लोगों ने आज तुझे जज बनाया है, जो तू इस आदमी के बारे में बोल रहा है?"
16 और एलीएजेर ने गरीब आदमी के कारण सदोम के आदमी से झगड़ा किया, और जब एलीएजेर सदोम के आदमी से गरीब आदमी के कपड़े वापस लेने के लिए पास गया, तो उसने जल्दी से एक पत्थर एलीएजेर के माथे पर मारा।
17 और एलीएजेर के माथे से बहुत खून बहने लगा, और जब उस आदमी ने खून देखा तो उसने एलीएजेर को पकड़ लिया और कहा, "तेरे माथे से जो खून बह रहा है, उसे हटाने के लिए मुझे मेहनताना दो, क्योंकि हमारे देश में यही रिवाज और कानून है।"
18 तब एलीएजेर ने उससे कहा, "तूने मुझे घायल किया है और मुझसे अपना किराया मांग रहा है; और एलीएजेर ने सदोम के आदमी की बातें नहीं सुनीं।"
19 और उस आदमी ने एलीएजेर को पकड़कर सदोम के जज शकरा के पास न्याय के लिए ले गया।
20 और उस आदमी ने जज से कहा, "मेरे मालिक, मैं आपसे विनती करता हूँ कि इस आदमी ने ऐसा किया है, कि मैंने इसे पत्थर मारा जिससे इसके माथे से खून बहने लगा, और यह मुझे मेरी तनख्वाह देने को तैयार नहीं है।"
21 जज ने एलीएजेर से कहा, "यह आदमी तुमसे सच बोल रहा है, इसे इसकी मज़दूरी दो, क्योंकि हमारे देश में यही रिवाज है।" एलीएजेर ने जज की बातें सुनीं और उसने एक पत्थर उठाकर जज को मारा, और पत्थर उसके माथे पर लगा, और जज के माथे से बहुत खून बहने लगा। एलीएजेर ने कहा, "अगर तुम्हारे देश में यही रिवाज है तो इस आदमी को वह दो जो मुझे देना चाहिए था, क्योंकि यह तुम्हारा फैसला था, तुमने ही यह तय किया था।"
22 तब एलीएजेर ने सदोम के उस आदमी को जज के पास छोड़ दिया, और वह चला गया।
23 और जब एलाम के राजाओं ने सदोम के राजाओं से लड़ाई की, तो एलाम के राजाओं ने सदोम की सारी जायदाद पर कब्ज़ा कर लिया, और उन्होंने लूत को उसकी जायदाद के साथ बंदी बना लिया, और जब यह बात अब्राहम को पता चली तो वह गया

और एलाम के राजाओं से लड़ाई की, और उसने उनके हाथों से लूत की सारी जायदाद और सदोम की जायदाद वापस ले ली।
24 उस समय लूत की पत्नी ने एक बेटी को जन्म दिया, और उसने उसका नाम पल्तिथ रखा, यह कहकर कि परमेश्वर ने उसे और उसके पूरे घराने को एलाम के राजाओं से बचाया था; और लूत की बेटी पल्तिथ बड़ी हुई, और सदोम के एक आदमी ने उससे शादी कर ली।
25 और एक गरीब आदमी गुज़ारा करने के लिए शहर में आया, और वह कुछ दिन शहर में रहा, और सदोम के सभी लोगों ने अपने रिवाज के बारे में ऐलान करवाया कि इस आदमी को तब तक रोटी का एक टुकड़ा भी खाने को नहीं दिया जाएगा, जब तक वह ज़मीन पर मर न जाए, और उन्होंने वैसा ही किया।
26 और लूत की बेटी पल्तिथ ने इस आदमी को सड़कों पर भूखा पड़ा देखा, और कोई भी उसे ज़िंदा रखने के लिए कुछ नहीं दे रहा था, और वह मरने के करीब था।
27 और उस आदमी के कारण उसके मन में दया आ गई, और उसने उसे कई दिनों तक चुपके से रोटी खिलाई, और उस आदमी के मन में नई जान आ गई।
28 क्योंकि जब वह पानी भरने जाती थी, तो पानी के घड़े में रोटी डालती थी, और जब उस जगह पहुँचती जहाँ गरीब आदमी होता था, तो घड़े से रोटी निकालकर उसे खाने को देती थी; और उसने कई दिनों तक ऐसा ही किया।
29 और सदोम और अमोरा के सभी लोग हैरान थे कि यह आदमी इतने दिनों तक भूखा कैसे रह सकता है।
30 और उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "यह तो बस इतना हो सकता है कि वह खाता-पीता हो, क्योंकि कोई भी आदमी इतने दिनों तक भूखा नहीं रह सकता या इस आदमी की तरह ज़िंदा नहीं रह सकता, और उसका चेहरा भी नहीं बदलेगा; और तीन आदमी उस जगह छिप गए जहाँ वह गरीब आदमी रहता था, यह जानने के लिए कि उसे खाने के लिए रोटी कौन लाया है।"
31 और उस दिन लूत की बेटी पल्तिथ पानी भरने के लिए बाहर गई, और उसने अपने पानी के घड़े में रोटी डाली, और वह गरीब आदमी के घर पानी भरने गई, और उसने घड़े से रोटी निकालकर गरीब आदमी को दी और उसने खा ली।
32 और तीनों आदमियों ने देखा कि पल्तिथ ने उस गरीब आदमी के साथ क्या किया, और उन्होंने उससे कहा, "तो फिर तुमने ही उसे सहारा दिया है, और इसलिए वह भूखा नहीं मरा, न ही उसका रंग-रूप बदला और न ही वह बाकियों की तरह मरा।"
33 और वे तीनों आदमी उस जगह से बाहर निकले जहाँ वे छिपे हुए थे, और उन्होंने पल्तिथ को और उस गरीब आदमी के हाथ से रोटी छीन ली।
34 और वे पल्तिथ को पकड़कर अपने जजों के सामने लाए, और उनसे कहा, "उसने ऐसा ही किया, और उसी ने गरीब आदमी को रोटी दी, इसलिए वह इतने समय तक नहीं मरा; इसलिए अब हमें बताओ कि इस औरत को हमारे कानून तोड़ने की क्या सज़ा मिलनी चाहिए।"
35 और सदोम और अमोरा के लोग इकट्ठा हुए और शहर की सड़क पर आग जलाई, और उन्होंने उस औरत को पकड़कर आग में डाल दिया और वह जलकर राख हो गई।
36 और अदमा शहर में एक औरत थी जिसके साथ उन्होंने ऐसा ही किया।
37 एक यात्री अदमा शहर में आया ताकि पूरी रात वहीं रहे, और सुबह घर जाने का इरादा रखता हो। वह उस लड़की के पिता के घर के दरवाज़े के सामने बैठ गया, ताकि वहीं रहे, क्योंकि जब वह उस जगह पहुँचा तो सूरज डूब चुका था; और लड़की ने उसे घर के दरवाज़े पर बैठे देखा।
38 तब उसने उससे पीने के लिए पानी माँगा, और उसने उससे पूछा, तू कौन है? उसने उससे कहा, मैं आज रास्ते पर जा रहा था, और सूरज डूबने पर यहाँ पहुँचा, इसलिए मैं सारी रात यहीं रहूँगा, और सुबह जल्दी उठकर अपना सफ़र जारी रखूँगा।
39 और वह जवान औरत घर में गई और उस आदमी के लिए खाने-पीने के लिए रोटी और पानी ले आई।
40 और यह बात अदमा के लोगों को पता चली, और वे इकट्ठा हुए और उस लड़की को जजों के सामने ले गए, ताकि वे उसके इस काम के लिए उसे सज़ा दें।
41 तब जज ने कहा, "इस औरत को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए क्योंकि इसने हमारे कानून को तोड़ा है, और इसलिए उसके बारे में यह फ़ैसला है।"
42 और उन शहरों के लोग इकट्ठा हुए और उस लड़की को बाहर ले आए, और जज के कहने के मुताबिक उसके सिर से पैर तक शहद लगाया, और उसे मधुमक्खियों के झुंड के सामने खड़ा कर दिया जो उस समय अपने छत्तों में थीं, और मधुमक्खियां उस पर उड़कर आईं और उसे इतना डंक मारा कि उसका पूरा शरीर सूज गया।
43 और वह लड़की मधुमक्खियों की वजह से चिल्लाई, लेकिन किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया और न ही उस पर दया की, और उसकी चीखें आसमान तक पहुँच गईं।
44 और यहोवा को यह देखकर और सदोम के शहरों के सब कामों से गुस्सा आया, क्योंकि उनके पास बहुत सारा खाना था, और उनके बीच शांति थी, फिर भी वे गरीबों और ज़रूरतमंदों को खाना नहीं देते थे, और उन दिनों उनके बुरे काम और पाप यहोवा के सामने बहुत बढ़ गए थे।
45 और प्रभु ने उन दो स्वर्गदूतों को बुलाया जो अब्राहम के घर आए थे, ताकि सदोम और उसके शहरों को नष्ट कर दें।
46 और जब स्वर्गदूत खा-पी चुके, तो अब्राहम के तंबू के दरवाज़े से उठे और शाम को सदोम पहुँचे। उस समय लूत सदोम के दरवाज़े पर बैठा था। जब उसने उन्हें देखा, तो वह उनसे मिलने के लिए उठा और ज़मीन पर झुककर प्रणाम किया।
47 और उसने उन्हें बहुत दबाया और अपने घर ले आया, और उन्हें खाना दिया जो उन्होंने खाया, और वे सारी रात उसके घर में रहे।
48 तब स्वर्गदूतों ने लूत से कहा, उठो, और अपने सब लोगों के साथ इस जगह से चले जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम इस शहर के पाप में नष्ट हो जाओ, क्योंकि प्रभु इस जगह को नष्ट कर देगा।
49 और स्वर्गदूतों ने लूत और उसकी पत्नी और उसके बच्चों और उसके सभी सामान को पकड़ लिया, और उसे बाहर निकालकर शहरों के बाहर रख दिया।
50 तब उन्होंने लूत से कहा, अपनी जान बचाकर भागो, और वह अपने सब सामान समेत भाग गया।
51 तब यहोवा ने सदोम और अमोरा और इन सब शहरों पर स्वर्ग से गंधक और आग बरसाई।
52 और उसने इन शहरों को, पूरे मैदान को और शहरों के सभी निवासियों को, और ज़मीन पर उगने वाली चीज़ों को भी खत्म कर

दिया; और लूत की पत्नी अदो ने शहरों की तबाही देखने के लिए पीछे मुड़कर देखा, क्योंकि उसे अपनी बेटियों के कारण दया आ गई थी जो सदोम में रह गई थीं, क्योंकि वे उसके साथ नहीं गई थीं।
53 और जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो वह नमक का खंभा बन गई, और वह आज तक उसी जगह पर है।
54 और जो बैल उस जगह पर रोज़ खड़े रहते थे, वे नमक को अपने पैरों के सिरे तक चाट लेते थे, और सुबह वह फिर से उग आता था, और वे उसे आज तक चाटते हैं।
55 और लूत और उसकी दो बेटियाँ जो उसके साथ रह गईं, भागकर अदुल्लाम की गुफा में पहुँच गईं, और वे वहाँ कुछ समय तक रहे।
56 और अब्राहम सुबह-सुबह उठा, यह देखने के लिए कि सदोम के शहरों के साथ क्या किया गया है; और उसने देखा कि शहरों का धुआँ भट्टी के धुएँ की तरह उठ रहा है।
57 और लूत और उसकी दोनों बेटियाँ गुफा में ही रहीं, और उन्होंने अपने पिता को शराब पिलाई, और उसके साथ सोईं, क्योंकि उन्होंने कहा कि धरती पर कोई भी ऐसा आदमी नहीं है जो उनसे बच्चे पैदा कर सके, क्योंकि उन्हें लगा कि पूरी धरती खत्म हो गई है।
58 और वे दोनों अपने पिता के साथ सोईं, और गर्भवती हुईं और उनके बेटे हुए, और बड़ी बेटी ने अपने बेटे का नाम मोआब रखा, यह कहकर कि यह मेरे पिता से हुआ है; वही आज तक मोआबियों का पिता है।
59 और छोटी ने भी अपने बेटे का नाम बेनामी रखा; वही आज तक अम्मोन के बच्चों का पिता है।
60 इसके बाद लूत और उसकी दोनों बेटियाँ वहाँ से चले गए, और वह अपनी दोनों बेटियों और उनके बेटों के साथ यरदन के दूसरी तरफ रहने लगा। लूत के बेटे बड़े हुए, और उन्होंने कनान देश से जाकर पत्नियाँ ले लीं, और उनके बच्चे हुए और वे फलने-फूलने लगे और उनकी संख्या बढ़ने लगी।

अध्याय 20

1 उस समय अब्राहम ममरे के मैदान से चलकर पलिश्तियों के देश में गया, और गरार में रहने लगा; कनान देश में अब्राहम के रहने के पच्चीसवें साल में, और अब्राहम की ज़िंदगी के सौवें साल में, वह पलिश्तियों के देश में गरार पहुँचा।
2 और जब वे उस देश में दाखिल हुए, तो उसने अपनी पत्नी सारा से कहा, "जो कोई तुमसे पूछे, उससे कहना कि तुम मेरी बहन हो, ताकि हम उस देश के रहने वालों की बुराई से बच सकें।"
3 और जब अब्राहम पलिश्तियों के देश में रह रहा था, तो पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के सेवकों ने देखा कि सारा बहुत खूबसूरत है, और उन्होंने अब्राहम से उसके बारे में पूछा, और उसने कहा, वह मेरी बहन है।
4 तब अबीमेलेक के सेवकों ने अबीमेलेक के पास जाकर कहा, "कनान देश का एक आदमी इस देश में रहने आया है, और उसकी एक बहन है जो बहुत सुंदर है।"
5 और अबीमेलेक ने अपने सेवकों की बातें सुनीं, जिन्होंने सारा की तारीफ़ की थी, और अबीमेलेक ने अपने अधिकारियों को भेजा, और वे सारा को राजा के पास ले आए।
6 और सारा अबीमेलेक के घर आई, और राजा ने देखा कि सारा सुंदर है, और वह उसे बहुत पसंद आई।
7 तब वह उसके पास गया और उससे पूछा, वह आदमी कौन है जिसके साथ तुम हमारे देश में आई हो? और सारा ने जवाब दिया, वह मेरा भाई है, और हम कनान देश से आए हैं ताकि जहाँ भी जगह मिले, वहीं रहें।
8 और अबीमेलेक ने सारा से कहा, "देखो, मेरी ज़मीन तुम्हारे सामने है, अपने भाई को इस ज़मीन के किसी भी हिस्से में रख लो जो तुम्हें अच्छा लगे, और यह हमारा फ़र्ज़ होगा कि हम उसे इस देश के सभी लोगों से ऊपर रखें क्योंकि वह तुम्हारा भाई है।"
9 तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलवाया, और अब्राहम अबीमेलेक के पास गया।
10 और अबीमेलेक ने अब्राहम से कहा, "देखो, मैंने तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम्हारी बहन सारा के कारण तुम्हें वैसा ही सम्मान दिया जाएगा जैसा तुम चाहते हो।"
11 तब अब्राहम राजा के पास से चला गया, और राजा का दूत उसके पीछे चला।
12 जैसे शाम के समय, जब लोग आराम करने के लिए लेटते हैं, राजा अपनी गद्दी पर बैठा था, और उसे गहरी नींद आ गई, और वह गद्दी पर लेटा रहा और सुबह तक सोता रहा।
13 और उसने सपना देखा कि प्रभु का एक दूत हाथ में नंगी तलवार लिए उसके पास आया, और दूत अबीमेलेक के ऊपर खड़ा होकर उसे तलवार से मार डालना चाहता था, और राजा अपने सपने में डर गया, और दूत से कहा, मैंने तेरा क्या पाप किया है कि तू मुझे अपनी तलवार से मारने आया है?
14 तब स्वर्गदूत ने अबीमेलेक से कहा, "देख, तू उस औरत की वजह से मर रहा है जिसे तू कल रात अपने घर लाया था, क्योंकि वह शादीशुदा औरत है, अब्राहम की पत्नी जो तेरे घर आई थी; इसलिए अब उस आदमी को उसकी पत्नी लौटा दे, क्योंकि वह उसकी पत्नी है; और अगर तू उसे नहीं लौटाएगा, तो जान ले कि तू और तेरा सारा सामान ज़रूर मरेगा।"
15 और उस रात पलिश्तियों के देश में बहुत शोर मचा, और देश के रहने वालों ने एक आदमी को हाथ में नंगी तलवार लिए खड़ा देखा, और उसने देश के रहने वालों को तलवार से मारा, हाँ, वह उन्हें मारता रहा।
16 और उस रात यहोवा के दूत ने पलिश्तियों के पूरे देश पर हमला किया, और उस रात और अगली सुबह बहुत हंगामा हुआ।
17 और हर बच्चेदानी और उनके सारे बच्चेदानी बंद हो गई, और यहोवा का हाथ उन पर था, अब्राहम की पत्नी सारा के कारण, जिसे अबीमेलेक ने ले लिया था।
18 सुबह अबीमेलेक डर, घबराहट और बहुत डर के साथ उठा, और उसने अपने नौकरों को बुलाकर अपना सपना उन्हें बताया, और लोग बहुत डर गए।
19 और राजा के सेवकों के बीच खड़े एक आदमी ने राजा को जवाब दिया, "हे राजा, इस औरत को उसके पति के पास वापस कर दो, क्योंकि वह उसका पति है, क्योंकि जब यह आदमी मिस्र आया था, तो मिस्र के राजा के साथ भी ऐसा ही हुआ था।"
20 और उसने अपनी पत्नी के बारे में कहा, "वह मेरी बहन है, क्योंकि जब वह किसी ऐसे देश में रहने आता है जहाँ वह परदेशी होता है, तो उसके साथ ऐसा ही होता है।"

21 और फिरौन ने उस औरत को ब्याह लिया, और यहोवा ने उस पर तब तक बड़ी मुसीबतें डालीं जब तक उसने उस औरत को उसके पति के पास वापस नहीं कर दिया।
22 इसलिए, हे राजा, जान लो कि कल रात पूरे देश में क्या हुआ, क्योंकि बहुत बड़ी घबराहट, बहुत दर्द और दुख था, और हम जानते हैं कि यह उस औरत की वजह से हुआ जिसे तुमने लिया था।
23 इसलिए अब इस औरत को उसके पति के पास वापस कर दो, कहीं ऐसा न हो कि जैसा मिस्र के राजा फिरौन और उसकी प्रजा के साथ हुआ था, वैसा ही हमारे साथ भी हो, और हम मर न जाएं; और अबीमेलेक ने जल्दी से पुकारा और सारा को बुलाया, और वह उसके सामने आई, और उसने अब्राहम को बुलाया, और वह उसके सामने आया।
24 तब अबीमेलेक ने उनसे कहा, "तुम लोग यह क्या काम कर रहे हो कि तुम भाई-बहन कह रहे हो, और मैंने इस औरत को पत्नी बना लिया है?"
25 अब्राहम ने कहा, "क्योंकि मैंने सोचा कि मैं अपनी पत्नी की वजह से मर जाऊंगा; इसलिए अबीमेलेक ने भेड़-बकरियां, गाय-बैल, नौकर-चाकर और एक हज़ार चांदी के सिक्के लेकर अब्राहम को दे दिए, और सारा को उसे लौटा दिया।"
26 तब अबीमेलेक ने अब्राहम से कहा, "देखो, सारा देश तुम्हारे सामने है; तुम जहाँ चाहो वहाँ रहो।"
27 अब्राहम और उसकी पत्नी सारा, राजा के सामने से इज़्ज़त और सम्मान के साथ निकले, और वे उस देश में, यानी गरार में रहने लगे।
28 और पलिश्तियों के देश के सभी रहने वाले और राजा के नौकर उस मुसीबत से परेशान थे जो स्वर्गदूत ने सारा की वजह से पूरी रात उन पर डाली थी।
29 तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलाकर कहा, "अब अपने सेवकों के लिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो, कि वह हमारे बीच से इस बीमारी को दूर कर दे।"
30 और अब्राहम ने अबीमेलेक और उसकी प्रजा के लिए प्रार्थना की, और यहोवा ने अब्राहम की प्रार्थना सुनी, और उसने अबीमेलेक और उसकी सारी प्रजा को चंगा कर दिया।

अध्याय 21

1 और उस समय जब अब्राहम पलिश्तियों के देश गरार में रह रहा था, एक साल और चार महीने के आखिर में, परमेश्वर ने सारा पर कृपा की, और प्रभु ने उसे याद किया, और वह गर्भवती हुई और अब्राहम के लिए एक बेटे को जन्म दिया।
2 और अब्राहम ने अपने बेटे का नाम, जो सारा से पैदा हुआ था, इसहाक रखा।
3 और अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक का खतना आठ दिन की उम्र में किया, जैसा परमेश्वर ने अब्राहम को उसके बाद उसके वंश के लिए करने की आज्ञा दी थी; और जब इसहाक उनके यहाँ पैदा हुआ, तब अब्राहम सौ साल का था और सारा नब्बे साल की थी।
4 और बच्चा बड़ा हो गया और उसका दूध छूट गया, और जिस दिन इसहाक का दूध छूटा, उस दिन अब्राहम ने एक बड़ी दावत की।
5 और शेम और एबर और देश के सभी बड़े लोग, और पलिश्तियों का राजा अबीमेलेक, और उसके सेवक, और उसकी सेना का सेनापति फिकोल, खाने-पीने और उस दावत में खुशियाँ मनाने आए जो अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन की थी।
6 अब्राहम के पिता तेराह और उनके भाई नाहोर, वे और उनके सभी लोग हारान से आए, क्योंकि वे यह सुनकर बहुत खुश हुए कि सारा के यहाँ एक बेटा हुआ है।
7 और वे अब्राहम के पास आए, और उन्होंने उस दावत में खाया और पिया जो अब्राहम ने इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन की थी।
8 और तेराह और नाहोर अब्राहम के साथ खुश हुए, और वे पलिश्तियों के देश में बहुत दिनों तक उसके साथ रहे।
9 उस समय अब्राहम के बेटे इसहाक के जन्म के पहले साल में रू का बेटा सरूग मर गया।
10 और सरूग की कुल उम्र दो सौ उनतीस साल की हुई, तब वह मर गया।
11 उन दिनों अब्राहम का बेटा इश्माएल बड़ा हो गया था; जब सारा ने अब्राहम से इसहाक को जन्म दिया, तब वह चौदह साल का था।
12 और परमेश्वर अब्राहम के बेटे इश्माएल के साथ था, और वह बड़ा हुआ, और उसने धनुष चलाना सीखा और धनुर्धर बन गया।
13 जब इसहाक पाँच साल का हुआ, तो वह इश्माएल के साथ तम्बू के दरवाज़े पर बैठा था।
14 तब इश्माएल इसहाक के पास आया और उसके सामने बैठ गया। उसने धनुष लिया और उसे खींचकर उसमें तीर चढ़ाया, और इसहाक को मार डालने का इरादा किया।
15 और सारा ने देखा कि इश्माएल उसके बेटे इसहाक के साथ क्या करना चाहता है, और उसे अपने बेटे की वजह से बहुत दुख हुआ, और उसने अब्राहम को बुलाकर कहा, इस दासी और उसके बेटे को निकाल दो, क्योंकि उसका बेटा मेरे बेटे के साथ वारिस नहीं होगा, क्योंकि उसने आज उसके साथ ऐसा ही करने की कोशिश की है।
16 और अब्राहम ने सारा की बात मान ली, और वह सुबह जल्दी उठा, और उसने बारह रोटियां और एक बोतल पानी लिया, जो उसने हागार को दिया, और उसे उसके बेटे के साथ विदा किया, और हागार अपने बेटे के साथ जंगल में चली गई, और वे पारान के जंगल में जंगल के लोगों के साथ रहने लगे, और इश्माएल एक तीरंदाज़ था, और वह बहुत समय तक जंगल में रहा।
17 इसके बाद वह और उसकी माँ मिस्र देश में गए, और वहाँ रहने लगे। वहाँ हागार ने अपने बेटे के लिए मिस्र से एक पत्नी ली, जिसका नाम मरीबा था।
18 और इश्माएल की पत्नी गर्भवती हुई और उसके चार बेटे और दो बेटियाँ हुईं, और इश्माएल और उसकी माँ और उसकी पत्नी और बच्चे बाद में जंगल में लौट आए।
19 और उन्होंने जंगल में अपने लिए तंबू बना लिए, जहाँ वे रहते थे, और वे हर महीने और हर साल यात्रा करते और फिर आराम करते थे।
20 और परमेश्वर ने इश्माएल को उसके पिता अब्राहम के कारण भेड़-बकरियां, गाय-बैल और तंबू दिए, और उस आदमी के पास बहुत सारे मवेशी हो गए।

21 और इश्माएल बहुत समय तक रेगिस्तानों और तंबुओं में रहा, यात्रा करता रहा और आराम करता रहा, और उसने अपने पिता का चेहरा नहीं देखा।
22 कुछ समय बाद अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा से कहा, "मैं अपने बेटे इश्माएल से मिलने जाऊँगा, क्योंकि मैं उसे देखना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने उसे बहुत समय से नहीं देखा है।"
23 अब्राहम अपने बेटे इश्माएल को ढूंढने के लिए अपने ऊँटों में से एक पर सवार होकर जंगल में गया, क्योंकि उसने सुना था कि वह अपने सारे सामान के साथ जंगल में एक तंबू में रह रहा है।
24 और अब्राहम जंगल में गया, और वह दोपहर के करीब इश्माएल के तंबू के पास पहुँचा, और उसने इश्माएल के बारे में पूछा, और उसने इश्माएल की पत्नी को अपने बच्चों के साथ तंबू में बैठे हुए पाया, और उसका पति इश्माएल और उसकी माँ उनके साथ नहीं थे।
25 तब अब्राहम ने इश्माएल की पत्नी से पूछा, "इश्माएल कहाँ गया है?" उसने कहा, "वह शिकार करने के लिए खेत में गया है, और अब्राहम अभी भी ऊँट पर सवार है, क्योंकि वह ज़मीन पर नहीं उतरना चाहता था, क्योंकि उसने अपनी पत्नी सारा से कसम खाई थी कि वह ऊँट से नहीं उतरेगा।"
26 तब अब्राहम ने इश्माएल की पत्नी से कहा, "बेटी, मुझे थोड़ा पानी दे दे ताकि मैं पी सकूं, क्योंकि मैं सफर से थक गया हूं।"
27 इस पर इश्माएल की पत्नी ने अब्राहम से कहा, "हमारे पास न तो पानी है और न ही रोटी।" वह तंबू में बैठी रही और अब्राहम पर ध्यान नहीं दिया, और न ही उससे पूछा कि वह कौन है।
28 लेकिन वह अपने बच्चों को तंबू में पीट रही थी, और उन्हें कोस रही थी, और उसने अपने पति इश्माएल को भी कोसा और उसे बुरा-भला कहा, और अब्राहम ने इश्माएल की पत्नी की बातें अपने बच्चों से सुनीं, और वह बहुत गुस्सा और नाराज़ हुआ।
29 तब अब्राहम ने उस औरत को तंबू से बाहर आने को कहा, और वह औरत आकर अब्राहम के सामने खड़ी हो गई, क्योंकि अब्राहम अभी भी ऊँट पर सवार था।
30 तब अब्राहम ने इश्माएल की पत्नी से कहा, "जब तेरा पति इश्माएल घर लौटे, तो उससे ये बातें कहना,
31 पलिश्तियों के देश से एक बहुत बूढ़ा आदमी तुम्हें ढूंढने यहाँ आया था, और उसका रूप-रंग ऐसा था; मैंने उससे नहीं पूछा कि वह कौन है, और यह देखकर कि तुम यहाँ नहीं हो, उसने मुझसे कहा, जब तुम्हारा पति इश्माएल लौटे तो उससे कहना कि इस आदमी ने क्या कहा था, जब तुम घर आओ तो टेंट की यह कील जो तुमने यहाँ लगाई है, हटा देना, और उसकी जगह दूसरी कील लगा देना।
32 जब अब्राहम ने उस औरत को अपनी बातें बता दीं, तो वह मुड़ा और ऊँट पर सवार होकर घर की तरफ चला गया।
33 इसके बाद इश्माएल और उसकी माँ शिकार छोड़कर तंबू में लौट आए, और उसकी पत्नी ने उससे ये बातें कहीं,
34 पलिश्तियों के देश से एक बहुत बूढ़ा आदमी तुम्हें ढूंढने आया था, और उसका रूप-रंग ऐसा था; मैंने उससे नहीं पूछा कि वह कौन है, और यह देखकर कि तुम घर पर नहीं हो, उसने मुझसे कहा, जब तुम्हारा पति घर आए तो उससे कहना, बूढ़ा आदमी कहता है, जो तंबू तुमने यहाँ लगाया है, उसकी कील हटा दो और उसकी जगह दूसरी कील लगा दो।
35 और इश्माएल ने अपनी पत्नी की बातें सुनीं, और वह जान गया कि यह उसके पिता हैं, और उसकी पत्नी उसका आदर नहीं करती।
36 और इश्माएल को अपने पिता की बातें समझ में आ गईं जो उसने अपनी पत्नी से कही थीं, और इश्माएल ने अपने पिता की बात मान ली, और इश्माएल ने उस औरत को छोड़ दिया और वह चली गई।
37 इसके बाद इश्माएल कनान देश गया, और उसने दूसरी पत्नी ले ली और उसे अपने तंबू में उस जगह ले आया जहाँ वह उस समय रहता था।
38 और तीन साल के आखिर में अब्राहम ने कहा, मैं फिर जाकर अपने बेटे इश्माएल से मिलूंगा, क्योंकि मैंने उसे बहुत समय से नहीं देखा है।
39 और वह अपने ऊँट पर सवार होकर जंगल में चला गया, और दोपहर के करीब इश्माएल के तंबू के पास पहुँचा।
40 और उसने इश्माएल के बारे में पूछा, और उसकी पत्नी तंबू से बाहर आई और उसने कहा, वह यहाँ नहीं है मेरे मालिक, क्योंकि वह खेतों में शिकार करने और ऊँटों को चराने गया है, और औरत ने अब्राहम से कहा, मेरे मालिक तंबू में आ जाओ, और एक टुकड़ा रोटी खा लो, क्योंकि तुम सफ़र की वजह से थक गए होगे।
41 अब्राहम ने उससे कहा, "मैं नहीं रुकूंगा क्योंकि मुझे अपनी यात्रा जारी रखने की जल्दी है, लेकिन मुझे थोड़ा पानी पिला दो, क्योंकि मुझे प्यास लगी है।" और वह औरत जल्दी से दौड़कर तंबू में गई और अब्राहम के लिए पानी और रोटी लाई, जो उसने उसके सामने रखी और उसे खाने के लिए कहा, और उसने खाया और पिया और उसका दिल खुश हो गया और उसने अपने बेटे इश्माएल को आशीर्वाद दिया।
42 जब उसने खाना खत्म किया और यहोवा को धन्यवाद दिया, तो उसने इश्माएल की पत्नी से कहा, "जब इश्माएल घर आए, तो उससे ये बातें कहना।"
43 पलिश्तियों के देश से एक बहुत बूढ़ा आदमी यहाँ आया और तुम्हारे बारे में पूछा, और तुम यहाँ नहीं थे; और मैं उसके लिए रोटी और पानी लाया, और उसने खाया और पिया, और उसका दिल शांत हो गया।
44 और उसने मुझसे ये बातें कहीं, "जब तेरा पति इश्माएल घर आए, तो उससे कहना, कि जो तम्बू तेरे पास है, उसकी कील बहुत अच्छी है, उसे तम्बू से अलग मत करना।"
45 और अब्राहम ने औरत को हुक्म दिया, और वह पलिश्तियों के देश में अपने घर चला गया; और जब इश्माएल अपने तंबू में आया, तो उसकी पत्नी खुशी और खुश दिल से उससे मिलने के लिए निकली।
46 और उसने उससे कहा, "एक बूढ़ा आदमी पलिश्तियों के देश से यहाँ आया था और उसका रूप ऐसा था, और उसने तुम्हारे बारे में पूछा और तुम यहाँ नहीं थे, इसलिए मैं रोटी और पानी ले आई, और उसने खाया और पिया और उसका दिल शांत हो गया।"
47 और उसने मुझसे ये बातें कहीं, "जब तेरा पति इश्माएल घर आए, तो उससे कहना, कि जो डेरे की कील तेरे पास है, वह बहुत अच्छी है, उसे डेरे से मत हटाना।"

48 और इश्माएल को पता चल गया कि यह उसके पिता हैं, और उसकी पत्नी ने उसे सम्मान दिया है, और यहोवा ने इश्माएल को आशीर्वाद दिया।

अध्याय 22

1 तब इश्माएल उठा, और अपनी पत्नी, बच्चों, जानवरों और अपना सारा सामान लेकर वहाँ से चला गया, और पलिश्तियों के देश में अपने पिता के पास चला गया।
2 और अब्राहम ने अपने बेटे इश्माएल को बताया कि पहली पत्नी के साथ क्या हुआ था, जो उसने किया था।
3 और इश्माएल और उसके बच्चे अब्राहम के साथ उस देश में बहुत दिनों तक रहे, और अब्राहम भी पलिश्तियों के देश में बहुत दिनों तक रहा।
4 और दिन बढ़ते-बढ़ते छब्बीस साल हो गए, और उसके बाद अब्राहम अपने नौकरों और अपने सभी लोगों के साथ पलिश्तियों के देश से निकलकर बहुत दूर चला गया, और वे हेब्रोन के पास पहुँचे, और वहीं रहे, और अब्राहम के नौकरों ने पानी के कुएँ खोदे, और अब्राहम और उसके सभी लोग पानी के पास रहने लगे, और पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के नौकरों ने यह खबर सुनी कि अब्राहम के नौकरों ने देश की सीमाओं में पानी के कुएँ खोदे हैं।
5 और वे आए और अब्राहम के सेवकों से झगड़ा किया, और उन्होंने उनका खोदा हुआ बड़ा कुआँ लूट लिया।
6 और पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक को यह बात पता चली, और वह अपनी सेना के सरदार फिकोल और अपने बीस आदमियों के साथ अब्राहम के पास आया। अबीमेलेक ने अब्राहम से उसके नौकरों के बारे में बात की। अब्राहम ने अबीमेलेक को उस कुएं के बारे में डांटा, जिससे उसके नौकरों ने उसे लूटा था।
7 तब अबीमेलेक ने अब्राहम से कहा, यहोवा के जीवन की शपथ, जिसने सारी पृथ्वी को बनाया है, मैंने आज तक यह नहीं सुना कि मेरे दासों ने तेरे दासों के साथ क्या किया।
8 तब अब्राहम ने सात भेड़ें लीं और अबीमेलेक को दीं, और कहा, इन्हें मेरे हाथों से ले लो, ताकि यह मेरे लिए गवाही हो कि मैंने यह कुआँ खोदा है।
9 और अबीमेलेक ने वे सात भेड़ें ले लीं जो अब्राहम ने उसे दी थीं, क्योंकि अब्राहम ने उसे बहुत सारे मवेशी और गाय-बैल भी दिए थे, और अबीमेलेक ने अब्राहम से उस कुएं के बारे में कसम खाई, इसलिए उसने उस कुएं का नाम बेर्शेबा रखा, क्योंकि वहीं उन दोनों ने उसके बारे में कसम खाई थी।
10 और उन दोनों ने बेर्शेबा में एक वादा किया, और अबीमेलेक अपनी सेना के सरदार फिकोल और उसके सभी आदमियों के साथ उठा, और वे पलिश्तियों के देश लौट गए, और अब्राहम और उसके सभी लोग बेर्शेबा में रहने लगे और वह उस देश में बहुत समय तक रहा।
11 और अब्राहम ने बेर्शेबा में एक बड़ा बाग लगाया, और उसमें ज़मीन के चारों तरफ चार दरवाज़े बनाए, और उसमें अंगूर का एक बाग लगाया, ताकि अगर कोई यात्री अब्राहम के पास आए तो वह रास्ते में पड़ने वाले किसी भी दरवाज़े से अंदर जाए, और वहीं रहकर खाए-पीए और पेट भरकर चला जाए।
12 क्योंकि अब्राहम का घराना उन आदमियों के लिए हमेशा खुला रहता था जो आते-जाते रहते थे, और जो रोज़ अब्राहम के घराने में खाने-पीने के लिए आते थे।
13 और जो कोई भूखा होता और अब्राहम के घर आता, अब्राहम उसे रोटी देता ताकि वह खा-पीकर पेट भर ले; और जो कोई नंगा उसके घर आता, उसे वह अपनी पसंद के कपड़े पहनाता, और उसे सोना-चाँदी देता, और उसे उस प्रभु के बारे में बताता जिसने उसे धरती पर बनाया है; अब्राहम ने ज़िंदगी भर यही किया।
14 अब्राहम और उसके बच्चे और उसका सारा सामान बेर्शेबा में रहने लगे, और उन्होंने हेब्रोन तक अपना तंबू खड़ा किया।
15 अब्राहम का भाई नाहोर, उसका पिता और उनके सभी लोग हारान में रहते थे, क्योंकि वे अब्राहम के साथ कनान देश में नहीं आए थे।
16 और नाहोर के बच्चे हुए, जो हारान की बेटी मिल्का से पैदा हुए, जो अब्राहम की पत्नी सारा की बहन थी।
17 और उसके जो बेटे पैदा हुए उनके नाम ये हैं, ऊज़, बूज़, कमूएल, केसेद, चाज़ो, पिलदाश, तिदलाफ़ और बतूएल, ये आठ बेटे मिल्का के बच्चे थे जिन्हें उसने अब्राहम के भाई नाहोर से जन्म दिया था।
18 नाहोर की एक रखैल थी जिसका नाम रूमा था, और उससे नाहोर के ज़ेबक, गाकाश, ताकाश और माका नाम के चार बेटे हुए।
19 और नाहोर के जो बच्चे हुए, वे उसकी बेटियों के अलावा बारह बेटे थे, और उनके भी बच्चे हारान में पैदा हुए।
20 और नाहोर के जेठे ऊज़ के बच्चे थे: अबी, चेरेफ़, गादीन, मेलुस, और उनकी बहन दबोरा।
21 और बूज के बेटे थे बेराकेल, नामात, शेवा और मदोनू।
22 और कमूएल के बेटे अराम और रेकोब थे।
23 और केसेद के बेटे अनमलेख, मेशाई, बेनोन और यिफी थे; और चाज़ो के बेटे पिलदाश, मेकी और ओपेर थे।
24 और पिलदाश के बेटे अरूद, चामूम, मेरेद और मोलोक थे।
25 और तिदलाफ़ के बेटे मुशान, कूशान और मुत्ज़ी थे।
26 और बतूएल के बच्चे सेकर, लाबान और उनकी बहन रिबका थे।
27 ये नाहोर के बच्चों के परिवार हैं, जो हारान में उनसे पैदा हुए थे; और कमूएल का बेटा आराम और उसका भाई रेकोब हारान से चले गए, और उन्हें फरात नदी के पास की ज़मीन में एक घाटी मिली।
28 और उन्होंने वहां एक शहर बसाया, और उस शहर का नाम अराम के बेटे पेथोर के नाम पर रखा, जो आज तक अराम नाहेरायम है।
29 और केसेद के बच्चे भी जहाँ कहीं जगह मिली, वहाँ रहने चले गए। वे गए और उन्हें शिनार देश के सामने एक घाटी मिली, और वे वहीं रहने लगे।
30 और उन्होंने वहाँ अपने लिए एक शहर बसाया, और उस शहर का नाम अपने पिता के नाम पर केसेद रखा, जो आज तक उस ज़मीन कासदीम है, और कासदीम उस ज़मीन में रहते थे और वे बहुत फले-फूले और उनकी गिनती बहुत ज़्यादा बढ़ गई।
31 और नाहोर और अब्राहम के पिता तेराह ने बुढ़ापे में जाकर दूसरी पत्नी ले ली, और उसका नाम पेलिला था, और वह गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम सोबा रखा।

32 सोबा के जन्म के बाद तेरह पच्चीस साल और ज़िंदा रहा।
33 और तेरह की मौत उसी साल हुई, यानी अब्राहम के बेटे इसहाक के जन्म के पैंतीसवें साल में।
34 और तेरह की उम्र दो सौ पांच साल की हुई, और उसे हारान में दफ़नाया गया।
35 और तेराह का बेटा ज़ोबा तीस साल का था, और उससे अराम, अकलिस और मेरिक पैदा हुए।
36 और अराम, जो तेराह का पोता और ज़ोबा का बेटा था, उसकी तीन पत्नियाँ थीं और उसके बारह बेटे और तीन बेटियाँ हुईं; और यहोवा ने ज़ोबा के बेटे अराम को धन-दौलत, बहुत सारे मवेशी, भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और वह आदमी बहुत बढ़ गया।
37 सोबा का बेटा आराम, उसका भाई और उसका पूरा घराना हारान से निकलकर जहाँ जगह मिली, वहीं रहने लगे, क्योंकि उनकी जायदाद इतनी ज़्यादा थी कि वे हारान में नहीं रुक सकते थे; और वे अपने भाइयों नाहोर के बच्चों के साथ हारान में नहीं रुक सकते थे।
38 सोबा का बेटा आराम अपने भाइयों के साथ गया, और उन्हें पूर्वी देश की तरफ कुछ दूरी पर एक घाटी मिली और वे वहीं रहने लगे।
39 और उन्होंने वहां एक शहर भी बसाया, और अपने बड़े भाई के नाम पर उसका नाम अराम रखा; जो आज तक अरामज़ोबा है।
40 उन दिनों अब्राहम का बेटा इसहाक बड़ा हो रहा था, और उसके पिता अब्राहम ने उसे यहोवा का रास्ता सिखाया ताकि वह उसे जान सके, और यहोवा उसके साथ था।
41 जब इसहाक सैंतीस साल का हुआ, तो उसका भाई इश्माएल उसके साथ तंबू में घूम रहा था।
42 और इश्माएल ने इसहाक से अपनी बड़ाई करते हुए कहा, "जब यहोवा ने मेरे पिता से हमारा खतना करने को कहा, तब मैं तेरह साल का था। मैंने यहोवा की बात मानी जो उसने मेरे पिता से कही थी, और मैंने अपनी जान यहोवा को दे दी, और मैंने उसकी बात नहीं टाली जो उसने मेरे पिता को दी थी।"
43 इसहाक ने इश्माएल से कहा, "तू अपने शरीर से निकाले गए थोड़े से मांस के बारे में मुझसे क्यों घमंड कर रहा है, जिसके बारे में यहोवा ने तुझे आज्ञा दी थी?"
44 मेरे पिता अब्राहम के परमेश्वर यहोवा की शपथ, अगर यहोवा मेरे पिता से कहे, अपने बेटे इसहाक को लेकर मेरे सामने भेंट चढ़ाओ, तो मैं मना नहीं करूँगा, बल्कि खुशी-खुशी मान लूँगा।
45 और यहोवा ने इसहाक की बात सुनी जो उसने इश्माएल से कही थी, और यह बात यहोवा को अच्छी लगी, और उसने इस मामले में अब्राहम को आज़माने की सोची।
46 और वह दिन आ गया जब परमेश्वर के पुत्र आए और यहोवा के सामने पेश हुए, और शैतान भी परमेश्वर के पुत्रों के साथ यहोवा के सामने पेश हुआ।
47 तब प्रभु ने शैतान से पूछा, तू कहां से आया है? शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, कि पृथ्वी पर इधर-उधर घूमने और उस पर इधर-उधर घूमने से आया है।
48 तब प्रभु ने शैतान से कहा, "पृथ्वी के सभी बच्चों के बारे में तू मुझसे क्या कहता है?" शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, "मैंने पृथ्वी के सभी बच्चों को देखा है जो तेरी सेवा करते हैं और जब भी वे तुझसे कुछ मांगते हैं, तो तुझे याद करते हैं।"
49 और जब तू उन्हें वह चीज़ देता है जो वे तुझसे चाहते हैं, तो वे आराम से बैठ जाते हैं, और तुझे छोड़ देते हैं और फिर तुझे याद नहीं करते।
50 क्या तुमने तेराह के बेटे अब्राहम को देखा है, जिसके पहले कोई बच्चा नहीं था, और वह तुम्हारी सेवा करता था और जहाँ भी जाता था, तुम्हारे लिए वेदियाँ बनाता था, और उन पर भेंट चढ़ाता था, और धरती के सभी लोगों के बीच लगातार तुम्हारा नाम बताता था।
51 और अब जब उसका बेटा इसहाक पैदा हुआ है, तो उसने तुम्हें छोड़ दिया है, उसने देश के सभी रहने वालों के लिए एक बड़ी दावत रखी है, और वह यहोवा को भूल गया है।
52 क्योंकि उसने जो कुछ भी किया है, उसमें से वह तेरे पास कोई भेंट नहीं लाया; न होमबलि, न मेलबलि, न बैल, न मेमना, न बकरा, जो उसने उस दिन मारा था जिस दिन उसके बेटे का दूध छूटा था।
53 अपने बेटे के जन्म से लेकर अब तक, यानी सैंतीस साल हो गए हैं, उसने न तो तेरे लिए कोई वेदी बनाई, और न ही तेरे लिए कोई भेंट चढ़ाई, क्योंकि उसने देखा कि तूने वही दिया जो उसने तुझसे माँगा था, और इसलिए उसने तुझे छोड़ दिया।
54 और प्रभु ने शैतान से कहा, "क्या तूने मेरे सेवक अब्राहम पर ध्यान दिया है? क्योंकि धरती पर उसके जैसा कोई नहीं है, मेरे सामने एक खरा और सीधा आदमी, जो परमेश्वर से डरता है और बुराई से दूर रहता है; मेरे जीवन की शपथ, अगर मैं उससे कहूँ, अपने बेटे इसहाक को मेरे सामने ले आ, तो वह उसे मुझसे नहीं रोकेगा, खासकर अगर मैं उससे कहूँ कि अपने झुंड या गाय-बैलों में से मेरे सामने होमबलि चढ़ा।
55 शैतान ने प्रभु को उत्तर दिया, "तो अब अब्राहम से वही कहो जो तुमने कहा है, और तुम देखोगे कि क्या वह आज तुम्हारी बातों को तोड़कर टाल नहीं देगा।"

अध्याय 23

1 उस समय यहोवा का वचन अब्राहम के पास पहुंचा, और उसने उससे कहा, हे अब्राहम, और उसने कहा, मैं यहां हूं।
2 और उसने उससे कहा, अपने बेटे को, अपने इकलौते बेटे इसहाक को, जिससे तू प्यार करता है, लेकर मोरिया देश में जा, और उसे वहाँ एक पहाड़ पर होमबलि के लिए चढ़ा, जो तुझे दिखाया जाएगा, क्योंकि वहाँ तू बादल और प्रभु की महिमा देखेगा।
3 तब अब्राहम ने मन में सोचा, मैं अपने बेटे इसहाक को उसकी माँ सारा से कैसे अलग करूँ, कि उसे यहोवा के सामने होमबलि के लिए चढ़ाऊँ?
4 तब अब्राहम तम्बू में गया, और अपनी पत्नी सारा के सामने बैठ गया, और उससे ये बातें कहीं,
5 मेरा बेटा इसहाक बड़ा हो गया है और उसने कुछ समय से अपने परमेश्वर की सेवा के बारे में नहीं सीखा है, अब कल मैं जाकर उसे शेम और उसके बेटे एबर के पास ले आऊँगा, और वहाँ वह प्रभु के मार्ग सीखेगा, क्योंकि वे उसे प्रभु को जानना सिखाएँगे और यह भी कि जब वह प्रभु के सामने लगातार प्रार्थना करेगा, तो वह उसे जवाब देंगे, इसलिए वहाँ वह अपने परमेश्वर प्रभु की सेवा करने का तरीका जानेगा।

6 और सारा ने कहा, "आपने ठीक कहा, मेरे मालिक, जाओ और जैसा आपने कहा है वैसा ही उसके साथ करो, लेकिन उसे मुझसे ज़्यादा दूर मत करो, और न ही उसे वहाँ ज़्यादा देर रहने दो, क्योंकि मेरी आत्मा उसकी आत्मा में बंधी हुई है।"
7 तब अब्राहम ने सारा से कहा, "बेटी, आओ हम अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करें कि वह हमारे साथ अच्छा व्यवहार करे।"
8 और सारा अपने बेटे इसहाक को लेकर पूरी रात उसके साथ रही, और उसने उसे चूमा और गले लगाया, और सुबह तक उसे हिदायतें दीं।
9 और उसने उससे कहा, "हे मेरे बेटे, मेरी जान तुझसे कैसे अलग हो सकती है?" और फिर भी उसने उसे चूमा और गले लगाया, और उसने अब्राहम को उसके बारे में बताया।
10 और सारा ने अब्राहम से कहा, हे मेरे प्रभु, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप अपने बेटे का ध्यान रखें, और उस पर अपनी नजर रखें, क्योंकि उसके अलावा मेरा कोई और बेटा या बेटी नहीं है।
11 हे उसे मत छोड़ो। अगर वह भूखा हो तो उसे रोटी दो, और अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी पिलाओ; उसे पैदल मत जाने दो, न ही उसे धूप में बैठने दो।
12 उसे अकेले रास्ते पर न जाने दो, और न उसे जो कुछ वह चाहे उससे ज़बरदस्ती करने दो, बल्कि जैसा वह तुमसे कहे वैसा ही उसके साथ करो।
13 और सारा इसहाक के कारण सारी रात फूट-फूट कर रोती रही, और सुबह तक उसे उपदेश देती रही।
14 और सुबह सारा ने घर में रखे उन कपड़ों में से एक बहुत बढ़िया और सुंदर कपड़ा चुना, जो अबीमेलेक ने उसे दिया था।
15 और उसने अपने बेटे इसहाक को वह पहनाया, और उसके सिर पर पगड़ी रखी, और पगड़ी के ऊपर एक कीमती पत्थर जड़ दिया, और उन्हें रास्ते के लिए सामान दिया, और वे निकल पड़े, और इसहाक अपने पिता अब्राहम के साथ चला गया, और उनके कुछ नौकर उन्हें रास्ते से हटाने के लिए उनके साथ गए।
16 और सारा उनके साथ बाहर गई, और उन्हें विदा करने के लिए रास्ते में उनके साथ गई, और उन्होंने उससे कहा, "टेंट में लौट जाओ।"
17 जब सारा ने अपने बेटे इसहाक की बातें सुनीं, तो वह फूट-फूट कर रोई; और उसका पति अब्राहम भी उसके साथ रोया; और उनका बेटा भी उनके साथ फूट-फूट कर रोया; और जो लोग उनके साथ गए थे, वे भी बहुत रोए।
18 और सारा ने अपने बेटे इसहाक को पकड़ा, और उसे अपनी बाहों में लिया, और उसे गले लगाया और उसके साथ रोती रही, और सारा ने कहा, कौन जानता है कि आज के बाद मैं तुम्हें फिर कभी देख पाऊँगी या नहीं?
19 और वे सब एक साथ रोते रहे, अब्राहम, सारा और इसहाक, और जो लोग रास्ते में उनके साथ थे, वे सब उनके साथ रोए, और सारा बाद में अपने बेटे से दूर होकर फूट-फूट कर रोने लगी, और उसके सभी पुरुष सेवक और दासियाँ उसके साथ तंबू में लौट आए।
20 और अब्राहम अपने बेटे इसहाक के साथ गया ताकि उसे यहोवा के सामने भेंट के तौर पर चढ़ाए, जैसा उसने उसे आज्ञा दी थी।
21 अब्राहम ने अपने साथ दो जवान आदमियों को लिया, हागर का बेटा इश्माएल और उसका नौकर एलीएजेर, और वे उनके साथ चल दिए, और जब वे रास्ते में चल रहे थे, तो जवानों ने आपस में ये बातें कहीं,
22 और इश्माएल ने एलीएजेर से कहा, "अब मेरे पिता अब्राहम इसहाक के साथ जा रहे हैं ताकि उसे यहोवा के लिए होमबलि के तौर पर ऊपर ले आएं, जैसा उसने उन्हें आज्ञा दी थी।"
23 अब जब वह लौटेगा तो वह अपनी सारी संपत्ति मुझे दे देगा, ताकि मैं उसके बाद उसका वारिस बनूँ, क्योंकि मैं उसका पहला बेटा हूँ।
24 तब एलीएजेर ने इश्माएल को जवाब दिया, "ज़रूर अब्राहम ने तुम्हें तुम्हारी माँ के साथ छोड़ दिया था, और कसम खाई थी कि तुम उसकी सारी चीज़ों में से कुछ भी नहीं पाओगे, और वह अपना सब कुछ और अपना सारा खज़ाना किसे देगा, सिवाय मुझ अपने सेवक को, जो उसके घर में वफ़ादार रहा है, जिसने रात-दिन उसकी सेवा की है, और जो कुछ उसने मुझसे चाहा, वह सब किया है? वह अपनी मौत के समय अपनी सारी चीज़ें मुझे दे देगा।"
25 और जब अब्राहम अपने बेटे इसहाक के साथ रास्ते पर जा रहा था, तो शैतान एक बहुत बूढ़े, विनम्र और पछतावे वाले आदमी के रूप में अब्राहम के पास आया और उससे कहा, क्या तुम बेवकूफ़ या क्रूर हो, कि आज अपने इकलौते बेटे के साथ ऐसा करने जा रहे हो?
26 क्योंकि परमेश्वर ने तुझे तेरे बुढ़ापे में, तेरे आखिरी दिनों में एक बेटा दिया है, और क्या तू आज जाकर उसे मार डालेगा क्योंकि उसने कोई हिंसा नहीं की, और क्या तू अपने इकलौते बेटे की जान को धरती से खत्म कर देगा?
27 क्या तुम नहीं जानते और समझते कि यह बात प्रभु की ओर से नहीं हो सकती? क्योंकि प्रभु धरती पर इंसान के साथ ऐसा बुरा नहीं कर सकते कि उससे कहें, जाओ अपने बच्चे को मार डालो।
28 और अब्राहम ने यह सुना और जान लिया कि यह शैतान की बात है जो उसे प्रभु के मार्ग से भटकाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन अब्राहम ने शैतान की बात नहीं सुनी, और अब्राहम ने उसे डांटा ताकि वह चला जाए।
29 और शैतान लौटकर इसहाक के पास आया; और वह एक जवान आदमी के रूप में इसहाक के सामने आया जो सुंदर और सुंदर था।
30 तब वह इसहाक के पास गया और उससे कहा, "क्या तुम नहीं जानते और समझते कि तुम्हारा बूढ़ा मूर्ख पिता तुम्हें आज बिना किसी कारण के कत्ल के लिए ले जा रहा है?"
31 इसलिए अब, मेरे बेटे, उसकी बात मत सुनो और न ही उस पर ध्यान दो, क्योंकि वह एक बेवकूफ बूढ़ा आदमी है, और अपनी कीमती आत्मा और सुंदर रूप को धरती से मत खोने दो।
32 यह सुनकर इसहाक ने अब्राहम से कहा, "हे मेरे पिता, क्या तुमने सुना है कि यह आदमी क्या कह रहा है? उसने ऐसा ही कहा है।"
33 तब अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक से कहा, उस पर ध्यान दे और उसकी बातें न सुन, और न ही उस पर ध्यान दे, क्योंकि वह शैतान है, जो आज हमें परमेश्वर की आज्ञाओं से भटकाने की कोशिश कर रहा है।
34 और अब्राहम ने फिर भी शैतान को डांटा, और शैतान उनके पास से चला गया, और यह देखकर कि वह उन पर हावी नहीं हो सकता, वह उनसे छिप गया, और वह चला गया और रास्ते में उनके आगे-आगे चला गया; और उसने खुद को रास्ते में पानी के

एक बड़े नाले में बदल लिया, और अब्राहम और इसहाक और उसके दो जवान आदमी उस जगह पहुँचे, और उन्होंने एक नाला देखा जो पानी के बड़े नाले जितना बड़ा और ताकतवर था।
35 और वे नाले में घुसे और उसमें से गुज़रे, और पानी पहले तो उनके पैरों तक पहुँच गया।
36 और वे नाले में और गहरे चले गए और पानी उनकी गर्दन तक आ गया, और वे सब पानी की वजह से डर गए; और जब वे नाले के ऊपर से जा रहे थे, तो अब्राहम ने उस जगह को पहचान लिया, और वह जान गया कि पहले वहाँ पानी नहीं था।
37 तब अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक से कहा, "मैं इस जगह को जानता हूँ जहाँ न तो कोई नदी थी और न ही पानी, इसलिए अब यह शैतान ही है जो हमारे साथ यह सब कर रहा है, ताकि आज हमें परमेश्वर की आज्ञाओं से भटका दे।"
38 तब अब्राहम ने उसे डांटा और कहा, हे शैतान, प्रभु तुझे डांटे, हमारे पास से चला जा, क्योंकि हम परमेश्वर की आज्ञाओं पर चलते हैं।
39 और शैतान अब्राहम की आवाज़ सुनकर डर गया, और उनके पास से चला गया, और वह जगह फिर से पहले जैसी सूखी ज़मीन बन गई।
40 और अब्राहम इसहाक के साथ उस जगह की ओर चला गया जो परमेश्वर ने उसे बताया था।
41 तीसरे दिन अब्राहम ने अपनी आँखें उठाईं और दूर से उस जगह को देखा जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे बताया था।
42 और उसे आग का एक खंभा दिखाई दिया जो धरती से स्वर्ग तक फैला हुआ था, और पहाड़ पर महिमा का एक बादल था, और बादल में प्रभु की महिमा दिखाई दी।
43 अब्राहम ने इसहाक से कहा, "बेटा, क्या तू उस पहाड़ पर वही देखता है, जिसे हम दूर से देख रहे हैं, जो मैं उस पर देखता हूँ?"
44 इसहाक ने जवाब दिया और अपने पिता से कहा, "मैं आग का एक खंभा और एक बादल देख रहा हूँ, और बादल पर प्रभु की महिमा दिख रही है।"
45 और अब्राहम को पता चल गया कि उसका बेटा इसहाक होमबलि के लिए यहोवा के सामने मंज़ूर है।
46 तब अब्राहम ने एलीएजेर और अपने बेटे इश्माएल से कहा, "क्या तुम भी वही देखते हो जो हम दूर पहाड़ पर देखते हैं?"
47 और उन्होंने जवाब दिया, "हमें धरती के दूसरे पहाड़ों से ज़्यादा कुछ नहीं दिखता।" और अब्राहम को पता था कि वे उनके साथ जाने के लिए प्रभु के सामने मंज़ूर नहीं हैं, और अब्राहम ने उनसे कहा, "तुम गधे के साथ यहीं रहो, जबकि मैं और मेरा बेटा इसहाक उस पहाड़ पर जाकर प्रभु के सामने पूजा करेंगे और फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे।"
48 और एलीएजेर और इश्माएल उसी जगह पर रहे, जैसा अब्राहम ने कहा था।
49 और अब्राहम ने होमबलि के लिए लकड़ी ली और उसे अपने बेटे इसहाक पर रखा, और उसने आग और चाकू लिया, और वे दोनों उस जगह गए।
50 जब वे जा रहे थे, तो इसहाक ने अपने पिता से कहा, "देखो, मुझे यहाँ आग और लकड़ी दिख रही है, तो फिर वह मेमना कहाँ है जिसे यहोवा के सामने होमबलि चढ़ाया जाएगा?"
51 अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक से कहा, "प्रभु ने तुम्हें चुना है, मेरे बेटे, ताकि मेमने की जगह तुम एक पवित्र होमबलि बनो।"
52 इसहाक ने अपने पिता से कहा, "मैं वह सब करूँगा जो यहोवा ने तुमसे कहा है, और वह भी खुशी और दिल की खुशी के साथ।"
53 अब्राहम ने फिर अपने बेटे इसहाक से कहा, "क्या इस बारे में तुम्हारे मन में कोई गलत सोच या सलाह है? मेरे बेटे, मुझे बताओ, इसे मुझसे मत छिपाओ।"
54 इसहाक ने अपने पिता अब्राहम को जवाब दिया, "हे मेरे पिता, यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, मेरे दिल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो मुझे उस बात से, जो उसने तुझसे कही है, दाएं या बाएं भटकाए।"
55 इस बात से न तो मेरा कोई अंग हिला है, न ही कोई मांसपेशी, और न ही मेरे दिल में इस बारे में कोई विचार या बुरी सलाह है।
56 लेकिन मैं इस बात से बहुत खुश और प्रसन्न हूँ, और कहता हूँ, धन्य है प्रभु, जिसने आज मुझे अपने सामने होमबलि के रूप में चुना है।
57 और अब्राहम इसहाक की बातों से बहुत खुश हुआ, और वे आगे बढ़कर उस जगह पर इकट्ठा हुए जिसके बारे में यहोवा ने बताया था।
58 और अब्राहम उस जगह वेदी बनाने के लिए पास गया, और अब्राहम रो रहा था, और इसहाक ने पत्थर और गारा लिया जब तक कि वे वेदी बनाना पूरा न कर लें।
59 और अब्राहम ने लकड़ी ली और उसे उस वेदी पर सजाकर रख दिया जिसे उसने बनाया था।
60 और उसने अपने बेटे इसहाक को पकड़कर बांध दिया, ताकि उसे वेदी पर रखी लकड़ी पर रखकर यहोवा के सामने होमबलि के लिए मार डाले।
61 इसहाक ने अपने पिता से कहा, "मुझे अच्छी तरह से बांधो और फिर मुझे वेदी पर रख दो, कहीं ऐसा न हो कि मैं घूमकर हिल जाऊं, और चाकू के ज़ोर से मेरे शरीर पर चोट लगे और मैं होमबलि को अपवित्र कर दूं।" अब्राहम ने वैसा ही किया।
62 फिर भी इसहाक ने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, जब आप मुझे मार डालेंगे और बलि के तौर पर जला देंगे, तो मेरी बची हुई राख को मेरी माँ सारा के पास ले जाना, और उससे कहना, यह इसहाक की खुशबू है; लेकिन जब वह किसी कुएँ के पास या किसी ऊँची जगह पर बैठे, तो उसे यह मत बताना, कहीं ऐसा न हो कि वह मेरे पीछे अपनी जान दे दे और मर जाए।
63 और अब्राहम ने इसहाक की बातें सुनीं, और जब इसहाक ने ये बातें कहीं, तो वह ऊँची आवाज़ में रोया; और अब्राहम के आँसू उसके बेटे इसहाक पर बह निकले, और इसहाक फूट-फूट कर रोया, और उसने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, जल्दी करो, और मेरे साथ हमारे परमेश्वर यहोवा की इच्छा पूरी करो, जैसा उसने तुम्हें आज्ञा दी है।
64 और अब्राहम और इसहाक के दिल इस बात से खुश हुए जो यहोवा ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी; लेकिन आँखें फूट-फूट कर रोईं जबकि दिल खुश था।
65 और अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक को बांधा, और उसे वेदी पर लकड़ी के ऊपर रख दिया, और इसहाक ने अपने पिता के सामने वेदी पर अपनी गर्दन आगे की, और अब्राहम ने अपने बेटे को प्रभु के सामने होमबलि के रूप में मारने के लिए चाकू लेने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।
66 उस समय दया के फ़रिश्ते यहोवा के सामने आए और इसहाक के बारे में उससे कहा,

67 हे प्रभु, तू स्वर्ग और पृथ्वी में बनाई गई सभी चीज़ों का दयालु और रहमदिल राजा है, और तू उन सबका पालन करता है; इसलिए अपने सेवक इसहाक के बदले फिरौती और छुटकारा दे, और अब्राहम और उसके बेटे इसहाक पर दया कर, जो आज तेरे हुक्मों को मान रहे हैं।
68 हे प्रभु, क्या तूने देखा है कि तेरा सेवक अब्राहम का बेटा इसहाक, जानवर की तरह वध के लिए कैसे बांधा गया है? इसलिए अब हे प्रभु, उन पर दया कर।
69 उस समय प्रभु अब्राहम के सामने आए, और स्वर्ग से उन्हें पुकारा, और उनसे कहा, "लड़के पर हाथ मत रखो, और न ही उससे कुछ करो, क्योंकि अब मैं जान गया हूँ कि तुम यह काम करके परमेश्वर से डरते हो, और अपने बेटे, अपने इकलौते बेटे को मुझसे नहीं छिपा रहे हो।"
70 और अब्राहम ने अपनी आँखें उठाकर देखा, और देखो, एक मेढ़ा अपने सींगों से झाड़ी में फँसा हुआ था; यह वही मेढ़ा था जिसे यहोवा परमेश्वर ने उस दिन धरती पर बनाया था जब उसने धरती और आकाश बनाया था।
71 क्योंकि यहोवा ने उस दिन से इस मेढ़े को इसहाक के बदले होमबलि के रूप में तैयार किया था।
72 और यह मेढ़ा अब्राहम की ओर बढ़ रहा था, तभी शैतान ने उसे पकड़ लिया और उसके सींग झाड़ियों में उलझा दिए, ताकि वह अब्राहम की ओर न बढ़ सके, और अब्राहम अपने बेटे को मार डाले।
73 और अब्राहम ने देखा कि मेढ़ा उसकी तरफ आ रहा है और शैतान उसे रोक रहा है, तो वह उसे लेकर वेदी के सामने आया, और उसने अपने बेटे इसहाक को बंधन से खोला, और उसकी जगह मेढ़े को रख दिया, और अब्राहम ने वेदी पर मेढ़े को मारा, और उसे अपने बेटे इसहाक की जगह भेंट के तौर पर चढ़ाया।
74 और अब्राहम ने मेढ़े का थोड़ा खून वेदी पर छिड़का, और चिल्लाकर कहा, यह मेरे बेटे की जगह पर है, और आज इसे यहोवा के सामने मेरे बेटे का खून माना जाए।
75 और इस बार अब्राहम ने वेदी के पास जो कुछ भी किया, वह चिल्लाकर कहा, 'यह मेरे बेटे की जगह पर है, और आज इसे मेरे बेटे की जगह पर प्रभु के सामने माना जाए;' और अब्राहम ने वेदी के पास पूरी सेवा पूरी की, और वह सेवा प्रभु के सामने स्वीकार की गई, और उसे इसहाक के समान माना गया; और प्रभु ने उस दिन अब्राहम और उसके वंश को आशीर्वाद दिया।
76 और शैतान सारा के पास गया, और वह एक बूढ़े आदमी के रूप में उसके सामने आया जो बहुत विनम्र और विनम्र था, और अब्राहम अभी भी प्रभु के सामने होमबलि चढ़ाने में लगा हुआ था।
77 और उसने उससे कहा, क्या तुम नहीं जानती कि अब्राहम ने आज तुम्हारे इकलौते बेटे के साथ क्या-क्या काम किया है? क्योंकि उसने इसहाक को लेकर एक वेदी बनाई, और उसे मार डाला, और वेदी पर बलि के रूप में चढ़ाया, और इसहाक अपने पिता के सामने रोया और रोया, लेकिन उसने उसकी तरफ नहीं देखा, न ही उस पर दया की।
78 और शैतान ने ये बातें दोहराईं, और वह उसके पास से चला गया, और सारा ने शैतान की सारी बातें सुनीं, और उसने सोचा कि वह उन आदमियों में से कोई बूढ़ा आदमी है जो उसके बेटे के साथ थे, और आकर उसे ये बातें बताई थीं।
79 और सारा अपने बेटे के लिए फूट-फूट कर रोने लगी; और वह ज़मीन पर गिर पड़ी और अपने सिर पर धूल डालकर कहने लगी, हे मेरे बेटे, हे मेरे बेटे इसहाक, काश मैं आज तेरी जगह मर जाती। और वह रोती रही और कहने लगी, हे मेरे बेटे, हे मेरे बेटे इसहाक, काश मैं आज तेरी जगह मर जाती।
80 और वह रोती रही और बोली, "तुम्हें पालने-पोसने के बाद मुझे तुम्हारे लिए दुख हो रहा है; अब मेरी खुशी तुम्हारे लिए दुख में बदल गई है, मैं जो तुम्हारे लिए तरसती थी, और नब्बे साल की उम्र में तुम्हें जन्म देने तक रोती और भगवान से प्रार्थना करती रही; और अब तुमने आज चाकू और आग की सेवा की है, ताकि तुम्हें भेंट चढ़ाया जा सके।"
81 लेकिन हे मेरे बेटे, मैं तेरे साथ खुद को तसल्ली देता हूँ कि यह प्रभु का वचन है, क्योंकि तूने अपने परमेश्वर की आज्ञा पूरी की; क्योंकि हमारे परमेश्वर के वचन को कौन तोड़ सकता है, जिसके हाथ में हर जीवित प्राणी की आत्मा है?
82 हे हमारे प्रभु परमेश्वर, तू नेक है, क्योंकि तेरे सब काम अच्छे और नेक हैं; क्योंकि मैं भी तेरे वचन से जो तूने कहा, खुश हूँ, और जब मेरी आँखें फूट-फूट कर रोती हैं, तो मेरा दिल खुश होता है।
83 और सारा ने अपना सिर अपनी एक दासी की छाती पर रख दिया, और वह पत्थर की तरह शांत हो गई।
84 इसके बाद वह उठी और हेब्रोन पहुँचने तक पूछताछ करती रही। उसने रास्ते में चलते हुए सभी लोगों से पूछताछ की, लेकिन कोई भी उसे यह नहीं बता सका कि उसके बेटे के साथ क्या हुआ था।
85 और वह अपनी दासियों और नौकरों के साथ किरेत-अरबा, जो हेब्रोन है, आई और अपने बेटे के बारे में पूछा, और वहीं रही, जब तक उसने अपने कुछ नौकरों को यह पता लगाने के लिए नहीं भेजा कि अब्राहम इसहाक के साथ कहाँ गया है; वे उसे शेम और एबर के घर में खोजने गए, और वे उसे नहीं ढूंढ पाए, और उन्होंने पूरे देश में उसे ढूंढा लेकिन वह वहाँ नहीं था।
86 और देखो, शैतान एक बूढ़े आदमी के रूप में सारा के पास आया, और वह उसके सामने खड़ा हो गया, और उससे कहा, मैंने तुमसे झूठ कहा, क्योंकि अब्राहम ने अपने बेटे को नहीं मारा और वह मरा नहीं है; और जब उसने यह बात सुनी तो अपने बेटे के कारण उसकी खुशी इतनी बढ़ गई कि खुशी से उसकी जान निकल गई; वह मर गई और अपने लोगों में मिल गई।
87 जब अब्राहम ने अपना काम खत्म किया, तो वह अपने बेटे इसहाक के साथ अपने जवानों के पास लौट आया। वे दोनों उठकर बेर्शेबा गए और घर लौट आए।
88 अब्राहम ने सारा को ढूंढा, लेकिन वह नहीं मिली। जब उसने उसके बारे में पूछा, तो उन्होंने उससे कहा, "वह तुम दोनों को ढूंढने के लिए हेब्रोन तक गई थी, जहाँ तुम गए थे, क्योंकि उसे ऐसा बताया गया था।"
89 और अब्राहम और इसहाक उसके पास हेब्रोन गए, और जब उन्होंने देखा कि वह मर चुकी है, तो वे चिल्ला-चिल्लाकर उसके लिए फूट-फूट कर रोए; और इसहाक अपनी माँ के मुँह पर गिर पड़ा और उसके लिए रोया, और उसने कहा, हे मेरी माँ, हे मेरी माँ, तुम मुझे कैसे छोड़ कर चली गईं, और कहाँ चली गईं? हे कैसे, तुमने मुझे कैसे छोड़ दिया!
90 और अब्राहम और इसहाक और उनके सभी सेवक सारा के कारण बहुत रोए, और उन्होंने उसके लिए बहुत बड़ा और भारी शोक मनाया।

अध्याय 24

1 सारा की उम्र एक सौ सत्ताईस साल थी, और सारा की मौत हो गई; और अब्राहम अपनी पत्नी सारा को दफ़नाने के लिए कब्र ढूंढने के लिए उठा; और वह उस देश के रहने वाले हेथ लोगों से जाकर बोला,
2 मैं तुम्हारे देश में तुम्हारे साथ एक अजनबी और परदेसी हूँ; मुझे अपने देश में कब्रिस्तान की जगह दो, ताकि मैं अपने मरे हुए लोगों को अपने सामने से दफ़ना सकूँ।
3 और हित्तियों ने अब्राहम से कहा, देखो, ज़मीन तुम्हारे सामने है, हमारी कब्रों में से चुनी हुई जगह पर अपने मुर्दे को दफ़नाओ, क्योंकि कोई भी तुम्हें अपने मुर्दे को दफ़नाने से नहीं रोकेगा।
4 अब्राहम ने उनसे कहा, "अगर तुम राज़ी हो तो जाओ और ज़ोखर के बेटे एप्रोन से मेरी तरफ़ से गुज़ारिश करो कि वह मुझे मकपेला की गुफा दे दे, जो उसके खेत के आखिर में है, और मैं उसे उससे जो भी वह चाहे, खरीद लूँगा।"
5 और एप्रोन हित्तियों के बीच रहता था, और उन्होंने जाकर उसे बुलाया, और वह अब्राहम के सामने आया, और एप्रोन ने अब्राहम से कहा, देख, जो कुछ तू कहेगा, तेरा दास करेगा; और अब्राहम ने कहा, नहीं, परन्तु मैं यह गुफा और यह खेत जो तेरे पास है, मोल लेकर खरीद लूंगा, कि यह सदा के लिए कब्रिस्तान के रूप में रहे।
6 तब एप्रोन ने उत्तर दिया, "देखो, खेत और गुफा तुम्हारे सामने हैं; जो चाहो दे दो।" अब्राहम ने कहा, "मैं इसे तुम्हारे हाथ से, और तुम्हारे शहर के फाटक से आने-जाने वालों के हाथ से, और तुम्हारे वंश के हाथ से हमेशा के लिए पूरी कीमत पर खरीदूंगा।"
7 और एप्रोन और उसके सब भाइयों ने यह सुना, और अब्राहम ने एप्रोन और उसके सब भाइयों के हाथों में चार सौ शेकेल चाँदी तौलकर एप्रोन को दी; और अब्राहम ने यह सौदा लिख लिया, और उसने इसे लिखकर चार गवाहों के सामने गवाही दी।
8 और गवाहों के नाम ये हैं: हित्ती अबिश्ना का बेटा अमीगाल, हिव्वी अशुनाक का बेटा अदीचोरोम, गोमेर के अकीराम का बेटा अब्दोन, ज़िदोनी अबूदीश का बेटा बकदिल।
9 और अब्राहम ने खरीद की किताब ली और उसे अपने खजाने में रख दिया, और अब्राहम ने किताब में ये बातें लिखीं, यानी:
10 कि वह गुफा और खेत जो अब्राहम ने हित्ती एप्रोन से, और उसके वंश से, और उसके शहर से निकलने वालों से, और उनके वंश से हमेशा के लिए खरीदा था, अब्राहम और उसके वंश और उसके वंश के लोगों के लिए हमेशा के लिए कब्रिस्तान की जगह के लिए खरीदा जाएगा; और उसने इस पर मुहर लगाई और गवाहों के सामने इसकी गवाही दी।
11 और वह खेत और उसमें जो गुफा थी, और वह सारी जगह अब्राहम और उसके बाद उसके वंश को, हित्तियों की तरफ से मिली; देखो, वह कनान देश के हेब्रोन में मम्रे के सामने है।
12 इसके बाद अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा को वहीं दफ़नाया, और वह जगह और उसका पूरा इलाका अब्राहम और उसके वंश के लिए दफ़नाने की जगह बन गया।
13 और अब्राहम ने सारा को राजाओं की तरह धूमधाम से दफ़नाया, और उसे बहुत अच्छे और सुंदर कपड़ों में दफ़नाया गया।
14 और उसकी अर्थी के पास शेम, उसके बेटे एबर और अबीमेलेक, अनार, अश्कोल और मम्रे थे, और देश के सभी बड़े लोग उसकी अर्थी के पीछे-पीछे चले।
15 और सारा की उम्र एक सौ सत्ताईस साल थी और वह मर गई, और अब्राहम ने बहुत बड़ा और भारी मातम मनाया, और उसने सात दिन तक मातम मनाया।
16 और देश के सभी निवासियों ने सारा के कारण अब्राहम और उसके बेटे इसहाक को दिलासा दिया।
17 जब उनके दुख के दिन बीत गए, तो अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक को विदा किया, और वह शेम और एबर के घर गया, ताकि यहोवा के रास्ते और उसकी शिक्षाएँ सीख सके, और अब्राहम वहाँ तीन साल रहा।
18 उस समय अब्राहम अपने सभी सेवकों के साथ उठा, और वे बेर्शेबा को अपने घर लौट आए, और अब्राहम और उसके सभी सेवक बेर्शेबा में ही रहे।
19 और उसी साल साल के आखिर में पलिश्तियों का राजा अबीमेलेक मर गया; उसकी मौत के समय वह एक सौ तिरानबे साल का था; और अब्राहम अपने लोगों के साथ पलिश्तियों के देश में गया, और उन्होंने पूरे घराने और उसके सभी नौकरों को दिलासा दिया, और फिर वह वापस घर चला गया।
20 और अबीमेलेक की मौत के बाद गरार के लोगों ने उसके बेटे बेनमालिक को ले लिया, जो सिर्फ़ बारह साल का था, और उसे उसके पिता की जगह पर लिटा दिया।
21 और उन्होंने उसका नाम उसके पिता के नाम पर अबीमेलेक रखा, क्योंकि गरार में ऐसा करना उनका रिवाज था, और अबीमेलेक अपने पिता अबीमेलेक की जगह राजा बना, और वह उसकी गद्दी पर बैठा।
22 और हारान का बेटा लूत भी उन्हीं दिनों, इसहाक की उम्र के उनतालीसवें साल में मर गया, और लूत कुल एक सौ चालीस साल जीया और मर गया।
23 और लूत के बच्चे ये थे, जो उसकी बेटियों से पैदा हुए थे: जेठे का नाम मोआब था, और दूसरे का नाम बेनामी था।
24 और लूत के दो बेटे कनान देश से गए और उनसे पत्नियाँ ले लीं, और उनसे बच्चे हुए, और मोआब के बच्चे एद, मायोन, तरसुस और कानविल थे, ये चार बेटे हैं, ये आज तक मोआब के बच्चों के पिता हैं।
25 और लूत के बच्चों के सभी परिवार जहाँ कहीं भी पहुँचते, वहीं बस जाते थे, क्योंकि वे फलते-फूलते थे और बहुत बढ़ते थे।
26 और वे गए और जिस देश में वे रहते थे, वहाँ अपने लिए शहर बनाए, और जो शहर उन्होंने बनाए, उनके नाम अपने ही नाम पर रखे।
27 और अब्राहम के भाई तेराह के बेटे नाहोर की मौत उन्हीं दिनों इसहाक की उम्र के चालीसवें साल में हुई, और नाहोर की कुल उम्र एक सौ बहत्तर साल की हुई। वह मरा और उसे हारान में दफ़नाया गया।
28 जब अब्राहम ने सुना कि उसका भाई मर गया है, तो वह बहुत दुखी हुआ, और कई दिनों तक अपने भाई के लिए विलाप करता रहा।
29 तब अब्राहम ने अपने घर के विषय में आज्ञा देने के लिए अपने मुख्य सेवक एलीएजेर को बुलाया, और वह आकर उसके सामने खड़ा हो गया।
30 तब अब्राहम ने उससे कहा, "देख, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मुझे अपनी मौत का दिन नहीं पता; क्योंकि मेरी उम्र बहुत हो गई है; इसलिए अब उठ, जा और मेरे बेटे के लिए इस जगह और इस

देश से, उन कनानी लोगों की लड़कियों में से जिनके बीच हम रहते हैं, कोई पत्नी मत ले आना।"
31 लेकिन मेरे देश और मेरी जन्मभूमि पर जाओ, और वहाँ से मेरे बेटे के लिए एक पत्नी ले आओ। और स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु परमेश्वर, जिसने मुझे मेरे पिता के घर से निकालकर इस जगह पर लाया, और मुझसे कहा, 'मैं यह देश तेरे वंश को सदा के लिए विरासत में दूँगा,' वह अपना दूत तेरे आगे भेजेगा और तेरे मार्ग को सफल बनाएगा, ताकि तू मेरे परिवार और मेरे पिता के घर से मेरे बेटे के लिए एक पत्नी ले सके।
32 तब उस नौकर ने अपने मालिक अब्राहम से कहा, "देख, मैं तेरे जन्म की जगह और तेरे पिता के घर जा रहा हूँ, और वहाँ से तेरे बेटे के लिए एक पत्नी ले आऊँगा; लेकिन अगर वह औरत मेरे साथ इस देश में आने को तैयार न हो, तो क्या मैं तेरे बेटे को तेरे जन्म की जगह वापस ले जाऊँ?"
33 तब अब्राहम ने उससे कहा, ध्यान रखना कि मेरे बेटे को यहाँ वापस मत लाना, क्योंकि जिस प्रभु के सामने मैं चला हूँ, वही अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा और तुम्हारी राह में कामयाबी देगा।
34 और एलीएजेर ने अब्राहम की बात मानी, और एलीएजेर ने अपने मालिक अब्राहम से इस बात की कसम खाई; और एलीएजेर उठा और अपने मालिक के ऊँटों में से दस ऊँट और अपने मालिक के नौकरों में से दस आदमी साथ लिए, और वे हारान गए, जो अब्राहम और नाहोर का शहर था, ताकि अब्राहम के बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी ला सकें; और जब वे जा रहे थे, तो अब्राहम ने शेम और एबर के घर भेजा, और वे वहाँ से उसके बेटे इसहाक को ले आए।
35 इसहाक अपने पिता के घर बेर्शेबा लौट आया, जबकि एलीएजेर और उसके आदमी हारान पहुँचे; और वे शहर में पानी की जगह के पास रुके, और उसने अपने ऊँटों को पानी के पास घुटने टेकने को कहा और वे वहीं रुक गए।
36 और अब्राहम के सेवक एलीएजेर ने प्रार्थना की, हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर; आज मुझे अच्छी सफलता दे और मेरे स्वामी पर दया कर, कि तू आज मेरे स्वामी के बेटे के लिए उसके परिवार में से एक पत्नी नियुक्त कर दे।
37 और यहोवा ने अपने सेवक अब्राहम के लिए एलीएजेर की बात मान ली, और वह इत्तेफ़ाक से बेथुएल की बेटी से मिला, जो अब्राहम के भाई नाहोर की पत्नी मिल्का का बेटा था, और एलीएजेर उसके घर गया।
38 तब एलीएजेर ने उन्हें अपनी सारी बातें बताईं, और यह भी कि वह अब्राहम का सेवक है, और वे उस पर बहुत खुश हुए।
39 और सबने उस यहोवा को धन्यवाद दिया जिसने यह काम किया, और उन्होंने उसे इसहाक के लिए पत्नी के रूप में बतूएल की बेटी रेबेका को दे दिया।
40 और वह जवान औरत बहुत सुंदर थी, वह कुंवारी थी, और उन दिनों रिबका दस साल की थी।
41 और उस रात बतूएल, लाबान और उसके बच्चों ने दावत की, और एलीएजेर और उसके आदमी आए, और उस रात वहाँ खाए-पीए और खुशियाँ मनाईं।
42 सुबह एलीएजेर और उसके साथ के आदमी उठे, और उसने बतूएल के पूरे घराने को पुकारा, और कहा, मुझे विदा करो कि मैं अपने मालिक के पास जाऊं; और वे उठे और रेबेका और उसकी नर्स दबोरा, जो ऊज़ की बेटी थी, को विदा किया, और उसे सोना-चांदी, नौकर-चाकर और दासियां दीं, और उसे आशीर्वाद दिया।
43 तब उन्होंने एलीएजेर को उसके आदमियों के साथ भेज दिया; और सेवकों ने रेबेका को ले लिया, और वह कनान देश में अपने मालिक के पास लौट आया।
44 और इसहाक ने रिबका को अपनी पत्नी बना लिया, और वह उसे तम्बू में ले आया।
45 जब इसहाक चालीस साल का था, तब उसने अपने चाचा बतूएल की बेटी रिबका से शादी की।

अध्याय 25

1 और उसी समय अब्राहम ने बुढ़ापे में फिर से एक पत्नी से विवाह किया, और उसका नाम कतूरा था, जो कनान देश की थी।
2 और उसने उसके छह बेटे पैदा किए: जिमरान, योकशान, मेदान, मिद्यान, इशबाक और शूआक। और जिमरान के बच्चे थे: अबीहेन, मोलिक और नारीम।
3 और योकशान के बेटे शेबा और ददान थे, और मेदान के बेटे अमीदा, योआब, गोकी, एलीशा और नोताक थे; और मिद्यान के बेटे एपा, एपेर, कनोच, अबीदा और एल्दा थे।
4 और इश्बाक के बेटे मकीरो, बेयोदुआ और तातोर थे।
5 और शूआक के बेटे बिलदाद, ममदाद, मुनान और मेबान थे; ये सब कतूरा नाम की कनानी औरत के बच्चों के घराने हैं, जो उसने इब्रानी अब्राहम से पैदा की थी।
6 और अब्राहम ने इन सबको विदा किया, और उन्हें तोहफ़े दिए, और वे उसके बेटे इसहाक से दूर चले गए, ताकि जहाँ कहीं जगह मिले वहाँ रहें।
7 और ये सब लोग पूरब के पहाड़ पर चले गए, और उन्होंने अपने लिए छह शहर बनाए, जिनमें वे आज तक रहते हैं।
8 लेकिन शेबा और ददान के लोग, जो योकशान के लोग थे, और उनके बच्चे अपने भाइयों के साथ अपने शहरों में नहीं रहे, बल्कि वे आज तक देश-देश और जंगल में घूमते-फिरते और डेरा डालते रहे।
9 और अब्राहम के बेटे मिद्यान के बच्चे कूश देश के पूरब में गए, और वहाँ उन्हें पूरब के देश में एक बड़ी घाटी मिली, और वे वहीं रहे और एक शहर बनाया, और वे उसमें रहने लगे, वही आज तक मिद्यान देश है।
10 और मिद्यान उस शहर में रहने लगा जिसे उसने बनाया था, वह और उसके पाँच बेटे और उसके सारे लोग।
11 और मिद्यान के बेटों के नाम उनके शहरों के हिसाब से ये हैं: एपा, एपेर, कनोच, अबीदा और एल्दा।
12 और एपा के बेटे मेताक, मेशर, अवी और तज़नूआ थे, और एपेर के बेटे एप्रोन, सूर, अलीरुन और मेदीन थे, और कनोच के बेटे रूएल, रेकेम, अज़ी, अल्योशूब और अलाद थे।
13 और अबीदा के बेटे कूर, मेलूद, केरूरी, मोल्की थे; और एल्दाह के बेटे मिकर, रेबा, मलकियाह और गबोल थे; ये मिद्यानियों के नाम उनके कुलों के अनुसार हैं; और बाद में मिद्यान के कुल पूरे मिद्यान देश में फैल गए।
14 और ये अब्राहम के बेटे इश्माएल की वंशावली है, जिसे सारा की दासी हागार ने अब्राहम से जन्म दिया था।
15 और इश्माएल ने मिस्र देश से एक पत्नी ली, और उसका नाम रिबा था, जो मरीबा भी है।

16 और रीबा ने इश्माएल को नबायोत, केदार, अदबेल, मिबसाम और उनकी बहन बोसमत को जन्म दिया।
17 और इश्माएल ने अपनी पत्नी रिबा को छोड़ दिया, और वह उसके पास से चली गई और मिस्र में अपने पिता के घर लौट गई, और वहीं रहने लगी, क्योंकि वह इश्माएल और उसके पिता अब्राहम की नज़र में बहुत बुरी थी।
18 इसके बाद इश्माएल ने कनान देश से एक पत्नी ली, जिसका नाम मलकूत था, और उससे निश्मा, दूमा, मासा, चादाद, तेमा, यतूर, नाफिश और केदमा पैदा हुए।
19 ये इश्माएल के बेटे हैं, और ये उनके नाम हैं, वे अपने-अपने देशों के अनुसार बारह राजकुमार थे; और बाद में इश्माएल के परिवार फैल गए, और इश्माएल अपने बच्चों और अपनी सारी जायदाद, अपने घराने के लोगों और अपनी सारी चीज़ों को लेकर, जहाँ उन्हें जगह मिली, वहाँ रहने चला गया।
20 और वे पारान के जंगल के पास जाकर रहने लगे, और उनका ठिकाना हवीला से शूर तक था, जो मिस्र के सामने है, जब तुम अश्शूर की तरफ आते हो।
21 और इश्माएल और उसके बेटे उस देश में रहने लगे, और उनके बच्चे हुए, और वे फलने-फूलने लगे और बहुत बढ़ गए।
22 और इश्माएल के जेठे बेटे नेबायोत के बेटों के नाम ये हैं: मेंद, सेंद, मायोन; और केदार के बेटे अल्योन, केज़ेम, चामद और एली थे।
23 और अदबील के बेटे चामद और याबीन थे; और मिबसाम के बेटे ओबद्याह, एबेदमेलेक और यूश थे; ये इश्माएल की पत्नी रीबा के बच्चों के घराने हैं।
24 और इश्माएल के बेटे मिश्मा के बेटे शमुआ, ज़कर्योन और ओबेद थे; और दूमा के बेटे केज़ेद, एली, मकहमद और अमेद थे।
25 और मासा के बेटे मेलोन, मूला और एबिदादोन थे; और चादाद के बेटे अज़ूर, मिन्ज़ार और एबेदमेलेक थे; और तेमा के बेटे सेईर, सादोन और याकोल थे।
26 और येतूर के बेटे मेरिथ, याइश, आलियो और पचोत थे; और नाफिश के बेटे एबेद-तामेद, अबियासाफ और मीर थे; और केदमा के बेटे खलीप, तचती और ओमीर थे; ये इश्माएल की पत्नी मलकूत के बच्चे थे जिनके घराने थे।
27 ये सब इश्माएल के परिवार हैं, जो अपनी-अपनी पीढ़ियों के अनुसार हैं, और वे उन ज़मीनों में रहते थे जहाँ उन्होंने अपने लिए शहर बनाए थे, और आज तक वहीं रहते हैं।
28 और उन दिनों अब्राहम के बेटे इसहाक की पत्नी, बेथुएल की बेटी रेबेका बांझ थी, उसके कोई बच्चा नहीं था; और इसहाक अपने पिता के साथ कनान देश में रहता था; और यहोवा इसहाक के साथ था; और अर्पक्षद, जो नूह का बेटा शेम था, उन्हीं दिनों इसहाक की उम्र के अड़तालीसवें साल में मर गया, और अर्पक्षद कुल चार सौ अड़तीस साल जीया, और वह मर गया।

अध्याय 26

1 और जब अब्राहम के बेटे इसहाक की उम्र उनसठ साल थी, तो उन दिनों उसकी पत्नी रिबका बांझ थी।
2 और रेबेका ने इसहाक से कहा, "मेरे मालिक, मैंने सच सुना है कि तुम्हारी माँ सारा अपने बचपन में बांझ थी, जब तक मेरे मालिक अब्राहम, तुम्हारे पिता ने उसके लिए प्रार्थना नहीं की और वह उससे गर्भवती हुई।"
3 इसलिए अब तुम भी खड़े हो जाओ, और परमेश्वर से प्रार्थना करो, और वह तुम्हारी प्रार्थना सुनेगा, और अपनी दया से हमें याद रखेगा।
4 इसहाक ने अपनी पत्नी रेबेका से कहा, "अब्राहम ने पहले ही परमेश्वर से मेरे लिए प्रार्थना की है कि वह अपने वंश को बढ़ाए, इसलिए अब यह बांझपन हमें तुमसे ही मिलेगा।"
5 और रेबेका ने उससे कहा, लेकिन अब तुम भी उठो और प्रार्थना करो, कि प्रभु तुम्हारी प्रार्थना सुनें और मुझे बच्चे दें। इसहाक ने अपनी पत्नी की बात मान ली, और इसहाक और उसकी पत्नी उठे और मोरिया देश में प्रार्थना करने और प्रभु को खोजने के लिए गए, और जब वे उस जगह पहुँचे तो इसहाक खड़ा हुआ और अपनी पत्नी के लिए प्रभु से प्रार्थना की क्योंकि वह बांझ थी।
6 और इसहाक ने कहा, हे स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा, जिसकी अच्छाई और दया पृथ्वी पर भरी हुई है, तूने मेरे पिता को उसके पिता के घर और उसकी जन्मभूमि से निकालकर इस देश में लाया, और उससे कहा, मैं तेरे वंश को यह भूमि दूंगा, और तूने उससे वादा किया और उससे कहा, मैं तेरे वंश को स्वर्ग के तारों और समुद्र की रेत के समान बढ़ाऊंगा, अब तेरी बातें सच हों जो तूने मेरे पिता से कही थीं।
7 क्योंकि तू हमारा परमेश्वर यहोवा है, हमारी नज़रें तेरी ओर लगी हैं, ताकि तू हमें आदमियों का वंश दे, जैसा तूने हमसे वादा किया था, क्योंकि तू हमारा परमेश्वर यहोवा है, और हमारी नज़रें सिर्फ़ तेरी ओर लगी हैं।
8 और यहोवा ने अब्राहम के बेटे इसहाक की प्रार्थना सुनी, और यहोवा ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई।
9 और लगभग सात महीने बाद जब बच्चे उसके पेट में आपस में लड़ने लगे, और वह उनके कारण बहुत दुखी हो गई, तो उसने उस देश की सभी औरतों से पूछा, "क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा ही हुआ है जैसा मेरे साथ हुआ है?" उन्होंने उससे कहा, "नहीं।"
10 और उसने उनसे कहा, "दुनिया की सभी औरतों में मैं अकेली क्यों हूँ?" और वह इसी वजह से यहोवा को ढूंढने के लिए मोरिया देश गई; और वह शेम और उसके बेटे एबर के पास गई ताकि उनसे इस बारे में पूछताछ करे, और उनसे कहे कि वे इस मामले में उसके बारे में यहोवा को ढूंढें।
11 और उसने अब्राहम से यह भी कहा कि वह यहोवा से पूछे कि उसके साथ क्या-क्या हुआ है।
12 और सबने इस बात के बारे में यहोवा से पूछा, और यहोवा की तरफ़ से उसे यह संदेश दिया, "तेरे पेट में दो बच्चे हैं, और उनसे दो राष्ट्र निकलेंगे; और एक राष्ट्र दूसरे से ज़्यादा ताकतवर होगा, और बड़ा राष्ट्र छोटे के अधीन होगा।"
13 और जब उसके बच्चे के जन्म के दिन पूरे हो गए, तो वह घुटनों के बल बैठी, और देखा कि उसके पेट में जुड़वाँ बच्चे थे, जैसा कि प्रभु ने उससे कहा था।
14 और पहला बच्चा रोएंदार कपड़े जैसा लाल निकला, और देश के सब लोगों ने उसका नाम एसाव रखा, और कहा, कि यह तो गर्भ से ही पूरा हो गया है।
15 इसके बाद उसका भाई आया, और उसने एसाव की एड़ी पकड़ ली, इसलिए उसका नाम याकूब रखा गया।
16 और अब्राहम का बेटा इसहाक साठ साल का था जब उसने उन्हें जन्म दिया।

17 और लड़के पंद्रह साल के हो गए, और वे आदमियों के ग्रुप में आ गए। एसाव एक चालाक और धोखेबाज़ आदमी था, और खेत में एक माहिर शिकारी था, और याकूब एक काबिल और समझदार आदमी था, जो तंबुओं में रहता था, झुंड चराता था और भगवान की बातें और अपने माता-पिता की आज्ञाएँ सीखता था।
18 और इसहाक और उसके घराने के बच्चे अपने पिता अब्राहम के साथ कनान देश में रहने लगे, जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा दी थी।
19 और अब्राहम का बेटा इश्माएल अपने बच्चों और अपने सभी लोगों के साथ चला गया, और वे हवीला देश में लौट आए, और वहीं रहने लगे।
20 और अब्राहम की सब रखेलियों के बच्चे पूरब के देश में रहने चले गए, क्योंकि अब्राहम ने उन्हें अपने बेटे के पास से भेज दिया था, और उन्हें तोहफ़े देकर चले गए थे।
21 अब्राहम ने अपना सब कुछ अपने बेटे इसहाक को दे दिया, और अपना सारा खज़ाना भी उसे दे दिया।
22 और उसने उसे हुक्म दिया, "क्या तू नहीं जानता और समझता कि स्वर्ग और पृथ्वी में प्रभु ही परमेश्वर है, और उसके अलावा कोई और नहीं है?"
23 और वही है जिसने मुझे मेरे पिता के घर से, और मेरे जन्म की जगह से ले जाकर, धरती पर सारी खुशियाँ दीं; और मुझे बुरे लोगों की सलाह से बचाया, क्योंकि मैंने उसी पर भरोसा किया था।
24 और वह मुझे इस जगह पर ले आया, और उसने मुझे ऊर कसदीम से छुड़ाया; और उसने मुझसे कहा, तेरे वंश को मैं ये सारी ज़मीन दूंगा, और जब वे मेरे हुक्म, मेरे नियम और मेरे फैसले मानेंगे जो मैंने तुझे दिए हैं, और जो मैं उन्हें दूंगा, तो वे इनके वारिस होंगे।
25 इसलिए अब मेरे बेटे, मेरी बात सुनो, और अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन करो, जो मैंने तुम्हें दी हैं। सही रास्ते से न तो दाएं मुड़ना और न ही बाएं, ताकि तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारे बच्चों का हमेशा भला हो।
26 और प्रभु के अद्भुत कामों और उसकी उस कृपा को याद करो जो उसने हम पर दिखाई है, कि उसने हमें हमारे दुश्मनों के हाथों से छुड़ाया, और हमारे प्रभु परमेश्वर ने उन्हें हमारे हाथ में कर दिया; और इसलिए अब जो कुछ मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, उसका पालन करो, और अपने परमेश्वर की आज्ञाओं से मुँह मत मोड़ो, और उसके अलावा किसी की सेवा मत करो, ताकि तुम्हारा और तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश का भला हो।
27 और तू अपने बच्चों और अपनी संतानों को प्रभु की शिक्षाएँ और उसकी आज्ञाएँ सिखा, और उन्हें वह सीधा मार्ग सिखा जिस पर उन्हें चलना चाहिए, ताकि उनका हमेशा भला हो।
28 इसहाक ने अपने पिता को जवाब दिया, "जो कुछ मेरे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी है, वही मैं करूंगा; और मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं से नहीं हटूंगा, जो कुछ उसने मुझे आज्ञा दी है, मैं उसका पालन करूंगा।" और अब्राहम ने अपने बेटे इसहाक और अपने बच्चों को भी आशीर्वाद दिया; और अब्राहम ने याकूब को प्रभु की शिक्षा और उसके मार्ग सिखाए।
29 और उसी समय अब्राहम की मौत हो गई, याकूब और एसाव, जो इसहाक के बेटे थे, की ज़िंदगी के पंद्रहवें साल में, और अब्राहम की कुल उम्र एक सौ पचहत्तर साल थी, और वह मरा और अच्छी उम्र में अपने लोगों के पास मिल गया, बूढ़ा और खुश था, और उसके बेटों इसहाक और इश्माएल ने उसे दफ़नाया।
30 और जब कनान के लोगों ने सुना कि अब्राहम मर गया है, तो वे सब अपने राजाओं, हाकिमों और अपने सभी आदमियों के साथ अब्राहम को दफ़नाने के लिए आए।
31 और हारान देश के सभी रहने वाले, और अब्राहम के घराने के सभी परिवार, और सभी हाकिम और बड़े-बड़े लोग, और अब्राहम के रखेलियों से पैदा हुए बेटे, सब जब अब्राहम की मौत के बारे में सुनकर आए, तो उन्होंने अब्राहम की मेहरबानी का बदला चुकाया, और उसके बेटे इसहाक को दिलासा दिया, और अब्राहम को उस गुफा में दफ़नाया जिसे उसने हित्ती एप्रोन और उसके बच्चों से कब्र के लिए खरीदा था।
32 और कनान के सभी निवासी, और वे सभी जो अब्राहम को जानते थे, अब्राहम के लिए पूरे एक साल तक रोते रहे, और पुरुष और स्त्रियाँ उसके लिए शोक मनाते रहे।
33 और सभी छोटे बच्चे और देश के सभी निवासी अब्राहम के कारण रोए, क्योंकि अब्राहम उन सभी के साथ अच्छा था, और क्योंकि वह परमेश्वर और मनुष्यों के साथ ईमानदार था।
34 और अब्राहम जैसा कोई और आदमी नहीं हुआ जो परमेश्वर से डरता हो, क्योंकि वह बचपन से ही अपने परमेश्वर से डरता था, और यहोवा की सेवा करता था, और बचपन से लेकर अपनी मौत के दिन तक अपनी ज़िंदगी के सभी कामों में लगा रहा।
35 और यहोवा उसके साथ था और उसने उसे निम्रोद और उसके लोगों की सलाह से बचाया, और जब उसने एलाम के चार राजाओं से लड़ाई की तो उसने उन्हें हरा दिया।
36 और उसने धरती के सभी बच्चों को परमेश्वर की सेवा में लाया, और उन्हें प्रभु के मार्ग सिखाए, और उन्हें प्रभु के बारे में बताया।
37 और उसने एक बाग बनाया और उसमें अंगूर का बाग लगाया, और वह हमेशा अपने तंबू में देश से आने-जाने वालों के लिए खाना और पानी तैयार रखता था, ताकि वे उसके घर में पेट भर सकें।
38 और यहोवा परमेश्वर ने अब्राहम के कारण सारी पृथ्वी को छुड़ाया।
39 और अब्राहम की मौत के बाद परमेश्वर ने उसके बेटे इसहाक और उसके बच्चों को आशीर्वाद दिया, और प्रभु इसहाक के साथ था जैसे वह अपने पिता अब्राहम के साथ था, क्योंकि इसहाक ने प्रभु की सभी आज्ञाओं का पालन किया जैसा उसके पिता अब्राहम ने उसे आज्ञा दी थी; वह उस सही रास्ते से न तो दाएँ मुड़ा और न ही बाएँ जिसकी आज्ञा उसके पिता ने उसे दी थी।

अध्याय 27

1 और उस समय, अब्राहम की मृत्यु के बाद, एसाव अक्सर शिकार करने के लिए खेतों में जाता था।
2 और बाबेल का राजा निम्रोद, जो अम्राफेल भी कहलाता था, वह भी अक्सर अपने ताकतवर आदमियों के साथ मैदान में शिकार करने और दिन की ठंडक में अपने आदमियों के साथ घूमने जाता था।
3 और निम्रोद हर दिन एसाव पर नज़र रखता था, क्योंकि निम्रोद के दिल में हर दिन एसाव के लिए जलन बनी रहती थी।

4 एक दिन एसाव शिकार करने के लिए मैदान में गया, और उसने निम्रोद को अपने दो आदमियों के साथ जंगल में घूमते हुए पाया।
5 और उसके सभी ताकतवर आदमी और उसके लोग जंगल में उसके साथ थे, लेकिन वे उससे दूर हो गए, और वे शिकार करने के लिए अलग-अलग दिशाओं में चले गए, और एसाव निम्रोद के लिए छिप गया, और वह जंगल में उसके लिए छिप गया।
6 और निम्रोद और उसके साथ के आदमी उसे नहीं जानते थे, और निम्रोद और उसके आदमी अक्सर दिन के ठंडे समय में मैदान में घूमते रहते थे, और यह जानने के लिए कि उसके आदमी मैदान में कहाँ शिकार कर रहे हैं।
7 और निम्रोद और उसके साथ के दो आदमी उस जगह पहुँचे जहाँ वे थे, तभी एसाव अचानक अपनी छिपने की जगह से निकला, और अपनी तलवार निकाली, और जल्दी से निम्रोद के पास दौड़ा और उसका सिर काट दिया।
8 और एसाव ने निम्रोद के साथ के दो आदमियों से ज़बरदस्त लड़ाई की, और जब उन्होंने उसे पुकारा, तो एसाव ने उनकी तरफ़ मुड़कर उन्हें अपनी तलवार से मार डाला।
9 और निम्रोद के सभी ताकतवर आदमियों ने, जो उसे छोड़कर जंगल में चले गए थे, दूर से चीख सुनी, और वे उन दो आदमियों की आवाज़ पहचान गए, और वे इसका कारण जानने के लिए दौड़े, जब उन्होंने अपने राजा और उसके साथ के दो आदमियों को जंगल में मरा हुआ पाया।
10 और जब एसाव ने निम्रोद के ताकतवर आदमियों को दूर से आते देखा, तो वह भाग गया, और इस तरह बच निकला; और एसाव ने निम्रोद के कीमती कपड़े ले लिए, जो निम्रोद के पिता ने उसे विरासत में दिए थे, और जिनसे निम्रोद ने पूरे देश पर कब्ज़ा किया था, और वह भागकर उन्हें अपने घर में छिपा लिया।
11 और एसाव उन कपड़ों को लेकर निम्रोद के आदमियों से डरकर शहर में भाग गया। वह लड़ाई से थका हुआ और कमज़ोर होकर अपने पिता के घर पहुँचा। जब वह अपने भाई याकूब के पास पहुँचा और उसके सामने बैठा, तो वह दुख से मरने वाला था।
12 और उसने अपने भाई याकूब से कहा, "देखो, मैं आज मर जाऊँगा, तो फिर मुझे जन्म के अधिकार की क्या ज़रूरत है?" और याकूब ने इस मामले में एसाव के साथ समझदारी से काम लिया, और एसाव ने अपना जन्म का अधिकार याकूब को बेच दिया, क्योंकि यह प्रभु की मर्ज़ी से हुआ था।
13 और मकपेला के खेत की गुफा में एसाव का हिस्सा, जिसे अब्राहम ने हित्तियों से कब्रिस्तान के लिए खरीदा था, एसाव ने याकूब को बेच दिया, और याकूब ने यह सब अपने भाई एसाव से कीमत देकर खरीदा।
14 और याकूब ने यह सब बातें एक किताब में लिखीं, और गवाहों के सामने गवाही दी, और उस पर मुहर लगा दी, और वह किताब याकूब के हाथ में रही।
15 और जब कूश का बेटा निम्रोद मर गया, तो उसके आदमियों ने उसे उठाकर घबराहट में उसके शहर में ले जाकर दफ़ना दिया। निम्रोद कुल दो सौ पंद्रह साल तक ज़िंदा रहा और फिर उसकी मौत हो गई।
16 और निम्रोद ने देश के लोगों पर एक सौ पचासी साल राज किया; और निम्रोद एसाव की तलवार से शर्म और बेइज्जती में मर गया, और अब्राहम के वंश ने उसकी मौत वैसी ही की जैसी उसने अपने सपने में देखी थी।
17 और निम्रोद की मौत के बाद उसका राज्य कई हिस्सों में बँट गया, और वे सभी हिस्से जिन पर निम्रोद का राज था, देश के अपने-अपने राजाओं को वापस मिल गए, जिन्होंने निम्रोद की मौत के बाद उन्हें वापस ले लिया, और निम्रोद के घराने के सभी लोग लंबे समय तक देश के दूसरे सभी राजाओं के गुलाम रहे।

अध्याय 28

1 और उन दिनों में, अब्राहम की मौत के बाद, उसी साल प्रभु ने देश में भारी अकाल डाला, और जब कनान देश में अकाल पड़ रहा था, तो इसहाक भी अपने पिता अब्राहम की तरह अकाल के कारण मिस्र जाने के लिए निकल पड़ा।
2 और उस रात यहोवा इसहाक के सामने प्रकट हुआ और उससे कहा, मिस्र मत जाओ, बल्कि उठकर गरार में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास जाओ, और जब तक अकाल खत्म न हो जाए, वहीं रहो।
3 और इसहाक उठकर गरार चला गया, जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी, और वह वहाँ पूरे एक साल रहा।
4 जब इसहाक गरार आया, तो वहाँ के लोगों ने देखा कि उसकी पत्नी रेबेका बहुत सुंदर है। गरार के लोगों ने इसहाक से उसकी पत्नी के बारे में पूछा, और उसने कहा, वह मेरी बहन है, क्योंकि वह यह कहने से डर रहा था कि वह उसकी पत्नी है, कहीं ऐसा न हो कि लोग उसकी वजह से उसे मार डालें।
5 तब अबीमेलेक के हाकिमों ने जाकर राजा के सामने उस औरत की तारीफ़ की, लेकिन उसने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया, और न ही उनकी बातों पर ध्यान दिया।
6 लेकिन उसने सुना कि इसहाक ने उसे अपनी बहन बताया है, इसलिए राजा ने यह बात अपने मन में ही रखी।
7 जब इसहाक उस देश में तीन महीने रहा, तो अबीमेलेक ने खिड़की से बाहर देखा, और देखा कि इसहाक अपनी पत्नी रिबका के साथ खेल रहा है, क्योंकि इसहाक राजा के बाहरी घर में रहता था, इसलिए इसहाक का घर राजा के घर के सामने था।
8 राजा ने इसहाक से कहा, "तूने अपनी पत्नी के बारे में यह कहकर हमारे साथ क्या किया कि वह मेरी बहन है? कितनी आसानी से लोगों के बड़े लोगों में से कोई उसके साथ सो सकता था, और तू हमें दोषी ठहराता।"
9 इसहाक ने अबीमेलेक से कहा, "मुझे डर था कि कहीं मैं अपनी पत्नी की वजह से मर न जाऊं, इसलिए मैंने कहा, वह मेरी बहन है।"
10 उस समय अबीमेलेक ने अपने सभी हाकिमों और बड़े लोगों को हुक्म दिया, और वे इसहाक और उसकी पत्नी रिबका को पकड़कर राजा के सामने ले आए।
11 और राजा ने हुक्म दिया कि उन्हें शाही कपड़े पहनाओ, और उन्हें शहर की सड़कों पर घुमाओ, और पूरे देश में उनके सामने यह ऐलान करो, 'यह आदमी है और यह उसकी पत्नी है; जो कोई भी इस आदमी या इसकी पत्नी को छुएगा, वह ज़रूर मर जाएगा।' और इसहाक अपनी पत्नी के साथ राजा के घर लौट आया, और यहोवा इसहाक के साथ था और वह बड़ा होता गया और उसे किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।

12 और यहोवा ने इसहाक को अबीमेलेक और उसके सभी लोगों की नज़र में अच्छा बना दिया, और अबीमेलेक ने इसहाक के साथ अच्छा व्यवहार किया, क्योंकि अबीमेलेक को अपने पिता और अब्राहम के बीच की कसम और करार याद था।
13 और अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "देख, सारी धरती तेरे सामने है; जहाँ तुझे अच्छा लगे, वहीं रह, जब तक तू अपनी ज़मीन पर वापस न लौट जाए।" और अबीमेलेक ने इसहाक को खेत, अंगूर के बाग और गरार की ज़मीन का सबसे अच्छा हिस्सा दिया, ताकि वह बोए, काटे और ज़मीन की उपज खाए, जब तक अकाल के दिन न बीत जाएं।
14 और इसहाक ने उस ज़मीन में बोया, और उसी साल उसे सौ गुना फ़ायदा हुआ, और यहोवा ने उसे आशीर्वाद दिया।
15 और वह आदमी बहुत अमीर हो गया, और उसके पास भेड़-बकरियां, गाय-बैल और बहुत सारे नौकर-चाकर हो गए।
16 जब अकाल के दिन बीत गए, तो प्रभु ने इसहाक को दर्शन देकर कहा, उठो, इस जगह से निकलकर अपने देश कनान लौट जाओ; और इसहाक उठकर हेब्रोन लौट गया, जो कनान देश में है, वह और उसके सारे लोग, जैसा प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी।
17 इसके बाद अर्पक्षद का बेटा शेलक उसी साल मर गया, जो याकूब और एसाव की ज़िंदगी का अठारहवां साल था; और शेलक कुल चार सौ तैंतीस साल जीया और मर गया।
18 उस समय इसहाक ने अपने छोटे बेटे याकूब को शेम और एबर के घर भेजा, और उसने यहोवा की बातें सीखीं, और याकूब शेम और एबर के घर में बत्तीस साल तक रहा, और उसका भाई एसाव नहीं गया, क्योंकि वह जाने को तैयार नहीं था, और वह कनान देश में अपने पिता के घर में ही रहा।
19 और एसाव लगातार खेतों में शिकार करता रहता था ताकि जो कुछ भी उसे मिल सके, उसे घर ले आए, एसाव हमेशा ऐसा ही करता रहा।
20 और एसाव एक चालाक और धोखेबाज़ आदमी था, जो लोगों के दिलों पर कब्ज़ा करके उन्हें अपने जाल में फंसा लेता था। एसाव मैदान में एक बहादुर आदमी था, और समय के साथ वह हमेशा की तरह शिकार करने चला गया; और वह सेईर के मैदान तक आ गया, जो एदोम भी है।
21 और वह सेईर देश में एक साल और चार महीने तक खेत में शिकार करता रहा।
22 और एसाव ने सेईर देश में एक कनान के आदमी की बेटी को देखा, जिसका नाम यहूदीत था। वह कनान के बेटे हेत के खानदान से एपेर के बेटे बेरी की बेटी थी।
23 और एसाव ने उसे अपनी पत्नी बना लिया, और उसके पास गया; जब एसाव ने उसे लिया, तब वह चालीस साल का था, और वह उसे हेब्रोन ले आया, जो उसके पिता का घर था, और वहीं रहने लगा।
24 और उन दिनों में, इसहाक की उम्र के एक सौ दसवें साल में, यानी याकूब की उम्र के पचासवें साल में, नूह के बेटे शेम की मौत हो गई; शेम की मौत के समय वह छह सौ साल का था।
25 और जब शेम की मौत हो गई तो याकूब अपने पिता के पास हेब्रोन लौट आया जो कनान देश में है।
26 और याकूब की उम्र के छप्पनवें साल में, हारान से लोग आए, और रिबका को उसके भाई लाबान के बारे में बताया गया जो बेथुएल का बेटा था।
27 उन दिनों लाबान की पत्नी बांझ थी, और उसके कोई बच्चा नहीं हुआ, और उसकी सब दासियों से भी कोई बच्चा नहीं हुआ।
28 और इसके बाद यहोवा ने लाबान की पत्नी अदीना को याद किया, और वह गर्भवती हुई और उसके जुड़वां बेटियां हुईं, और लाबान ने अपनी बेटियों के नाम रखे, बड़ी का नाम लिआ और छोटी का नाम राहेल।
29 और वे लोग आए और ये बातें रिबका को बताईं, और रिबका बहुत खुश हुई कि प्रभु ने उसके भाई से भेंट की है और उसके बच्चे हुए हैं।

अध्याय 29

1 अब्राहम का बेटा इसहाक बूढ़ा हो गया और उसकी उम्र बढ़ गई, और बुढ़ापे की वजह से उसकी आँखें भारी हो गईं; वे धुंधली हो गईं और उन्हें दिखाई नहीं देता था।
2 उस समय इसहाक ने अपने बेटे एसाव को बुलाया और कहा, "अपने हथियार, अपना तरकश और अपना धनुष ले आओ, उठो और मैदान में जाओ और मेरे लिए कुछ हिरन का मांस ले आओ, और मेरे लिए स्वादिष्ट मांस बनाकर मेरे पास लाओ, ताकि मैं उसे खाकर मरने से पहले तुम्हें आशीर्वाद दे सकूँ, क्योंकि अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे बाल सफेद हो गए हैं।"
3 और एसाव ने वैसा ही किया; और वह अपना हथियार लेकर हमेशा की तरह हिरन का मांस पकड़ने के लिए खेत में चला गया, ताकि अपने पिता के कहने के अनुसार उसे लाकर दे, ताकि वह उसे आशीर्वाद दे।
4 और रेबेका ने वे सारी बातें सुनीं जो इसहाक ने एसाव से कही थीं, और उसने जल्दी से अपने बेटे याकूब को बुलाकर कहा, "तेरे पिता ने तेरे भाई एसाव से ऐसी ही बातें कहीं थीं, और मैंने भी ऐसी ही बातें सुनी हैं, इसलिए अब जल्दी कर और जो मैं तुझे बताऊँ वह कर।"
5 उठो और झुंड के पास जाओ और मेरे लिए दो अच्छे बकरे ले आओ, और मैं तुम्हारे पिता के लिए स्वादिष्ट मांस ले आऊंगा, और तुम अपने भाई के शिकार से आने से पहले वह स्वादिष्ट मांस ले आना ताकि तुम्हारे पिता तुम्हें आशीर्वाद दें।
6 और याकूब ने जल्दी से अपनी माँ की आज्ञा के अनुसार किया, और उसने स्वादिष्ट भोजन बनाया और एसाव के शिकार से लौटने से पहले उसे अपने पिता के सामने ले आया।
7 तब इसहाक ने याकूब से पूछा, "बेटा, तू कौन है?" उसने कहा, "मैं तेरा जेठा एसाव हूँ, मैंने वैसा ही किया जैसा तूने मुझे कहा था, इसलिए अब उठ और मेरे शिकार में से खा, ताकि जैसा तूने मुझसे कहा था, वैसा ही तेरा मन मुझे आशीर्वाद दे।"
8 और इसहाक उठा, और उसने खाया-पिया, और उसका दिल खुश हुआ, और उसने याकूब को आशीर्वाद दिया, और याकूब अपने पिता के पास से चला गया; और जैसे ही इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया और वह उसके पास से चला गया, देखो एसाव भी अपने शिकार से खेत से आया, और उसने भी स्वादिष्ट खाना बनाया और अपने पिता के पास ले आया ताकि वह उसे खाए और उसे आशीर्वाद दे।
9 इसहाक ने एसाव से कहा, "और वह कौन था जिसने तुम्हारे आने से पहले हिरन का मांस लेकर मेरे पास लाया और जिसे मैंने आशीर्वाद दिया?" एसाव को पता चल गया कि उसके भाई याकूब

ने यह किया है, और एसाव का गुस्सा अपने भाई याकूब पर भड़क उठा क्योंकि उसने उसके साथ ऐसा किया था।
10 तब एसाव ने कहा, क्या उसका नाम याकूब सही नहीं है? क्योंकि उसने मुझे दो बार हराया है, उसने मेरा जन्म का अधिकार छीन लिया है और अब उसने मेरा आशीर्वाद भी छीन लिया है; और एसाव बहुत रोया; और जब इसहाक ने अपने बेटे एसाव को रोते हुए सुना, तो इसहाक ने एसाव से कहा, बेटा, मैं क्या कर सकता हूँ, तेरा भाई चालाकी से आया और तेरा आशीर्वाद भी छीन लिया; और एसाव अपने भाई याकूब से नफरत करने लगा, क्योंकि उसके पिता ने उसे आशीर्वाद दिया था, और उसका गुस्सा उस पर बहुत भड़क उठा।
11 और याकूब अपने भाई एसाव से बहुत डर गया, और वह उठकर शेम के बेटे एबर के घर भाग गया, और अपने भाई की वजह से वहीं छिप गया। और जब याकूब कनान देश से हेब्रोन से निकला, तब वह 63 साल का था, और याकूब अपने भाई एसाव की वजह से एबर के घर में चौदह साल तक छिपा रहा, और वहाँ वह प्रभु के मार्ग और उसकी आज्ञाएँ सीखता रहा।
12 और जब एसाव ने देखा कि याकूब भाग गया है और उससे बच निकला है, और याकूब ने चालाकी से आशीर्वाद पा लिया है, तो एसाव बहुत दुखी हुआ, और उसे अपने माता-पिता पर भी गुस्सा आया; और वह भी उठा और अपनी पत्नी को लेकर अपने माता-पिता के पास सेईर देश चला गया, और वहीं रहने लगा; और एसाव ने वहाँ हित्ती एलोन की बेटी बोसमत नाम की एक औरत को देखा, और उसने उसे अपनी पहली पत्नी के अलावा दूसरी पत्नी बना लिया, और एसाव ने उसका नाम आदा रखा, यह कहकर कि आशीर्वाद उसी समय उससे चला गया था।
13 और एसाव अपने माता-पिता से मिले बिना छह महीने तक सेईर देश में रहा, और उसके बाद एसाव अपनी पत्नियों को लेकर कनान देश लौट गया, और एसाव ने अपनी दोनों पत्नियों को हेब्रोन में अपने पिता के घर में रख दिया।
14 और एसाव की पत्नियों ने अपने कामों से इसहाक और रिबका को परेशान किया और गुस्सा दिलाया, क्योंकि वे यहोवा के रास्ते पर नहीं चलीं, बल्कि अपने पिता की सिखाई हुई लकड़ी और पत्थर के देवताओं की पूजा करती थीं, और वे अपने पिता से भी ज़्यादा बुरी थीं।
15 और वे अपने दिल की बुरी इच्छाओं के अनुसार चले, और बाल देवताओं के लिए बलि चढ़ाने और धूप जलाने लगे, और इसहाक और रिबका उनसे थक गए।
16 और रेबेका ने कहा, मैं हित्त की बेटियों के कारण अपनी जान से थक गई हूँ; अगर याकूब हित्त की बेटियों में से, जैसी ये हैं जो इस देश की बेटियाँ हैं, किसी को ब्याह ले, तो मेरे जीवन का क्या फायदा?
17 उन दिनों एसाव की पत्नी आदा गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ। एसाव ने अपने बेटे का नाम एलीपज रखा। जब एसाव ने उसे जन्म दिया, तब वह 65 साल का था।
18 और उन्हीं दिनों, याकूब की उम्र के चौसठवें साल में अब्राहम का बेटा इश्माएल मर गया, और इश्माएल कुल एक सौ सैंतीस साल जीया और मर गया।
19 जब इसहाक ने सुना कि इश्माएल मर गया है, तो वह उसके लिए बहुत दुखी हुआ, और इसहाक कई दिनों तक उसके लिए विलाप करता रहा।
20 और जब याकूब एबर के घर में चौदह साल रहा, तो याकूब को अपने माता-पिता से मिलने की इच्छा हुई, और याकूब हेब्रोन में अपने माता-पिता के घर आया, और उन दिनों एसाव भूल गया था कि याकूब ने उससे आशीर्वाद लेकर उसके साथ क्या किया था।
21 और जब एसाव ने याकूब को अपने पिता और माता के पास आते देखा, तो उसे याद आया कि याकूब ने उसके साथ क्या किया था, और वह उससे बहुत नाराज़ हुआ और उसे मार डालना चाहता था।
22 अब्राहम का बेटा इसहाक बूढ़ा हो गया था और उसकी उम्र बहुत ज़्यादा हो गई थी। एसाव ने कहा, "अब मेरे पिता के मरने का समय आ गया है, और जब वह मरेंगे तो मैं अपने भाई याकूब को मार डालूँगा।"
23 जब यह बात रिबका को बताई गई, तो उसने जल्दी से अपने बेटे याकूब को बुलाकर कहा, "उठो, हारान में मेरे भाई लाबान के पास भाग जाओ, और कुछ समय वहीं रहना, जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा शांत न हो जाए, तब तुम वापस आना।"
24 और इसहाक ने याकूब को बुलाकर कहा, "कनान की लड़कियों में से किसी से शादी मत करना, क्योंकि हमारे पिता अब्राहम ने यहोवा के वचन के अनुसार हमें यह आज्ञा दी थी, कि मैं यह देश तुम्हारे वंश को दूंगा; अगर तुम्हारे बच्चे मेरे उस वादे को मानेंगे जो मैंने तुमसे किया है, तो मैं भी तुम्हारे बच्चों के साथ वही करूंगा जो मैंने तुमसे कहा है और मैं उन्हें नहीं छोड़ूंगा।"
25 इसलिए अब मेरे बेटे, मेरी बात सुन, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ, वह सब मान, और कनान की बेटियों में से किसी से शादी न कर। उठ, हारान में अपने नाना बतूएल के घर जा, और वहाँ अपने मामा लाबान की बेटियों में से किसी से शादी कर।
26 इसलिए सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को और जिस देश में तुम जा रहे हो, वहाँ उसके सब मार्गों को भूल जाओ, और उस देश के लोगों से मेलजोल करके बेकार की बातों में लग जाओ और अपने परमेश्वर यहोवा को छोड़ दो।
27 लेकिन जब तुम उस देश में आओ तो वहाँ यहोवा की सेवा करना, उस रास्ते से न दाएँ मुड़ना और न बाएँ जिसकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी थी और जो तुमने सीखा था।
28 और सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें धरती के लोगों की नज़र में कृपा दे, ताकि तुम वहाँ अपनी पसंद की पत्नी ले सको; जो अच्छी हो और प्रभु के मार्गों पर सीधी हो।
29 और परमेश्वर तुम्हें और तुम्हारे वंश को तुम्हारे पिता अब्राहम का आशीर्वाद दे, और तुम्हें फलने-फूलने और बढ़ने दे, और जिस देश में तुम जा रहे हो, वहां तुम बहुत से लोगों का समूह बन जाओ, और परमेश्वर तुम्हें इस देश में, तुम्हारे पिता के घर की भूमि में, बच्चों और बहुत सारी दौलत के साथ, खुशी और आनंद के साथ वापस लाए।
30 और इसहाक ने याकूब को आज्ञा देकर आशीर्वाद दिया, और उसे चाँदी और सोना समेत बहुत से तोहफ़े देकर विदा किया; और याकूब ने अपने माता-पिता की बात मानकर उन्हें चूमा, और उठकर पदान-अराम को चला गया; और जब याकूब कनान देश से बेर्शेबा से निकला, तब वह सतहत्तर साल का था।
31 और जब याकूब हारान जाने के लिए निकला, तो एसाव ने अपने बेटे एलीपज को बुलाया, और चुपके से उससे कहा, "अब जल्दी करो, अपनी तलवार हाथ में लो और याकूब का पीछा करो,

और रास्ते में उसके आगे-आगे चलो, और छिपकर उसे किसी पहाड़ पर अपनी तलवार से मार डालो, और उसका सब कुछ लेकर वापस आ जाओ।"

32 और एसाव का बेटा एलीपज एक जोशीला आदमी था और धनुष चलाने में माहिर था, जैसा उसके पिता ने उसे सिखाया था, और वह मैदान में एक मशहूर शिकारी और बहादुर आदमी था।

33 और एलीपज ने अपने पिता की आज्ञा के अनुसार किया। उस समय एलीपज तेरह साल का था। एलीपज उठा और अपनी माँ के दस भाइयों को साथ लेकर याकूब का पीछा करने लगा।

34 और वह याकूब के पीछे-पीछे गया, और कनान देश की सीमा पर शेकेम शहर के सामने उसका इंतज़ार करता रहा।

35 और याकूब ने एलीफ़ाज़ और उसके आदमियों को अपना पीछा करते देखा, और याकूब उस जगह पर रुक गया जहाँ वह जा रहा था, ताकि यह जान सके कि यह क्या है, क्योंकि वह बात नहीं जानता था; और एलीफ़ाज़ ने अपनी तलवार निकाली और वह, वह और उसके आदमी, याकूब की ओर बढ़ते गए; और याकूब ने उनसे कहा, तुम यहाँ क्यों आए हो, और अपनी तलवारों से पीछा करने का क्या मतलब है?

36 तब एलीफ़ाज़ याकूब के पास आया और उससे कहा, "मेरे पिता ने मुझे यही आज्ञा दी थी, इसलिए अब मैं उन आज्ञाओं से नहीं हटूंगा जो मेरे पिता ने मुझे दी थीं।" जब याकूब ने देखा कि एसाव ने एलीफ़ाज़ से ज़बरदस्ती करने को कहा है, तो याकूब ने एलीफ़ाज़ और उसके आदमियों के पास जाकर उनसे कहा,

37 देखो, जो कुछ मेरे पास है और जो मेरे पिता और माता ने मुझे दिया है, उसे तुम ले लो और मेरे पास से चले जाओ, और मुझे मत मारो, और यह बात तुम्हारे लिए नेकी मानी जाए।

38 और यहोवा ने याकूब को एसाव के बेटे एलीपज और उसके आदमियों की नज़र में खुश कर दिया, और उन्होंने याकूब की बात मान ली, और उसे मार डाला नहीं। और एलीपज और उसके आदमियों ने याकूब का सारा सामान ले लिया, साथ ही वह सोना-चांदी भी जो वह बेर्शेबा से लाया था; उन्होंने उसके लिए कुछ भी नहीं छोड़ा।

39 तब एलीफ़ाज़ और उसके आदमी उससे दूर चले गए और बेर्शेबा में एसाव के पास लौट आए। उन्होंने उसे याकूब के साथ जो कुछ हुआ था, वह सब बताया और जो कुछ उन्होंने याकूब से लिया था, वह सब उसे दे दिया।

40 और एसाव अपने बेटे एलीपज और उसके साथ के आदमियों पर गुस्सा हुआ, क्योंकि उन्होंने याकूब को नहीं मारा था।

41 उन्होंने एसाव से कहा, "क्योंकि याकूब ने हमसे इस बारे में गुज़ारिश की थी कि हम उसे न मारें, इसलिए हमें उस पर दया आई, और हम उसका सारा सामान लेकर तुम्हारे पास ले आए; और एसाव ने वह सारा सोना-चांदी भी ले लिया जो एलीफ़ाज़ ने याकूब से लिया था, और उसे अपने घर में रख लिया।"

42 उस समय जब एसाव ने देखा कि इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया है, और उसे आज्ञा दी है, कि तू कनान की लड़कियों में से किसी से विवाह न करना, और कनान की लड़कियाँ इसहाक और रेबेका की दृष्टि में बुरी थीं,

43 फिर वह अपने चाचा इश्माएल के घर गया, और अपनी बड़ी पत्नियों के अलावा उसने इश्माएल की बेटी मखलत को, जो नेबायोत की बहन थी, ब्याह लिया।

अध्याय 30

1 और याकूब हारान के रास्ते पर आगे बढ़ा, और मोरिया पहाड़ तक पहुँचा, और लूज़ शहर के पास पूरी रात वहीं रुका; और उसी रात यहोवा याकूब को दिखाई दिया, और उससे कहा, मैं अब्राहम का यहोवा परमेश्वर और तेरे पिता इसहाक का परमेश्वर हूँ; जिस ज़मीन पर तू लेटा है, वह मैं तुझे और तेरे वंश को दूँगा।

2 और देख, मैं तेरे साथ हूँ और जहाँ कहीं तू जाएगा, मैं तेरी रक्षा करूँगा, और मैं तेरे वंश को आकाश के तारों के समान बढ़ाऊँगा, और तेरे सब शत्रुओं को तेरे आगे परास्त कर दूँगा; और जब वे तुझसे युद्ध करेंगे, तब वे तुझ पर प्रबल न होंगे, और मैं तुझे इस देश में आनन्द, बच्चों और बहुत धन के साथ वापस ले आऊँगा।

3 और याकूब नींद से जागा और जो दर्शन उसने देखा था, उससे बहुत खुश हुआ; और उसने उस जगह का नाम बेतेल रखा।

4 और याकूब उस जगह से बहुत खुश होकर उठा, और जब वह चला तो खुशी के मारे उसके पैर हल्के महसूस हुए, और वह वहाँ से पूरब के लोगों की ज़मीन पर गया, और हारान लौट आया और चरवाहे के कुएँ के पास रुका।

5 और वहाँ उसे कुछ आदमी मिले जो हारान से अपनी भेड़-बकरियाँ चराने जा रहे थे। याकूब ने उनसे पूछा, और उन्होंने कहा, हम हारान से हैं।

6 तब उसने उनसे पूछा, "क्या तुम नाहोर के बेटे लाबान को जानते हो?" उन्होंने कहा, "हम उसे जानते हैं, और देखो, उसकी बेटी राहेल अपने पिता के झुंड को चराने आ रही है।"

7 जब वह उनसे बात कर ही रहा था, तो लाबान की बेटी राहेल अपने पिता की भेड़ें चराने आई, क्योंकि वह एक चरवाहिन थी।

8 और जब याकूब ने अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को देखा, तो वह दौड़कर उसे चूमा, और फूट-फूट कर रोया।

9 और याकूब ने राहेल को बताया कि वह उसकी पिता की बहन रिबका का बेटा है, और राहेल दौड़कर अपने पिता को यह बात बताई, और याकूब रोता रहा, क्योंकि उसके पास लाबान के घर ले जाने के लिए कुछ भी नहीं था।

10 और जब लाबान ने सुना कि उसकी बहन का बेटा याकूब आया है, तो वह दौड़ा और उसे चूमा, गले लगाया, और घर में ले जाकर उसे रोटी दी, और उसने खाया।

11 तब याकूब ने लाबान को बताया कि उसके भाई एसाव ने उसके साथ क्या किया था, और उसके बेटे एलीपज ने रास्ते में उसके साथ क्या किया था।

12 और याकूब एक महीने तक लाबान के घर में रहा, और याकूब ने लाबान के घर में खाया-पिया, और उसके बाद लाबान ने याकूब से कहा, मुझे बता कि तेरी मज़दूरी क्या होगी, क्योंकि तू बिना पैसे के मेरी सेवा कैसे कर सकता है?

13 और लाबान के कोई बेटा नहीं था, सिर्फ़ बेटियाँ थीं, और उसकी दूसरी पत्नियाँ और दासियाँ उन दिनों बांझ थीं; और ये लाबान की बेटियों के नाम हैं जो उसकी पत्नी अदीना से पैदा हुई थीं; बड़ी का नाम लिआ था और छोटी का नाम राहेल था; और लिआ के नैन-नक्श कोमल थे, लेकिन राहेल सुंदर और सुंदर थी, और याकूब उससे प्यार करता था।

14 तब याकूब ने लाबान से कहा, मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिए सात साल तेरी सेवा करूंगा; और लाबान मान गया और याकूब ने उसकी बेटी राहेल के लिए सात साल तक लाबान की सेवा की।

15 और हारान में याकूब के रहने के दूसरे साल में, यानी याकूब की ज़िंदगी के उनहत्तरवें साल में, शेम का बेटा एबर मर गया। उसकी मौत के समय वह चार सौ चौसठ साल का था।
16 और जब याकूब ने सुना कि एबर मर गया है, तो वह बहुत दुखी हुआ, और कई दिनों तक उसके लिए विलाप करता रहा।
17 और हारान में याकूब के रहने के तीसरे साल में, एसाव की पत्नी, इश्माएल की बेटी बोसमत ने उसे एक बेटा दिया, और एसाव ने उसका नाम रूएल रखा।
18 और जब याकूब लाबान के घर में रहता था, तो चौथे साल यहोवा ने लाबान को देखा और याकूब की वजह से उसे याद किया, और उसके बेटे पैदा हुए, और उसका पहला बेटा बोर था, दूसरा अलीब था, और तीसरा चोराश था।
19 और यहोवा ने लाबान को धन, सम्मान, बेटे और बेटियाँ दीं, और वह आदमी याकूब की वजह से बहुत बढ़ गया।
20 और उन दिनों याकूब ने घर और खेत में, सब तरह के कामों में लाबान की सेवा की; और घर और खेत में लाबान के सारे कामों पर यहोवा की आशीष बनी रही।
21 पांचवें साल में एसाव की पत्नी बेरी की बेटी यहूदीत कनान देश में मर गई। उसके कोई बेटा नहीं था, सिर्फ़ बेटियां थीं।
22 और उसकी बेटियों के नाम ये हैं जो उसने एसाव से पैदा कीं, बड़ी का नाम मर्ज़ीथ था, और छोटी का नाम पुईथ था।
23 जब यहूदीथ मर गया, तो एसाव उठकर हमेशा की तरह शिकार करने के लिए सेईर चला गया, और एसाव बहुत समय तक सेईर देश में रहा।
24 और छठे साल में एसाव ने अपनी दूसरी पत्नियों के अलावा, हिव्वी ज़ेबोन की बेटी अहलीबामा को भी अपनी पत्नी बना लिया, और एसाव उसे कनान देश में ले आया।
25 और अहलीबामा गर्भवती हुई और एसाव से तीन बेटे हुए, यूश, यालान और कोरह।
26 और उन दिनों, कनान देश में, एसाव के चरवाहों और कनान देश के रहने वालों के चरवाहों के बीच झगड़ा हो गया, क्योंकि एसाव के मवेशी और माल इतने ज़्यादा हो गए थे कि वह कनान देश में, अपने पिता के घर में नहीं रह सकता था, और कनान देश उसके मवेशियों की वजह से उसे सह नहीं सकता था।
27 और जब एसाव ने देखा कि कनान देश के लोगों के साथ उसका झगड़ा बढ़ गया है, तो वह उठा और अपनी पत्नियों, बेटों, बेटियों, और जो कुछ उसका था, और जो जानवर उसके पास थे, और अपनी सारी जायदाद जो उसने कनान देश में कमाई थी, सब लेकर उस देश के लोगों से दूर सेईर देश चला गया, और एसाव और उसका सारा सामान सेईर देश में रहने लगा।
28 लेकिन एसाव समय-समय पर कनान देश में अपने पिता और माता से मिलने जाता था, और एसाव ने होरी लोगों से शादी की, और अपनी बेटियों को होरी सेईर के बेटों को दे दिया।
29 और उसने अपनी बड़ी बेटी मर्ज़ीत को अपनी पत्नी के भाई ज़ेबोन के बेटे अना को दे दिया, और पूईत को होरी बिलहान के बेटे अज़र को दे दिया; और एसाव और उसके बच्चे पहाड़ पर रहने लगे, और वे फलने-फूलने लगे और उनकी गिनती बढ़ती गई।

अध्याय 31

1 सातवें साल में याकूब की लाबान के पास सेवा पूरी हो गई। याकूब ने लाबान से कहा, "मेरी पत्नी मुझे दे दो, क्योंकि मेरी सेवा के दिन पूरे हो गए हैं।" लाबान ने ऐसा ही किया। लाबान और याकूब ने उस जगह के सभी लोगों को इकट्ठा किया और उन्होंने दावत की।
2 और शाम को लाबान घर आया, और उसके बाद याकूब दावत के लोगों के साथ वहाँ आया, और लाबान ने घर की सारी बत्तियाँ बुझा दीं।
3 तब याकूब ने लाबान से कहा, तू हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहा है? लाबान ने जवाब दिया, इस देश में हमारा यही रिवाज है।
4 इसके बाद लाबान अपनी बेटी लिआ को लेकर याकूब के पास गया। जब वह उसके पास गया, तो याकूब को पता नहीं था कि वह लिआ है।
5 और लाबान ने अपनी बेटी लिआ को अपनी दासी ज़िल्पा को दासी के रूप में दे दिया।
6 और दावत में मौजूद सभी लोगों को पता था कि लाबान ने याकूब के साथ क्या किया है, लेकिन उन्होंने याकूब को यह बात नहीं बताई।
7 और उस रात सभी पड़ोसी याकूब के घर आए, और उन्होंने खाया-पिया और खुशियाँ मनाईं, और लिआ के सामने डफली बजाईं और नाचते हुए याकूब के सामने कहा, हेलेआ, हेलेआ।
8 याकूब ने उनकी बातें सुनीं, लेकिन उनका मतलब नहीं समझा; लेकिन उसने सोचा कि इस देश में शायद यही उनका रिवाज होगा।
9 और पड़ोसियों ने रात में याकूब से ये बातें कहीं, और लाबान ने उस रात घर की सारी बत्तियाँ बुझा दीं।
10 और सुबह जब दिन निकला, तो याकूब अपनी पत्नी की तरफ मुड़ा और उसने देखा कि यह लिआ थी जो उसकी गोद में लेटी हुई थी, और याकूब ने कहा, देखो अब मुझे पता चला कि पड़ोसियों ने कल रात क्या कहा था, हेलेआ, उन्होंने कहा, और मुझे यह नहीं पता था।
11 तब याकूब ने लाबान को पुकारा, और उससे कहा, तूने मेरे साथ यह क्या किया? मैंने तो राहेल के लिए तेरी सेवा की थी, फिर तूने मुझे धोखा देकर लिआ को क्यों दे दिया?
12 लाबान ने याकूब को जवाब दिया, "हमारे यहाँ यह ठीक नहीं है कि हम छोटी को बड़ी से पहले दें, इसलिए अगर तुम उसकी बहन को भी लेना चाहते हो, तो उसे भी ले लो, ताकि तुम और सात साल तक मेरी सेवा कर सको।"
13 और याकूब ने वैसा ही किया, और उसने राहेल को भी अपनी पत्नी बना लिया, और उसने लाबान की सेवा सात साल और की, और याकूब भी राहेल के पास आया, और वह राहेल को लिआ से ज़्यादा प्यार करने लगा, और लाबान ने उसे अपनी दासी बिल्हा को दासी के तौर पर दे दिया।
14 और जब यहोवा ने देखा कि लिआ से नफ़रत की जा रही है, तो यहोवा ने उसकी कोख खोली, और वह प्रेग्नेंट हुई और उन्हीं दिनों में याकूब से चार बेटे पैदा हुए।
15 और उनके नाम ये हैं, रूबेन, शिमोन, लेवी, और यहूदा, और उसके बाद वह बच्चे को जन्म देना छोड़ चुकी थी।
16 उस समय राहेल बांझ थी, और उसके कोई बच्चा नहीं था, और राहेल अपनी बहन लिआ से जलती थी। जब राहेल ने देखा कि याकूब के लिए उससे कोई बच्चा नहीं हुआ, तो उसने अपनी

दासी बिल्हा को ले लिया, और उससे याकूब के दो बेटे, दान और नप्ताली पैदा हुए।
17 जब लिआ ने देखा कि वह अब बच्चे को जन्म नहीं दे सकती, तो उसने अपनी दासी ज़िल्पा को भी लिया, और उसे याकूब को पत्नी के रूप में दे दिया; और याकूब भी ज़िल्पा के पास गया, और उसने भी याकूब को दो बेटे, गाद और आशेर, दिए।
18 और लिआ फिर से प्रेग्नेंट हुई और उन्हीं दिनों याकूब को दो बेटे और एक बेटी हुई, और उनके नाम ये हैं, इस्साकार, ज़ेबुलोन और उनकी बहन दीना।
19 उन दिनों राहेल बांझ थी, और उस समय राहेल ने यहोवा से प्रार्थना की, और कहा, हे यहोवा परमेश्वर, मुझे याद रखना और मुझ पर कृपा करना, क्योंकि अब मेरा पति मुझे छोड़ देगा, क्योंकि मेरे कोई बच्चे नहीं हैं।
20 अब हे प्रभु परमेश्वर, मेरी विनती सुन, और मेरी तकलीफ देख, और मुझे दासियों जैसे बच्चे दे, कि मैं फिर अपनी बदनामी न सहूँ।
21 और परमेश्वर ने उसकी सुनी और उसका पेट खोला, और राहेल गर्भवती हुई और उसके एक बेटे को जन्म दिया, और उसने कहा, यहोवा ने मेरी बदनामी दूर कर दी है, और उसने उसका नाम यूसुफ रखा, यह कहकर, कि यहोवा मुझे एक और बेटा दे; और जब याकूब ने उसे जन्म दिया तब वह 91 साल का था।
22 उस समय याकूब की माँ रेबेका ने अपनी नर्स डेबोरा, जो ऊज़ की बेटी थी, और इसहाक के दो नौकरों को याकूब के पास भेजा।
23 और वे हारान में याकूब के पास आए और उससे कहा, "रेबिका ने हमें तुम्हारे पास भेजा है कि तुम अपने पिता के घर कनान देश लौट जाओ।" याकूब ने उनकी यह बात मान ली जो उसकी माँ ने कही थी।
24 उस समय, जब याकूब ने राहेल के लिए लाबान की सेवा की, उसके बाकी सात साल पूरे हो गए थे, और हारान में चौदह साल रहने के बाद याकूब ने लाबान से कहा, "मुझे मेरी पत्नियाँ दे दो और मुझे विदा कर दो, ताकि मैं अपने देश जा सकूँ, क्योंकि मेरी माँ ने मुझे कनान देश से यह संदेश भेजा है कि मैं अपने पिता के घर लौट जाऊँ।"
25 लाबान ने उससे कहा, "ऐसा नहीं; अगर मैंने तुम्हारी नज़र में कृपा पाई है तो मुझे मत छोड़ो; मुझे अपनी मज़दूरी बताओ और मैं उसे दे दूँगा, और मेरे साथ रहो।"
26 और याकूब ने उससे कहा, "मज़दूरी के तौर पर तुम मुझे यह दोगे कि मैं आज तुम्हारे सारे झुंड में से गुज़रूँगा और भेड़ों और बकरियों में से हर एक भेड़ का बच्चा जो धब्बेदार और चितकबरा है और जो भूरा है, उसे अलग कर लूँगा। अगर तुम मेरे लिए यह काम करोगे तो मैं वापस आकर तुम्हारे झुंड को खिलाऊँगा और पहले की तरह उनकी देखभाल करूँगा।"
27 और लाबान ने वैसा ही किया, और लाबान ने अपने झुंड में से वह सब कुछ निकालकर उसे दे दिया जो याकूब ने कहा था।
28 और याकूब ने लाबान के झुंड से जो कुछ निकाला था, वह सब अपने बेटों को दे दिया, और याकूब लाबान के झुंड के बाकी हिस्से को चराने लगा।
29 और जब इसहाक के सेवकों ने, जिन्हें उसने याकूब के पास भेजा था, देखा कि याकूब उनके साथ कनान देश में अपने पिता के पास नहीं लौटेगा, तो वे उससे दूर चले गए, और वे कनान देश में अपने घर लौट गए।
30 और डेबोरा हारान में याकूब के साथ रही, और इसहाक के सेवकों के साथ कनान देश में वापस नहीं गई, और डेबोरा हारान में याकूब की पत्नियों और बच्चों के साथ रहने लगी।
31 और याकूब ने लाबान की सेवा छह साल और की। जब भेड़ें बच्चे देने लगीं, तो याकूब ने उनमें से चित्तीदार और धब्बेदार भेड़ें निकाल दीं, जैसा उसने लाबान से तय किया था। और याकूब ने लाबान के यहाँ छह साल तक ऐसा ही किया। वह आदमी बहुत अमीर हो गया और उसके पास मवेशी, नौकरानियाँ और नौकर-चाकर, ऊँट और गधे हो गए।
32 और याकूब के पास दो सौ मवेशियों के झुंड थे, और उसके मवेशी बड़े आकार के, सुंदर दिखने वाले और बहुत फलने-फूलने वाले थे, और सभी आदमियों के परिवार याकूब के मवेशियों में से कुछ लेना चाहते थे, क्योंकि वे बहुत अमीर थे।
33 और बहुत से लोग याकूब के झुंड में से कुछ लेने आए, और याकूब ने उन्हें एक नौकर या नौकरानी के बदले एक भेड़, या एक गधे या एक ऊँट के बदले दिया, या जो कुछ याकूब ने उनसे माँगा, उन्होंने उसे दे दिया।
34 और याकूब ने इंसानों के साथ इन लेन-देन से दौलत, इज़्ज़त और दौलत कमाई, और लाबान के बच्चे इस इज़्ज़त से उससे जलते थे।
35 और कुछ समय बाद उसने लाबान के बेटों की ये बातें सुनीं, "याकूब ने हमारे पिता का सब कुछ छीन लिया है, और जो हमारे पिता का था, उसी से उसने यह सारी शान हासिल की है।"
36 और याकूब ने लाबान और उसके बच्चों का चेहरा देखा, और देखा कि उन दिनों वह उसके साथ वैसा नहीं था जैसा पहले था।
37 और छह साल पूरे होने पर यहोवा याकूब को दिखाई दिया, और उससे कहा, उठो, इस देश से निकल जाओ, और अपनी जन्मभूमि को लौट जाओ, और मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।
38 और उस समय याकूब उठा, और अपने बच्चों, पत्नियों और अपने सारे सामान को ऊँटों पर चढ़ाकर कनान देश में अपने पिता इसहाक के पास चला गया।
39 और लाबान को पता नहीं था कि याकूब उसके पास से चला गया है, क्योंकि लाबान उस दिन भेड़ों का ऊन कतर रहा था।
40 और राहेल ने अपने पिता की मूर्तियां चुरा लीं, और उन्हें उस ऊंट पर छिपा दिया जिस पर वह बैठी थी, और वह चली गई।
41 और मूर्तियों का तरीका यह है; एक आदमी को जो जेठा हो, मार डालना, उसके सिर के बाल उतारना, नमक लेकर सिर पर तेल लगाना, फिर तांबे या सोने की एक छोटी सी गोली लेकर उस पर नाम लिखना, और गोली को उसकी जीभ के नीचे रखना, और गोली को जीभ के नीचे रखकर सिर को घर में रखना, और उसके सामने दीये जलाना और उसे प्रणाम करना।
42 और जब वे उसके आगे झुकते हैं, तो वह उन सभी बातों में उनसे बात करता है जो वे उससे पूछते हैं, उस नाम की शक्ति के द्वारा जो उसमें लिखा है।
43 और कुछ लोग सोने और चांदी की आदमियों की मूर्तियां बनाते हैं, और जब उन्हें पता होता है, तो उनके पास जाते हैं, और वे मूर्तियां सितारों का असर लेती हैं, और उन्हें भविष्य की बातें बताती हैं, और इसी तरह वे मूर्तियां थीं जिन्हें राहेल ने अपने पिता से चुराया था।

44 और राहेल ने अपने पिता की ये मूर्तियां चुरा लीं, ताकि लाबान को उनके ज़रिए पता न चले कि याकूब कहाँ गया है।
45 और लाबान घर आया और उसने याकूब और उसके घराने के बारे में पूछा, लेकिन वह नहीं मिला। लाबान ने अपनी मूर्तियों को यह जानने के लिए खोजा कि याकूब कहाँ गया है, लेकिन वे उसे नहीं मिलीं। वह दूसरी मूर्तियों के पास गया और उनसे पूछा, और उन्होंने उसे बताया कि याकूब उससे भागकर अपने पिता के पास, कनान देश चला गया है।
46 तब लाबान उठा और अपने भाइयों और सब सेवकों को लेकर याकूब का पीछा करने लगा, और गिलाद पहाड़ पर उसे पकड़ लिया।
47 तब लाबान ने याकूब से कहा, "तूने मेरे साथ यह क्या किया है कि तू भाग गया और मुझे धोखा दिया, और मेरी बेटियों और उनके बच्चों को तलवार के बल पर बंदी बनाकर ले गया?"
48 और तूने मुझे उन्हें चूमने और खुशी से विदा करने नहीं दिया, और तू मेरे देवताओं को चुराकर चला गया।
49 तब याकूब ने लाबान से कहा, "क्योंकि मुझे डर था कि कहीं तुम अपनी बेटियों को मुझसे ज़बरदस्ती न छीन लो; और अब जिसके पास भी तुम अपने देवताओं को पाओगे, वह मर जाएगा।"
50 और लाबान ने उन मूर्तियों को ढूँढ़ा, और याकूब के सारे तंबुओं और फर्नीचर में भी देखा, लेकिन वे उसे नहीं मिलीं।
51 तब लाबान ने याकूब से कहा, "हम दोनों मिलकर एक वाचा बाँधेंगे, और यह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही होगी; अगर तुम मेरी बेटियों को दुख दोगे, या मेरी बेटियों के अलावा दूसरी पत्नियाँ रखोगे, तो इस मामले में परमेश्वर मेरे और तुम्हारे बीच गवाह होगा।"
52 तब उन्होंने पत्थर लेकर एक ढेर बनाया, और लाबान ने कहा, यह ढेर मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है, इसलिए उसने इसका नाम गिलाद रखा।
53 और याकूब और लाबान ने पहाड़ पर बलि चढ़ाई, और वहीं ढेर के पास खाया, और वे सारी रात पहाड़ पर ही रहे, और लाबान सुबह जल्दी उठा, और अपनी बेटियों के साथ रोया, और उन्हें चूमा, और अपनी जगह पर लौट गया।
54 और उसने जल्दी से अपने बेटे बोर को, जो सत्रह साल का था, अबीचोरोफ को, जो नाहोर का पोता और ऊज़ का बेटा था, और उनके साथ दस आदमी भेजे।
55 और वे जल्दी से चले और याकूब के आगे-आगे रास्ते से गुज़रे, और दूसरे रास्ते से सेईर देश में पहुँचे।
56 तब वे एसाव के पास आए और उससे कहा, "तेरा भाई और रिश्तेदार, तेरे मामा लाबान, जो बतूएल का बेटा है, यह कहता है,
57 क्या तुमने सुना है कि तुम्हारे भाई याकूब ने मेरे साथ क्या किया है? वह पहले नंगा और बिना कपड़ों के मेरे पास आया था। मैं उससे मिलने गया और उसे इज्ज़त के साथ अपने घर ले आया। मैंने उसे बड़ा किया और अपनी दोनों बेटियों को पत्नियां और अपनी दो दासियां भी उसे दे दीं।
58 और परमेश्वर ने मेरे कारण उसे आशीष दी, और वह बहुत बढ़ गया, और उसके बेटे, बेटियां और दासियां हुईं।
59 उसके पास भेड़-बकरियों और गाय-बैलों का बहुत सारा माल है, ऊँट और गधे हैं, और बहुत सारा सोना-चाँदी भी है; और जब उसने देखा कि उसका पैसा बढ़ गया है, तो जब मैं अपनी भेड़ें कतरने गया था, तो उसने मुझे छोड़ दिया, और चुपके से भाग गया।
60 और उसने अपनी पत्नियों और बच्चों को ऊँटों पर लाद लिया, और अपने सारे जानवर और जायदाद जो उसने मेरे देश में कमाई थी, उसे ले गया, और अपने पिता इसहाक के पास कनान देश जाने के लिए तैयार हो गया।
61 और उसने मुझे अपनी बेटियों और उनके बच्चों को चूमने नहीं दिया, और वह मेरी बेटियों को तलवार के बल पर बंदी बनाकर ले गया, और उसने मेरे देवताओं को भी चुरा लिया और वह भाग गया।
62 और अब मैंने उसे और उसके सारे सामान को याबूक नाले के पहाड़ पर छोड़ दिया है; उसे किसी चीज़ की कमी नहीं है।
63 अगर तुम उसके पास जाना चाहते हो, तो जाओ, और वह तुम्हें वहीं मिलेगा, और तुम उसके साथ जैसा चाहो वैसा कर सकते हो; और लाबान के दूतों ने आकर एसाव को ये सब बातें बताईं।
64 और एसाव ने लाबान के दूतों की सारी बातें सुनीं, और उसका गुस्सा याकूब पर बहुत भड़क उठा, और उसे अपनी नफ़रत याद आ गई, और उसका गुस्सा उसके अंदर भड़क उठा।
65 तब एसाव ने जल्दी से अपने बच्चों, नौकरों और अपने घराने के लोगों को, जो साठ आदमी थे, साथ लिया। फिर वह गया और सेईर नाम के होरी के सभी बच्चों और उनके लोगों को, जो तीन सौ चालीस आदमी थे, इकट्ठा किया। और इन सब चार सौ आदमियों को तलवारें लिए हुए ले लिया, और याकूब को मारने के लिए उसके पास गया।
66 और एसाव ने इस गिनती को कई हिस्सों में बाँट दिया, और अपने बच्चों और नौकरों में से साठ आदमियों और अपने घराने के लोगों को एक मुखिया बनाकर अपने बड़े बेटे एलीपज की देखभाल में दे दिया।
67 और बाकी बचे हुए सिर उसने होरी सेईर के छह बेटों की देखभाल में दे दिए, और हर एक को उसकी पीढ़ियों और बच्चों पर नियुक्त किया।
68 और यह पूरा कैंप जैसे था वैसे ही चला गया, और एसाव उनके बीच से याकूब की तरफ गया, और वह उन्हें तेज़ी से ले गया।
69 और लाबान के दूत एसाव के पास से चले और कनान देश में गए, और वे याकूब और एसाव की माँ रेबेका के घर पहुँचे।
70 और उन्होंने उससे कहा, "देख, तेरा बेटा एसाव अपने भाई याकूब के खिलाफ चार सौ आदमियों को लेकर गया है, क्योंकि उसने सुना है कि वह आ रहा है, और वह उससे लड़ने, उसे मारने और उसका सब कुछ छीनने गया है।"
71 और रिबका ने जल्दी से इसहाक के सेवकों में से बहत्तर आदमियों को याकूब से मिलने के लिए रास्ते में भेजा; क्योंकि उसने सोचा, हो सकता है कि जब एसाव उससे मिले तो वह रास्ते में लड़ाई करे।
72 और ये दूत याकूब से मिलने के लिए रास्ते पर निकले, और वे उससे याबूक नाले के दूसरी तरफ़ नाले के रास्ते में मिले, और याकूब ने उन्हें देखकर कहा, यह कैंप मेरे लिए परमेश्वर की तरफ़ से तय हुआ है, और याकूब ने उस जगह का नाम मकनैयम रखा।
73 और याकूब अपने पिता के सभी लोगों को जानता था, और उसने उन्हें चूमा और गले लगाया, और उनके साथ चला गया, और याकूब ने उनसे अपने पिता और माता के बारे में पूछा, और उन्होंने कहा, वे ठीक हैं।

74 और उन दूतों ने याकूब से कहा, "तेरी माँ रिबका ने हमें तेरे पास यह कहकर भेजा है, 'बेटा, मैंने सुना है कि तेरा भाई एसाव, होरी सेईर के लोगों के साथ तेरे खिलाफ़ रास्ते पर निकला है।
75 इसलिए, मेरे बेटे, मेरी बात सुनो और सोच-समझकर सोचो कि तुम क्या करना चाहते हो, और जब वह तुम्हारे पास आए, तो उससे गुज़ारिश करो, और उससे जल्दबाज़ी में बात मत करो, और जो कुछ तुम्हारे पास है, और जो कुछ परमेश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें से उसे तोहफ़ा दो।
76 और जब वह तुमसे तुम्हारे मामलों के बारे में पूछे, तो उससे कुछ मत छिपाना, शायद वह तुम्हारे खिलाफ अपना गुस्सा शांत कर दे और तुम अपनी जान, अपनी और अपने सभी लोगों की जान बचा सको, क्योंकि उसका सम्मान करना तुम्हारा कर्तव्य है, क्योंकि वह तुम्हारा बड़ा भाई है।
77 और जब याकूब ने अपनी माँ की वे बातें सुनीं जो दूतों ने उससे कही थीं, तो याकूब फूट-फूट कर रोया, और जैसा उसकी माँ ने उसे कहा था वैसा ही किया।

अध्याय 32

1 उस समय याकूब ने अपने भाई एसाव के पास सेईर देश की ओर दूत भेजे, और उसने उससे विनती की बातें कहीं।
2 और उसने उन्हें हुक्म दिया, "तुम मेरे मालिक एसाव से यह कहना, तेरा नौकर याकूब यह कहता है, कि मेरे मालिक यह न सोचे कि मेरे पिता ने जो आशीर्वाद मुझे दिया था, वह मेरे लिए फायदेमंद साबित हुआ है।"
3 क्योंकि मैं बीस साल से लाबान के साथ हूँ, और उसने मुझे धोखा दिया है, और मेरी मज़दूरी दस बार बदल दी है, जैसा कि मेरे मालिक को पहले ही बताया जा चुका है।
4 और मैंने उसके घर में बहुत मेहनत से उसकी सेवा की, और बाद में परमेश्वर ने मेरी तकलीफ़, मेरी मेहनत और मेरे हाथों के काम को देखा, और उसने मुझे अपनी नज़र में कृपा और कृपा दिलाई।
5 और उसके बाद परमेश्वर की बड़ी दया और कृपा से मुझे बैल, गधे, गाय-बैल, और नौकर-चाकर मिले।
6 और अब मैं अपने देश और अपने घर अपने पिता और माता के पास आ रहा हूँ, जो कनान देश में हैं; और मैंने अपने मालिक को यह सब बताने के लिए भेजा है ताकि मेरे मालिक की नज़र में मैं खुश रहूँ, और वह यह न सोचें कि मैंने खुद से दौलत कमाई है, या मेरे पिता ने जो आशीर्वाद मुझे दिया था, उससे मुझे फ़ायदा हुआ है।
7 और वे दूत एसाव के पास गए, और उसे एदोम देश की सीमा पर याकूब की ओर जाते हुए पाया, और सेईर होरी के चार सौ आदमी तलवारें खींचे हुए खड़े थे।
8 और याकूब के दूतों ने एसाव को वे सारी बातें बताईं जो याकूब ने एसाव के बारे में उनसे कही थीं।
9 तब एसाव ने घमंड और बेइज़्ज़ती से उन्हें जवाब दिया, और उनसे कहा, "मैंने सुना है और सच में मुझे बताया गया है कि याकूब ने लाबान के साथ क्या किया है, उसने उसे अपने घर में बड़ा किया और अपनी बेटियों को उसकी पत्नियों के तौर पर दिया, और उसके बेटे-बेटियाँ पैदा हुए, और उसके पैसों से लाबान के घर में बहुत ज़्यादा दौलत और पैसा बढ़ा।
10 और जब उसने देखा कि उसके पास बहुत पैसा और दौलत है, तो वह अपना सारा सामान लेकर लाबान के घर से भाग गया। और वह लाबान की बेटियों को उनके पिता के सामने से ऐसे ले गया जैसे उन्हें बिना बताए तलवार के घाट उतार दिया गया हो।
11 और याकूब ने न केवल लाबान के साथ ऐसा किया, बल्कि मेरे साथ भी ऐसा किया है, और दो बार मेरी जगह ली है, और क्या मैं चुप रहूँ?
12 इसलिए आज मैं अपनी टुकड़ियों के साथ उससे मिलने आया हूँ, और मैं अपने दिल की इच्छा के अनुसार उससे बर्ताव करूँगा।
13 तब दूत लौटकर याकूब के पास आए और उससे कहा, "हम तेरे भाई एसाव के पास गए थे, और तेरी सारी बातें उसे बता दीं, और उसने हमें यह जवाब दिया है, और देख, वह चार सौ आदमियों के साथ तुझसे मिलने आ रहा है।"
14 तो अब जान लो और देखो कि तुम्हें क्या करना है, और परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें उससे बचाए।
15 और जब उसने अपने भाई की बातें सुनीं जो उसने याकूब के दूतों से कही थीं, तो याकूब बहुत डर गया और वह परेशान हो गया।
16 तब याकूब ने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की, और कहा, हे मेरे पूर्वजों अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर यहोवा, जब मैं अपने पिता के घर से दूर जा रहा था, तब तूने मुझसे कहा था,
17 मैं तुम्हारे पिता अब्राहम का प्रभु परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर हूँ, मैं तुम्हें यह देश और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतान देता हूँ, और मैं तुम्हारी संतान को आकाश के तारों जैसा बनाऊँगा, और तुम आकाश की चारों दिशाओं में फैल जाओगे, और तुम और तुम्हारी संतान में पृथ्वी के सभी परिवार धन्य होंगे।
18 और तूने अपनी बात पूरी की, और मुझे धन-दौलत, बच्चे और जानवर दिए, जैसा मेरे दिल की सबसे बड़ी इच्छा थी, तूने अपने सेवक को दिया; जो कुछ मैंने तुझसे मांगा था, वह सब तूने मुझे दिया, ताकि मुझे किसी चीज़ की कमी न हो।
19 और फिर तुमने मुझसे कहा, अपने माता-पिता और अपनी जन्मभूमि के पास लौट जाओ, और मैं तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करूंगा।
20 और अब जब मैं आ गया हूँ, और तूने मुझे लाबान से छुड़ाया है, तो मैं एसाव के हाथों पड़ जाऊँगा जो मुझे, हाँ, मेरे बच्चों की माँओं के साथ मार डालेगा।
21 इसलिए अब हे प्रभु परमेश्वर, मुझे भी मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा, क्योंकि मैं उससे बहुत डरता हूँ।
22 और अगर मुझमें कोई नेकी नहीं है, तो अब्राहम और मेरे पिता इसहाक के लिए ऐसा करो।
23 क्योंकि मैं जानता हूँ कि कृपा और दया से मैंने यह दौलत कमाई है; इसलिए अब मैं तुझसे विनती करता हूँ कि आज अपनी कृपा से मुझे बचा और मेरी बात सुन।
24 और याकूब ने यहोवा से प्रार्थना करना बंद कर दिया, और उसने अपने साथ के लोगों को, जिनके पास भेड़-बकरियां और जानवर थे, दो ग्रुप में बांट दिया। उसने आधा हिस्सा अब्राहम के नौकर एलीएजेर के बेटे दमेसेक को, उसके बच्चों के साथ एक ग्रुप के लिए दे दिया, और दूसरा आधा हिस्सा उसने अपने भाई एलीएजेर के बेटे एलियानस को, उसके बच्चों के साथ एक ग्रुप के लिए दे दिया।

25 और उसने उन्हें हुक्म दिया, "तुम लोग अपनी-अपनी छावनियों से दूर रहो, और एक-दूसरे के बहुत पास मत आओ, और अगर एसाव एक छावनी पर आकर उसे मार डाले, तो उससे दूर दूसरी छावनी उससे बच जाएगी।"
26 और याकूब उस रात वहीं रुका, और पूरी रात उसने अपने नौकरों को सेना और अपने बच्चों के बारे में निर्देश दिए।
27 और उस दिन यहोवा ने याकूब की प्रार्थना सुन ली, और यहोवा ने याकूब को उसके भाई एसाव के हाथ से छुड़ाया।
28 और प्रभु ने स्वर्ग के स्वर्गदूतों में से तीन स्वर्गदूत भेजे, और वे एसाव के आगे-आगे चले और उसके पास आए।
29 और ये फ़रिश्ते एसाव और उसके लोगों को दो हज़ार आदमियों के रूप में दिखाई दिए, जो हर तरह के लड़ाई के हथियारों से लैस घोड़ों पर सवार थे, और वे एसाव और उसके सभी आदमियों के सामने चार ग्रुप में बंटे हुए दिखाई दिए, जिनके चार सरदार थे।
30 और एक कैंप आगे बढ़ा और उन्होंने देखा कि एसाव अपने भाई याकूब की तरफ चार सौ आदमियों के साथ आ रहा है, और यह कैंप एसाव और उसके लोगों की तरफ दौड़ा और उन्हें डरा दिया, और एसाव डर के मारे घोड़े से गिर पड़ा, और उसके सभी आदमी उस जगह उससे अलग हो गए, क्योंकि वे बहुत डर गए थे।
31 जब वे एसाव से भाग रहे थे, तो पूरी छावनी ने उनका पीछा किया, और सभी लड़ाकों ने जवाब दिया,
32 हम तो याकूब के दास हैं, जो परमेश्वर का दास है, फिर हमारे सामने कौन खड़ा हो सकता है? तब एसाव ने उनसे कहा, हे मेरे स्वामी और भाई याकूब तुम्हारे स्वामी हैं, जिन्हें मैंने इन बीस वर्षों से नहीं देखा, और अब जब मैं आज उनसे मिलने आया हूँ, तो क्या तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हो?
33 और फ़रिश्तों ने उसे जवाब दिया, "प्रभु के जीवन की शपथ, अगर याकूब, जिसके बारे में तू कहता है, तेरा भाई न होता, तो हम तुझमें और तेरे लोगों में से किसी को भी नहीं छोड़ते, लेकिन सिर्फ़ याकूब की वजह से हम उन्हें कुछ नहीं करेंगे।"
34 और यह कैंप एसाव और उसके आदमियों के पास से निकलकर आगे बढ़ गया, और एसाव और उसके आदमी उनसे लगभग एक लीग दूर चले गए थे कि दूसरा कैंप हर तरह के हथियार लेकर उसकी तरफ़ आया, और उन्होंने भी एसाव और उसके आदमियों के साथ वैसा ही किया जैसा पहले कैंप ने उनके साथ किया था।
35 और जब वे आगे बढ़ने के लिए वहाँ से निकले, तो देखो, तीसरा कैंप उसकी तरफ़ आया और वे सब डर गए, और एसाव घोड़े से गिर पड़ा, और पूरा कैंप चिल्ला उठा, और कहने लगा, "सच में हम याकूब के गुलाम हैं, जो परमेश्वर का गुलाम है, और कौन हमारे सामने खड़ा हो सकता है?"
36 तब एसाव ने फिर उनसे कहा, "तो फिर, याकूब मेरा मालिक है और तुम्हारा मालिक मेरा भाई है, और बीस साल से मैंने उसका चेहरा नहीं देखा और आज यह सुनकर कि वह आ रहा है, मैं आज उससे मिलने गया हूँ, और तुम मेरे साथ ऐसा बर्ताव करते हो?"
37 उन्होंने जवाब दिया, "यहोवा की कसम, अगर याकूब तुम्हारा भाई न होता जैसा तुमने कहा था, तो हमने तुमसे और तुम्हारे आदमियों से कोई बचा नहीं रखा होता, लेकिन याकूब के कारण, जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह तुम्हारा भाई है, हम तुम्हारे या तुम्हारे आदमियों से कोई झगड़ा नहीं करेंगे।"
38 और तीसरा कैंप भी उनके पास से निकल गया, और वह अपने आदमियों के साथ याकूब की तरफ़ जा रहा था, तभी चौथा कैंप भी उसकी तरफ़ आया, और उन्होंने भी उसके और उसके आदमियों के साथ वैसा ही किया जैसा दूसरों ने किया था।
39 और जब एसाव ने देखा कि चार स्वर्गदूतों ने उसके और उसके आदमियों के साथ क्या बुरा किया है, तो वह अपने भाई याकूब से बहुत डर गया, और शांति से उससे मिलने चला गया।
40 और एसाव ने याकूब से अपनी नफ़रत छिपाई, क्योंकि वह अपने भाई याकूब की वजह से अपनी जान से डर रहा था, और क्योंकि उसने सोचा था कि जिन चार कैंपों पर वह चढ़ा था, वे याकूब के नौकर थे।
41 और याकूब उस रात अपने सेवकों के साथ उनके कैंप में रुका, और उसने अपने सेवकों के साथ तय किया कि वह अपने पास जो कुछ भी है, और अपनी सारी संपत्ति में से एसाव को एक तोहफ़ा देगा; और याकूब और उसके आदमी सुबह उठे, और उन्होंने अपने जानवरों में से एसाव के लिए एक तोहफ़ा चुना।
42 और याकूब ने अपने भाई एसाव को देने के लिए अपने झुंड में से जो तोहफ़ा चुना, वह यह था: उसने झुंड में से दो सौ चालीस गायें चुनीं, और ऊँटों और गधों में से तीस-तीस गायें चुनीं, और झुंड में से पचास गायें चुनीं।
43 और उसने उन सबको दस झुंडों में रखा, और हर तरह के जानवरों को अलग-अलग रखा, और उन्हें अपने दस नौकरों के हाथों में सौंप दिया, हर झुंड अलग-अलग था।
44 और उसने उन्हें हुक्म दिया, और कहा, एक-दूसरे से थोड़ी दूरी रखो, और झुंडों के बीच जगह बनाओ, और जब एसाव और उसके साथ के लोग तुमसे मिलें और तुमसे पूछें, तुम कौन हो, और कहाँ जा रहे हो, और यह सब तुम्हारे सामने किसका है, तो तुम उनसे कहना, हम याकूब के सेवक हैं, और हम शांति से एसाव से मिलने आए हैं, और देखो याकूब हमारे पीछे आ रहा है।
45 और जो हमारे सामने है, वह याकूब की तरफ़ से उसके भाई एसाव के लिए भेजा गया तोहफ़ा है।
46 और अगर वे तुमसे पूछें, कि वह अपने भाई से मिलने और उसका चेहरा देखने के लिए तुम्हारे पीछे क्यों आ रहा है, तो तुम उनसे कहना, ज़रूर वह अपने भाई से मिलने के लिए खुशी-खुशी हमारे पीछे आ रहा है, क्योंकि उसने कहा था, मैं उसे जो तोहफ़ा दिया जाएगा, उससे खुश कर दूँगा, और इसके बाद मैं उसका चेहरा देखूँगा, शायद वह मुझे मान ले।
47 इसलिए सारा तोहफ़ा उसके नौकरों के हाथ में चला गया, और उस दिन उसके आगे-आगे चला, और वह उस रात अपने कैंप के साथ याबूक नदी के किनारे ठहरा, और आधी रात को उठा, और अपनी पत्नियों और नौकरानियों, और अपने सारे सामान को लेकर, और उसी रात उन्हें याबूक नदी के पार ले गया।
48 और जब वह अपना सब कुछ नाले के पार कर गया, तो याकूब अकेला रह गया, और एक आदमी उससे मिला, और वह उस रात पौ फटने तक उससे कुश्ती लड़ता रहा, और उससे कुश्ती लड़ते-लड़ते याकूब की जांघ की हड्डी चढ़ गई।
49 और दिन निकलते ही उस आदमी ने याकूब को वहीं छोड़ दिया, और उसे आशीर्वाद देकर चला गया; और याकूब दिन

निकलते ही नाले के पास से गुज़रा, और अपनी जांघ के बल रुक गया।
50 जब वह नाले के पास से गुज़रा तो सूरज निकल आया, और वह अपने जानवरों और बच्चों के पास पहुँचा।
51 और वे दोपहर तक चलते रहे, और जब वे जा रहे थे तो तोहफ़ा उनके आगे-आगे चलता रहा।
52 और याकूब ने आँखें उठाकर देखा, तो एसाव दूर से लगभग चार सौ आदमियों के साथ आ रहा था, और याकूब अपने भाई से बहुत डर गया।
53 तब याकूब ने जल्दी से अपने बच्चों को अपनी पत्नियों और दासियों को बाँट दिया, और अपनी बेटी दीना को एक संदूक में रखकर अपने दासों के हाथ में सौंप दिया।
54 और वह अपने बच्चों और पत्नियों के आगे-आगे चलकर अपने भाई से मिलने गया, और ज़मीन पर झुककर प्रणाम किया, हाँ, वह अपने भाई के पास पहुँचने तक सात बार झुका, और परमेश्वर ने याकूब को एसाव और उसके आदमियों की नज़र में कृपा और कृपा दिलाई, क्योंकि परमेश्वर ने याकूब की प्रार्थना सुन ली थी।
55 और याकूब का डर और उसका डर उसके भाई एसाव पर भी छा गया, क्योंकि एसाव याकूब से बहुत डर गया था, क्योंकि परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने एसाव के साथ जो किया था, उसके कारण एसाव का गुस्सा याकूब पर दया में बदल गया।
56 और जब एसाव ने याकूब को अपनी ओर दौड़ते देखा, तो वह भी उसकी ओर दौड़ा, और उसे गले लगाया, और उसके गले से लिपट गया, और वे एक दूसरे को चूमकर रोए।
57 और परमेश्वर ने एसाव के साथ आए आदमियों के दिलों में याकूब के लिए डर और दया भर दी, और उन्होंने भी याकूब को चूमा और गले लगाया।
58 और एसाव का बेटा एलीपज भी अपने चार भाइयों के साथ, जो एसाव के बेटे थे, याकूब के साथ रोया, और उन्होंने उसे चूमा और गले लगाया, क्योंकि याकूब का डर उन सब पर छा गया था।
59 और एसाव ने अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखा कि औरतें अपने बच्चों के साथ, यानी याकूब के बच्चों के साथ, याकूब के पीछे-पीछे चल रही हैं और एसाव के रास्ते पर झुक रही हैं।
60 तब एसाव ने याकूब से कहा, हे मेरे भाई, ये तेरे पास कौन हैं? क्या ये तेरे बच्चे हैं या तेरे नौकर? याकूब ने एसाव को उत्तर दिया, ये मेरे बच्चे हैं जिन्हें परमेश्वर ने तेरे नौकर को दया करके दिया है।
61 और जब याकूब एसाव और उसके आदमियों से बात कर रहा था, तो एसाव ने पूरी छावनी को देखा, और याकूब से पूछा, कल रात मुझे जो छावनी मिली, वह सब तुम्हें कहाँ से मिली? याकूब ने कहा, यह मेरे मालिक की नज़र में अच्छाई पाने के लिए है, जो भगवान ने मेहरबानी करके आपके नौकर को दिया है।
62 और तोहफ़ा एसाव के सामने आया, और याकूब ने एसाव पर ज़ोर देकर कहा, "मैं जो तोहफ़ा अपने मालिक के लिए लाया हूँ, उसे ले लो।" एसाव ने कहा, "मेरा यह मकसद क्यों है? जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे अपने पास रखो।"
63 तब याकूब ने कहा, "जब से मैंने तेरा चेहरा देखा है, तब से यह सब देना मेरा फ़र्ज़ है, ताकि तू अब भी शांति से रहे।"
64 और एसाव ने तोहफ़ा लेने से मना कर दिया, और याकूब ने उससे कहा, "मेरे मालिक, मैं आपसे गुज़ारिश करता हूँ, अगर अब आपकी नज़र में मुझ पर मेहरबानी हुई है, तो मेरा तोहफ़ा ले लीजिए, क्योंकि मैंने आपका चेहरा देखा है, जैसे मैंने भगवान जैसा चेहरा देखा हो, क्योंकि आप मुझसे खुश थे।"
65 तब एसाव ने वह तोहफ़ा ले लिया, और याकूब ने भी एसाव को चाँदी, सोना और मोती दिए, क्योंकि उसने उस पर इतना ज़ोर डाला था कि उसने वे सब ले लिए।
66 और एसाव ने कैंप में जो जानवर थे, उन्हें बाँट लिया, और आधा अपने साथ आए आदमियों को दे दिया, क्योंकि वे किराए पर आए थे, और बाकी आधा उसने अपने बच्चों को दे दिया।
67 और उसने चाँदी, सोना और मोती अपने बड़े बेटे एलीपज के हाथों में दे दिए, और एसाव ने याकूब से कहा, "हम तुम्हारे साथ रहेंगे, और जब तक तुम मेरे साथ मेरे घर नहीं आ जाते, तब तक हम धीरे-धीरे तुम्हारे साथ चलेंगे, ताकि हम वहाँ साथ रह सकें।"
68 याकूब ने अपने भाई को जवाब दिया, "मैं वही करूँगा जो मेरे मालिक मुझसे कहते हैं, लेकिन मेरे मालिक जानते हैं कि बच्चे बहुत नाज़ुक हैं, और मेरे साथ जो झुंड और गाय-बैल अपने बच्चों के साथ हैं, वे धीरे-धीरे चलते हैं, क्योंकि अगर वे तेज़ी से चलते तो सब मर जाते, क्योंकि तुम उनके बोझ और उनकी थकान को जानते हो।"
69 इसलिए मेरे मालिक को अपने नौकर से पहले जाने दो, और मैं बच्चों और भेड़-बकरियों की खातिर धीरे-धीरे चलूंगा, जब तक कि मैं सेईर में अपने मालिक के घर न पहुंच जाऊं।
70 तब एसाव ने याकूब से कहा, मैं अपने साथ के लोगों में से कुछ को तेरे साथ रखूंगा, जो रास्ते में तेरा ध्यान रखेंगे, और तेरी थकान और बोझ उठाएंगे। उसने कहा, हे मेरे प्रभु, अगर मैं तेरी कृपा की दृष्टि में रहूं, तो इसकी क्या ज़रूरत है?
71 देख, मैं सेईर में तेरे पास आऊंगा, और जैसा तूने कहा है, हम सब वहां साथ रहेंगे; तब तू अपने लोगों के साथ चला जा, क्योंकि मैं तेरे पीछे आऊंगा।
72 और याकूब ने एसाव से यह बात इसलिए कही ताकि एसाव और उसके आदमियों को उससे दूर कर दे, ताकि याकूब बाद में अपने पिता के घर कनान देश जा सके।
73 और एसाव ने याकूब की बात मान ली, और एसाव अपने साथ के चार सौ आदमियों के साथ सेईर के रास्ते से लौट आया, और याकूब और उसके सारे लोग उसी दिन कनान देश की सीमाओं के आखिर तक गए, और वह कुछ समय वहीं रहा।

अध्याय 33

1 और कुछ समय बाद याकूब देश की सीमाओं से दूर चला गया, और वह शालेम नाम की भूमि में पहुँचा, जो कनान देश में शेकेम शहर है, और वह शहर के सामने आराम करने लगा।
2 और उसने वहाँ के खेत का एक टुकड़ा, उस देश के लोगों, हमोर के बच्चों से, पाँच शेकेल में खरीदा।
3 और याकूब ने वहाँ अपने लिए एक घर बनाया, और अपना तंबू वहीं लगाया, और अपने जानवरों के लिए झोपड़ियाँ बनाईं, इसलिए उसने उस जगह का नाम सुक्कोत रखा।
4 और याकूब सुक्कोत में एक साल और छह महीने रहा।
5 उस समय उस देश के रहने वालों में से कुछ औरतें शेकेम शहर में शहर के लोगों की बेटियों के साथ नाचने और खुशियाँ मनाने गईं, और जब वे बाहर गईं तो याकूब की पत्नियाँ राहेल और लिआह भी अपने परिवारों के साथ शहर की बेटियों की खुशियाँ देखने गईं।

6 और याकूब की बेटी दीना भी उनके साथ गई और शहर की बेटियों को देखा, और वे उन बेटियों के सामने वहीं खड़ी रहीं, जबकि शहर के सभी लोग उनकी खुशियाँ देखने के लिए उनके पास खड़े थे, और शहर के सभी बड़े लोग वहाँ थे।
7 और उस देश का हाकिम, हमोर का बेटा शेकेम भी उन्हें देखने के लिए वहाँ खड़ा था।
8 और शेकेम ने याकूब की बेटी दीना को अपनी माँ के साथ शहर की बेटियों के सामने बैठे देखा, और वह लड़की उसे बहुत पसंद आई, और उसने वहाँ अपने दोस्तों और अपने लोगों से पूछा, "इस शहर में उन औरतों के बीच बैठी यह लड़की किसकी बेटी है, जिसे मैं नहीं जानता?"
9 और उन्होंने उससे कहा, "ज़रूर यह इब्री इसहाक के बेटे याकूब की बेटी है, जो कुछ समय से इस शहर में रह रहा है, और जब यह खबर मिली कि देश की बेटियाँ खुशियाँ मनाने जा रही हैं, तो वह अपनी माँ और दासियों के साथ उनके बीच बैठने गई, जैसा कि तुम देख सकते हो।"
10 और शेकेम ने याकूब की बेटी दीना को देखा, और जब उसने उसे देखा तो उसका मन दीना पर लग गया।
11 और उसने लोगों को भेजकर उसे ज़बरदस्ती पकड़वा लिया, और दीना शेकेम के घर आई। उसने उसे ज़बरदस्ती पकड़ लिया, उसके साथ सोया, उसे बेइज़्ज़त किया, और उससे बहुत प्यार किया और उसे अपने घर में रख लिया।
12 और उन्होंने आकर याकूब को यह बात बताई, और जब याकूब ने सुना कि शेकेम ने उसकी बेटी दीना को अपवित्र कर दिया है, तो याकूब ने अपने बारह नौकरों को शेकेम के घर से दीना को लाने के लिए भेजा, और वे दीना को वहाँ से ले जाने के लिए शेकेम के घर गए।
13 और जब वे आए, तो शेकेम अपने आदमियों के साथ उनके पास गया और उन्हें अपने घर से निकाल दिया, और उसने उन्हें दीना के सामने आने नहीं दिया, बल्कि शेकेम दीना के साथ बैठा रहा और उनकी आँखों के सामने उसे चूमता और गले लगाता रहा।
14 और याकूब के सेवकों ने लौटकर उसे बताया, "जब हम आए, तो उसने और उसके आदमियों ने हमें भगा दिया, और शेकेम ने हमारी आँखों के सामने दीना के साथ ऐसा ही किया।"
15 और याकूब को यह भी पता था कि शेकेम ने उसकी बेटी को अपवित्र कर दिया है, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा, और उसके बेटे खेत में उसके जानवरों को चरा रहे थे, और याकूब उनके लौटने तक चुप रहा।
16 और अपने बेटों के घर आने से पहले याकूब ने अपने नौकरों की बेटियों में से दो लड़कियों को शेकेम के घर में दीना की देखभाल करने और उसके साथ रहने के लिए भेजा, और शेकेम ने अपने तीन दोस्तों को अपने पिता हामोर के पास, जो किद्देकेम का बेटा और पेरेद का पोता था, यह कहकर भेजा, कि मेरे लिए यह लड़की पत्नी के रूप में लाओ।
17 और हिव्वी किद्देकेम का बेटा हमोर अपने बेटे शेकेम के घर आया, और उसके सामने बैठ गया; और हमोर ने अपने बेटे से कहा, शेकेम, क्या तेरे लोगों की बेटियों में कोई औरत नहीं है कि तू किसी इब्री औरत को जो तेरे लोगों की न हो, ले ले?
18 तब शेकेम ने उससे कहा, "मेरे लिए सिर्फ़ उसी को ले आओ, क्योंकि वह मुझे अच्छी लगती है।" हमोर ने अपने बेटे की बात मान ली, क्योंकि वह उसका बहुत प्यारा था।
19 और हमोर इस मामले पर याकूब से बात करने के लिए उसके पास गया। जब वह अपने बेटे शेकेम के घर से निकला, तो याकूब के पास उससे बात करने के लिए आने से पहले, देखो, याकूब के बेटे खेत से आ गए थे, जैसे ही उन्होंने सुना कि हमोर के बेटे शेकेम ने क्या किया है।
20 और वे आदमी अपनी बहन के लिए बहुत दुखी हुए, और अपने जानवरों को इकट्ठा करने के समय से पहले ही गुस्से से भरे हुए घर लौट आए।
21 और वे आए और अपने पिता के सामने बैठ गए और गुस्से से उससे कहने लगे, "ज़रूर इस आदमी और इसके घराने को मौत की सज़ा मिलनी चाहिए, क्योंकि पूरी धरती के भगवान ने नूह और उसके बच्चों को हुक्म दिया था कि इंसान कभी लूटपाट न करे, न ही शादी के बाहर संबंध बनाए; अब देखो, शेकेम ने हमारी बहन के साथ गलत काम किया है और उसके साथ गलत काम भी किया है, और शहर के किसी भी आदमी ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा।"
22 तुम ज़रूर जानते और समझते हो कि शेकेम, उसके पिता और पूरे शहर को मौत की सज़ा मिलनी चाहिए, क्योंकि उसने यह काम किया है।
23 और जब वे इस बारे में अपने पिता से बात कर रहे थे, तो देखो, शेकेम का पिता हमोर, दीना के बारे में अपने बेटे की बातें याकूब को बताने आया, और वह याकूब और उसके बेटों के सामने बैठ गया।
24 और हमोर ने उनसे कहा, "मेरे बेटे शेकेम का दिल तुम्हारी बेटी को चाहता है; इसलिए तुम उसे उसकी पत्नी बना दो और हमारे साथ शादी कर लो; हमें अपनी बेटियाँ दो और हम तुम्हें अपनी बेटियाँ देंगे, और तुम हमारे साथ हमारे देश में रहोगे और हम देश में एक ही जाति के लोग रहेंगे।"
25 क्योंकि हमारी ज़मीन बहुत बड़ी है, इसलिए तुम उसमें रहो, व्यापार करो, माल कमाओ और जो चाहो करो, और कोई तुम्हें एक बात कहकर नहीं रोकेगा।
26 और हमोर ने याकूब और उसके बेटों से बात करना बंद कर दिया, और देखो, उसका बेटा शेकेम उसके पीछे आया, और उनके सामने बैठ गया।
27 तब शेकेम ने याकूब और उसके बेटों से कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप मुझ पर मेहरबान हों कि आप अपनी बेटी मुझे दे दें, और जो कुछ आप मुझसे कहें, मैं उसके लिए वही करूँगा।"
28 मुझसे बहुत सारा दहेज और तोहफ़ा मांगो, मैं दूंगा, और जो कुछ तुम मुझसे कहोगे, मैं वही करूंगा, और जो कोई तुम्हारी बात नहीं मानेगा, वह मर जाएगा; बस मुझे एक लड़की पत्नी के तौर पर दे दो।
29 तब शिमोन और लेवी ने हमोर और उसके बेटे शेकेम को धोखे से जवाब दिया, "जो कुछ तुमने हमसे कहा है, हम तुम्हारे लिए वही करेंगे।"
30 और देखो, हमारी बहन तुम्हारे घर में है, इसलिए जब तक हम इस बारे में अपने पिता इसहाक को कुछ न बता दें, तब तक उससे दूर रहो, क्योंकि हम उनकी मर्ज़ी के बिना कुछ नहीं कर सकते।
31 क्योंकि वह हमारे पिता अब्राहम के तौर-तरीकों को जानता है, और जो कुछ वह हमसे कहेगा, हम तुम्हें बताएँगे, हम तुमसे कुछ नहीं छिपाएँगे।

32 शिमोन और लेवी ने यह बात शेकेम और उसके पिता से इसलिए कही ताकि कोई बहाना ढूंढ सकें और यह सलाह ले सकें कि इस मामले में शेकेम और उसके शहर के साथ क्या किया जाए।
33 जब शेकेम और उसके पिता ने शिमोन और लेवी की बातें सुनीं, तो उन्हें यह बात अच्छी लगी, और शेकेम और उसके पिता घर जाने के लिए निकल पड़े।
34 जब वे चले गए, तो याकूब के बेटों ने अपने पिता से कहा, "देखो, हम जानते हैं कि इन बुरे लोगों और उनके शहर को मौत आनी है, क्योंकि उन्होंने वह बात तोड़ दी जो परमेश्वर ने नूह, उसके बच्चों और उनके बाद उसकी संतान को दी थी।"
35 और इसलिए भी कि शेकेम ने हमारी बहन दीना के साथ ऐसा किया, कि उसे अपवित्र कर दिया, क्योंकि ऐसा बुरा काम हमारे बीच कभी नहीं होगा।
36 इसलिए अब जान लो और देखो कि तुम क्या करोगे, और सलाह और बहाना ढूंढो कि उनके साथ क्या किया जाए, ताकि इस शहर के सभी रहने वालों को मार डाला जाए।
37 शिमोन ने उनसे कहा, "तुम्हारे लिए एक सही सलाह है: उनसे कहो कि जैसे हमारा खतना हुआ है, वैसे ही वे अपने हर लड़के का खतना करें, और अगर वे ऐसा नहीं करना चाहते, तो हम अपनी बेटी को उनसे लेकर चले जाएँगे।"
38 और अगर वे ऐसा करने के लिए राज़ी हो जाएं और ऐसा करें, तो जब वे दर्द से डूब जाएंगे, तो हम उन पर अपनी तलवारों से हमला करेंगे, जैसे शांत और शांति से रहने वाले पर करते हैं, और हम उनमें से हर आदमी को मार डालेंगे।
39 और शिमोन की सलाह उन्हें अच्छी लगी, और शिमोन और लेवी ने उनके साथ वैसा ही करने का फैसला किया जैसा कहा गया था।
40 अगली सुबह शेकेम और उसका पिता हमोर फिर याकूब और उसके बेटों के पास दीना के बारे में बात करने आए, और यह सुनने आए कि याकूब के बेटे उनकी बातों का क्या जवाब देंगे।
41 तब याकूब के बेटों ने उनसे धोखा देकर कहा, "हमने अपने पिता इसहाक को तुम्हारी सारी बातें बता दीं, और तुम्हारी बातें उन्हें अच्छी लगीं।"
42 लेकिन उसने हमसे कहा, "उसके पिता अब्राहम ने उसे सारी धरती के मालिक परमेश्वर की तरफ़ से यह हुक्म दिया था कि जो कोई आदमी उसके वंश का न हो और उसकी बेटियों में से किसी को ब्याहना चाहे, तो वह अपने हर लड़के का खतना करवाए, जैसे हमारा खतना होता है, और तब हम अपनी बेटी उसे ब्याह सकते हैं।"
43 अब हमने तुम्हें अपने सारे तरीके बता दिए हैं जो हमारे पिता ने हमसे कहे थे, क्योंकि हम यह नहीं कर सकते जिसके बारे में तुमने हमसे कहा था, कि अपनी बेटी किसी बिना खतना वाले आदमी को दे दें, क्योंकि यह हमारे लिए शर्म की बात है।
44 लेकिन हम इस बात पर राज़ी हैं कि हम तुम्हें अपनी बेटी देंगे, और तुम्हारी बेटियों को भी लेंगे, और तुम्हारे बीच रहेंगे और तुम्हारी बात के मुताबिक एक ही लोग होंगे, अगर तुम हमारी बात सुनो और हमारी तरह अपने हर मर्द का खतना करने के लिए राज़ी हो जाओ, जैसे हमारा खतना होता है।
45 और अगर तुम हमारी बात नहीं मानोगे, और हर आदमी का खतना नहीं करोगे, जैसा हमने कहा है, तो हम तुम्हारे पास आएंगे, और अपनी बेटी को तुमसे लेकर चले जाएंगे।
46 और शेकेम और उसके पिता हमोर ने याकूब के बेटों की बातें सुनीं, और यह बात उन्हें बहुत अच्छी लगी, और शेकेम और उसके पिता हमोर ने याकूब के बेटों की इच्छा पूरी करने के लिए जल्दी की, क्योंकि शेकेम दीना से बहुत प्यार करता था, और उसका दिल उससे लग गया था।
47 तब शेकेम और उसके पिता हमोर जल्दी से शहर के फाटक पर गए, और उन्होंने अपने शहर के सभी आदमियों को इकट्ठा किया और उनसे याकूब के बेटों की बातें कहीं,
48 हम याकूब के बेटों, इन लोगों के पास गए और उनसे उनकी बेटी के बारे में बात की। ये लोग हमारी मर्ज़ी के मुताबिक काम करने को राज़ी हो गए। देखो, हमारी ज़मीन उनके लिए बहुत बड़ी है। वे उसमें रहेंगे और उसमें व्यापार करेंगे। और हम एक ही लोग होंगे। हम उनकी बेटियों को लेंगे और अपनी बेटियों को उन्हें पत्नियाँ बना देंगे।
49 लेकिन ये लोग सिर्फ़ इस शर्त पर यह काम करने के लिए राज़ी होंगे कि हमारे बीच हर आदमी का खतना हो, जैसा कि उनके भगवान ने उन्हें हुक्म दिया है, और जब हम उनके कहने के मुताबिक खतना करवा लेंगे, तो वे अपने जानवरों और सामान के साथ हमारे बीच रहेंगे, और हम उनके साथ एक ही कौम के होंगे।
50 जब शहर के सभी लोगों ने शेकेम और उसके पिता हमोर की बातें सुनीं, तो वे इस बात से राज़ी हो गए और उन्होंने खतना करवाने का फ़ैसला किया, क्योंकि शेकेम और उसके पिता हमोर देश के राजकुमार होने की वजह से उनके बीच बहुत इज़्ज़तदार थे।
51 और अगले दिन, शेकेम और उसके पिता हमोर सुबह-सुबह उठे, और उन्होंने अपने शहर के सभी आदमियों को शहर के बीच में इकट्ठा किया, और याकूब के बेटों को बुलाया, जिन्होंने उस दिन और अगले दिन अपने हर लड़के का खतना किया।
52 और उन्होंने शेकेम और उसके पिता हामोर और शेकेम के पाँचों भाइयों का खतना किया, और फिर सब उठकर अपने-अपने घर चले गए, क्योंकि यह बात यहोवा की तरफ से शेकेम शहर के खिलाफ थी, और इस मामले में शिमोन की सलाह यहोवा की तरफ से थी, ताकि यहोवा शेकेम शहर को याकूब के दोनों बेटों के हाथ में कर दे।

अध्याय 34

1 और जिन पुरुषों का खतना हुआ था, उनकी संख्या छह सौ पैंतालीस पुरुष और दो सौ छियालीस बच्चे थे।
2 लेकिन हमोर के पिता पेरेद के बेटे किद्देकेम और उसके छह भाइयों ने शेकेम और उसके पिता हमोर की बात नहीं मानी, और उन्होंने खतना नहीं करवाया, क्योंकि याकूब के बेटों का प्रस्ताव उन्हें बुरा लगा, और इस बात पर उनका गुस्सा बहुत भड़क गया कि शहर के लोगों ने उनकी बात नहीं मानी।
3 और दूसरे दिन शाम को उन्हें आठ छोटे बच्चे मिले जिनका खतना नहीं हुआ था, क्योंकि उनकी माताओं ने उन्हें शेकेम और उसके पिता हमोर और शहर के लोगों से छिपा दिया था।

4 और शेकेम और उसके पिता हामोर ने उन्हें खतना के लिए अपने पास बुलाया, तभी किद्देकेम और उसके छह भाई तलवारें लेकर उन पर झपटे और उन्हें मार डालना चाहते थे।
5 और उन्होंने शेकेम और उसके पिता हामोर को भी मार डालना चाहा और इसी बात के कारण उन्होंने उनके साथ दीना को भी मार डालना चाहा।
6 तब उन्होंने उनसे कहा, "तुमने यह क्या किया है? क्या तुम्हारे कनानी भाइयों की बेटियों में कोई औरत नहीं है, जो तुम इब्रियों की बेटियों को अपने लिए रखना चाहते हो, जिन्हें तुम पहले से नहीं जानते थे, और यह काम करना चाहते हो जो तुम्हारे पुरखों ने तुम्हें कभी करने की आज्ञा नहीं दी?"
7 क्या तुम सोचते हो कि जो काम तुमने किया है, उससे तुम कामयाब हो जाओगे? और इस मामले में तुम अपने कनानी भाइयों को क्या जवाब दोगे, जो कल आकर तुमसे इस बारे में पूछेंगे?
8 और अगर तुम्हारा काम उनकी नज़र में सही और अच्छा न लगे, तो तुम अपनी जान के लिए क्या करोगे, और मैं अपनी जान के लिए क्या करूँगी, क्योंकि तुमने हमारी बात नहीं सुनी?
9 और अगर देश के रहने वाले और तुम्हारे सभी भाई, जो हाम की संतान हैं, तुम्हारे इस काम के बारे में सुनकर कहें,
10 एक इब्री औरत की वजह से शेकेम और उसके पिता हमोर और उनके शहर के सभी रहने वालों ने वह किया जिसके बारे में उन्हें पता नहीं था और जिसके बारे में उनके पुरखों ने उन्हें कभी हुक्म नहीं दिया था। तो फिर तुम अपने भाइयों, जो कनान देश के रहने वाले हैं, के सामने अपनी शर्म कहाँ छिपाओगे या सारी ज़िंदगी कहाँ छिपाओगे?
11 इसलिए अब हम यह काम नहीं सह सकते जो तुमने किया है, और न ही हम पर यह बोझ डाला जा सकता है, जिसकी आज्ञा हमारे पुरखों ने हमें नहीं दी थी।
12 देखो, कल हम जाकर अपने सभी भाइयों को, जो इस देश में रहते हैं, इकट्ठा करेंगे, और हम सब आकर तुम्हें और उन सभी को जो तुम पर भरोसा करते हैं, मार डालेंगे, ताकि न तो तुम्हारा कोई बचेगा और न उनका।
13 जब हमोर और उसके बेटे शेकेम और शहर के सभी लोगों ने किद्देकेम और उसके भाइयों की बातें सुनीं, तो वे उनकी बातों से अपनी जान को लेकर बहुत डर गए, और उन्होंने अपने किए पर पछतावा किया।
14 तब शेकेम और उसके पिता हमोर ने अपने पिता किद्देकेम और उसके भाइयों को उत्तर दिया, और उन्होंने उनसे कहा, जो बातें तुमने हमसे कहीं, वे सब सच हैं।
15 अब यह मत कहना, और न अपने मन में यह सोचना कि हमने इब्रियों के प्यार की वजह से यह काम किया, जिसकी आज्ञा हमारे पुरखों ने हमें नहीं दी थी।
16 लेकिन क्योंकि हमने देखा कि उनकी बेटी के बारे में हमारी इच्छा पूरी करने का उनका कोई इरादा या इच्छा नहीं थी, सिवाय इस शर्त के, इसलिए हमने उनकी बात मान ली और यह काम किया जो तुमने देखा, ताकि उनसे अपनी इच्छा पूरी हो सके।
17 और जब हम उनसे अपनी मांग पूरी कर लेंगे, तो हम उनके पास लौटेंगे और उनके साथ वही करेंगे जो तुम हमसे कहोगे।
18 इसलिए हम तुमसे गुज़ारिश करते हैं कि तुम इंतज़ार करो और तब तक रुको जब तक हमारा शरीर ठीक न हो जाए और हम फिर से मज़बूत न हो जाएं, और तब हम मिलकर उनके खिलाफ़ जाएंगे, और उनके साथ वही करेंगे जो तुम्हारे और हमारे दिल में है।
19 और याकूब की बेटी दीना ने ये सारी बातें सुनीं जो किद्देकेम और उसके भाइयों ने कही थीं, और जो हमोर और उसके बेटे शेकेम और उनके शहर के लोगों ने उन्हें जवाब दिया था।
20 और उसने जल्दी से अपनी एक लड़की को, जिसे उसके पिता ने शेकेम के घर में उसकी देखभाल के लिए भेजा था, अपने पिता याकूब और अपने भाइयों के पास यह कहकर भेजा:
21 इस प्रकार किद्देकेम और उसके भाइयों ने तुम्हारे विषय में सलाह दी, और इस प्रकार हामोर, शेकेम और नगर के लोगों ने उन्हें उत्तर दिया।
22 जब याकूब ने ये बातें सुनीं, तो वह गुस्से से भर गया, और उन पर बहुत गुस्सा हुआ, और उसका गुस्सा उन पर भड़क उठा।
23 और शिमोन और लेवी ने कसम खाकर कहा, "सारी धरती के परमेश्वर यहोवा की कसम, कल इसी समय तक पूरे शहर में कोई भी नहीं बचेगा।"
24 और बीस जवान लड़के छिपे हुए थे जिनका खतना नहीं हुआ था, और ये जवान लड़के शिमोन और लेवी से लड़े, और शिमोन और लेवी ने उनमें से अठारह को मार डाला, और दो उनसे भागकर शहर में कुछ चूने के गड्ढों में भाग गए, और शिमोन और लेवी ने उन्हें ढूंढा, लेकिन वे उन्हें नहीं मिले।
25 और शिमोन और लेवी शहर में घूमते रहे, और उन्होंने शहर के सभी लोगों को तलवार से मार डाला, और किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।
26 और शहर में बहुत घबराहट फैल गई, और शहर के लोगों की चीखें आसमान तक पहुँच गईं, और सभी औरतें और बच्चे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे।
27 और शिमोन और लेवी ने पूरे शहर को मार डाला; उन्होंने पूरे शहर में एक भी आदमी को नहीं छोड़ा।
28 और उन्होंने हमोर और उसके बेटे शेकेम को तलवार से मार डाला, और वे दीना को शेकेम के घर से ले आए और वहां से चले गए।
29 और याकूब के बेटे गए और लौटे, और मारे गए लोगों को देखा, और शहर और खेत में उनकी सारी जायदाद लूट ली।
30 और जब वे लूट का माल ले रहे थे, तो तीन सौ आदमी खड़े हुए और उन पर धूल फेंकी और उन्हें पत्थर मारे, तब शिमोन ने उनकी तरफ़ मुड़कर उन सबको तलवार से मार डाला, और शिमोन लेवी के सामने मुड़कर शहर में आया।
31 और वे अपनी भेड़ें, बैल और गाय-बैल, और बाकी औरतों और बच्चों को भी ले गए, और उन सबको ले गए, और एक फाटक खोलकर बाहर निकले और जोश के साथ अपने पिता याकूब के पास पहुँचे।
32 और जब याकूब ने देखा कि उन्होंने शहर में क्या-क्या किया है, और उनसे लूटी गई सारी चीज़ें भी देखीं, तो याकूब को उन पर बहुत गुस्सा आया, और याकूब ने उनसे कहा, तुमने मेरे साथ यह क्या किया है? देखो, मुझे उस देश के कनानी लोगों के बीच आराम मिला, और उनमें से किसी ने भी मेरे साथ दखल नहीं दिया।
33 और अब तुमने मुझे इस देश के रहने वालों, यानी कनानियों और परिज्जियों के बीच बुरा बना दिया है, और मैं गिनती में बहुत कम हूँ, और जब वे तुम्हारे और उनके भाइयों के काम के बारे में

सुनेंगे तो वे सब मेरे खिलाफ इकट्ठा होकर मुझे मार डालेंगे, और मैं और मेरा घराना खत्म हो जाएगा।
34 तब शिमोन, लेवी और उनके सब भाइयों ने अपने पिता याकूब से कहा, "देखो, हम इस देश में रहते हैं, और क्या शेकेम हमारी बहन के साथ ऐसा करेगा? शेकेम ने जो कुछ किया है, उसके बारे में तुम चुप क्यों हो? और क्या वह हमारी बहन के साथ वैसा ही बर्ताव करेगा जैसा सड़कों पर किसी वेश्या के साथ करता है?"
35 और जिन औरतों को शिमोन और लेवी ने शेकेम शहर से बंदी बनाया था, और जिन्हें उन्होंने मारा नहीं था, उनकी गिनती 85 थी, जिन्होंने कभी किसी मर्द को नहीं देखा था।
36 और उनमें एक जवान लड़की थी जो दिखने में सुंदर और सुंदर थी, जिसका नाम बुना था, और शिमोन ने उसे अपनी पत्नी बना लिया, और जिन आदमियों को उन्होंने बंदी बनाया और नहीं मारा, उनकी गिनती सैंतालीस थी, और बाकी को उन्होंने मार डाला।
37 और जितने भी जवान लड़के-लड़कियाँ शिमोन और लेवी ने शेकेम शहर से बंदी बनाकर लाए थे, वे याकूब के बेटों और उनके बाद उनके बच्चों के गुलाम तब तक रहे, जब तक याकूब के बेटे मिस्र देश से नहीं निकल गए।
38 और जब शिमोन और लेवी शहर से बाहर चले गए, तो जो दो जवान बचे थे, जो शहर में छिप गए थे, और शहर के लोगों के बीच नहीं मरे थे, वे उठे। ये जवान शहर में गए और उसमें घूमे। उन्होंने शहर को वीरान पाया, कोई आदमी नहीं था, और सिर्फ़ औरतें रो रही थीं। इन जवानों ने चिल्लाकर कहा, देखो, याकूब इब्रानी के बेटों ने इस शहर के साथ यही बुराई की है कि उन्होंने आज कनान के एक शहर को तबाह कर दिया, और कनान की पूरी ज़मीन पर अपनी जान की परवाह नहीं की।
39 और ये लोग शहर छोड़कर तपनाक शहर गए, और वहाँ पहुँचकर तपनाक के लोगों को सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था, और जो कुछ याकूब के बेटों ने शेकेम शहर के साथ किया था।
40 और यह बात तपनाक के राजा याशूब तक पहुँची, और उसने उन जवानों को देखने के लिए शेकेम शहर में आदमी भेजे, क्योंकि राजा को उनकी बात पर यकीन नहीं हुआ, और उसने कहा, "दो आदमी शेकेम जैसे बड़े शहर को कैसे बर्बाद कर सकते हैं?"
41 और याशूब के दूतों ने लौटकर उसे बताया, "हम शहर में आए, और वह तबाह हो गया है, वहाँ एक भी आदमी नहीं है; सिर्फ़ रोती हुई औरतें हैं; न कोई भेड़-बकरी है, न कोई मवेशी, क्योंकि शहर में जो कुछ था, सब याकूब के बेटों ने ले लिया।"
42 और याशूब ने यह देखकर हैरानी से कहा, "दो आदमी यह कैसे कर सकते हैं कि इतने बड़े शहर को तबाह कर दें, और एक भी आदमी उनका सामना न कर सके?"
43 क्योंकि निम्रोद के दिनों से ऐसी घटना नहीं हुई, और न ही बहुत समय से ऐसी घटना हुई है; और तपनाक के राजा याशूब ने अपनी प्रजा से कहा, हिम्मत रखो, हम जाकर इन इब्रियों से लड़ेंगे, और उनके साथ वैसा ही करेंगे जैसा उन्होंने शहर के साथ किया था, और हम शहर के लोगों से बदला लेंगे।
44 और तपनाक के राजा याशूब ने इस मामले में अपने सलाहकारों से सलाह ली, और उसके सलाहकारों ने उससे कहा, "तुम अकेले इब्रियों को नहीं हरा पाओगे, क्योंकि उन्हें पूरे शहर में यह काम करने के लिए ताकतवर होना होगा।"
45 अगर उनमें से दो ने पूरे शहर को बर्बाद कर दिया, और कोई भी उनके खिलाफ खड़ा नहीं हुआ, तो अगर तुम उनके खिलाफ जाओगे, तो वे सब हमारे खिलाफ उठेंगे और हमें भी उसी तरह खत्म कर देंगे।
46 लेकिन अगर तू हमारे आस-पास के सभी राजाओं को भेजकर उन्हें इकट्ठा कर दे, तो हम उनके साथ जाकर याकूब के बेटों से लड़ेंगे; तब तू उन पर जीत जाएगा।
47 और याशूब ने अपने सलाहकारों की बातें सुनीं, और उनकी बातें उसे और उसके लोगों को अच्छी लगीं, और उसने वैसा ही किया; और तपनाक के राजा याशूब ने शेकेम और तपनाक के आस-पास के सभी एमोरियों के राजाओं के पास यह संदेश भेजा,
48 मेरे साथ चलो और मेरी मदद करो, और हम इब्री याकूब और उसके सभी बेटों को मार डालेंगे, और उन्हें धरती से मिटा देंगे, क्योंकि उसने शेकेम शहर के साथ ऐसा ही किया था, और क्या तुम यह नहीं जानते?
49 और एमोरियों के सभी राजाओं ने सुना कि याकूब के बेटों ने शेकेम शहर के साथ क्या बुरा किया है, और वे उनसे बहुत हैरान हुए।
50 और एमोरियों के सात राजा अपनी पूरी सेना के साथ, लगभग दस हज़ार आदमी तलवारें लिए हुए, याकूब के बेटों से लड़ने के लिए इकट्ठा हुए; और याकूब ने सुना कि एमोरियों के राजा उसके बेटों से लड़ने के लिए इकट्ठा हुए हैं, और याकूब बहुत डर गया, और वह परेशान हो गया।
51 तब याकूब ने शिमोन और लेवी पर गुस्सा करते हुए कहा, "तुमने यह क्या किया? तुमने मुझे क्यों नुकसान पहुँचाया, और कनान के सभी बच्चों को मेरे खिलाफ भेजकर मुझे और मेरे घराने को खत्म करवा दिया? मैं और मेरा घराना आराम कर रहे थे, और तुमने मेरे साथ ऐसा किया, और अपने कामों से देश के लोगों को मेरे खिलाफ भड़का दिया।"
52 तब यहूदा ने अपने पिता से कहा, "क्या मेरे भाइयों शिमोन और लेवी ने शेकेम के सभी रहने वालों को यूँ ही मार डाला? ज़रूर इसलिए कि शेकेम ने हमारी बहन को बेइज़्ज़त किया था, और हमारे परमेश्वर की नूह और उसके बच्चों को दी गई आज्ञा को तोड़ा था, क्योंकि शेकेम हमारी बहन को ज़बरदस्ती ले गया था, और उसके साथ गलत काम किया था।"
53 और शेकेम ने यह सब बुरा किया और उसके शहर के किसी भी रहने वाले ने उसे टोककर यह नहीं पूछा, 'तू यह क्यों कर रहा है?' ज़रूर इसी वजह से मेरे भाइयों ने जाकर शहर को हराया, और यहोवा ने उसे उनके हाथ में कर दिया, क्योंकि उसके रहने वालों ने हमारे परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ा था। तो क्या उन्होंने यह सब बेकार में किया है?
54 और अब तू क्यों डरा हुआ या परेशान है, और तू मेरे भाइयों से क्यों नाराज़ है, और तेरा गुस्सा उन पर क्यों भड़का है?
55 ज़रूर हमारे परमेश्वर ने, जिसने शेकेम शहर और उसके लोगों को उनके हाथ में कर दिया, वही हमारे खिलाफ आने वाले सभी कनानी राजाओं को भी हमारे हाथ में कर देगा, और हम उनके साथ वैसा ही करेंगे जैसा मेरे भाइयों ने शेकेम के साथ किया था।
56 अब उनके बारे में शांत रहो और अपना डर दूर करो, लेकिन हमारे भगवान पर भरोसा रखो, और उससे प्रार्थना करो कि वह

हमारी मदद करे और हमें बचाए, और हमारे दुश्मनों को हमारे हाथों में सौंप दे।
57 तब यहूदा ने अपने पिता के एक सेवक को पुकारा, "जाओ और देखो कि जो राजा हमारे विरुद्ध आ रहे हैं, वे अपनी सेनाओं के साथ कहाँ हैं।"
58 और नौकर दूर जाकर देखने लगा, और सीहोन पहाड़ के सामने गया, और राजाओं के सभी कैंप खेतों में खड़े देखे, और वह यहूदा के पास लौट आया और कहा, देखो, राजा अपने सभी कैंपों के साथ मैदान में खड़े हैं, उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है, समुद्र किनारे की रेत के समान।
59 तब यहूदा ने शिमोन, लेवी और अपने सब भाइयों से कहा, "हिम्मत रखो और बहादुर बनो, क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा हमारे साथ है; उनसे मत डरो।"
60 तुम सब अपने-अपने हथियार, धनुष और तलवार लेकर आगे बढ़ो, और हम जाकर इन बिना खतना वाले आदमियों से लड़ेंगे; यहोवा हमारा परमेश्वर है, वही हमें बचाएगा।
61 और वे उठ खड़े हुए, और हर कोई अपने-अपने युद्ध के हथियार बाँधे हुए था, चाहे बड़ा हो या छोटा, याकूब के ग्यारह बेटे, और उनके साथ याकूब के सभी सेवक।
62 और इसहाक के सभी सेवक जो हेब्रोन में इसहाक के साथ थे, वे सभी तरह के युद्ध के हथियार लेकर उनके पास आए, और याकूब के बेटे और उनके सेवक, जो 112 आदमी थे, उन राजाओं की ओर गए, और याकूब भी उनके साथ गया।
63 और याकूब के बेटों ने अपने पिता अब्राहम के बेटे इसहाक के पास हेब्रोन, जो किरेत-अरबा भी कहलाता है, यह संदेश भेजा,
64 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हम तुझसे हमारे लिए प्रार्थना करते हैं कि तू हमें उन कनानियों के हाथों से बचा, जो हम पर हमला करने आ रहे हैं, और उन्हें हमारे हाथ में कर दे।
65 और अब्राहम के बेटे इसहाक ने अपने बेटों के लिए यहोवा से प्रार्थना की, और कहा, हे यहोवा परमेश्वर, आपने मेरे पिता से वादा किया था, कि मैं तुम्हारे वंश को आसमान के तारों जितना बढ़ाऊंगा, और आपने मुझसे वादा भी किया था, और अब जब कनान के राजा मेरे बच्चों से लड़ने के लिए इकट्ठा हो रहे हैं, क्योंकि उन्होंने कोई हिंसा नहीं की, तो आपने अपना वादा पूरा किया।
66 इसलिए अब, हे प्रभु परमेश्वर, सारी धरती के परमेश्वर, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि इन राजाओं की सलाह को बिगाड़ दे, ताकि वे मेरे बेटों से न लड़ें।
67 और इन राजाओं और उनकी प्रजा के दिलों में मेरे बेटों का डर भर दूँ, और उनका घमंड तोड़ दूँ, और वे मेरे बेटों से दूर हो जाएँ।
68 और अपने मज़बूत हाथ और फैली हुई भुजा से मेरे बेटों और उनके नौकरों को उनसे छुड़ा, क्योंकि यह सब करने की ताकत और ताकत तेरे हाथों में है।
69 और याकूब के बेटे और उनके सेवक इन राजाओं के पास गए, और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा किया, और जब वे जा रहे थे, तो उनके पिता याकूब ने भी यहोवा से प्रार्थना की और कहा, हे यहोवा परमेश्वर, शक्तिशाली और महान परमेश्वर, जिसने पुराने दिनों से लेकर अब तक और हमेशा तक शासन किया है;
70 तू ही है जो लड़ाइयों को शुरू करता है और उन्हें खत्म करवाता है, तेरे हाथ में ताकत और ताकत है जिससे तू ऊपर उठा सकता है और नीचे गिरा सकता है; हे मेरी प्रार्थना तेरे सामने स्वीकार हो कि तू अपनी दया से मेरी ओर मुड़, इन राजाओं और उनके लोगों के दिलों में मेरे बेटों का डर भर दे, और उन्हें और उनके कैंपों को डरा दे, और अपनी बड़ी दया से उन सभी को बचा जो तुझ पर भरोसा करते हैं, क्योंकि तू ही है जो लोगों को हमारे नीचे ला सकता है और देशों को हमारे नीचे ला सकता है।

अध्याय 35

1 और एमोरियों के सब राजा आए और अपने सलाहकारों से सलाह करने के लिए मैदान में खड़े हुए कि याकूब के बेटों के साथ क्या किया जाए, क्योंकि वे अब भी उनसे डरते थे, और कहते थे, देखो, उनमें से दो ने पूरे शेकेम शहर को मार डाला है।
2 और यहोवा ने इसहाक और याकूब की प्रार्थनाएँ सुनीं, और उसने इन सभी राजाओं के सलाहकारों के दिलों में इतना डर और दहशत भर दी कि वे एक साथ कहने लगे,
3 क्या तुम आज मूर्ख हो, या तुममें समझ नहीं है कि तुम इब्रियों से लड़ोगे, और आज अपनी बर्बादी में क्यों खुश हो?
4 देखो, उनमें से दो लोग बिना किसी डर या डर के शेकेम शहर में आए, और उन्होंने शहर के सभी लोगों को मार डाला, कोई भी उनके सामने खड़ा नहीं हुआ, और तुम उन सबसे कैसे लड़ पाओगे?
5 तुम ज़रूर जानते हो कि उनका परमेश्वर उनसे बहुत प्यार करता है, और उसने उनके लिए ऐसे बड़े काम किए हैं, जैसे पुराने ज़माने से नहीं हुए, और सभी देशों के देवताओं में से कोई भी उसके जैसे बड़े काम नहीं कर सकता।
6 ज़रूर उसने उनके पिता इब्रानी अब्राहम को निम्रोद के हाथ से और उसके सभी लोगों के हाथ से बचाया, जिन्होंने कई बार उसे मारने की कोशिश की थी।
7 उसने उसे उस आग से भी बचाया जिसमें राजा निम्रोद ने उसे डाल दिया था, और उसके परमेश्वर ने उसे उससे बचाया।
8 और कौन ऐसा कर सकता है? ज़रूर अब्राहम ने ही एलाम के पाँच राजाओं को मारा था, जब उन्होंने उसके भाई के बेटे को छुआ था जो उन दिनों सदोम में रहता था।
9 और उसने अपने घर के वफ़ादार नौकर और अपने कुछ आदमियों को लेकर, एक ही रात में एलाम के राजाओं का पीछा करके उन्हें मार डाला, और उसके भाई के बेटे को उसकी सारी जायदाद लौटा दी जो उन्होंने उससे छीन ली थी।
10 और तुम ज़रूर जानते हो कि इन इब्रियों का परमेश्वर उनसे बहुत खुश है, और वे भी उससे खुश हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उसने उन्हें उनके सभी दुश्मनों से बचाया है।
11 और देखो, अपने परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के कारण, अब्राहम ने अपने इकलौते और प्यारे बेटे को लिया और उसे अपने परमेश्वर के लिए होमबलि के रूप में लाने का इरादा किया, और अगर परमेश्वर ने उसे ऐसा करने से नहीं रोका होता, तो वह अपने परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के कारण ऐसा करता।
12 और परमेश्वर ने उसके सारे काम देखे, और उससे कसम खाई, और उससे वादा किया कि वह उसके बेटों और उसकी पूरी संतान को हर मुसीबत से बचाएगा जो उन पर आएगी, क्योंकि उसने यह काम किया था, और अपने परमेश्वर के लिए अपने प्यार के कारण अपने बच्चे के लिए अपनी दया को दबा दिया था।

13 और क्या तुमने नहीं सुना कि उनके परमेश्वर ने मिस्र के राजा फिरौन और गरार के राजा अबीमेलेक के साथ क्या किया? जब उन्होंने अब्राहम की पत्नी को ले लिया, तो अब्राहम ने उसके बारे में कहा, 'वह मेरी बहन है, कहीं ऐसा न हो कि वे उसके कारण उसे मार डालें, और उसे अपनी पत्नी बनाने की सोचें?' और परमेश्वर ने उनके और उनके लोगों के साथ वह सब किया जो तुमने सुना है।
14 और देखो, हमने खुद अपनी आँखों से देखा कि याकूब का भाई एसाव, चार सौ आदमियों के साथ उसके पास आया, ताकि उसे मार डाले, क्योंकि उसे याद आया कि उसने उससे उसके पिता का आशीर्वाद छीन लिया था।
15 और जब वह सीरिया से आया, तो वह उससे मिलने गया, ताकि माँ और बच्चों को मार डाले। और उसे उसके हाथ से किसने बचाया, सिवाय उसके परमेश्वर के जिस पर वह भरोसा करता था? उसने उसे उसके भाई और उसके दुश्मनों के हाथ से भी बचाया, और वह फिर उनकी रक्षा करेगा।
16 कौन नहीं जानता कि उनके परमेश्वर ने ही उन्हें शक्ति दी कि वे शेकेम शहर के साथ वह बुराई करें जिसके बारे में तुमने सुना है?
17 तो क्या यह मुमकिन था कि दो आदमी अपनी ताकत से शेकेम जैसे बड़े शहर को तबाह कर सकें, अगर उनका परमेश्वर उन पर भरोसा न करता? उसने कहा और उन पर यह सब किया ताकि शहर के रहने वाले उनके शहर में ही मारे जाएं।
18 और क्या तुम उन लोगों पर जीत हासिल कर सकते हो जो तुम्हारे शहर से एक साथ लड़ने के लिए निकले हैं, भले ही उनसे हज़ार गुना ज़्यादा लोग तुम्हारी मदद के लिए आ जाएं?
19 तुम ज़रूर जानते और समझते हो कि तुम उनसे लड़ने नहीं आए हो, बल्कि उनके परमेश्वर से लड़ने आए हो जिसने उन्हें चुना है, और इसलिए तुम सब आज नाश होने आए हो।
20 इसलिए अब इस बुराई से दूर रहो जिसे तुम खुद पर लाने की कोशिश कर रहे हो, और तुम्हारे लिए बेहतर होगा कि तुम उनसे लड़ने न जाओ, भले ही वे गिनती में कम हैं, क्योंकि उनका परमेश्वर उनके साथ है।
21 और जब एमोरियों के राजाओं ने अपने सलाहकारों की सारी बातें सुनीं, तो उनके दिल डर से भर गए, और वे याकूब के बेटों से डर गए और उनसे लड़ने को तैयार नहीं हुए।
22 और उन्होंने अपने सलाहकारों की बातों पर कान लगाए, और उनकी सारी बातें सुनीं, और सलाहकारों की बातें राजाओं को बहुत पसंद आईं, और उन्होंने वैसा ही किया।
23 और राजा याकूब के बेटों से दूर हो गए, क्योंकि उनमें उनसे लड़ने की हिम्मत नहीं थी, क्योंकि वे उनसे बहुत डरते थे, और उनके डर से उनके दिल पिघल गए थे।
24 क्योंकि यह यहोवा की तरफ से उनके लिए हुआ, क्योंकि उसने अपने सेवक इसहाक और याकूब की प्रार्थनाएँ सुनीं, क्योंकि उन्होंने उस पर भरोसा किया था; और ये सभी राजा उस दिन अपने-अपने कैंपों के साथ अपने-अपने शहर लौट गए, और उन्होंने उस समय याकूब के बेटों से लड़ाई नहीं की।
25 और याकूब के बेटे उस दिन शाम तक सीहोन पहाड़ के सामने डटे रहे, और यह देखकर कि ये राजा उनसे लड़ने नहीं आए, याकूब के बेटे घर लौट गए।

अध्याय 36

1 उस समय यहोवा ने याकूब को दर्शन देकर कहा, उठ, बेतेल जा और वहीं रह, और वहां उस यहोवा के लिए एक वेदी बना, जो तुझे दर्शन देता है, और जिसने तुझे और तेरे बेटों को दुख से बचाया है।
2 तब याकूब अपने बेटों और अपने सब लोगों के साथ निकला, और यहोवा की बात मानकर बेतेल को गया।
3 और जब याकूब बेतेल गया, तब वह निन्यानवे साल का था। याकूब और उसके बेटे और उसके साथ के सभी लोग लूज़ में बेतेल में रहे। वहाँ उसने उस प्रभु के लिए एक वेदी बनाई जो उसे दिखाई दिया था। और याकूब और उसके बेटे छह महीने बेतेल में रहे।
4 उस समय उज़ की बेटी डेबोरा, जो रिबका की दाई थी और याकूब के साथ थी, मर गई; और याकूब ने उसे बेतेल के नीचे एक ओक के पेड़ के नीचे दफ़ना दिया।
5 और याकूब की माँ, बेथुएल की बेटी रेबेका भी उसी समय हेब्रोन में मर गई, जो किरेत-अरबा भी कहलाता है, और उसे मकपेला की गुफा में दफ़नाया गया, जिसे अब्राहम ने हेथ के बच्चों से खरीदा था।
6 और रेबेका की उम्र एक सौ तैंतीस साल थी, और वह मर गई। जब याकूब ने सुना कि उसकी माँ रेबेका मर गई है, तो वह फूट-फूट कर रोया, और उसके लिए, और उसकी दाई डेबोरा के लिए ओक के पेड़ के नीचे बहुत दुख मनाया, और उसने उस जगह का नाम अल्लोन-बखुथ रखा।
7 और उन्हीं दिनों सीरियाई लाबान मर गया, क्योंकि परमेश्वर ने उसे इसलिए मारा क्योंकि उसने अपने और याकूब के बीच हुए करार को तोड़ा था।
8 और जब याकूब सौ साल का था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया, और उसे आशीर्वाद दिया, और उसका नाम इस्राएल रखा, और उन्हीं दिनों याकूब की पत्नी राहेल गर्भवती हुई।
9 उस समय याकूब और उसके सारे लोग बेतेल से अपने पिता के घर हेब्रोन जाने के लिए निकले।
10 जब वे रास्ते पर जा रहे थे, और एप्रात पहुँचने में अभी थोड़ी ही दूरी थी, तो राहेल के एक बेटा हुआ। उसे बहुत ज़्यादा प्रसव पीड़ा हुई और वह मर गई।
11 और याकूब ने उसे एप्रात के रास्ते में, जो बेतलेहेम भी है, दफ़ना दिया, और उसकी कब्र पर एक खंभा खड़ा किया, जो आज तक वहीं है; और राहेल की उम्र पैंतालीस साल की हुई और वह मर गई।
12 और याकूब ने अपने बेटे का नाम, जो राहेल से पैदा हुआ था, बिन्यामीन रखा, क्योंकि वह उसके दाहिने हाथ की ज़मीन में पैदा हुआ था।
13 राहेल की मौत के बाद याकूब ने उसकी दासी बिल्हा के तंबू में अपना तंबू लगाया।
14 इस बात से रूबेन को अपनी माँ लिआ से जलन हुई, और वह गुस्से से भर गया। वह गुस्से में उठा और बिल्हा के तंबू में गया और वहाँ से अपने पिता का बिस्तर हटा दिया।
15 उस समय रूबेन के बेटों से जन्म के अधिकार का हिस्सा, साथ ही राज और पुजारी का पद छीन लिया गया, क्योंकि उसने अपने पिता के बिस्तर को अपवित्र किया था। और जन्म का अधिकार यूसुफ को दिया गया, राज का पद यहूदा को, और

पुजारी का पद लेवी को दिया गया, क्योंकि रूबेन ने अपने पिता के बिस्तर को अपवित्र किया था।
16 और याकूब की वंशावली ये है जो उससे पदन-अराम में पैदा हुए, और याकूब के बेटे बारह थे।
17 लिआ के बेटे थे रूबेन जो बड़ा था, और शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून और उनकी बहन दीना; और राहेल के बेटे थे यूसुफ और बिन्यामीन।
18 लिआ की दासी ज़िल्पा के बेटे गाद और आशेर थे, और राहेल की दासी बिल्हा के बेटे दान और नप्ताली थे; ये याकूब के बेटे हैं जो पदान-अराम में उससे पैदा हुए थे।
19 और याकूब और उसके बेटे और उसके सभी लोग सफर करके मम्रे पहुँचे, जो हेब्रोन में किरेत-अरबा भी है, जहाँ अब्राहम और इसहाक रहते थे, और याकूब अपने बेटों और अपने सभी लोगों के साथ हेब्रोन में अपने पिता के पास रहने लगा।
20 और उसका भाई एसाव और उसके बेटे, और उसके सारे लोग सेईर देश में गए और वहीं रहने लगे, और सेईर देश में उनकी जायदाद हो गई, और एसाव के बच्चे सेईर देश में खूब फले-फूले और बहुत बढ़ गए।
21 और एसाव की वंशावली ये है जो उससे कनान देश में पैदा हुए, और एसाव के बेटे पाँच थे।
22 और आदा ने एसाव से उसके जेठे बेटे एलीपज को जन्म दिया, और उसने रूएल को भी जन्म दिया, और अहलीबामा ने उससे यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया।
23 ये एसाव के बच्चे हैं जो कनान देश में उससे पैदा हुए थे; और एसाव के बेटे एलीपज के बेटे थे तेमान, उमर, सपो, गाताम, केनाज़ और अमालेक्स, और रूएल के बेटे थे नचात, जेरक, शमा और मिज्जा।
24 और यूश के बेटे तिम्ना, अल्वा, यितेत थे; और यालाम के बेटे अला, फीनोर और कनज थे।
25 और कोरह के बेटे तेमान, मिबसार, मगदीएल और एराम थे; ये सेईर देश में एसाव के बेटों के घराने थे, जिनके अपने-अपने अधिकार थे।
26 और सेईर देश के होरी निवासी सेईर के बेटों के नाम ये हैं: लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, दीशान, एज़ेर और दीशोन, ये सात बेटे थे।
27 और लोतान के बच्चे होरी, हेमान और उनकी बहन तिम्ना थे, यानी तिम्ना जो याकूब और उसके बेटों के पास आई थी, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, और वह जाकर एसाव के बेटे एलीपज की रखैल बन गई, और उससे अमालेक पैदा हुआ।
28 और शोबाल के बेटे थे अल्वान, मानहत, एबाल, शपो और ओनाम, और सिबोन के बेटे थे अजाह और अनाह, यह वही अनाह था जिसने जंगल में यमीम को पाया था जब वह अपने पिता सिबोन के गधों को चराता था।
29 और जब वह अपने पिता के गधों को चराता था, तो वह उन्हें अलग-अलग समय पर चराने के लिए जंगल में ले जाता था।
30 और एक दिन वह उन्हें समुद्र किनारे के एक रेगिस्तान में ले गया, जो लोगों के जंगल के सामने था। जब वह उन्हें खाना खिला रहा था, तो देखो, समुद्र के दूसरी तरफ से एक बहुत तेज़ तूफ़ान आया और वहाँ चर रहे गधों पर आ गिरा, और वे सब रुक गए।
31 और उसके बाद समुद्र के दूसरी तरफ के जंगल से करीब 120 बड़े और डरावने जानवर निकले, और वे सब उस जगह पर आ गए जहाँ गधे थे, और वहीं बस गए।
32 और वे जानवर, बीच से नीचे की ओर, इंसानों के बच्चों जैसे थे, और बीच से ऊपर की ओर, कुछ भालू जैसे थे, और कुछ की पूंछ उनके कंधों के बीच से ज़मीन तक पहुंची हुई थी, जैसे दुकीफाथ की पूंछ, और ये जानवर आए और इन गधों पर सवार हुए, और उन्हें ले गए, और वे आज तक चले गए।
33 और उन जानवरों में से एक अना के पास आया और उसे अपनी पूंछ से मारा, और फिर उस जगह से भाग गया।
34 और जब उसने यह काम देखा तो वह अपनी जान को लेकर बहुत डर गया, और भागकर शहर में चला गया।
35 और उसने अपने बेटों और भाइयों को वह सब बताया जो उसके साथ हुआ था, और बहुत से लोग गधों को ढूंढने गए लेकिन उन्हें नहीं मिले, और अना और उसके भाई उस दिन के बाद से उस जगह पर नहीं गए, क्योंकि वे अपनी जान को लेकर बहुत डरे हुए थे।
36 और सेईर के बेटे अना के बच्चे थे दीशोन और उसकी बहन अहलीबामा, और दीशोन के बच्चे थे हेमदान, एशबान, यित्रान और केरान, और एज़ेर के बच्चे थे बिलहान, ज़ावान और अकान, और दीशोन के बच्चे थे ऊज़ और अरान।
37 ये सेईर होरी के बच्चों के परिवार हैं, और सेईर देश में उनके अपने-अपने अधिकार क्षेत्र हैं।
38 और एसाव और उसके बच्चे सेईर नाम के होरी नाम के देश में रहने लगे, और वहाँ उनकी ज़मीन-जायदाद थी, और वे बहुत फले-फूले और उनकी गिनती बहुत ज़्यादा बढ़ी। और याकूब और उसके बच्चे और उनके सभी लोग अपने पिता इसहाक के साथ कनान देश में रहने लगे, जैसा कि यहोवा ने उनके पिता अब्राहम को हुक्म दिया था।

अध्याय 37

1 और याकूब की ज़िंदगी के एक सौ पाँचवें साल में, यानी कनान देश में अपने बच्चों के साथ रहने के नौवें साल में, वह पदान-अराम से आया।
2 और उन दिनों याकूब अपने बच्चों के साथ हेब्रोन से निकला, और वे और उनके सारे लोग शेकेम शहर में लौट आए, और वहीं रहने लगे, क्योंकि याकूब के बच्चों को शेकेम शहर में अपने जानवरों के लिए अच्छी और उपजाऊ चरागाह मिल गई थी। शेकेम शहर तब फिर से बन चुका था, और उसमें लगभग तीन सौ आदमी और औरतें रहती थीं।
3 और याकूब और उसके बच्चे और उसका सारा सामान खेत के उस हिस्से में रहने लगे जिसे याकूब ने पदान-अराम से आने पर शकेम के पिता हामोर से खरीदा था, इससे पहले कि शिमोन और लेवी ने शहर को हरा दिया था।
4 और शकेम शहर के आस-पास रहने वाले कनानी और एमोरी राजाओं ने सुना कि याकूब के बेटे फिर से शकेम आ गए हैं और वहीं रहने लगे हैं।
5 और उन्होंने कहा, क्या इब्री याकूब के बेटे फिर से शहर में आकर उसमें रहेंगे, जब उन्होंने उसके रहने वालों को मारकर निकाल दिया है? क्या वे अब वापस आकर शहर में रहने वालों को भी निकाल देंगे या उन्हें मार डालेंगे?
6 और कनान के सभी राजा फिर से इकट्ठा हुए, और वे याकूब और उसके बेटों से युद्ध करने के लिए एक साथ आए।

7 और तपनाक के राजा याशूब ने अपने सभी पड़ोसी राजाओं के पास, गाश के राजा एलान, शिलोह के राजा इहुरी, खजार के राजा पराथोन, सारतोन के राजा सूसी, बेथकोरन के राजा लाबान, और ओत्नाय-मा के राजा शबीर के पास यह संदेश भेजा,
8 मेरे पास आओ और मेरी मदद करो, और आओ हम इब्री याकूब और उसके बेटों और उसके सभी लोगों को मार डालें, क्योंकि वे फिर से शेकेम में आए हैं ताकि उस पर कब्ज़ा कर लें और पहले की तरह उसके रहने वालों को मार डालें।
9 और ये सभी राजा इकट्ठा हुए और अपने सभी कैंपों के साथ आए, उनके लोग समुद्र किनारे की रेत की तरह बहुत ज़्यादा थे, और वे सभी तपनाक के सामने थे।
10 और तपनाक का राजा याशूब अपनी पूरी सेना के साथ उनके पास गया, और उसने उनके साथ शहर के बाहर तपनाक के सामने डेरा डाला, और इन सभी राजाओं को उन्होंने सात टुकड़ियों में बाँट दिया, जो याकूब के बेटों के खिलाफ सात कैंप थे।
11 और उन्होंने याकूब और उसके बेटे के पास यह संदेश भेजा, "तुम सब हमारे पास आओ ताकि हम मैदान में एक-दूसरे से बात कर सकें, और शेकेम के उन आदमियों का बदला ले सकें जिन्हें तुमने उनके शहर में मार डाला था। और अब तुम फिर से शेकेम शहर लौटकर वहीं रहना और पहले की तरह उसके रहने वालों को मारना।
12 और याकूब के बेटों ने यह सुना और कनान के राजाओं की बातें सुनकर उनका गुस्सा बहुत भड़क गया। याकूब के दस बेटे जल्दी से उठ खड़े हुए, और उनमें से हर एक ने अपने-अपने हथियार बाँध लिए; और उनके साथ उनके 102 नौकर भी थे जो लड़ाई के लिए तैयार थे।
13 और ये सभी लोग, याकूब के बेटे अपने नौकरों के साथ, इन राजाओं की ओर गए, और उनका पिता याकूब उनके साथ था, और वे सब शेकेम के ढेर पर खड़े हो गए।
14 और याकूब ने अपने बेटों के लिए प्रभु से प्रार्थना की, और उसने प्रभु की ओर हाथ फैलाकर कहा, हे परमेश्वर, तू सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, तू हमारा पिता है, तूने हमें बनाया है और हम तेरे हाथों के काम हैं; मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि अपनी दया से मेरे बेटों को उनके दुश्मनों के हाथ से बचा, जो आज उनसे लड़ने आ रहे हैं और उन्हें उनके हाथ से बचा, क्योंकि तेरे हाथ में ताकत और पराक्रम है, जिससे थोड़े लोगों को बहुतों से बचाया जा सकता है।
15 और मेरे बेटों, यानी अपने सेवकों को दिल की ताकत और ताकत दे ताकि वे अपने दुश्मनों से लड़ सकें, उन्हें दबा सकें, और उनके दुश्मनों को उनके सामने गिरा सकें, और मेरे बेटों और उनके सेवकों को कनान के बच्चों के हाथों मरने न दें।
16 लेकिन अगर तुम्हें मेरे बेटों और उनके नौकरों की जान लेना अच्छा लगे, तो अपनी बड़ी दया से उन्हें अपने मंत्रियों के हाथों से ले लो, ताकि वे आज एमोरियों के राजाओं के हाथों मारे न जाएं।
17 और जब याकूब ने यहोवा से प्रार्थना करना बंद किया, तो धरती अपनी जगह से हिल गई, और सूरज अंधेरा हो गया, और ये सभी राजा डर गए और उन्हें बहुत घबराहट हुई।
18 और यहोवा ने याकूब की प्रार्थना सुन ली, और यहोवा ने याकूब के बेटों के डर और खौफ से सभी राजाओं और उनकी सेनाओं के दिलों में असर डाला।
19 क्योंकि यहोवा ने उन्हें याकूब के बेटों के रथों और ताकतवर घोड़ों की आवाज़ सुनाई, और उनके साथ आने वाली एक बड़ी सेना की आवाज़ सुनाई।
20 और ये राजा याकूब के बेटों से बहुत डर गए, और जब वे अपनी जगहों पर खड़े थे, तो देखो याकूब के बेटे, एक सौ बारह आदमियों के साथ, ज़ोरदार और ज़बरदस्त नारे लगाते हुए उन पर हमला करने लगे।
21 और जब राजाओं ने याकूब के बेटों को अपनी ओर आते देखा, तो वे और भी घबरा गए, और वे पहले की तरह याकूब के बेटों के सामने से पीछे हटने लगे, और उनसे लड़ने का मन नहीं किया।
22 लेकिन वे पीछे नहीं हटे, और कहा, "इब्रानियों के सामने से इस तरह दो बार पीछे हटना हमारे लिए शर्म की बात होगी।"
23 और याकूब के बेटे पास आए और इन सभी राजाओं और उनकी सेनाओं के खिलाफ़ आगे बढ़े, और उन्होंने देखा कि यह एक बहुत ताकतवर लोग थे, जो समुद्र की रेत के बराबर अनगिनत थे।
24 और याकूब के बेटों ने यहोवा को पुकारा और कहा, हे यहोवा, हमारी मदद कर, हमारी मदद कर और हमें जवाब दे, क्योंकि हमें तुझ पर भरोसा है, और हमें इन बिना खतना वाले आदमियों के हाथों न मरने दे, जो आज हमारे खिलाफ आए हैं।
25 और याकूब के बेटों ने अपने-अपने युद्ध के हथियार बाँधे, और हर आदमी ने अपने हाथ में अपनी ढाल और अपना भाला लिया, और वे युद्ध के लिए आगे बढ़े।
26 और याकूब का बेटा यहूदा अपने भाइयों के आगे-आगे दौड़ा, और उसके साथ उसके दस नौकर थे, और वह इन राजाओं की तरफ गया।
27 और तपनाक का राजा याशूब भी अपनी सेना के साथ यहूदा से पहले आया, और यहूदा ने याशूब और उसकी सेना को अपनी ओर आते देखा, और यहूदा का गुस्सा भड़क उठा, और उसका गुस्सा उसके अंदर जल उठा, और वह लड़ाई के लिए आगे बढ़ा जिसमें यहूदा ने अपनी जान जोखिम में डाल दी।
28 और याशूब और उसकी सारी सेना यहूदा की ओर बढ़ रही थी, और वह एक बहुत मज़बूत और ताकतवर घोड़े पर सवार था, और याशूब बहुत बहादुर आदमी था, और सिर से पैर तक लोहे और पीतल से ढका हुआ था।
29 और जब वह घोड़े पर होता था, तो वह आगे और पीछे दोनों हाथों से तीर चलाता था, जैसा कि उसकी सभी लड़ाइयों में होता था, और वह कभी भी उस जगह पर निशाना नहीं चूकता था जहाँ वह अपने तीर चलाता था।
30 और जब याशूब यहूदा से लड़ने आया, और यहूदा पर बहुत सारे तीर चला रहा था, तो यहोवा ने याशूब का हाथ बाँध दिया, और उसके चलाए हुए सारे तीर उसके ही आदमियों पर वापस आ गए।
31 इसके बावजूद, याशूब तीरों से उसे चुनौती देने के लिए यहूदा की तरफ बढ़ता रहा, लेकिन उनके बीच की दूरी लगभग तीस हाथ थी, और जब यहूदा ने याशूब को उस पर तीर चलाते देखा, तो वह गुस्से से भरी ताकत के साथ उसकी तरफ दौड़ा।
32 तब यहूदा ने ज़मीन से एक बड़ा पत्थर उठाया, जिसका वज़न साठ शेकेल था, और यहूदा याशूब की तरफ़ दौड़ा, और पत्थर उसकी ढाल पर लगा, जिससे याशूब बेहोश हो गया, और अपने घोड़े से ज़मीन पर गिर पड़ा।

33 और याशूब के हाथ से ढाल फट गई, और वार के ज़ोर से लगभग पंद्रह हाथ दूर जा गिरी, और ढाल दूसरे कैंप के सामने गिर पड़ी।
34 और जो राजा याशूब के साथ आए थे, उन्होंने दूर से याकूब के बेटे यहूदा की ताकत और उसने याशूब के साथ जो किया था, उसे देखा, और वे यहूदा से बहुत डर गए।
35 और वे याशूब की घबराहट देखकर उसके कैंप के पास इकट्ठा हुए, और यहूदा ने अपनी तलवार निकाली और याशूब के कैंप के बयालीस आदमियों को मार डाला, और याशूब का पूरा कैंप यहूदा के सामने से भाग गया, और कोई भी उसके सामने खड़ा नहीं हुआ, और वे याशूब को छोड़कर भाग गए, और याशूब अभी भी ज़मीन पर गिरा हुआ था।
36 और याशूब ने देखा कि उसके कैंप के सभी आदमी उससे भाग गए हैं, इसलिए वह डर के मारे यहूदा के खिलाफ़ तेज़ी से उठा, और यहूदा के सामने पैरों के बल खड़ा हो गया।
37 और याशूब ने यहूदा के साथ एक बार लड़ाई की, और उसकी ढाल एक-दूसरे की ढाल से टकराई; और याशूब के सब आदमी भाग गए, क्योंकि वे यहूदा से बहुत डर गए थे।
38 और याशूब ने अपना भाला हाथ में लेकर यहूदा के सिर पर वार किया, लेकिन यहूदा ने जल्दी से अपनी ढाल को याशूब के भाले के सामने अपने सिर पर रख लिया, जिससे यहूदा की ढाल पर याशूब के भाले का वार लगा, और ढाल भी फट गई।
39 और जब यहूदा ने देखा कि उसकी ढाल फट गई है, तो उसने जल्दी से अपनी तलवार निकाली और याशूब के टखनों पर वार किया, और उसके पैर काट दिए जिससे याशूब ज़मीन पर गिर पड़ा, और भाला उसके हाथ से गिर गया।
40 और यहूदा ने जल्दी से याशूब का भाला उठाया, जिससे उसने उसका सिर काट दिया और उसे उसके पैरों के पास फेंक दिया।
41 और जब याकूब के बेटों ने देखा कि यहूदा ने याशूब के साथ क्या किया है, तो वे सब दूसरे राजाओं की सेना में भाग गए, और याकूब के बेटों ने याशूब की सेना और वहाँ मौजूद सभी राजाओं की सेनाओं से लड़ाई की।
42 और याकूब के बेटों ने उनके पंद्रह हज़ार आदमियों को गिरा दिया, और उन्हें ऐसे मारा जैसे लौकी को मार रहे हों, और बाकी अपनी जान बचाने के लिए भाग गए।
43 और यहूदा अब भी याशूब की लाश के पास खड़ा था, और उसने याशूब का कवच उतार लिया।
44 और यहूदा ने याशूब के पास का लोहा और पीतल भी उतार दिया, और देखो याशूब के सरदारों में से नौ आदमी यहूदा से लड़ने आए।
45 तब यहूदा ने जल्दी से ज़मीन से एक पत्थर उठाया और उनमें से एक के सिर पर मारा, जिससे उसकी खोपड़ी टूट गई, और शरीर भी घोड़े से ज़मीन पर गिर पड़ा।
46 और जो आठ सरदार बचे थे, उन्होंने यहूदा की ताकत देखकर बहुत डर गए और भाग गए। यहूदा ने अपने दस आदमियों के साथ उनका पीछा किया, और उन्होंने उन्हें पकड़ लिया और मार डाला।
47 और याकूब के बेटे अब भी राजाओं की सेनाओं पर हमला कर रहे थे, और उन्होंने उनमें से बहुतों को मार डाला, लेकिन वे राजा अपने सरदारों के साथ हिम्मत से डटे रहे, और अपनी जगहों से पीछे नहीं हटे, और उन्होंने अपनी सेनाओं के उन लोगों पर चिल्लाया जो याकूब के बेटों के सामने से भाग गए थे, लेकिन किसी ने उनकी बात नहीं सुनी, क्योंकि वे अपनी जान से डरते थे कि कहीं वे मर न जाएं।
48 और याकूब के सभी बेटे राजाओं की सेनाओं को हराकर लौट आए और यहूदा के सामने आए, और यहूदा अभी भी याशूब के आठ सरदारों को मार रहा था, और उनके कपड़े उतार रहा था।
49 और लेवी ने देखा कि गाश का राजा एलोन अपने चौदह सरदारों के साथ उसे मारने के लिए उसकी ओर आ रहा है, लेकिन लेवी को यह बात पक्के तौर पर पता नहीं थी।
50 और एलोन अपने सरदारों के साथ पास आया, और लेवी ने पीछे मुड़कर देखा कि लड़ाई उसके पीछे है, और लेवी अपने बारह सेवकों के साथ भागा, और उन्होंने जाकर एलोन और उसके सरदारों को तलवार की धार से मार डाला।

अध्याय 38

1 और शिलोह का राजा इहुरी एलोन की मदद करने के लिए आया, और वह याकूब के पास गया, तब याकूब ने अपने हाथ में धनुष निकाला और एक तीर इहुरी को लगा जिससे वह मर गया।
2 और जब शिलोह का राजा इहुरी मर गया, तो बाकी चार राजा बाकी सरदारों के साथ अपनी जगह से भाग गए, और उन्होंने यह कहते हुए पीछे हटने की कोशिश की, 'इब्रानियों के पास अब हमारी ताकत नहीं रही, क्योंकि उन्होंने हमसे ज़्यादा ताकतवर तीन राजाओं और उनके सरदारों को मार डाला है।'
3 और जब याकूब के बेटों ने देखा कि बाकी राजा अपनी जगह से चले गए हैं, तो उन्होंने उनका पीछा किया, और याकूब भी शेकेम के ढेर से, जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से आया, और वे राजाओं का पीछा करते हुए उनके पास पहुँचे।
4 और जब राजाओं और सरदारों और उनकी बाकी सेनाओं ने देखा कि याकूब के बेटे उनके पास आ रहे हैं, तो वे अपनी जान बचाने के लिए डर गए और तब तक भागते रहे जब तक वे खजर शहर तक नहीं पहुँच गए।
5 और याकूब के बेटों ने उनका पीछा किया और वे ख़ज़र शहर के फाटक तक पहुँच गए। उन्होंने राजाओं और उनकी सेनाओं को बुरी तरह मारा, लगभग चार हज़ार आदमी थे। जब वे राजाओं की सेना को मार रहे थे, तब याकूब अपने धनुष से राजाओं को मारने में लगा हुआ था, और उसने उन सभी को मार डाला।
6 और उसने चाज़र के राजा पराथोन को चाज़र शहर के गेट पर मार डाला, और उसके बाद उसने सार्टोन के राजा सुसी, और बेथचोरिन के राजा लाबान, और मकनैमा के राजा शबीर को मारा, और उसने उन सभी को तीरों से मार डाला, हर एक को एक तीर मारा, और वे मर गए।
7 और याकूब के बेटों ने यह देखकर कि सभी राजा मर चुके हैं और वे टूटकर पीछे हट रहे हैं, चाज़र के फाटक के सामने राजाओं की सेनाओं के साथ लड़ाई जारी रखी, और उन्होंने उनके लगभग चार सौ आदमियों को मार डाला।
8 और याकूब के तीन सेवक उस लड़ाई में मारे गए, और जब यहूदा ने देखा कि उसके तीन सेवक मर गए हैं, तो उसे बहुत दुख हुआ, और एमोरियों के खिलाफ उसका गुस्सा भड़क उठा।
9 और राजाओं की सेनाओं के जो भी आदमी बचे थे, वे अपनी जान को लेकर बहुत डर गए, और वे भागकर ख़जर शहर की दीवारों के फाटक तोड़कर, सुरक्षा के लिए शहर में घुस गए।

10 और वे खज़र शहर के बीच में छिप गए, क्योंकि खज़र शहर बहुत बड़ा और फैला हुआ था, और जब ये सारी सेनाएँ शहर में घुस गईं, तो याकूब के बेटे उनका पीछा करते हुए शहर की ओर भागे।
11 और चार ताकतवर आदमी, जिन्हें लड़ाई का अनुभव था, शहर से निकले और हाथों में तलवारें और भाले लिए शहर के दरवाज़े पर खड़े हो गए। वे याकूब के बेटों के सामने खड़े हो गए और उन्हें शहर में अंदर नहीं आने दिया।
12 तब नप्ताली दौड़कर उनके बीच आया और अपनी तलवार से उनमें से दो को मार डाला, और एक ही वार में उनके सिर काट दिए।
13 और वह दूसरे दो की तरफ़ मुड़ा, और देखा कि वे भाग गए थे, और उसने उनका पीछा किया, उन्हें पकड़ लिया, और उन्हें मारा।
14 और याकूब के बेटे शहर में आए और देखा कि शहर में एक और दीवार थी। उन्होंने दीवार का गेट ढूंढा, लेकिन वह नहीं मिला। यहूदा दीवार के ऊपर चढ़ गया। शिमोन और लेवी उसके पीछे हो लिए। वे तीनों दीवार से नीचे शहर में आ गए।
15 और शिमोन और लेवी ने उन सभी आदमियों को मार डाला जो शहर में जान बचाने के लिए भागे थे, और शहर के रहने वालों को भी उनकी पत्नियों और बच्चों के साथ, उन्होंने तलवार की धार से मार डाला, और शहर की चीखें आसमान तक पहुँच गईं।
16 और दान और नप्ताली यह देखने के लिए दीवार पर कूद पड़े कि रोने का शोर किस वजह से हो रहा है, क्योंकि याकूब के बेटे अपने भाइयों के लिए परेशान थे, और उन्होंने शहर के रहने वालों को रोते और गिड़गिड़ाते हुए यह कहते सुना, 'शहर में हमारा जो कुछ भी है, उसे लेकर चले जाओ, बस हमें मार मत डालो।'
17 और जब यहूदा, शिमोन और लेवी ने शहर के लोगों को मारना बंद कर दिया, तो वे दीवार पर चढ़ गए और दान और नप्ताली को, जो दीवार पर थे, और अपने बाकी भाइयों को बुलाया, और शिमोन और लेवी ने उन्हें शहर में आने का रास्ता बताया, और याकूब के सभी बेटे लूट का माल लेने आए।
18 और याकूब के बेटों ने खज़र शहर से लूट का माल, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और ज़मीन-जायदाद लूट ली, और जो कुछ भी पकड़ा जा सकता था, सब ले लिया, और उसी दिन शहर से चले गए।
19 और अगले दिन याकूब के बेटे सारटन गए, क्योंकि उन्होंने सुना कि सारटन के जो आदमी शहर में रह गए थे, वे उनके राजा को मारने के लिए उनसे लड़ने के लिए इकट्ठा हो रहे हैं, और सारटन एक बहुत ऊँचा और मज़बूत शहर था, और शहर के चारों ओर एक गहरी दीवार थी।
20 और दीवार का खंभा लगभग पचास हाथ और उसकी चौड़ाई चालीस हाथ थी, और दीवार की वजह से किसी आदमी के शहर में घुसने की जगह नहीं थी, और याकूब के बेटों ने शहर की दीवार देखी, और उसमें घुसने का रास्ता ढूंढा, लेकिन उन्हें वह नहीं मिला।
21 क्योंकि शहर में जाने का रास्ता पीछे की तरफ था, और जो कोई शहर में आना चाहता था, वह उसी रास्ते से आता था और पूरे शहर का चक्कर लगाता था, और फिर शहर में दाखिल होता था।
22 और याकूब के बेटों ने जब देखा कि उन्हें शहर में जाने का रास्ता नहीं मिल रहा है, तो उनका गुस्सा बहुत भड़क उठा। और शहर के रहने वालों ने जब देखा कि याकूब के बेटे उनके पास आ रहे हैं, तो वे उनसे बहुत डर गए, क्योंकि उन्होंने उनकी ताकत और खज़ार के साथ उनके किए काम के बारे में सुना था।
23 और सार्टोन शहर के रहने वाले याकूब के बेटों से लड़ने के लिए शहर में इकट्ठा होने के बाद उनकी तरफ नहीं जा सकते थे, कहीं ऐसा न हो कि वे शहर में घुस जाएं। लेकिन जब उन्होंने देखा कि वे उनकी तरफ आ रहे हैं, तो वे उनसे बहुत डर गए, क्योंकि उन्होंने उनकी ताकत और उन्होंने चाज़र के साथ जो किया था, उसके बारे में सुना था।
24 इसलिए सार्टोन के रहने वालों ने याकूब के बेटों के आने से पहले ही शहर की सड़क का पुल अपनी जगह से हटा दिया, और उसे शहर में ले आए।
25 और याकूब के बेटे आए और शहर में जाने का रास्ता ढूंढने लगे, लेकिन उन्हें रास्ता नहीं मिला। शहर के रहने वाले दीवार के ऊपर चढ़ गए, और देखा कि याकूब के बेटे शहर में जाने का रास्ता ढूंढ रहे हैं।
26 और शहर के रहने वालों ने दीवार के ऊपर से याकूब के बेटों को बुरा-भला कहा, और उन्हें कोसा। याकूब के बेटों ने यह बुरा-भला सुना, और वे बहुत गुस्सा हुए, और उनका गुस्सा अंदर ही अंदर भड़क उठा।
27 और याकूब के बेटे उनसे नाराज़ हो गए, और वे सब उठकर अपनी ताकत के ज़ोर से दीवार पर चढ़ गए, और अपनी ताकत से दीवार की चालीस हाथ की चौड़ाई पार कर गए।
28 और जब वे प्राचीर पार कर गए तो वे शहर की दीवार के नीचे खड़े हो गए, और उन्होंने शहर के सभी फाटकों को लोहे के दरवाजों से बंद पाया।
29 और याकूब के बेटे शहर के फाटकों के दरवाज़े तोड़ने के लिए पास आए, लेकिन वहाँ के लोगों ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया, क्योंकि वे दीवार के ऊपर से उन पर पत्थर और तीर फेंक रहे थे।
30 और दीवार पर खड़े लोगों की गिनती करीब चार सौ थी, और जब याकूब के बेटों ने देखा कि शहर के लोग उन्हें शहर के फाटक नहीं खोलने देंगे, तो वे उछलकर दीवार के ऊपर चढ़ गए, और यहूदा सबसे पहले शहर के पूर्वी हिस्से में गया।
31 और गाद और आशेर उसके पीछे शहर के पश्चिमी कोने तक गए, और शिमोन और लेवी उत्तर की ओर, और दान और रूबेन दक्षिण की ओर गए।
32 और जो आदमी दीवार के ऊपर थे, यानी शहर के रहने वाले, जब उन्होंने देखा कि याकूब के बेटे उनकी तरफ आ रहे हैं, तो वे सब दीवार से भाग गए, शहर में उतर गए, और शहर के बीच में छिप गए।
33 और इस्साकार और नप्ताली जो दीवार के नीचे रह गए थे, उन्होंने शहर के फाटकों को तोड़ दिया, और शहर के फाटकों पर आग लगा दी, जिससे लोहा पिघल गया, और याकूब के सभी बेटे और उनके सभी आदमी शहर में आ गए, और उन्होंने सार्टोन शहर के निवासियों से लड़ाई की, और उन्हें तलवार से मार डाला, और कोई भी उनके सामने खड़ा नहीं हुआ।
34 और करीब दो सौ आदमी शहर से भाग गए, और वे सब शहर के एक टावर में जाकर छिप गए, और यहूदा ने उनका पीछा करते हुए टावर तक पहुँच गया और उसने टावर तोड़ दिया, जो उन आदमियों पर गिर गया, और वे सब मर गए।
35 और याकूब के बेटे उस मीनार की छत के रास्ते ऊपर गए, और उन्होंने देखा, और देखो, शहर में कुछ दूरी पर एक और

मज़बूत और ऊँचा मीनार था, और उसकी चोटी आसमान तक पहुँच रही थी, और याकूब के बेटे जल्दी से नीचे उतरे, और अपने सभी आदमियों के साथ उस मीनार पर गए, और पाया कि वह लगभग तीन सौ आदमियों, औरतों और बच्चों से भरी हुई थी।
36 और याकूब के बेटों ने मीनार पर उन आदमियों को बहुत मारा, और वे भागकर उनसे दूर चले गए।
37 और शिमोन और लेवी ने उनका पीछा किया, तो बारह ताकतवर और बहादुर आदमी उस जगह से निकलकर उनके पास आए जहाँ वे छिपे हुए थे।
38 और उन बारह आदमियों ने शिमोन और लेवी के खिलाफ़ ज़ोरदार लड़ाई जारी रखी, और शिमोन और लेवी उन पर जीत नहीं पाए, और उन बहादुर आदमियों ने शिमोन और लेवी की ढालें तोड़ दीं, और उनमें से एक ने अपनी तलवार से लेवी के सिर पर वार किया, जब लेवी ने जल्दी से अपना हाथ अपने सिर पर रखा, क्योंकि वह तलवार से डर रहा था, और तलवार लेवी के हाथ पर लगी, और लेवी का हाथ कटने से बस थोड़ा ही बचा।
39 और लेवी ने उस बहादुर आदमी की तलवार अपने हाथ में पकड़ ली, और उसे ज़बरदस्ती उससे छीन लिया, और उससे उस ताकतवर आदमी के सिर पर वार किया, और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।
40 और ग्यारह आदमी लेवी से लड़ने के लिए आगे बढ़े, क्योंकि उन्होंने देखा कि उनमें से एक मारा गया है, और याकूब के बेटों ने लड़ाई की, लेकिन याकूब के बेटे उनसे जीत नहीं पाए, क्योंकि वे आदमी बहुत ताकतवर थे।
41 और याकूब के बेटों ने जब देखा कि वे उन पर हावी नहीं हो सकते, तो शिमोन ज़ोर से और ज़ोर से चीखा, और ग्यारह ताकतवर आदमी शिमोन की चीख सुनकर हैरान रह गए।
42 और यहूदा ने दूर से शिमोन के चिल्लाने की आवाज़ पहचान ली, और नप्ताली और यहूदा अपनी ढालें लेकर शिमोन और लेवी के पास दौड़े, और उन्हें उन ताकतवर आदमियों से लड़ते हुए पाया, लेकिन उनकी ढालें टूट जाने की वजह से वे उन पर काबू नहीं पा सके।
43 और नप्ताली ने देखा कि शिमोन और लेवी की ढालें टूट गई हैं, इसलिए उसने अपने सेवकों से दो ढालें लीं और उन्हें शिमोन और लेवी के पास ले आया।
44 और उस दिन शिमोन, लेवी और यहूदा तीनों ने उन ग्यारह ताकतवर आदमियों से सूरज डूबने तक लड़ाई की, लेकिन वे उन पर जीत नहीं पाए।
45 और यह बात याकूब को बताई गई, और वह बहुत दुखी हुआ, और उसने यहोवा से प्रार्थना की, और वह और उसका बेटा नप्ताली उन ताकतवर लोगों के खिलाफ गए।
46 और याकूब पास आया और अपना धनुष खींचकर उन ताकतवर आदमियों के पास गया, और धनुष से उनके तीन आदमियों को मार डाला, और बाकी आठ पीछे हट गए, और देखो, आगे और पीछे से उन पर जंग छिड़ी हुई थी, और वे अपनी जान से बहुत डर गए, और याकूब के बेटों के सामने खड़े नहीं हो सके, और उनके सामने से भाग गए।
47 और भागते समय उन्हें दान और आशेर अपनी ओर आते हुए मिले, और वे अचानक उन पर टूट पड़े, और उनसे लड़कर उनमें से दो को मार डाला, और यहूदा और उसके भाइयों ने उनका पीछा किया, और बाकी को भी मार डाला।
48 और याकूब के सभी बेटे वापस लौटे और शहर में घूमते हुए यह खोजते रहे कि क्या उन्हें कोई आदमी मिल सकता है, और उन्हें शहर की एक गुफा में लगभग बीस जवान आदमी मिले, और गाद और आशेर ने उन सभी को मार डाला, और दान और नप्ताली ने उन बाकी आदमियों पर हमला किया जो दूसरे टावर से भागकर बच निकले थे, और उन्होंने उन सभी को मार डाला।
49 और याकूब के बेटों ने सार्टोन शहर के सभी रहने वालों को मार डाला, लेकिन औरतों और बच्चों को शहर में ही छोड़ दिया और उन्हें नहीं मारा।
50 और सारटन शहर के सभी रहने वाले ताकतवर आदमी थे, उनमें से एक हज़ार आदमियों का पीछा करता था, और उनमें से दो बाकी दस हज़ार आदमियों से भागते नहीं थे।
51 और याकूब के बेटों ने सार्टोन शहर के सभी रहने वालों को तलवार से मार डाला, और कोई भी आदमी उनके सामने खड़ा नहीं हो सका, और उन्होंने औरतों को शहर में ही छोड़ दिया।
52 और याकूब के बेटों ने शहर की सारी लूट ले ली, और जो कुछ वे चाहते थे, उसे ले लिया, और उन्होंने शहर से भेड़-बकरियां, गाय-बैल और ज़मीन-जायदाद ले ली, और याकूब के बेटों ने सार्टोन और उसके रहने वालों के साथ वैसा ही किया जैसा उन्होंने खज़ार और उसके रहने वालों के साथ किया था, और वे मुड़कर चले गए।

अध्याय 39

1 और जब याकूब के बेटे सारटन शहर से निकले, तो वे करीब दो सौ हाथ ही चले थे कि उन्हें तपनाक के लोग अपनी तरफ आते हुए मिले, क्योंकि वे उनसे लड़ने निकले थे, क्योंकि उन्होंने तपनाक के राजा और उसके सभी आदमियों को हरा दिया था।
2 इसलिए तपनाक शहर में जो भी बचे थे, वे याकूब के बेटों से लड़ने के लिए निकले, और उन्होंने उनसे वह लूट का माल वापस लेने की सोची जो उन्होंने चाज़र और सारटन से हासिल किया था।
3 और तपनाक के बाकी आदमियों ने उस जगह याकूब के बेटों से लड़ाई की, और याकूब के बेटों ने उन्हें हरा दिया, और वे उनसे भाग गए, और उन्होंने अर्बेलन शहर तक उनका पीछा किया, और वे सब याकूब के बेटों के सामने मारे गए।
4 और याकूब के बेटे लौटकर तपनाक आए, ताकि तपनाक की लूट ले जाएं, और जब वे तपनाक पहुंचे तो उन्होंने सुना कि अर्बेलन के लोग अपने भाइयों की लूट बचाने के लिए उनसे मिलने निकले हैं, और याकूब के बेटों ने शहर को लूटने के लिए अपने दस आदमियों को तपनाक में छोड़ दिया, और वे अर्बेलन के लोगों की तरफ निकल पड़े।
5 और अर्बेलन के आदमी अपनी पत्नियों के साथ याकूब के बेटों से लड़ने के लिए निकले, क्योंकि उनकी पत्नियाँ लड़ाई में माहिर थीं, और वे लगभग चार सौ आदमी और औरतें निकले।
6 और याकूब के सब बेटे ज़ोर से चिल्लाए, और वे सब अर्बेलन के रहने वालों की तरफ़ दौड़े, और उनकी आवाज़ बहुत तेज़ और भयानक थी।
7 और अर्बेलन के रहने वालों ने याकूब के बेटों की चिल्लाहट और उनकी दहाड़ सुनी, जो शेरों की आवाज़ और समुद्र और उसकी लहरों की दहाड़ जैसी थी।
8 और याकूब के बेटों की वजह से उनके दिलों में डर और दहशत भर गई, और वे उनसे बहुत डर गए, और वे पीछे हट गए

और उनके सामने से शहर में भाग गए, और याकूब के बेटों ने शहर के फाटक तक उनका पीछा किया, और वे शहर में उनसे टकरा गए।
9 और याकूब के बेटों ने शहर में उनसे लड़ाई की, और उनकी सभी औरतें याकूब के बेटों के खिलाफ़ गोफन चलाने में लगी हुई थीं, और उस पूरे दिन शाम तक उनके बीच बहुत ज़ोरदार लड़ाई होती रही।
10 और याकूब के बेटे उन पर जीत नहीं पाए, और याकूब के बेटे उस लड़ाई में लगभग मारे ही गए थे, और याकूब के बेटों ने यहोवा को पुकारा और शाम को बहुत ताकत हासिल की, और याकूब के बेटों ने अर्बेलन के सभी रहने वालों को तलवार से मार डाला, चाहे वे मर्द हों, औरतें हों या बच्चे।
11 और जो लोग सार्टोन से भाग गए थे, याकूब के बेटों ने उन्हें अर्बेलन में मार डाला, और याकूब के बेटों ने अर्बेलन और तपनाक के साथ वैसा ही किया जैसा उन्होंने चाज़र और सार्टोन के साथ किया था, और जब औरतों ने देखा कि सभी आदमी मर गए हैं, तो वे शहर की छतों पर चढ़ गईं और याकूब के बेटों पर बारिश की तरह पत्थर बरसाकर उन्हें मारने लगीं।
12 और याकूब के बेटे जल्दी से शहर में आए और सभी औरतों को पकड़कर तलवार से मार डाला, और याकूब के बेटों ने सारा लूट का माल, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और मवेशी ले लिए।
13 और याकूब के बेटों ने मकनैमा के साथ वैसा ही किया जैसा उन्होंने तपनाक, खजर और शिलोह के साथ किया था, और वे वहां से मुड़कर चले गए।
14 और पांचवें दिन याकूब के बेटों ने सुना कि गाश के लोग उनके खिलाफ लड़ाई के लिए इकट्ठा हुए हैं, क्योंकि उन्होंने उनके राजा और उनके सरदारों को मार डाला था, क्योंकि गाश शहर में चौदह सरदार थे, और याकूब के बेटों ने पहली लड़ाई में उन सभी को मार डाला था।
15 और उस दिन याकूब के बेटों ने अपने युद्ध के हथियार पहने, और वे गाश के निवासियों के खिलाफ लड़ाई के लिए आगे बढ़े, और गाश में एमोरी लोगों का एक मजबूत और ताकतवर समुदाय था, और गाश एमोरियों के सभी शहरों में सबसे मजबूत और सबसे अच्छा किलाबंद शहर था, और इसकी तीन दीवारें थीं।
16 और याकूब के बेटे गाश आए और उन्होंने शहर के फाटक बंद देखे, और लगभग पाँच सौ आदमी सबसे बाहरी दीवार के ऊपर खड़े थे, और समुद्र किनारे की रेत जितने अनगिनत लोग शहर के बाहर, उसके पीछे याकूब के बेटों पर घात लगाए हुए थे।
17 और याकूब के बेटे शहर के फाटक खोलने के लिए पास आए, और जब वे पास आ रहे थे, तो देखो, जो लोग शहर के पीछे घात लगाए बैठे थे, वे अपनी जगहों से बाहर निकले और याकूब के बेटों को घेर लिया।
18 और याकूब के बेटे गाश के लोगों के बीच घिरे हुए थे, और लड़ाई उनके आगे और पीछे दोनों तरफ थी, और जो लोग दीवार पर थे, वे दीवार से उन पर तीर और पत्थर फेंक रहे थे।
19 और यहूदा ने यह देखकर कि गाश के लोग उनसे ज़्यादा भारी हो रहे हैं, एक बहुत ज़ोरदार और ज़बरदस्त चीख मारी। यहूदा की चीख सुनकर गाश के सभी लोग डर गए, और उसकी ज़ोरदार चीख सुनकर लोग दीवार से गिर पड़े, और शहर के बाहर और अंदर के सभी लोग अपनी जान को लेकर बहुत डर गए।
20 और याकूब के बेटे शहर के दरवाज़े तोड़ने के लिए पास आए ही थे कि गाश के आदमियों ने दीवार के ऊपर से उन पर पत्थर और तीर फेंके, और उन्हें दरवाज़े से भागने पर मजबूर कर दिया।
21 और याकूब के बेटे गाश के आदमियों पर, जो शहर के बाहर से उनके साथ थे, वापस आए, और उन्हें बुरी तरह मारा, जैसे लौकी को मारा जाता है, और वे याकूब के बेटों के सामने खड़े नहीं रह सके, क्योंकि यहूदा की चीख से वे डर गए थे।
22 और याकूब के बेटों ने शहर के बाहर रहने वाले सभी आदमियों को मार डाला। याकूब के बेटे शहर में घुसने और शहर की दीवारों के नीचे लड़ने के लिए पास आए, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके क्योंकि गाश के जो भी लोग शहर में रह गए थे, उन्होंने गाश की दीवारों को हर तरफ से घेर लिया था, इसलिए याकूब के बेटे उनसे लड़ने के लिए शहर के पास नहीं जा सके।
23 और याकूब के बेटे दीवार के नीचे लड़ने के लिए एक कोने के पास आए, गाश के रहने वालों ने उन पर तीर और पत्थर बारिश की तरह फेंके, और वे दीवार के नीचे से भाग गए।
24 और गाश के लोग जो दीवार पर थे, यह देखकर कि याकूब के बेटे दीवार के नीचे से उन पर हावी नहीं हो पा रहे हैं, उन्होंने याकूब के बेटों को यह कहकर बुरा-भला कहा,
25 लड़ाई में तुम्हें क्या हो गया है कि तुम जीत नहीं पा रहे हो? तो क्या तुम गाश के ताकतवर शहर और उसके रहने वालों के साथ वैसा ही कर सकते हो जैसा तुमने एमोरियों के उन शहरों के साथ किया था जो उतने ताकतवर नहीं थे? ज़रूर तुमने हमारे बीच के उन कमज़ोर लोगों के साथ वैसा ही किया, और उन्हें शहर के गेट पर ही मार डाला, क्योंकि तुम्हारे चिल्लाने की आवाज़ सुनकर वे डर गए थे और उनमें कोई ताकत नहीं थी।
26 तो क्या अब तुम इस जगह पर लड़ पाओगे? ज़रूर यहीं तुम सब मर जाओगे, और हम उन शहरों का बदला लेंगे जिन्हें तुमने बर्बाद कर दिया है।
27 और गाश के रहने वालों ने याकूब के बेटों को बहुत बुरा-भला कहा, और उनके देवताओं की बुराई की, और दीवार से उन पर तीर और पत्थर फेंकते रहे।
28 और यहूदा और उसके भाइयों ने गाश के रहने वालों की बातें सुनीं, और उनका गुस्सा बहुत भड़क उठा। इस बात से यहूदा को अपने परमेश्वर से जलन हुई, और उसने पुकारकर कहा, हे यहोवा, मदद कर, हमारी और हमारे भाइयों की मदद कर।
29 और वह अपनी नंगी तलवार हाथ में लिए हुए पूरी ताकत से दूर भागा, और ज़मीन से उछलकर अपनी ताकत के दम पर दीवार पर चढ़ गया, और उसकी तलवार उसके हाथ से गिर गई।
30 और यहूदा ने दीवार पर चिल्लाया, और दीवार पर खड़े सभी लोग डर गए, और उनमें से कुछ दीवार से शहर में गिरकर मर गए, और जो लोग अभी भी दीवार पर थे, जब उन्होंने यहूदा की ताकत देखी, तो वे बहुत डर गए और अपनी जान बचाने के लिए शहर में भाग गए।
31 और कुछ लोगों की हिम्मत बढ़ गई कि वे दीवार पर यहूदा से लड़ें, और जब उन्होंने देखा कि यहूदा के हाथ में तलवार नहीं है, तो वे उसे मारने के लिए पास आए, और उन्होंने उसे दीवार से उसके भाइयों के पास फेंकने का सोचा, और शहर के बीस आदमी उनकी मदद के लिए आए, और उन्होंने यहूदा को घेर लिया और सबने उस पर चिल्लाया, और खींची हुई तलवारें लेकर उसके पास आए, और उन्होंने यहूदा को डरा दिया, और यहूदा ने दीवार से अपने भाइयों को पुकारा।

32 और याकूब और उसके बेटों ने दीवार के नीचे से धनुष निकाला, और दीवार के ऊपर खड़े तीन आदमियों को मार गिराया, और यहूदा रोता रहा और चिल्लाया, हे प्रभु हमारी मदद करो, हे प्रभु हमें बचाओ, और वह दीवार पर ज़ोर से चिल्लाया, और उसकी पुकार बहुत दूर तक सुनाई दी।
33 और इस चीख के बाद उसने फिर चिल्लाना शुरू किया, और दीवार के ऊपर यहूदा को घेरने वाले सभी लोग डर गए, और यहूदा के चिल्लाने और उसके कांपने की आवाज़ सुनकर उन्होंने अपने हाथ से तलवार फेंक दी, और भाग गए।
34 और यहूदा ने उनके हाथों से गिरी हुई तलवारें ले लीं, और यहूदा ने उनसे लड़ाई की और दीवार पर उनके बीस आदमियों को मार डाला।
35 और लगभग 80 आदमी और औरतें शहर से दीवार पर चढ़ गए और उन सबने यहूदा को घेर लिया, और यहोवा ने यहूदा के दिलों में इतना डर भर दिया कि वे उसके पास नहीं आ सके।
36 और याकूब और उसके साथ के सब लोगों ने दीवार के नीचे से धनुष निकाला, और उन्होंने दीवार पर दस आदमियों को मार डाला, और वे याकूब और उसके बेटों के सामने दीवार के नीचे गिर पड़े।
37 और दीवार पर खड़े लोगों ने देखा कि उनके बीस आदमी गिर गए हैं, फिर भी वे तलवारें खींचकर यहूदा की तरफ दौड़े, लेकिन वे उसके पास नहीं पहुँच सके क्योंकि वे यहूदा की ताकत से बहुत डर गए थे।
38 और उनके ताकतवर आदमियों में से एक, जिसका नाम अरुद था, यहूदा के सिर पर तलवार से वार करने के लिए उसके पास आया। यहूदा ने जल्दी से अपनी ढाल उसके सिर पर रखी, और तलवार ढाल पर लगी, और वह दो टुकड़ों में फट गई।
39 और यह ताकतवर आदमी यहूदा को मारने के बाद यहूदा के डर से अपनी जान बचाने के लिए भागा, और उसका पैर दीवार पर फिसल गया और वह याकूब के बेटों के बीच गिर गया जो दीवार के नीचे थे, और याकूब के बेटों ने उसे मारकर मार डाला।
40 और उस ताकतवर आदमी के वार से यहूदा का सिर दर्द करने लगा, और यहूदा लगभग मर ही गया था।
41 और यहूदा दीवार पर चोट से हुए दर्द से चिल्लाया, जब दान ने उसकी बात सुनी, और उसका गुस्सा उसके अंदर भड़क उठा, और वह भी उठा और दूर चला गया, और दौड़ा, और ज़मीन से उछला, और अपने गुस्से से भरी ताकत से दीवार पर चढ़ गया।
42 और जब दान यहूदा के पास दीवार पर आया, तो दीवार पर खड़े सभी आदमी भाग गए, जो यहूदा के खिलाफ खड़े थे, और वे दूसरी दीवार पर चढ़ गए, और उन्होंने दूसरी दीवार से दान और यहूदा पर तीर और पत्थर फेंके, और उन्हें दीवार से भगाने की कोशिश की।
43 और तीरों और पत्थरों ने दान और यहूदा को मारा, और वे दीवार पर लगभग मारे ही गए थे, और जहाँ भी दान और यहूदा दीवार से भागे, दूसरी दीवार से उन पर तीरों और पत्थरों से हमला किया गया।
44 और याकूब और उसके बेटे अभी भी शहर के एंट्री गेट पर पहली दीवार के नीचे थे, और वे शहर के लोगों पर धनुष नहीं चला पाए, क्योंकि वे दूसरी दीवार पर होने की वजह से उन्हें दिखाई नहीं दे रहे थे।
45 और जब दान और यहूदा दूसरी दीवार से गिरे पत्थरों और तीरों को और बर्दाश्त नहीं कर सके, तो वे दोनों शहर के लोगों के पास दूसरी दीवार पर कूद पड़े, और जब शहर के लोग जो दूसरी दीवार पर थे, उन्होंने देखा कि दान और यहूदा दूसरी दीवार पर उनके पास आ गए हैं, तो वे सब चिल्लाए और दीवारों के बीच नीचे उतर गए।
46 और याकूब और उसके बेटों ने शहर के लोगों के चिल्लाने की आवाज़ सुनी, और वे अभी भी शहर के एंट्री गेट पर थे, और वे दान और यहूदा के बारे में परेशान थे जो उन्हें दिखाई नहीं दे रहे थे, क्योंकि वे दूसरी दीवार पर थे।
47 और नप्ताली गुस्से में आकर पहली दीवार पर कूद पड़ा, यह देखने के लिए कि शहर में जो चिल्लाने की आवाज़ उन्होंने सुनी थी, उसका कारण क्या है। इस्साकार और जबूलून शहर के दरवाज़े तोड़ने के लिए पास आए, और उन्होंने शहर के फाटक खोल दिए और शहर में घुस गए।
48 और नप्ताली पहली दीवार से कूदकर दूसरी दीवार पर चढ़ गया, और अपने भाइयों की मदद करने के लिए आया। और गाश के रहने वाले जो दीवार पर थे, यह देखकर कि नप्ताली तीसरा है जो अपने भाइयों की मदद करने आया है, वे सब भागकर शहर में चले गए, और याकूब और उसके सभी बेटे और उनके सभी जवान उनके पास शहर में आए।
49 और यहूदा, दान और नप्ताली दीवार से उतरकर शहर में आए और शहर के रहने वालों का पीछा किया, और शिमोन और लेवी शहर के बाहर से थे और उन्हें पता नहीं था कि फाटक खुला है, इसलिए वे वहाँ से दीवार पर चढ़ गए और शहर में अपने भाइयों के पास आ गए।
50 और शहर के सभी लोग शहर में आ गए, और याकूब के बेटे अलग-अलग दिशाओं से उनके पास आए, और आगे और पीछे से उनके खिलाफ लड़ाई हुई, और याकूब के बेटों ने उन्हें बुरी तरह मारा, और उनमें से लगभग बीस हज़ार आदमी और औरतें मारे गए, उनमें से कोई भी याकूब के बेटों के सामने खड़ा नहीं हो सका।
51 और खून शहर में बहुत ज़्यादा बह गया, और वह पानी की एक नदी जैसा था, और खून नदी की तरह शहर के बाहर तक बह गया, और बेथकोरीन के रेगिस्तान तक पहुँच गया।
52 और बेथकोरीन के लोगों ने दूर से गाश शहर से खून बहता देखा, और उनमें से करीब सत्तर आदमी खून देखने के लिए दौड़े, और वे उस जगह पर पहुँचे जहाँ खून था।
53 और वे खून के निशान का पीछा करते हुए गाश शहर की दीवार तक पहुँचे, और उन्होंने देखा कि शहर से खून बह रहा है, और उन्होंने गाश के रहने वालों की रोने की आवाज़ सुनी, क्योंकि खून आसमान तक पहुँच गया था, और खून पानी की धारा की तरह तेज़ी से बह रहा था।
54 और याकूब के सभी बेटे गाश के रहने वालों को मार रहे थे, और शाम तक उन्हें मारने में लगे हुए थे, लगभग बीस हज़ार आदमी और औरतें, और कोरीन के लोगों ने कहा, ज़रूर यह इब्रियों का काम है, क्योंकि वे अभी भी एमोरियों के सभी शहरों में लड़ाई कर रहे हैं।
55 और वे लोग जल्दी से बेथकोरीन की ओर दौड़े, और हर एक ने अपने-अपने युद्ध के हथियार लिए, और उन्होंने बेथकोरीन के सभी निवासियों को पुकारा, जिन्होंने भी अपने युद्ध के हथियार बाँध लिए कि जाकर याकूब के बेटों से लड़ें।
56 और जब याकूब के बेटों ने गाश के रहने वालों को मार डाला, तो वे सब मारे हुए लोगों को लूटने के लिए शहर में घूमे, और

शहर के सबसे अंदर और आगे जाकर उन्हें तीन बहुत ताकतवर आदमी मिले, और उनके हाथ में तलवार नहीं थी।
57 और याकूब के बेटे उस जगह पर आए जहाँ वे थे, और ताकतवर आदमी भाग गए, और उनमें से एक ने जबूलून को पकड़ लिया था, जिसे उसने देखा कि वह एक जवान लड़का था और छोटे कद का था, और अपनी ताकत से उसे ज़मीन पर गिरा दिया।
58 तब याकूब अपनी तलवार लेकर उसके पास दौड़ा, और याकूब ने तलवार से उसकी कमर के नीचे वार करके उसे दो टुकड़ों में काट डाला, और उसका शरीर जबूलून पर गिर पड़ा।
59 और दूसरे ने पास आकर याकूब को पकड़कर ज़मीन पर गिरा दिया, और याकूब उसकी ओर मुड़ा और उसे आवाज़ दी, जबकि शिमोन और लेवी दौड़े और तलवार से उसके कूल्हों पर वार करके उसे ज़मीन पर गिरा दिया।
60 और वह ताकतवर आदमी गुस्से से भरा हुआ ज़मीन से उठा, और यहूदा उसके पास आया, इससे पहले कि वह पैर जमा पाता, और उसने तलवार से उसके सिर पर वार किया, और उसका सिर फट गया और वह मर गया।
61 और तीसरा ताकतवर आदमी, यह देखकर कि उसके साथी मारे गए हैं, याकूब के बेटों के सामने से भाग गया, और याकूब के बेटों ने शहर में उसका पीछा किया; और जब वह ताकतवर आदमी भाग रहा था, तो उसे शहर के लोगों की एक तलवार मिली, और उसने उसे उठाया और याकूब के बेटों की तरफ़ मुड़कर उस तलवार से उनसे लड़ा।
62 और वह ताकतवर आदमी यहूदा के सिर पर तलवार से वार करने के लिए दौड़ा, और यहूदा के हाथ में कोई ढाल नहीं थी; और जब वह उसे मारने का इरादा कर रहा था, नप्ताली ने जल्दी से अपनी ढाल ली और यहूदा के सिर पर मार दी, और ताकतवर आदमी की तलवार नप्ताली की ढाल पर लगी और यहूदा तलवार से बच गया।
63 और शिमोन और लेवी अपनी तलवारें लेकर उस ताकतवर आदमी पर दौड़े और उस पर ज़ोर से तलवारों से वार किया, और दोनों तलवारें उस ताकतवर आदमी के शरीर में घुस गईं और उसे लंबाई में दो हिस्सों में बाँट दिया।
64 और याकूब के बेटों ने उस समय उन तीनों वीरों को और गाश के सब रहने वालों को भी मार डाला, और दिन ढलने वाला था।
65 और याकूब के बेटों ने गाश के चारों ओर घूमकर शहर का सारा लूट का माल लूट लिया, यहाँ तक कि छोटे बच्चों और औरतों को भी जिन्हें उन्होंने ज़िंदा नहीं रहने दिया, और याकूब के बेटों ने गाश के साथ वैसा ही किया जैसा उन्होंने सार्टोन और शिलोह के साथ किया था।

अध्याय 40

1 और याकूब के बेटे गाश की सारी लूट लेकर रात में शहर से निकल गए।
2 वे बेथकोरिन के किले की तरफ़ मार्च करते हुए जा रहे थे, और बेथकोरिन के रहने वाले उनसे मिलने के लिए किले में जा रहे थे, और उस रात याकूब के बेटों ने बेथकोरिन के किले में बेथकोरिन के रहने वालों से लड़ाई की।
3 और बेथचोरिन के सभी रहने वाले ताकतवर आदमी थे, उनमें से कोई भी हज़ार आदमियों के सामने से भाग नहीं सकता था, और वे उस रात किले पर लड़े, और उस रात उनकी चीखें दूर तक सुनी गईं, और उनकी चीखों से धरती कांप उठी।
4 और याकूब के सभी बेटे उन आदमियों से डर गए, क्योंकि उन्हें अंधेरे में लड़ने की आदत नहीं थी, और वे बहुत घबरा गए, और याकूब के बेटों ने यहोवा से पुकारकर कहा, हे यहोवा, हमारी मदद कर, हमें बचा ले ताकि हम इन बिना खतना वाले आदमियों के हाथों न मरें।
5 और यहोवा ने याकूब के बेटों की बात सुनी, और यहोवा ने बेथकोरीन के लोगों में बहुत डर और घबराहट पैदा कर दी, और वे रात के अंधेरे में आपस में लड़े, और बड़ी संख्या में एक-दूसरे को मारा।
6 और याकूब के बेटों को पता चला कि यहोवा ने उन आदमियों में गलत काम करने की आत्मा भर दी है, और वे अपने-अपने पड़ोसी से लड़ रहे हैं, इसलिए वे बेथकोरिन के लोगों के ग्रुप से निकलकर बेथकोरिन के किले की ढलान तक और उससे भी आगे चले गए, और उस रात वे अपने जवानों के साथ वहीं सुरक्षित रहे।
7 और बेथचोरिन के लोग पूरी रात लड़ते रहे, एक आदमी अपने भाई से, और दूसरा अपने पड़ोसी से, और वे किले पर हर तरफ चिल्लाते रहे, और उनकी चीख दूर तक सुनाई दी, और पूरी धरती उनकी आवाज़ से कांप उठी, क्योंकि वे धरती के सभी लोगों से ज़्यादा ताकतवर थे।
8 और कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, हिव्वियों और कनान के सभी राजाओं के शहरों के सभी निवासियों ने, और जो लोग यरदन के दूसरी तरफ थे, उन्होंने भी उस रात चिल्लाने की आवाज़ सुनी।
9 और उन्होंने कहा, “ज़रूर ये उन इब्रियों की लड़ाइयाँ हैं जो उन सात शहरों से लड़ रहे हैं, जो उनके पास आए हैं; और उन इब्रियों का सामना कौन कर सकता है?”
10 और कनानियों के शहरों के सभी रहने वाले, और यरदन नदी के दूसरी तरफ रहने वाले सभी लोग, याकूब के बेटों से बहुत डर गए, क्योंकि वे कहने लगे, देखो, जैसा उन शहरों के साथ हुआ था, वैसा ही हमारे साथ भी होगा, क्योंकि उनकी ज़बरदस्त ताकत का सामना कौन कर सकता है?
11 और उस रात कोरिनियों की चीखें बहुत तेज़ हो गईं, और बढ़ती गईं; और वे सुबह तक एक-दूसरे को मारते रहे, और उनमें से बहुत से मारे गए।
12 और सुबह हुई, और याकूब के सभी बेटे सुबह-सुबह उठे और किले पर गए, और उन्होंने बचे हुए कोरिनियों को बुरी तरह मारा, और वे सब किले में ही मारे गए।
13 और छठा दिन आया, और कनान के सभी निवासियों ने दूर से बेथकोरिन के सभी लोगों को बेथकोरिन के किले में मरे हुए पड़े देखा, और वे मेमनों और बकरियों की लाशों की तरह बिखरे हुए थे।
14 और याकूब के बेटों ने गाश से लूटी हुई सारी चीज़ें लेकर बेथकोरीन गए। उन्होंने शहर को समुद्र की रेत की तरह लोगों से भरा हुआ पाया। वे उनसे लड़े। याकूब के बेटों ने शाम तक उन्हें वहीं मारा।

15 और याकूब के बेटों ने बेतचोरीन के साथ वैसा ही किया जैसा उन्होंने गाश और तपनाक के साथ किया था, और जैसा उन्होंने खज़र, सारतोन और शिलोह के साथ किया था।
16 और याकूब के बेटे बेतकोरीन और शहरों की सारी लूट अपने साथ ले गए, और उसी दिन वे शेकेम को अपने घर चले गए।
17 और याकूब के बेटे शेकेम शहर में अपने घर आए, और शहर के बाहर रुके, और फिर वहीं लड़ाई से आराम किया, और पूरी रात वहीं रहे।
18 और वे अपने सभी सेवकों के साथ शहरों से लूटी गई सारी चीज़ें लेकर शहर के बाहर निकल गए, और शहर में नहीं गए, क्योंकि उन्होंने सोचा, "हो सकता है कि हमारे खिलाफ़ और लड़ाई हो, और वे शेकेम में हमें घेरने आएँ।"
19 और याकूब, उसके बेटे और उनके नौकर उस रात और अगले दिन खेत के उस हिस्से में रहे जिसे याकूब ने हामोर से पाँच शेकेल में खरीदा था, और जो कुछ उन्होंने पकड़ा था वह सब उनके पास था।
20 और याकूब के बेटों ने जो भी लूट का माल पकड़ा था, वह खेत के उस हिस्से में था, जो समुद्र किनारे की रेत जितना बड़ा था।
21 और देश के रहने वालों ने उन्हें दूर से देखा, और देश के सभी रहने वाले याकूब के बेटों से डर गए जिन्होंने यह काम किया था, क्योंकि पुराने ज़माने से किसी राजा ने ऐसा काम नहीं किया था।
22 और कनान के सातों राजाओं ने याकूब के बेटों के साथ शांति करने का फैसला किया, क्योंकि वे याकूब के बेटों की वजह से अपनी जान को लेकर बहुत डरे हुए थे।
23 और उस दिन, जो सातवाँ दिन था, हेब्रोन के राजा याफ़िया ने चुपके से ऐ के राजा, गिबोन के राजा, शालेम के राजा, अदुलाम के राजा, लाकीश के राजा, खज़ार के राजा, और उन सभी कनानी राजाओं के पास जो उनके अधीन थे, यह संदेश भेजा,
24 मेरे साथ चलो, और मेरे पास आओ ताकि हम याकूब के बेटों के पास जाएं, और मैं उनके साथ शांति करूंगा, और उनके साथ एक समझौता करूंगा, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी सारी ज़मीन याकूब के बेटों की तलवारों से तबाह हो जाए, जैसा उन्होंने शेकेम और उसके आस-पास के शहरों के साथ किया था, जैसा तुमने सुना और देखा है।
25 और जब तुम मेरे पास आओ, तो बहुत सारे आदमियों के साथ मत आना, बल्कि हर राजा अपने तीन मुख्य सरदारों को और हर सरदार अपने तीन अफ़सरों को लाए।
26 और तुम सब हेब्रोन आओ, और हम सब मिलकर याकूब के बेटों के पास जाएंगे, और उनसे गुज़ारिश करेंगे कि वे हमारे साथ शांति का समझौता करें।
27 और उन सभी राजाओं ने वही किया जो हेब्रोन के राजा ने उन्हें भेजा था, क्योंकि वे सभी उसकी सलाह और हुक्म के तहत थे, और कनान के सभी राजा याकूब के बेटों के पास जाकर उनसे शांति करने के लिए इकट्ठा हुए; और याकूब के बेटे लौटकर शेकेम के खेत के हिस्से में चले गए, क्योंकि उन्होंने देश के राजाओं पर भरोसा नहीं किया था।
28 और याकूब के बेटे लौट आए और दस दिन तक खेत में रहे, और कोई भी उनसे लड़ने नहीं आया।
29 और जब याकूब के बेटों ने देखा कि लड़ाई का कोई नामोनिशान नहीं है, तो वे सब इकट्ठा होकर शेकेम शहर चले गए, और याकूब के बेटे शेकेम में ही रह गए।
30 और चालीस दिन के बाद, एमोरियों के सभी राजा अपने-अपने इलाकों से इकट्ठा होकर हेब्रोन के राजा याफ़िया के पास आए।
31 और जो राजा याकूब के बेटों के साथ शांति करने के लिए हेब्रोन आए, उनकी गिनती इक्कीस थी, और उनके साथ आए सरदारों की गिनती उनसठ थी, और उनके आदमी एक सौ अस्सी थे, और ये सभी राजा और उनके आदमी हेब्रोन पहाड़ के पास आराम कर रहे थे।
32 और हेब्रोन का राजा अपने तीन सरदारों और नौ आदमियों के साथ बाहर गया, और इन राजाओं ने याकूब के बेटों के पास जाकर शांति बनाने का फैसला किया।
33 और उन्होंने हेब्रोन के राजा से कहा, "तुम अपने आदमियों के साथ हमारे आगे जाओ, और याकूब के बेटों से हमारी तरफ से बात करो, और हम तुम्हारे पीछे आकर तुम्हारी बातों को पक्का करेंगे।" और हेब्रोन के राजा ने वैसा ही किया।
34 और याकूब के बेटों ने सुना कि कनान के सभी राजा हेब्रोन में इकट्ठा होकर आराम कर रहे हैं, और याकूब के बेटों ने अपने चार नौकरों को जासूस बनाकर भेजा, और कहा, जाओ और इन राजाओं पर नज़र रखो, और उनके आदमियों को ढूंढो और देखो कि वे कम हैं या ज़्यादा, और अगर वे गिनती में बहुत कम हैं, तो सबकी गिनती करके वापस आओ।
35 और याकूब के सेवक चुपके से उन राजाओं के पास गए, और जैसा याकूब के बेटों ने उन्हें हुक्म दिया था, वैसा ही किया, और उसी दिन वे याकूब के बेटों के पास लौट आए, और उनसे कहा, "हम उन राजाओं के पास गए, और वे गिनती में बहुत कम थे, और हमने उन सबकी गिनती की, और देखो, वे दो सौ अट्ठासी राजा और आदमी थे।"
36 तब याकूब के बेटों ने कहा, "वे गिनती में थोड़े हैं, इसलिए हम सब उनके पास नहीं जाएँगे।" और सुबह याकूब के बेटे उठे और अपने आदमियों में से बासठ आदमियों को चुना, और याकूब के दस बेटे उनके साथ गए; और उन्होंने अपने लड़ाई के हथियार बाँध लिए, क्योंकि उन्होंने कहा, "वे हमसे लड़ने आ रहे हैं, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि वे उनसे शांति करने आ रहे हैं।"
37 और याकूब के बेटे अपने सेवकों के साथ शेकेम के फाटक पर उन राजाओं के पास गए, और उनके पिता याकूब उनके साथ थे।
38 और जब वे आगे बढ़े, तो देखो, हेब्रोन का राजा और उसके तीन सरदार और उसके साथ नौ आदमी याकूब के बेटों के सामने रास्ते से आ रहे थे। याकूब के बेटों ने आँखें उठाकर देखा कि दूर से हेब्रोन का राजा याफ़िया अपने सरदारों के साथ उनकी तरफ़ आ रहा है। और याकूब के बेटे शेकेम के गेट पर खड़े हो गए, और आगे नहीं बढ़े।
39 और हेब्रोन का राजा और उसके सरदार तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक वह याकूब के बेटों के पास नहीं पहुँच गए। तब उसने और उसके सरदारों ने ज़मीन पर गिरकर उन्हें प्रणाम किया। और हेब्रोन का राजा अपने सरदारों के साथ याकूब और उसके बेटों के सामने बैठ गया।
40 तब याकूब के बेटों ने उससे कहा, "हे हेब्रोन के राजा, तुम्हें क्या हो गया है? तुम आज हमारे पास क्यों आए हो? तुम हमसे क्या चाहते हो?" हेब्रोन के राजा ने याकूब से कहा, "हे मेरे मालिक, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि कनान के सभी राजा आज तुम्हारे साथ शांति करने आए हैं।"

41 और याकूब के बेटों ने हेब्रोन के राजा की बातें सुनीं, और वे उसकी बात मानने को तैयार नहीं हुए, क्योंकि याकूब के बेटों को उस पर भरोसा नहीं था, क्योंकि उन्हें लगा कि हेब्रोन के राजा ने उनसे धोखा किया है।
42 और हेब्रोन के राजा को याकूब के बेटों की बातों से पता चल गया कि वे उसकी बातों पर यकीन नहीं करते, और हेब्रोन का राजा याकूब के पास गया, और उससे कहा, मेरे मालिक, मैं आपसे गुज़ारिश करता हूँ कि आप यकीन रखें कि ये सभी राजा आपके पास शांति से आए हैं, क्योंकि वे अपने सभी आदमियों के साथ नहीं आए हैं, न ही वे अपने साथ लड़ाई के हथियार लाए हैं, बल्कि वे मेरे मालिक और उनके बेटों से शांति चाहते हैं।
43 और याकूब के बेटों ने हेब्रोन के राजा को जवाब दिया, "इन सभी राजाओं के पास भेजो, और अगर तुम हमसे सच बोलते हो, तो वे सब एक-एक करके हमारे सामने आएं, और अगर वे बिना हथियार के हमारे पास आएं, तो हम जान लेंगे कि वे हमसे शांति चाहते हैं।"
44 और हेब्रोन के राजा याफ़िया ने अपने एक आदमी को राजाओं के पास भेजा, और वे सब याकूब के बेटों के सामने आए, और ज़मीन पर गिरकर उन्हें प्रणाम किया, और ये राजा याकूब और उसके बेटों के सामने बैठे, और उन्होंने उनसे कहा,
45 हमने वह सब सुना है जो तुमने अपनी तलवार और बहुत ताकतवर हाथ से एमोरियों के राजाओं के साथ किया, जिससे कोई भी तुम्हारे सामने खड़ा नहीं हो सका, और हम अपनी जान की खातिर तुमसे डरते थे, कहीं ऐसा न हो कि हमारे साथ भी वैसा ही हो जैसा उनके साथ हुआ था।
46 इसलिए हम तुम्हारे पास शांति का समझौता करने आए हैं, और अब तुम हमारे साथ शांति और सच्चाई का वादा करो, कि जैसे हमने तुम्हारे साथ दखल नहीं दिया, वैसे ही तुम हमारे साथ दखल नहीं दोगे।
47 और याकूब के बेटों को पता चल गया कि वे सच में उनसे शांति चाहते हैं, और याकूब के बेटों ने उनकी बात सुनी, और उनके साथ एक वादा किया।
48 और याकूब के बेटों ने उनसे कसम खाई कि वे उनसे कोई छेड़छाड़ नहीं करेंगे, और कनान के सभी राजाओं ने भी उनसे कसम खाई, और याकूब के बेटों ने उस दिन से उन्हें करदाता बना दिया।
49 इसके बाद इन राजाओं के सभी सरदार अपने आदमियों के साथ याकूब के सामने आए, उनके हाथों में याकूब और उसके बेटों के लिए तोहफ़े थे, और उन्होंने ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम किया।
50 और तब इन राजाओं ने याकूब के बेटों से गुज़ारिश की कि वे एमोरियों के सात शहरों से लूटी हुई सारी चीज़ें लौटा दें। याकूब के बेटों ने वैसा ही किया। उन्होंने जो कुछ भी पकड़ा था, औरतें, बच्चे, जानवर और लूटी हुई सारी चीज़ें लौटा दीं। उन्हें विदा किया और वे अपने-अपने शहर चले गए।
51 और ये सभी राजा फिर से याकूब के बेटों के सामने झुके, और उन्होंने उन दिनों उनके लिए बहुत सारे तोहफ़े भेजे या लाए, और याकूब के बेटों ने इन राजाओं और उनके आदमियों को विदा किया, और वे शांति से उनसे दूर अपने शहरों में चले गए, और याकूब के बेटे भी अपने घर, शेकेम लौट आए।
52 और उस दिन से याकूब के बेटों और कनान के राजाओं के बीच शांति रही, जब तक कि इस्राएल के बच्चे कनान देश के वारिस न बन गए।

अध्याय 41

1 और साल के शुरू में याकूब के बेटे शेकेम से निकले और हेब्रोन में अपने पिता इसहाक के पास पहुँचे। वे वहीं रहने लगे, लेकिन अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को वे रोज़ शेकेम में चराते थे, क्योंकि उन दिनों वहाँ अच्छा और उपजाऊ चारागाह था। और याकूब, उसके बेटे और उनका पूरा घराना हेब्रोन की घाटी में रहता था।
2 और उन्हीं दिनों, याकूब की ज़िंदगी के एक सौ छठे साल में, याकूब के पदन-अराम से आने के दसवें साल में, याकूब की पत्नी लिआ की मौत हो गई; जब वह हेब्रोन में मरी, तब वह इक्यावन साल की थी।
3 और याकूब और उसके बेटों ने उसे हेब्रोन में मकपेला के खेत की गुफा में दफ़ना दिया, जिसे अब्राहम ने हेथ के बच्चों से कब्रिस्तान के लिए खरीदा था।
4 और याकूब के बेटे अपने पिता के साथ हेब्रोन की घाटी में रहते थे, और देश के सभी निवासी उनकी ताकत जानते थे और उनका नाम पूरे देश में फैल गया।
5 और याकूब का बेटा यूसुफ और उसका भाई बिन्यामीन, जो याकूब की पत्नी राहेल के बेटे थे, उन दिनों जवान थे, और एमोरियों के सभी शहरों में लड़ाई के दौरान अपने भाइयों के साथ नहीं जाते थे।
6 और जब यूसुफ ने अपने भाइयों की ताकत और उनकी महानता देखी, तो उसने उनकी तारीफ़ की और उनकी बड़ाई की, लेकिन उसने खुद को उनसे बड़ा समझा और खुद को उनसे ऊपर बताया; और उसके पिता याकूब ने भी उसे अपने सभी बेटों से ज़्यादा प्यार किया, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का बेटा था, और उसके प्रति अपने प्यार के कारण, उसने उसके लिए कई रंगों का कोट बनाया।
7 और जब यूसुफ ने देखा कि उसके पिता उसे उसके भाइयों से ज़्यादा प्यार करते हैं, तो वह अपने आप को अपने भाइयों से ज़्यादा समझने लगा, और उनके बारे में अपने पिता को बुरी बातें बताने लगा।
8 और याकूब के बेटों ने यूसुफ का यह सब व्यवहार देखा, और यह भी कि उनका पिता उसे सबसे ज़्यादा प्यार करता है, तो वे उससे नफ़रत करने लगे और दिन भर उससे शांति से बात नहीं कर सके।
9 यूसुफ सत्रह साल का था, और वह अब भी अपने भाइयों से बड़ा समझता था, और उनसे ऊपर उठने की सोचता था।
10 उस समय उसने एक सपना देखा, और वह अपने भाइयों के पास आया और उन्हें अपना सपना बताया, और उसने उनसे कहा, मैंने एक सपना देखा, और देखो हम सब खेत में पूले बांध रहे थे, और मेरा पूला उठकर ज़मीन पर आ गया और तुम्हारे पूलों ने उसे घेर लिया और उसे प्रणाम किया।
11 तब उसके भाइयों ने उसे उत्तर दिया, "यह स्वप्न जो तूने देखा है, उसका क्या अर्थ है? क्या तू अपने मन में यह सोचता है कि तू हम पर राज्य करेगा या हम पर शासन करेगा?"

12 फिर वह आया और अपने पिता याकूब को यह बात बताई। याकूब ने यूसुफ के मुंह से ये बातें सुनकर उसे चूमा और उसे आशीर्वाद दिया।
13 और जब याकूब के बेटों ने देखा कि उनके पिता ने यूसुफ को आशीर्वाद दिया है और उसे चूमा है, और वह उससे बहुत प्यार करता है, तो वे उससे जलने लगे और उससे और भी ज़्यादा नफ़रत करने लगे।
14 इसके बाद यूसुफ ने एक और सपना देखा और अपने भाइयों के सामने अपने पिता को उसका ज़िक्र किया। यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों से कहा, देखो, मैंने फिर एक सपना देखा है, और देखो, सूरज और चाँद और ग्यारह तारे मेरे सामने झुके हुए हैं।
15 और उसके पिता ने यूसुफ की बातें और उसका सपना सुना, और यह देखकर कि उसके भाई इस बात की वजह से यूसुफ से नफ़रत करते हैं, इसलिए याकूब ने अपने भाइयों के सामने यूसुफ को इस बात के लिए डांटा, और कहा, यह सपना जो तूने देखा है, और अपने भाइयों के सामने जो तुझसे बड़े हैं, अपनी बड़ाई क्यों कर रहा है?
16 क्या तू अपने मन में यह सोचता है कि मैं, तेरी माँ और तेरे ग्यारह भाई आकर तुझे प्रणाम करेंगे, कि तू ये बातें कह रहा है?
17 और उसके भाई उसकी बातों और सपनों की वजह से उससे जलने लगे, और उससे नफ़रत करते रहे, और याकूब ने उन सपनों को अपने दिल में ही रखा।
18 और याकूब के बेटे एक दिन अपने पिता के झुंड को चराने के लिए शेकेम गए, क्योंकि उन दिनों वे चरवाहे थे; और जब याकूब के बेटे उस दिन शेकेम में चरा रहे थे, तो उन्हें देर हो गई, और जानवरों को इकट्ठा करने का समय बीत गया, और वे नहीं पहुँचे थे।
19 और याकूब ने देखा कि उसके बेटे शेकेम में देर कर रहे हैं, और याकूब ने मन में सोचा, शायद शेकेम के लोग उनसे लड़ने के लिए उठ खड़े हुए हैं, इसलिए वे आज देर से आए हैं।
20 तब याकूब ने अपने बेटे यूसुफ को बुलाकर हुक्म दिया, "देख, तेरे भाई आज शेकेम में चर रहे हैं, और वे अभी तक वापस नहीं आए हैं; इसलिए अब जाकर देख कि वे कहाँ हैं, और मुझे अपने भाइयों और झुंड की खैरियत के बारे में खबर दे।"
21 और याकूब ने अपने बेटे यूसुफ को हेब्रोन की घाटी में भेजा, और यूसुफ अपने भाइयों को लेकर शेकेम आया, और उन्हें नहीं पाया, और यूसुफ शेकेम के पास के खेत में यह देखने गया कि उसके भाई कहाँ मुड़े हैं, और वह जंगल में रास्ता भटक गया, और उसे समझ नहीं आया कि उसे किस रास्ते जाना चाहिए।
22 और प्रभु के एक दूत ने उसे खेत की ओर जाते हुए रास्ते में भटकते हुए पाया, और यूसुफ ने प्रभु के दूत से कहा, मैं अपने भाइयों को ढूंढ रहा हूं; क्या तुमने नहीं सुना कि वे कहां चर रहे हैं? और प्रभु के दूत ने यूसुफ से कहा, मैंने तुम्हारे भाइयों को यहां चरते हुए देखा, और मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना कि वे दोतान में चरने जाएंगे।
23 और यूसुफ ने प्रभु के दूत की आवाज़ सुनी, और वह दोतान में अपने भाइयों के पास गया और उसने उन्हें दोतान में झुंड चराते हुए पाया।
24 तब यूसुफ अपने भाइयों के पास गया, और इससे पहले कि वह उनके पास पहुँचता, उन्होंने उसे मार डालने का निश्चय कर लिया।
25 तब शिमोन ने अपने भाइयों से कहा, देखो, सपनों वाला आदमी आज हमारे पास आ रहा है, इसलिए आओ, हम उसे मार डालें और जंगल में किसी गड्ढे में फेंक दें, और जब उसका पिता उसे हमसे ढूंढेगा, तो हम कहेंगे कि किसी बुरे जानवर ने उसे खा लिया है।
26 जब रूबेन ने यूसुफ के बारे में अपने भाइयों की बातें सुनीं, तो उसने उनसे कहा, "ऐसा मत करो, क्योंकि हम अपने पिता याकूब को कैसे मान सकते हैं? उसे इस गड्ढे में फेंक दो ताकि वह मर जाए, लेकिन उस पर हाथ मत उठाओ ताकि उसका खून बहे; और रूबेन ने यह इसलिए कहा ताकि वह उसे उनके हाथ से छुड़ाकर उसके पिता के पास वापस ले आए।"
27 जब यूसुफ अपने भाइयों के पास आया, तो वह उनके सामने बैठ गया। वे उस पर चढ़ गए और उसे पकड़कर ज़मीन पर गिरा दिया, और उसके रंग-बिरंगे कपड़े उतार दिए।
28 और उन्होंने उसे पकड़कर एक गड्ढे में डाल दिया, और गड्ढे में पानी नहीं था, बल्कि साँप और बिच्छू थे। और यूसुफ गड्ढे में मौजूद साँपों और बिच्छुओं से डर गया। और यूसुफ ने ज़ोर से चिल्लाया, और प्रभु ने साँपों और बिच्छुओं को गड्ढे के किनारों में छिपा दिया, और उन्होंने यूसुफ को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।
29 तब यूसुफ ने गड्ढे में से अपने भाइयों को पुकारा, और उनसे कहा, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, और मैंने क्या पाप किया है? तुम मेरे बारे में यहोवा से क्यों नहीं डरते? क्या मैं तुम्हारी हड्डियों और मांस का नहीं हूँ, और क्या तुम्हारा पिता याकूब मेरा पिता नहीं है? तुम आज मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो, और तुम हमारे पिता याकूब का आदर कैसे कर पाओगे?
30 और वह गड्ढे से अपने भाइयों को पुकारता रहा और कहता रहा, हे यहूदा, शिमोन और लेवी, मेरे भाइयों, मुझे उस अंधेरे से उठाओ जिसमें तुमने मुझे रखा है, और आज मुझ पर दया करने के लिए आओ, हे प्रभु के बच्चों और मेरे पिता याकूब के बेटों। और अगर मैंने तुम्हारे साथ पाप किया है, तो क्या तुम अब्राहम, इसहाक और याकूब के बेटे नहीं हो? अगर उन्होंने किसी अनाथ को देखा तो उस पर दया की, या किसी भूखे को देखा तो उसे खाने के लिए रोटी दी, या किसी प्यासे को पानी पिलाया, या किसी नंगे को देखा तो उसे कपड़े पहनाए!
31 तो फिर तुम अपने भाई पर दया कैसे नहीं करोगे, क्योंकि मैं तो तुम्हारी ही हड्डी का बना हूँ, और अगर मैंने तुम्हारे खिलाफ पाप किया है, तो तुम ज़रूर मेरे पिता की वजह से ऐसा करोगे!
32 और यूसुफ ने गड्ढे में से ये बातें कहीं, और उसके भाई उसकी बातें न सुन सके, और न ही यूसुफ की बातों पर कान लगा सके, और यूसुफ गड्ढे में रोता और विलाप करता रहा।
33 तब यूसुफ ने कहा, काश मेरे पिता को आज पता चलता कि मेरे भाइयों ने मेरे साथ क्या किया है, और वे बातें जो उन्होंने आज मुझसे कहीं हैं।
34 और उसके सभी भाइयों ने गड्ढे में उसकी चीखें और रोना सुना, और उसके भाई जाकर गड्ढे से दूर हो गए, ताकि वे यूसुफ की चीखें और गड्ढे में उसका रोना न सुन सकें।

अध्याय 42

1 और वे जाकर दूसरी तरफ बैठ गए, लगभग धनुष की दूरी पर, और वे वहाँ रोटी खाने बैठे, और जब वे खा रहे थे, तो आपस में

सलाह कर रहे थे कि उसके साथ क्या किया जाए, उसे मार डाला जाए या उसके पिता के पास वापस ले जाया जाए।
2 वे सलाह कर ही रहे थे कि उन्होंने आँखें उठाकर देखा, और देखो, इश्माएलियों का एक दल गिलाद के रास्ते से मिस्र की ओर जा रहा था।
3 तब यहूदा ने उनसे कहा, "अगर हम अपने भाई को मार डालें तो हमें क्या फ़ायदा होगा? हो सकता है कि परमेश्वर उसे हमसे ले ले; तो उसके बारे में यह सलाह दी गई है, जो तुम उसके साथ करोगे: देखो, इश्माएलियों का यह झुंड मिस्र जा रहा है,
4 इसलिए अब आओ, हम उसे उनके हवाले कर दें, और उस पर अपना हाथ न डालें, और वे उसे अपने साथ ले जाएं, और वह देश के लोगों के बीच खो जाएगा, और हम उसे अपने हाथों से नहीं मारेंगे। और यह बात उसके भाइयों को अच्छी लगी और उन्होंने यहूदा की बात मान ली।
5 और जब वे इस बारे में बात कर रहे थे, और इश्माएलियों का ग्रुप उनके पास आया भी नहीं था, तो मिद्यान के सात व्यापारी उनके पास से गुज़रे, और जब वे गुज़र रहे थे तो उन्हें प्यास लगी, और उन्होंने अपनी आँखें उठाईं और उस गड्ढे को देखा जिसमें यूसुफ को फँसाया गया था, और उन्होंने देखा, और देखो, हर तरह के पक्षी उस पर थे।
6 और ये मिद्यान के लोग पानी पीने के लिए गड्ढे की तरफ दौड़े, क्योंकि उन्हें लगा कि उसमें पानी है। गड्ढे के पास पहुँचकर उन्होंने यूसुफ को गड्ढे में रोते-बिलखते सुना, और उन्होंने गड्ढे में झाँका, और वहाँ एक सुंदर और सुंदर लड़का था।
7 और उन्होंने उसे पुकारा और पूछा, तू कौन है और तुझे यहाँ कौन लाया है, और तुझे जंगल में इस गड्ढे में किसने रखा है? और सबने यूसुफ को उठाने में मदद की और उसे बाहर निकाला, और गड्ढे से ऊपर ले आए, और उसे लेकर अपने सफ़र पर चले गए और उसके भाइयों के पास से गुज़रे।
8 तब उन्होंने उनसे कहा, तुम ऐसा क्यों करते हो, कि हमारे नौकर को हमसे छीनकर चले जाते हो? ज़रूर हमने इस लड़के को गड्ढे में इसलिए डाला था क्योंकि इसने हमसे बगावत की थी, और तुम आकर इसे ऊपर ले आए और ले गए; तो अब हमारा नौकर हमें वापस दे दो।
9 तब मिद्यानियों ने याकूब के बेटों से कहा, "क्या यह तुम्हारा नौकर है, या यह आदमी तुम्हारे साथ रहता है? शायद तुम सब उसके नौकर हो, क्योंकि वह तुम सबसे ज़्यादा सुंदर और सुंदर है, फिर तुम सब हमसे झूठ क्यों बोलते हो?"
10 इसलिए अब हम तुम्हारी बातें नहीं सुनेंगे, और न ही तुम्हारी बात पर ध्यान देंगे, क्योंकि हमें वह लड़का जंगल में गड्ढे में मिला था, और हमने उसे ले लिया; इसलिए हम आगे बढ़ेंगे।
11 तब याकूब के सब बेटे उनके पास आए और उनके पास जाकर कहा, "हमारा नौकर हमें लौटा दो, तुम सब तलवार से क्यों मरना चाहते हो?" तब मिद्यानियों ने उन पर चिल्लाना शुरू कर दिया, और उन्होंने अपनी तलवारें निकाल लीं, और याकूब के बेटों से लड़ने के लिए उनके पास आए।
12 और देखो, शिमोन उनके खिलाफ अपनी सीट से उठा, और ज़मीन पर उछलकर अपनी तलवार निकाली, और मिद्यानियों के पास गया, और उनके सामने इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसकी चिल्लाहट दूर तक सुनाई दी, और शिमोन की चिल्लाहट से धरती हिल गई।
13 और मिद्यानियों को शिमोन और उसके चिल्लाने की आवाज़ से बहुत डर लगा, और वे मुँह के बल गिर पड़े, और बहुत ज़्यादा घबरा गए।
14 शिमोन ने उनसे कहा, "सच में मैं शिमोन हूँ, याकूब का बेटा, जो हिब्रू है, मैंने अपने भाई के साथ मिलकर शेकेम शहर और एमोरियों के शहरों को तबाह कर दिया है; इसलिए परमेश्वर मेरे साथ ऐसा ही करेगा कि अगर तुम्हारे सारे भाई, मिद्यान के लोग और कनान के राजा भी तुम्हारे साथ आएँ, तो भी वे मुझसे लड़ नहीं पाएँगे।"
15 इसलिए अब उस लड़के को हमें लौटा दो जिसे तुमने ले लिया है, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हारा मांस आसमान के पक्षियों और धरती के जानवरों को दे दूं।
16 और मिद्यानियों को शिमोन से और भी डर लगने लगा, और वे याकूब के बेटों के पास डर और घबराहट के साथ और बुरी बातें कहते हुए आए,
17 तुमने ज़रूर कहा होगा कि वह जवान आदमी तुम्हारा नौकर है, और उसने तुम्हारे खिलाफ बगावत की, इसलिए तुमने उसे गड्ढे में डाल दिया; तो फिर तुम उस नौकर के साथ क्या करोगे जो अपने मालिक के खिलाफ बगावत करता है? इसलिए अब उसे हमें बेच दो, और हम तुम्हें वह सब देंगे जो तुम उसके लिए मांगोगे; और यहोवा को यह इसलिए अच्छा लगा ताकि याकूब के बेटे अपने भाई को न मार डालें।
18 और मिद्यानियों ने देखा कि यूसुफ दिखने में सुंदर और सुंदर है; वे उसे अपने दिल में चाहने लगे और उसे उसके भाइयों से खरीदने के लिए उतावले हो गए।
19 और याकूब के बेटों ने मिद्यानियों की बात मानकर अपने भाई यूसुफ को बीस चांदी के टुकड़ों में उनके हाथ बेच दिया, और उनका भाई रूबेन उनके साथ नहीं था, और मिद्यानियों ने यूसुफ को लेकर गिलाद की ओर अपना सफर जारी रखा।
20 वे रास्ते में जा रहे थे, और मिद्यानियों को अपने किए पर पछतावा हुआ कि उन्होंने उस जवान आदमी को खरीदा था, और वे एक दूसरे से कहने लगे, यह हमने क्या किया कि इस जवान आदमी को इब्रियों से ले लिया, जो दिखने में सुंदर और सुंदर है।
21 शायद यह लड़का इब्रियों के देश से चुराया गया है, तो फिर हमने यह काम क्यों किया? और अगर वह ढूंढा जाए और हमारे हाथ लग जाए, तो हम उसके कारण मारे जाएंगे।
22 अब पक्का है कि जिसे तुमने आज देखा, उसकी ताकत को मज़बूत और ताकतवर लोगों ने हमें बेच दिया है; शायद उन्होंने अपनी ताकत और अपने ताकतवर हाथ से उसे उसकी ज़मीन से चुरा लिया, और इसलिए उसे उस कम कीमत पर हमें बेच दिया जो हमने उन्हें दी थी।
23 और जब वे आपस में इस तरह बातें कर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि इश्माएलियों का वह ग्रुप जो पहले आ रहा था, और जिसे याकूब के बेटों ने देखा था, मिद्यानियों की तरफ बढ़ रहा था। और मिद्यानियों ने एक-दूसरे से कहा, आओ, हम इस लड़के को इश्माएलियों के ग्रुप को बेच दें जो हमारी तरफ आ रहे हैं, और जो थोड़ा हमने उसे दिया था, वह हम उससे ले लेंगे, और हम उसकी बुराई से बच जाएंगे।
24 और उन्होंने ऐसा ही किया, और वे इश्माएलियों के पास पहुँचे, और मिद्यानियों ने यूसुफ को इश्माएलियों के हाथों चाँदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया, जो उन्होंने उसके भाइयों को उसके बदले में दिए थे।

25 और मिद्यानियों ने गिलाद के रास्ते पर चलना शुरू किया, और इश्माएलियों ने यूसुफ को ऊँटों में से एक पर बिठाकर मिस्र की ओर ले गए।
26 और यूसुफ ने सुना कि इश्माएली मिस्र जा रहे हैं, और यूसुफ इस बात पर दुखी हुआ और रोया कि उसे कनान देश से, अपने पिता से इतनी दूर जाना पड़ रहा है, और वह ऊँट पर सवार होकर फूट-फूट कर रोया, और उनके एक आदमी ने उसे देख लिया, और उसे ऊँट से उतारकर पैदल चलने को कहा, और इसके बावजूद यूसुफ रोता और रोता रहा, और उसने कहा, हे मेरे पिता, हे मेरे पिता।
27 और इश्माएलियों में से एक उठा और यूसुफ के गाल पर मारा, और वह फिर भी रोता रहा; और यूसुफ रास्ते में थक गया था, और अपनी आत्मा की कड़वाहट के कारण आगे नहीं बढ़ पा रहा था, और उन सबने उसे मारा और रास्ते में उसे परेशान किया, और उसे डरा दिया ताकि वह रोना बंद कर दे।
28 और यहोवा ने यूसुफ की बड़ी इच्छा और उसकी परेशानी देखी, और यहोवा ने उन लोगों पर अंधेरा और उलझन ला दी, और जिसने भी उसे मारा, उसका हाथ सूख गया।
29 तब उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "भगवान ने रास्ते में हमारे साथ यह क्या किया है?" और वे नहीं जानते थे कि यूसुफ की वजह से उन पर यह बीती है। इसलिए वे लोग रास्ते पर आगे बढ़े और एप्रात के रास्ते से गुज़रे जहाँ राहेल को दफ़नाया गया था।
30 और यूसुफ अपनी माँ की कब्र पर पहुँचा, और यूसुफ जल्दी से अपनी माँ की कब्र पर दौड़ा, और कब्र पर गिरकर रोने लगा।
31 और यूसुफ अपनी माँ की कब्र पर ज़ोर से चिल्लाया, और कहा, हे मेरी माँ, हे मेरी माँ, हे तू जिसने मुझे जन्म दिया, अब जाग, और उठ और अपने बेटे को देख, कि वह कैसे एक गुलाम के लिए बेचा गया है, और कोई उस पर दया करने वाला नहीं है।
32 हे उठो और अपने बेटे को देखो, मेरी परेशानियों के कारण मेरे साथ रोओ, और मेरे भाइयों के दिल को देखो।
33 मेरी माँ को जगा, जागो, मेरे लिए अपनी नींद से जागो, और मेरे भाइयों के खिलाफ़ अपनी लड़ाई शुरू करो। ओह, उन्होंने कैसे मेरा कोट उतार दिया है, और मुझे पहले ही दो बार गुलाम के तौर पर बेच दिया है, और मुझे मेरे पिता से अलग कर दिया है, और मुझ पर दया करने वाला कोई नहीं है।
34 उनके खिलाफ़ अपना मामला परमेश्वर के सामने रखो और देखो कि परमेश्वर न्याय में किसे सही ठहराएगा और किसे दोषी ठहराएगा।
35 उठो, हे मेरी माँ, उठो, अपनी नींद से जागो और मेरे पिता को देखो कि आज उनकी आत्मा मेरे साथ कैसे है, और उन्हें दिलासा दो और उनके दिल को हल्का करो।
36 और यूसुफ ये बातें कहता रहा, और यूसुफ अपनी माँ की कब्र पर फूट-फूट कर रोया; और उसने बोलना बंद कर दिया, और दिल की कड़वाहट से वह कब्र पर पत्थर की तरह शांत हो गया।
37 और यूसुफ ने ज़मीन के नीचे से एक आवाज़ सुनी, जो उससे बात कर रही थी। उसने उसे अपने दिल की कड़वाहट और रोने और प्रार्थना करने की आवाज़ में ये बातें कहीं:
38 हे मेरे बेटे, हे मेरे बेटे यूसुफ, मैंने तेरे रोने और तेरे विलाप की आवाज़ सुनी है; मैंने तेरे आँसू देखे हैं; हे मेरे बेटे, मैं तेरी परेशानियों को जानता हूँ, और तेरे कारण मुझे बहुत दुख होता है, और मेरे दुख में बहुत दुख जुड़ गया है।
39 इसलिए अब मेरे बेटे यूसुफ, यहोवा पर भरोसा रख, उसका इंतज़ार कर और डर मत, क्योंकि यहोवा तेरे साथ है, वह तुझे हर मुसीबत से बचाएगा।
40 उठो मेरे बेटे, अपने मालिकों के साथ मिस्र जाओ, और डरो मत, क्योंकि यहोवा तुम्हारे साथ है, मेरे बेटे। और वह यूसुफ से ऐसी ही बातें कहती रही, और चुप रही।
41 और यूसुफ ने यह सुना, और उसे इस पर बहुत हैरानी हुई, और वह रोता रहा; और इसके बाद इश्माएलियों में से एक ने उसे कब्र पर रोते-बिलखते देखा, और उसका गुस्सा उस पर भड़क उठा, और उसने उसे वहाँ से भगा दिया, और उसे मारा और श्राप दिया।
42 तब यूसुफ ने उन आदमियों से कहा, "मुझे अपने पिता के घर वापस ले जाने के लिए तुम्हारी कृपा मिले, और वह तुम्हें बहुत सारा धन देगा।"
43 उन्होंने जवाब दिया, "क्या तू गुलाम नहीं है, और तेरा पिता कहाँ है?" और अगर तेरा पिता होता तो तू दो बार इतनी कम कीमत पर गुलाम के तौर पर न बेचा गया होता; और उनका गुस्सा अब भी उस पर भड़का हुआ था, और वे उसे मारते और सज़ा देते रहे, और यूसुफ फूट-फूट कर रोया।
44 और प्रभु ने यूसुफ की तकलीफ़ देखी, और प्रभु ने उन लोगों को फिर से मारा, और उन्हें सज़ा दी, और प्रभु ने उन्हें धरती पर अंधेरा कर दिया, और बिजली चमकी और बादल गरजे, और बादल गरजे और तेज़ हवा की आवाज़ से धरती कांप उठी, और वे लोग डर गए और उन्हें समझ नहीं आया कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए।
45 और जानवर और ऊँट वहीं खड़े रहे, और उन्होंने उन्हें आगे बढ़ाया, लेकिन वे नहीं चले, उन्होंने उन्हें मारा, और वे ज़मीन पर दुबक गए; और आदमियों ने एक-दूसरे से कहा, भगवान ने हमारे साथ यह क्या किया है? हमने क्या गुनाह किए हैं, और हमारे क्या पाप हैं कि यह सब हमारे साथ हुआ है?
46 और उनमें से एक ने जवाब दिया, "शायद इस गुलाम को तकलीफ़ देने के पाप की वजह से आज हमारे साथ यह हुआ है; इसलिए अब उससे ज़ोर देकर गुज़ारिश करो कि वह हमें माफ़ कर दे, और तब हमें पता चल जाएगा कि यह मुसीबत हम पर किसकी वजह से आई है, और अगर भगवान हम पर दया करें, तो हम जान लेंगे कि यह सब इस गुलाम को तकलीफ़ देने के पाप की वजह से हुआ है।"
47 और उन आदमियों ने वैसा ही किया, और यूसुफ से विनती की और उससे कहा, "हमने प्रभु और तुम्हारे साथ पाप किया है, इसलिए अब अपने परमेश्वर से विनती करो कि वह हमारे बीच से इस मौत को दूर कर दे, क्योंकि हमने उसके साथ पाप किया है।"
48 और यूसुफ ने उनकी बात मान ली, और यहोवा ने यूसुफ की बात मान ली, और यहोवा ने उस मुसीबत को दूर कर दिया जो उसने यूसुफ की वजह से उन आदमियों पर डाली थी, और जानवर ज़मीन से उठकर उन्हें ले गए, और वे आगे बढ़ गए, और तेज़ तूफ़ान थम गया और धरती शांत हो गई, और वे आदमी मिस्र जाने के लिए अपने सफ़र पर निकल पड़े, और वे आदमी जान गए कि यह मुसीबत यूसुफ की वजह से उन पर आई है।
49 और उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "देखो, हम जानते हैं कि उसकी तकलीफ़ की वजह से हम पर यह मुसीबत आई है; तो अब हम अपनी जान पर यह मौत क्यों लाएँ? आओ, हम मिलकर सोचें कि इस गुलाम के साथ क्या करना है।"

50 और एक ने जवाब दिया, "ज़रूर उसने हमसे कहा था कि उसे उसके पिता के पास वापस ले आओ; इसलिए अब आओ, हम उसे वापस ले जाएं और उस जगह जाएं जो वह हमें बताएगा, और उसके परिवार से वह कीमत लें जो हमने उसके लिए दी थी और फिर हम चले जाएंगे।"
51 तब एक ने फिर कहा, देखो, यह सलाह तो बहुत अच्छी है, पर हम ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि रास्ता हमसे बहुत दूर है, और हम अपने रास्ते से हट नहीं सकते।
52 और एक और ने जवाब दिया, "यह सलाह माननी चाहिए, हम इससे नहीं हटेंगे; देखो, हम आज मिस्र जा रहे हैं, और जब मिस्र पहुँचेंगे, तो उसे वहाँ ऊँची कीमत पर बेच देंगे, और उसकी बुराई से बच जाएँगे।"
53 यह बात उन आदमियों को अच्छी लगी और उन्होंने वैसा ही किया, और वे यूसुफ के साथ मिस्र की ओर चल पड़े।

अध्याय 43

1 और जब याकूब के बेटों ने अपने भाई यूसुफ को मिद्यानियों के हाथ बेच दिया, तो उनके दिल उसके कारण पछताए, और उन्हें अपने किए पर पछतावा हुआ, और उन्होंने उसे वापस लाने के लिए उसे ढूंढा, लेकिन वह नहीं मिला।
2 और रूबेन उस गड्ढे के पास लौटा जिसमें यूसुफ को डाला गया था, ताकि उसे निकालकर उसके पिता के पास वापस कर दे। रूबेन गड्ढे के पास खड़ा रहा, और उसने एक भी शब्द नहीं सुना, और उसने यूसुफ! यूसुफ! पुकारा, और किसी ने जवाब नहीं दिया या एक शब्द भी नहीं कहा।
3 तब रूबेन ने कहा, यूसुफ डर के मारे मर गया है, या किसी साँप ने उसे मार डाला है; और रूबेन गड्ढे में उतरा, और यूसुफ को ढूँढ़ा, पर वह गड्ढे में न मिला, और फिर बाहर निकल आया।
4 तब रूबेन ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, बच्चा वहाँ नहीं है, और अगर वह मर गया है तो मैं अपने पिता से उसके बारे में कैसे सुलह करूँ? और वह अपने भाइयों के पास गया और उन्हें यूसुफ के लिए दुखी पाया, और आपस में सलाह कर रहे थे कि अपने पिता से उसके बारे में कैसे सुलह करें, और रूबेन ने अपने भाइयों से कहा, मैं गड्ढे के पास आया और देखा कि यूसुफ वहाँ नहीं है, तो हम अपने पिता से क्या कहें, क्योंकि मेरे पिता मुझसे लड़के को ही चाहते हैं।
5 तब उसके भाइयों ने उसे जवाब दिया, "हमने ऐसा-ऐसा किया, और इस काम की वजह से बाद में हमारा दिल दुखा, और अब हम यह बहाना ढूंढ रहे हैं कि हम अपने पिता को कैसे मनाएं।"
6 तब रूबेन ने उनसे कहा, "तुमने यह क्या किया है कि हमारे पिता के बाल सफेद हो गए हैं और वे दुख के साथ कब्र में चले गए हैं? तुमने जो किया है वह अच्छा नहीं है।"
7 और रूबेन उनके साथ बैठ गया, और वे सब उठे और एक-दूसरे से कसम खाई कि हम यह बात याकूब को नहीं बताएंगे, और सबने कहा, जो आदमी यह बात हमारे पिता या उनके घराने को बताएगा, या जो इस देश के किसी भी बच्चे को बताएगा, हम सब उसके खिलाफ उठेंगे और उसे तलवार से मार डालेंगे।
8 और याकूब के बेटे, छोटे से लेकर बड़े तक, इस बात से एक-दूसरे से डरते थे, और किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा, और उन्होंने इस बात को अपने दिल में छिपा लिया।
9 और इसके बाद वे बैठकर अपने पिता याकूब से इन सब बातों के बारे में कुछ कहने की योजना बनाने लगे।
10 इस्साकार ने उनसे कहा, "अगर तुम्हें यह काम करना अच्छा लगे, तो एक सलाह है कि यूसुफ का कोट ले लो और उसे फाड़ दो, और एक बकरी का बच्चा मारकर उसके खून में डुबो दो।"
11 और इसे हमारे पिता के पास भेज दो, और जब वह इसे देखेंगे तो कहेंगे कि किसी बुरे जानवर ने उन्हें खा लिया है, इसलिए तुम उनका कोट फाड़ो और देखो, उनका खून उनके कोट पर होगा, और तुम्हारे ऐसा करने से हम अपने पिता की बड़बड़ाहट से आज़ाद हो जाएंगे।
12 और इस्साकार की सलाह उन्हें अच्छी लगी, और उन्होंने उसकी बात मानी और इस्साकार की सलाह के अनुसार किया जो उसने उन्हें सलाह दी थी।
13 और उन्होंने जल्दी से यूसुफ का कोट लिया और उसे फाड़ दिया, और एक बकरी का बच्चा मारकर कोट को उसके खून में डुबोया, और फिर उसे धूल में रौंद दिया, और कोट को नप्ताली के हाथ अपने पिता याकूब के पास भेज दिया, और उसे ये बातें कहने का हुक्म दिया:
14 हम जानवर इकट्ठा करके शेकेम के रास्ते तक और उससे भी आगे आ गए थे, जब हमें जंगल में रास्ते पर खून और धूल में सना हुआ यह कोट मिला; इसलिए अब जान लो कि यह तुम्हारे बेटे का कोट है या नहीं।
15 तब नप्ताली चला गया और अपने पिता के पास आया। उसने उसे वह कोट दिया, और उसने उससे वे सारी बातें कहीं जो उसके भाइयों ने उसे आज्ञा दी थीं।
16 और याकूब ने यूसुफ का कोट देखा और उसे पहचान लिया, और वह मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा, और पत्थर की तरह शांत हो गया, और फिर वह उठा और ज़ोर से रोते हुए चिल्लाया, और कहा, यह मेरे बेटे यूसुफ का कोट है!
17 तब याकूब ने जल्दी से अपने एक नौकर को अपने बेटों के पास भेजा, जो उनके पास गया और उन्हें झुंड के साथ रास्ते से आते हुए पाया।
18 और याकूब के बेटे शाम के समय अपने पिता के पास आए, और देखा कि उनके कपड़े फटे हुए थे और उनके सिर पर धूल जमी हुई थी, और उन्होंने अपने पिता को ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए पाया।
19 तब याकूब ने अपने बेटों से कहा, "सच-सच बताओ, आज अचानक तुमने मुझ पर क्या मुसीबत ला दी है?" उन्होंने अपने पिता याकूब को जवाब दिया, "आज जब भेड़-बकरियां इकट्ठी हो चुकी थीं, तो हम जंगल में सड़क से शेकेम शहर तक आए थे, और हमें ज़मीन पर खून से भरा यह कोट मिला, और हम यह जान गए और अगर तुम जान सकते तो हमने तुम्हें भेज दिया।"
20 और याकूब ने अपने बेटों की बातें सुनीं और ज़ोर से चिल्लाया, और कहा, यह मेरे बेटे का कोट है, किसी बुरे जानवर ने उसे खा लिया है; यूसुफ टुकड़े-टुकड़े हो गया है, क्योंकि मैंने उसे आज यह देखने के लिए भेजा था कि तुम और भेड़-बकरियां ठीक हैं या नहीं, और मुझे तुमसे खबर देने के लिए भेजा था, और वह मेरी आज्ञा के अनुसार चला गया, और आज उसके साथ यह हुआ है, जबकि मैं सोच रहा था कि मेरा बेटा तुम्हारे पास है।
21 तब याकूब के बेटों ने जवाब दिया, "वह हमारे पास नहीं आया, और न हमने उसे तब से देखा है जब से हम तुम्हारे पास से निकले हैं और अब तक देखा है।"

22 और जब याकूब ने उनकी बातें सुनीं, तो वह फिर ज़ोर से चिल्लाया, और उठा, और अपने कपड़े फाड़े, और अपनी कमर पर टाट लपेटा, और फूट-फूट कर रोया, और विलाप किया, और रोते हुए अपनी आवाज़ ऊँची की, और चिल्लाकर ये बातें कहीं,
23 हे यूसुफ, हे मेरे बेटे यूसुफ, मैंने आज तुझे तेरे भाइयों की भलाई के लिए भेजा था, और देख, तू टुकड़े-टुकड़े हो गया है; मेरे ही हाथ से मेरे बेटे के साथ यह हुआ है।
24 हे यूसुफ, मेरे बेटे, मुझे तेरे लिए दुख है; तेरे लिए मुझे दुख है; तू जीवन भर मेरे लिए कितना प्यारा था, और अब तेरी मौत मेरे लिए कितनी कड़वी है।
25 हे यूसुफ, मेरे बेटे, मैं तेरी जगह मर गया, क्योंकि तेरे लिए मुझे बहुत दुख हो रहा है, हे मेरे बेटे, हे मेरे बेटे, हे मेरे बेटे। हे यूसुफ, हे मेरे बेटे, तू कहाँ है, और तुझे कहाँ ले जाया गया है? उठ, अपनी जगह से उठ, और आकर देख कि मैं तेरे लिए कितना दुख महसूस कर रहा हूँ, हे मेरे बेटे यूसुफ।
26 अब आओ और मेरी आँखों से बहते आँसुओं को मेरे गालों पर गिन लो, और उन्हें यहोवा के सामने लाओ, ताकि उसका गुस्सा मुझसे दूर हो जाए।
27 हे यूसुफ, मेरे बेटे, तू ऐसे इंसान के हाथों कैसे मारा गया जिसके हाथों दुनिया की शुरुआत से लेकर आज तक कोई नहीं मारा गया; क्योंकि तू एक दुश्मन के हाथों बेरहमी से मारा गया, लेकिन मुझे पक्का पता है कि मेरे बहुत सारे पापों की वजह से तेरे साथ ऐसा हुआ है।
28 अब उठ और देख कि मेरे बेटे, तेरे लिए मेरी तकलीफ़ कितनी मुश्किल है, हालाँकि मैंने तुझे पाला-पोसा नहीं, न तुझे बनाया, न तुझे साँस और जान दी, बल्कि यह परमेश्वर ही था जिसने तुझे बनाया और तेरी हड्डियों को बनाया और उन्हें मांस से ढका, और तेरे नथुनों में जीवन की साँस फूँकी, और फिर उसने तुझे मुझे दे दिया।
29 अब सच में, जिस परमेश्वर ने तुम्हें मुझे दिया था, उसी ने तुम्हें मुझसे छीन लिया है, और फिर तुम्हारे साथ ऐसी घटना घटी है
30 और याकूब यूसुफ के बारे में ऐसी ही बातें कहता रहा, और फूट-फूट कर रोने लगा; वह ज़मीन पर गिर पड़ा और चुप हो गया।
31 और याकूब के सभी बेटों ने अपने पिता की परेशानी देखकर, अपने किए पर पछतावा किया, और वे भी फूट-फूट कर रोए।
32 और यहूदा उठा और अपने पिता का सिर ज़मीन से उठाकर अपनी गोद में रख लिया, और उसने अपने पिता के गालों से उनके आँसू पोंछे, और यहूदा फूट-फूट कर रोया, जबकि उसके पिता का सिर उसकी गोद में पत्थर की तरह टिका हुआ था।
33 और याकूब के बेटों ने अपने पिता की परेशानी देखी, और वे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे, और याकूब अभी भी पत्थर की तरह ज़मीन पर पड़ा था।
34 और उसके सब बेटे, नौकर और नौकरों के बच्चे उठकर उसे दिलासा देने के लिए उसके चारों ओर खड़े हो गए, पर उसने दिलासा लेने से मना कर दिया।
35 और याकूब का पूरा घराना उठ खड़ा हुआ और यूसुफ और उनके पिता की परेशानी की वजह से बहुत दुख मनाया। यह बात याकूब के पिता अब्राहम के बेटे इसहाक को भी पता चली, और वह यूसुफ और अपने पूरे घराने के लिए फूट-फूट कर रोया। वह हेब्रोन में जहाँ वह रहता था, अपने आदमियों के साथ वहाँ से चला गया और अपने बेटे याकूब को दिलासा दिया, लेकिन उसने दिलासा लेने से मना कर दिया।
36 और इसके बाद, याकूब ज़मीन से उठा, और उसके गालों पर आँसू बह रहे थे, और उसने अपने बेटों से कहा, उठो और अपनी तलवारें और धनुष लेकर मैदान में जाओ, और देखो कि क्या तुम्हें मेरे बेटे की लाश मिल सकती है और उसे मेरे पास ले आओ ताकि मैं उसे दफ़ना सकूँ।
37 मैं तुमसे विनती करता हूँ कि जानवरों में से ढूंढो और उनका शिकार करो, और जो पहले आए उसे पकड़कर मेरे पास ले आओ। शायद आज प्रभु को मेरी तकलीफ़ पर तरस आए, और वह तुम्हारे सामने वह चीज़ तैयार करे जिसने मेरे बेटे को टुकड़े-टुकड़े किया था, और उसे मेरे पास ले आए, और मैं अपने बेटे का बदला लूँ।
38 और उसके बेटों ने अपने पिता की आज्ञा के अनुसार किया, और वे सुबह जल्दी उठे, और हर एक ने अपनी तलवार और अपना धनुष हाथ में लिया, और वे जानवरों का शिकार करने के लिए मैदान में चले गए।
39 और याकूब अब भी ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था और घर में इधर-उधर घूम रहा था, और अपने हाथ पीट-पीटकर कह रहा था, यूसुफ मेरा बेटा, यूसुफ मेरा बेटा।
40 और याकूब के बेटे जानवरों को पकड़ने के लिए जंगल में गए, और देखो एक भेड़िया उनकी तरफ आया, और उन्होंने उसे पकड़ लिया, और अपने पिता के पास ले आए, और उससे कहा, यह पहला है जो हमें मिला है, और हम इसे आपके पास लाए हैं जैसा आपने हमें बताया था, और आपके बेटे का शरीर हमें नहीं मिला।
41 तब याकूब ने जानवर को अपने बेटों के हाथों से ले लिया, और जानवर को हाथ में लिए हुए, ज़ोर से रोते हुए चिल्लाया, और उसने जानवर से कड़वे मन से कहा, तूने मेरे बेटे यूसुफ को क्यों खा लिया, और तुझे धरती के परमेश्वर का या मेरे बेटे यूसुफ के लिए मेरी परेशानी का डर क्यों नहीं है?
42 और तूने मेरे बेटे को बेकार में खा लिया, क्योंकि उसने कोई हिंसा नहीं की, और इस तरह मुझे उसके कारण दोषी ठहराया, इसलिए परमेश्वर सताए गए व्यक्ति से बदला लेगा।
43 और यहोवा ने याकूब को अपनी बातों से दिलासा देने के लिए जानवर का मुंह खोला, और उसने याकूब को जवाब दिया और उससे ये बातें कहीं,
44 धरती पर हमें बनाने वाले परमेश्वर के जीवन की शपथ, और हे मेरे प्रभु, तेरे प्राण के जीवन की शपथ, मैंने तेरे बेटे को नहीं देखा, न ही उसे टुकड़े-टुकड़े किया, परन्तु मैं भी दूर देश से अपने बेटे को ढूंढने आया हूं जो आज मुझसे चला गया, और मैं नहीं जानता कि वह जीवित है या मर गया।
45 और आज मैं अपने बेटे को ढूंढने के लिए खेत में आया था, और तुम्हारे बेटों ने मुझे ढूंढ लिया, और मुझे पकड़ लिया और मेरा दुख बढ़ा दिया, और आज मुझे तुम्हारे सामने लाए हैं, और मैंने अब तुमसे अपनी सारी बातें कह दी हैं।
46 और अब हे मनुष्य के पुत्र, मैं तेरे हाथों में हूँ, और आज मेरे साथ वैसा ही कर जैसा तुझे अच्छा लगे, परन्तु जिस परमेश्वर ने मुझे बनाया है, उसके जीवन की शपथ, मैंने तेरे पुत्र को न तो देखा, न उसे टुकड़े टुकड़े किया, और न ही अपने जीवन भर में मनुष्य का मांस अपने मुँह में लिया है।

47 और जब याकूब ने जानवर की बातें सुनीं, तो वह बहुत हैरान हुआ, और उसने जानवर को अपने हाथ से छोड़ दिया, और वह अपने रास्ते चली गई।
48 और याकूब हर दिन यूसुफ के लिए ज़ोर-ज़ोर से रोता रहा, और उसने कई दिनों तक अपने बेटे के लिए दुख मनाया।

अध्याय 44

1 और इश्माएल के बेटे, जिन्होंने यूसुफ को मिद्यानियों से खरीदा था, जिन्होंने उसे उसके भाइयों से खरीदा था, यूसुफ के साथ मिस्र गए, और वे मिस्र की सीमाओं पर पहुँचे, और जब वे मिस्र के पास पहुँचे, तो उन्हें अब्राहम के बेटे मेदान के चार आदमी मिले, जो मिस्र देश से अपनी यात्रा पर निकले थे।
2 तब इश्माएलियों ने उनसे कहा, क्या तुम इस गुलाम को हमसे खरीदना चाहते हो? उन्होंने कहा, इसे हमें सौंप दो। तब उन्होंने यूसुफ को उनके हवाले कर दिया। उन्होंने देखा कि वह बहुत सुंदर लड़का है, इसलिए उन्होंने उसे बीस शेकेल में खरीद लिया।
3 और इश्माएली मिस्र की ओर चलते रहे और मेदानी भी उसी दिन मिस्र लौट आए, और मेदानी आपस में कहने लगे, देखो हमने सुना है कि पोतीपर, जो फिरौन का एक अफ़सर और पहरेदारों का सरदार है, एक अच्छा नौकर ढूंढ रहा है जो उसके सामने खड़ा रहे, उसकी सेवा करे, और उसे उसके घर और उसकी सारी चीज़ों का ओवरसियर बनाए।
4 इसलिए अब आओ, हम उसे अपनी ज़रूरत के हिसाब से बेच दें, अगर वह हमें वह दे सके जो हम उससे मांगें।
5 और ये मदनी लोग पोतीफर के घर गए और उससे कहा, "हमने सुना है कि तुम अपनी सेवा के लिए एक अच्छा नौकर ढूंढ रहे हो। देखो, हमारे पास एक नौकर है जो तुम्हें पसंद आएगा, अगर तुम हमें वह दे सको जो हम चाहते हैं, तो हम उसे तुम्हें बेच देंगे।"
6 पोतीफर ने कहा, उसे मेरे सामने लाओ, मैं उसे देखूंगा, और अगर वह मुझे पसंद आया तो मैं तुम्हें वह दूंगा जो तुम उसके लिए मांगोगे।
7 तब मदीनी लोग गए और यूसुफ को ले आए और पोतीफर के सामने खड़ा किया। पोतीफर ने उसे देखा और वह बहुत खुश हुआ। फिर पोतीफर ने उनसे कहा, "मुझे बताओ कि इस लड़के के लिए तुम क्या चाहते हो?"
8 उन्होंने कहा, "हम उसके लिए चार सौ चांदी के सिक्के चाहते हैं।" पोतीफर ने कहा, "अगर तुम मुझे उसकी बिक्री का रिकॉर्ड दो और उसका इतिहास बताओ, तो मैं तुम्हें दे दूंगा, क्योंकि हो सकता है कि वह चोरी हो गया हो। यह लड़का न तो गुलाम है, न ही गुलाम का बेटा, बल्कि मैंने उसमें एक अच्छे और सुंदर इंसान की शक्ल देखी है।"
9 और मदनी लोग गए और उन इश्माएलियों को उसके पास लाए जिन्होंने उसे उनके हाथ बेच दिया था, और उससे कहा, "वह एक गुलाम है और हमने उसे उनके हाथ बेच दिया है।"
10 और पोतीपर ने इश्माएलियों की बातें सुनीं, जब उसने मेदानियों को चाँदी दी, तो मेदानियों ने चाँदी लेकर अपने सफ़र पर चले गए, और इश्माएली भी अपने घर लौट गए।
11 और पोतीफर यूसुफ को अपने घर ले आया ताकि वह उसकी सेवा करे। यूसुफ पोतीफर को पसंद आया, और उसने उस पर भरोसा किया, और उसे अपने घर का ओवरसियर बना दिया, और जो कुछ उसका था, सब उसके हाथ में दे दिया।
12 और यहोवा यूसुफ के साथ था, और वह एक खुशहाल आदमी बन गया, और यहोवा ने यूसुफ की वजह से पोतीपर के घराने को आशीर्वाद दिया।
13 और पोतीफर ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में छोड़ दिया, और यूसुफ ही चीज़ों को अंदर-बाहर करता था, और पोतीफर के घर में सब कुछ उसकी मर्ज़ी से चलता था।
14 यूसुफ अठारह साल का था, उसकी आँखें सुंदर थीं और वह दिखने में भी सुंदर था, और पूरे मिस्र देश में उसके जैसा कोई नहीं था।
15 उस समय जब वह अपने मालिक के घर में था, घर के अंदर-बाहर जा रहा था और अपने मालिक की सेवा कर रहा था, तो उसके मालिक की पत्नी ज़ेलिका ने यूसुफ की ओर देखा और उसे देखा, और देखा कि वह एक सुंदर और सुंदर युवक था।
16 और वह अपने दिल में उसकी खूबसूरती की चाहत रखने लगी, और उसका दिल यूसुफ पर लगा रहा, और वह उसे हर दिन फुसलाती रही, और ज़ेलिका हर दिन यूसुफ को मनाती रही, लेकिन यूसुफ ने अपने मालिक की पत्नी को देखने के लिए अपनी आँखें नहीं उठाईं।
17 तब ज़ेलिका ने उससे कहा, "तुम्हारा रूप और रूप कितना सुंदर है; सच में मैंने सभी दासों को देखा है, और तुम्हारे जैसा सुंदर दास नहीं देखा; और यूसुफ ने उससे कहा, "ज़रूर जिसने मुझे मेरी माँ के गर्भ में बनाया, उसने सारी मानवजाति को बनाया है।"
18 और उसने उससे कहा, तेरी आंखें कितनी सुंदर हैं, जिनसे तूने मिस्र के सभी रहने वालों, मर्दों और औरतों को चकाचौंध कर दिया है; और उसने उससे कहा, जब तक हम ज़िंदा हैं, तब तक वे कितनी सुंदर हैं, लेकिन अगर तू उन्हें कब्र में देखेगी, तो ज़रूर उनसे दूर हो जाएगी।
19 और उसने उससे कहा, "तेरी सारी बातें कितनी सुंदर और मनभावनी हैं; अब घर में जो वीणा है, उसे ले लो और अपने हाथों से बजाओ, और हम तेरे वचन सुनें।"
20 और उसने उससे कहा, जब मैं अपने परमेश्वर और उसकी महिमा की तारीफ़ करता हूँ, तो मेरे शब्द कितने सुंदर और मनभावने होते हैं; और उसने उससे कहा, तुम्हारे सिर के बाल कितने सुंदर हैं, देखो, घर में जो सोने की कंघी है, उसे ले लो, और अपने सिर के बालों को घुँघराले बना लो।
21 तब उसने उससे कहा, तू कब तक ये बातें कहती रहेगी? मुझसे ये बातें कहना बंद कर, और उठकर अपने घर के काम निपटा ले।
22 और उसने उससे कहा, "मेरे घर में कोई नहीं है, और तेरी बातों और तेरी इच्छा के सिवा और कोई बात नहीं है; फिर भी, इतना सब होने पर भी, वह यूसुफ को अपने पास नहीं ला सकी, और न ही उसने उस पर नज़र डाली, बल्कि अपनी नज़र नीचे ज़मीन पर ही रखी।"
23 और ज़ेलिका ने अपने मन में यूसुफ से चाहा कि वह उसके साथ सोए। और जब यूसुफ घर में अपना काम कर रहा था, तब ज़ेलिका आकर उसके सामने बैठ गई। वह रोज़ अपनी बातों से यूसुफ को फुसलाती रही कि वह उसके साथ सोए या उसे देखे, लेकिन यूसुफ ने उसकी एक न सुनी।

24 और उसने उससे कहा, "अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं तुम्हें मौत की सज़ा दूँगी और तुम पर लोहे का जुआ डाल दूँगी।"
25 तब यूसुफ ने उससे कहा, "ज़रूर, जिस परमेश्वर ने इंसान को बनाया है, वही कैदियों की बेड़ियां खोलता है, और वही मुझे तेरी जेल से और तेरे न्याय से छुड़ाएगा।"
26 और जब वह उसे मना नहीं पाई, और उसका मन अब भी उसी में लगा हुआ था, तो उसकी इच्छा ने उसे एक गंभीर बीमारी में डाल दिया।
27 और मिस्र की सभी औरतें उससे मिलने आईं, और उससे कहने लगीं, "तुम्हारी हालत इतनी खराब क्यों है? तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं है; तुम्हारा पति राजा की नज़र में एक बड़ा और इज्ज़तदार राजकुमार है, तो क्या तुम्हें अपनी मनचाही चीज़ की कमी नहीं होनी चाहिए?"
28 तब ज़ेलिका ने उनसे कहा, "आज तुम्हें पता चल जाएगा कि यह गड़बड़ कहाँ से शुरू हुई जिसमें तुम मुझे देखते हो।" फिर उसने अपनी दासियों को सब औरतों के लिए खाना बनाने का हुक्म दिया, और उनके लिए दावत रखी, और सब औरतों ने ज़ेलिका के घर में खाना खाया।
29 और उसने उन्हें नींबू छीलकर खाने के लिए चाकू दिए, और उसने हुक्म दिया कि वे यूसुफ को महंगे कपड़े पहनाएं, और वह उनके सामने आए, और यूसुफ उनकी आंखों के सामने आया और सभी औरतें यूसुफ को देखती रहीं, और अपनी आंखें उससे हटा नहीं पाईं, और उन सबने अपने हाथों में जो चाकू थे उनसे अपने हाथ काट लिए, और उनके हाथों में जो भी नींबू थे वे खून से भर गए।
30 और उन्हें पता नहीं था कि उन्होंने क्या किया है, बल्कि वे यूसुफ की खूबसूरती को देखते रहे, और अपनी पलकें उससे नहीं हटाईं।
31 और ज़ेलिका ने देखा कि उन्होंने क्या किया है, और उसने उनसे कहा, यह क्या काम है जो तुमने किया है? देखो, मैंने तुम्हें नींबू खाने को दिए थे और तुम सबने अपने हाथ काट लिए हैं।
32 और सब औरतों ने अपने हाथ देखे, और देखो वे खून से भरे हुए थे, और उनका खून उनके कपड़ों पर बह रहा था, और उन्होंने उससे कहा, तेरे घर में यह गुलाम हम पर हावी हो गया है, और हम उसकी खूबसूरती की वजह से उससे नज़रें नहीं हटा सकतीं।
33 और उसने उनसे कहा, "ज़रूर यह तुम्हारे साथ उसी पल हुआ होगा जब तुमने उसे देखा था, और तुम खुद को उससे रोक नहीं पाए; तो फिर मैं कैसे खुद को रोक सकती हूँ जब वह हमेशा मेरे घर में रहता है, और मैं उसे हर दिन अपने घर में आते-जाते देखती हूँ? तो फिर मैं इस वजह से गिरने या खत्म होने से कैसे बच सकती हूँ?"
34 तब उन्होंने उससे कहा, "बातें सच हैं, क्योंकि घर में इस सुंदर रूप को देखकर कौन खुद को रोक सकता है? और वह तो तेरे घर में तेरा दास और सेवक नहीं है। फिर तू अपने मन की बात उससे क्यों नहीं कहती? और इस बात से अपनी जान क्यों नहीं जाने देती?"
35 और उसने उनसे कहा, मैं रोज़ उसे मनाने की कोशिश करती हूँ, और वह मेरी बात नहीं मानता, और मैंने उसे हर अच्छी चीज़ का वादा किया था, फिर भी मुझे उससे कोई बदला नहीं मिला; इसलिए जैसा कि तुम देख रहे हो, मेरी हालत खराब हो रही है।
36 और यूसुफ के लिए अपनी चाहत की वजह से ज़ेलिका बहुत बीमार हो गई, और वह उसके प्यार में बहुत ज़्यादा पागल हो गई, और ज़ेलिका के घराने के सभी लोगों और उसके पति को इस बात का कुछ पता नहीं था कि यूसुफ के लिए अपने प्यार की वजह से ज़ेलिका बीमार है।
37 तब उसके घर के सब लोगों ने उससे पूछा, "तू क्यों बीमार और कमज़ोर है, और तुझे किसी चीज़ की कमी क्यों है?" उसने उनसे कहा, "मैं नहीं जानती कि यह बात जो मुझ पर रोज़ बढ़ती जा रही है।"
38 और सब औरतें और उसकी सहेलियां हर दिन उससे मिलने आती थीं, और उससे बातें करती थीं, और वह उनसे कहती थी, यह सिर्फ़ यूसुफ़ के प्यार की वजह से हो सकता है; और उन्होंने उससे कहा, उसे फुसलाकर चुपके से पकड़ लो, शायद वह तुम्हारी बात मान ले, और इस मौत को तुमसे दूर कर दे।
39 और यूसुफ के प्यार में डूबी हुई ज़ेलिका की हालत और खराब हो गई, और वह इतनी कमज़ोर होती गई कि उसमें खड़े होने की भी ताकत नहीं बची।
40 एक दिन यूसुफ घर में अपने मालिक का काम कर रहा था, और ज़ेलिका चुपके से आई और अचानक उस पर टूट पड़ी, और यूसुफ उससे ज़्यादा ताकतवर था, और उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया।
41 और ज़ेलिका अपने दिल की इच्छा के कारण रो पड़ी, और रो-रोकर उससे विनती करने लगी, और उसके गालों पर आँसू बहने लगे, और उसने विनती भरी आवाज़ में और मन की कड़वाहट में उससे कहा,
42 क्या तुमने कभी मुझसे ज़्यादा खूबसूरत या मुझसे भी बेहतर किसी औरत के बारे में सुना, देखा या जाना है, जो रोज़ तुमसे बातें करती हो, तुम्हारे प्यार में पागल हो जाती हो, तुम्हें इतना सम्मान देती हो, और फिर भी तुम मेरी बात नहीं सुनती?
43 और अगर यह तुम्हारे मालिक के डर से है कि कहीं वह तुम्हें सज़ा न दे, तो राजा के जीते जी, इस बात से तुम्हारे मालिक की तरफ़ से तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा; इसलिए अब मेरी बात सुनो, और जो इज़्ज़त मैंने तुम्हें दी है, उसकी खातिर मान जाओ, और मुझे इस मौत से दूर रखो, और मैं तुम्हारी खातिर क्यों मरूँ? और वह बोलना बंद कर दिया।
44 यूसुफ ने उससे कहा, "मुझसे दूर रहो, और यह काम मेरे मालिक पर छोड़ दो; देखो, मेरे मालिक को नहीं पता कि घर में मेरे पास क्या है, क्योंकि उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में दे दिया है, और मैं अपने मालिक के घर में ये काम कैसे करूँ?"
45 क्योंकि उसने मुझे अपने घर में बहुत इज़्ज़त दी है, और मुझे अपने घर का ओवरसियर भी बनाया है, और मुझे ऊँचा किया है, और इस घर में मुझसे बड़ा कोई नहीं है, और मेरे मालिक ने मुझसे कुछ नहीं रोका, सिवाय तुम्हारे जो उसकी पत्नी है, तो फिर तुम मुझसे ये बातें कैसे कह सकती हो, और मैं भगवान और तुम्हारे पति के साथ इतनी बड़ी बुराई और पाप कैसे कर सकती हूँ?
46 इसलिए अब मुझसे दूर रहो, और ऐसी बातें दोबारा मत कहना, क्योंकि मैं तुम्हारी बातें नहीं सुनूंगा। लेकिन जब यूसुफ ने ये बातें उससे कहीं, तो ज़ेलिका ने उसकी बात नहीं मानी, बल्कि वह रोज़ उसे अपनी बातें सुनने के लिए मनाती रही।
47 और इसके बाद मिस्र का नाला चारों तरफ से भर गया, और मिस्र के सभी रहने वाले बाहर निकले, और राजा और राजकुमार

भी डफली बजाते और नाचते हुए बाहर निकले, क्योंकि मिस्र में बहुत खुशी थी, और सीहोर समुद्र में बाढ़ आने के समय छुट्टी थी, और वे पूरे दिन वहाँ खुशी मनाने गए।

48 और जब मिस्र के लोग अपनी आदत के मुताबिक खुशी मनाने के लिए नदी पर गए, तो पोतीफर के घराने के सभी लोग उनके साथ गए, लेकिन ज़ेलिका उनके साथ नहीं गई, क्योंकि उसने कहा, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, और वह घर में अकेली रह गई, और घर में उसके साथ कोई और नहीं था।

49 और वह उठी और घर में अपने मंदिर में गई, और राजसी कपड़े पहने, और उसने अपने सिर पर सोने और चांदी से जड़े कीमती गोमेद पत्थर रखे, और उसने अपने चेहरे और त्वचा को हर तरह के औरतों के पवित्र करने वाले लिक्विड से सजाया, और उसने मंदिर और घर को तेजपत्ते और लोबान से खुशबूदार किया, और उसने लोबान और एलो फैलाया, और उसके बाद वह मंदिर के दरवाज़े पर, घर के उस रास्ते में बैठ गई, जहाँ से यूसुफ अपना काम करने के लिए गुज़रता था, और देखो यूसुफ खेत से आया, और अपने मालिक का काम करने के लिए घर में घुस गया।

50 और वह उस जगह पर पहुँचा जहाँ से उसे गुज़रना था, और उसने ज़ेलिका का सारा काम देखा, और वापस लौट गया।

51 और ज़ेलिका ने यूसुफ को अपनी तरफ़ से लौटते हुए देखा, और उसने उसे आवाज़ दी, और कहा, यूसुफ, तुम्हें क्या हुआ? अपने काम पर आओ, और देखो, जब तक तुम अपनी जगह पर न पहुँच जाओ, मैं तुम्हारे लिए जगह बना दूँगी।

52 और यूसुफ लौटकर घर आया, और वहाँ से अपनी बैठने की जगह पर गया, और हमेशा की तरह अपने मालिक का काम करने के लिए बैठ गया। और देखो, ज़ेलिका उसके पास आई और शाही कपड़े पहने उसके सामने खड़ी हो गई, और उसके कपड़ों की खुशबू दूर तक फैल गई।

53 और वह जल्दी से यूसुफ और उसके कपड़े पकड़कर उससे कहने लगी, राजा के जीवन की शपथ, अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे तो आज ही मर जाओगे। और उसने जल्दी से अपना दूसरा हाथ बढ़ाया और अपने कपड़ों के नीचे से तलवार निकालकर यूसुफ की गर्दन पर रख दी, और कहा, उठो और मेरी बात मान लो, नहीं तो आज ही मर जाओगे।

54 और यूसुफ यह देखकर उससे डर गया, और उससे भागने के लिए उठा, और उसने उसके कपड़े का अगला हिस्सा पकड़ लिया, और उसके भागने के डर से ज़ेलिका का पकड़ा हुआ कपड़ा फट गया, और यूसुफ ने कपड़ा ज़ेलिका के हाथ में छोड़ दिया, और वह भाग गया और बाहर निकल गया, क्योंकि वह डर गया था।

55 और जब ज़ेलिका ने देखा कि यूसुफ का कपड़ा फटा हुआ है, और वह उसे उसके हाथ में छोड़कर भाग गया है, तो वह अपनी जान के डर से डर गई, कहीं यह बात उसके बारे में न फैल जाए, इसलिए वह उठी और चालाकी से काम लिया, और जो कपड़े उसने पहने थे, उन्हें उतारकर अपने दूसरे कपड़े पहन लिए।

56 और उसने यूसुफ का कपड़ा लिया, और उसे अपने पास रख लिया, और वह जाकर उस जगह पर बैठ गई जहाँ वह अपनी बीमारी में बैठी थी, इससे पहले कि उसके घर के लोग नदी पर गए थे, और उसने एक जवान लड़के को बुलाया जो उस समय घर में था, और उसे घर के लोगों को अपने पास बुलाने का आदेश दिया।

57 जब उसने उन्हें देखा, तो उसने ऊँची आवाज़ में और दुख से कहा, देखो, तुम्हारा मालिक एक इब्री आदमी को मेरे घर में लाया है, जो आज मेरे साथ सोने आया है।

58 क्योंकि जब तुम बाहर गए थे, तो वह घर में आया, और यह देखकर कि घर में कोई नहीं है, वह मेरे पास आया, और मुझे पकड़ लिया, और मेरे साथ सोना चाहता था।

59 और मैंने उसके कपड़े पकड़कर फाड़ दिए और ज़ोर से चिल्लाकर उसे डांटा। जब मैंने ज़ोर से आवाज़ लगाई तो वह अपनी जान के डर से मेरे सामने अपना कपड़ा छोड़कर भाग गया।

60 और उसके घर के लोगों ने कुछ नहीं कहा, बल्कि उनका गुस्सा यूसुफ पर बहुत भड़क गया, और वे उसके मालिक के पास गए और उसे उसकी चाल की बातें बताईं।

61 पोतीफर गुस्से में घर आया, और उसकी पत्नी ने चिल्लाकर कहा, "तुमने मेरे साथ यह क्या किया कि एक शराबी नौकर को मेरे घर में ले आए, जो आज मेरे साथ खेलने आया था; उसने आज मेरे साथ ऐसा किया।"

62 पोतीफर ने अपनी पत्नी की बातें सुनीं और यूसुफ को कड़ी सजा देने का आदेश दिया, और उसे ऐसा ही किया गया।

63 और जब वे उसे मार रहे थे, तो यूसुफ ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, और अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाकर कहा, हे प्रभु परमेश्वर, तू जानता है कि मैं इन सब बातों से बेगुनाह हूँ, फिर मैं आज इन बिना खतना वाले बुरे लोगों के हाथों, जिन्हें तू जानता है, झूठ बोलकर क्यों मरूँ?

64 और जब पोतीफर के आदमी यूसुफ को पीट रहे थे, तो वह चिल्लाता और रोता रहा, और वहाँ ग्यारह महीने का एक बच्चा था, और प्रभु ने बच्चे का मुँह खोला, और उसने पोतीफर के आदमियों के सामने, जो यूसुफ को मार रहे थे, ये बातें कहीं,

65 तुम्हें इस आदमी से क्या चाहिए, और तुम उसके साथ ऐसा बुरा क्यों कर रहे हो? मेरी माँ झूठ बोलती है और झूठ बोलती है; लेन-देन ऐसा ही था।

66 और लड़के ने उन्हें सब कुछ ठीक-ठीक बताया, और जो बातें ज़ेलिका ने यूसुफ से कही थीं, वे सब बातें उसने उन्हें हर दिन बताईं।

67 और सब आदमियों ने बच्चे की बातें सुनीं और वे बच्चे की बातों पर बहुत हैरान हुए, और बच्चा बोलना बंद कर दिया और चुप हो गया।

68 पोतीफर अपने बेटे की बातों से बहुत शर्मिंदा हुआ, और उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि यूसुफ को और न मारें, और आदमियों ने यूसुफ को मारना बंद कर दिया।

69 और पोतीफर ने यूसुफ को पकड़कर हुक्म दिया कि उसे राजा के जजों के सामने पेश किया जाए, ताकि वे इस मामले में उसका फैसला कर सकें।

70 तब पोतीफर और यूसुफ राजा के जजों के सामने आए, और उसने उनसे कहा, "कृपया तय करें कि एक नौकर को क्या सज़ा मिलनी चाहिए, क्योंकि उसने ऐसा ही किया है।"

71 तब पुजारियों ने यूसुफ से पूछा, "तूने अपने मालिक के साथ ऐसा क्यों किया?" यूसुफ ने उन्हें जवाब दिया, "ऐसा नहीं है मेरे मालिक, बात ऐसी ही थी।" पोतीफर ने यूसुफ से कहा, "मैंने तो अपना सब कुछ तेरे हाथ में सौंप दिया था, और अपनी पत्नी के अलावा तुझसे कुछ नहीं छिपाया, फिर तू यह बुरा काम कैसे कर सकता है?"

72 तब यूसुफ ने जवाब दिया, "ऐसा नहीं है मेरे मालिक, यहोवा के जीवन की शपथ, और आपके जीवन की शपथ, मेरे मालिक, जो बात आपने अपनी पत्नी से सुनी वह झूठी है, क्योंकि आज की बात ऐसी ही थी।"
73 मुझे तेरे घर में आए एक साल हो गया है; क्या तूने मुझमें कोई बुराई देखी है, या कोई ऐसी बात देखी है जिससे तू मेरी जान मांगे?
74 और पुजारियों ने पोतीफर से कहा, "हम आपसे गुज़ारिश करते हैं कि यूसुफ का फटा हुआ कपड़ा हमारे सामने भेज दें, और हम उसमें फटा हुआ कपड़ा देख लें। और अगर फटा हुआ कपड़ा कपड़े के सामने है, तो ज़रूर उसका चेहरा उसकी तरफ़ रहा होगा और उसने उसे पकड़कर अपने पास बुलाया होगा, और तुम्हारी पत्नी ने धोखे से वह सब किया जो उसने कहा है।"
75 और वे यूसुफ का कपड़ा जजों के सामने लाए, और उन्होंने देखा कि यूसुफ के कपड़े फटे हुए थे, और सभी जजों ने जान लिया कि उसने उसे दबाया है, और उन्होंने कहा, इस गुलाम को मौत की सज़ा नहीं मिलनी चाहिए क्योंकि उसने कुछ नहीं किया है, बल्कि सज़ा यह है कि तेरी पत्नी के खिलाफ जो खबर उसके ज़रिए फैली है, उसकी वजह से उसे जेल में डाल दिया जाए।
76 और पोतीफर ने उनकी बातें सुनीं, और उसे जेल में डाल दिया, वह जगह जहाँ राजा के कैदी बंद रहते थे, और यूसुफ बारह साल तक जेल में रहा।
77 और इसके बावजूद, उसके मालिक की पत्नी ने उससे मुँह नहीं मोड़ा, और वह हर दिन उससे बात करना बंद नहीं करती थी, ताकि वह उसकी बात माने। और तीन महीने के आखिर में ज़ेलिका हर दिन यूसुफ के पास जेल में जाती रही, और उसने उसे अपनी बात मानने के लिए फुसलाया। तब ज़ेलिका ने यूसुफ से कहा, "तुम इस घर में कब तक रहोगे? लेकिन अब मेरी बात सुनो, और मैं तुम्हें इस घर से बाहर निकाल दूँगी।"
78 तब यूसुफ ने उससे कहा, "तेरी बातें सुनकर परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से तो अच्छा है कि मैं इसी घर में रहूँ।" उसने उससे कहा, "अगर तू मेरी इच्छा पूरी नहीं करेगा, तो मैं तेरी आँखें फोड़ दूँगी, तेरे पैरों में बेड़ियाँ डाल दूँगी, और तुझे उन लोगों के हाथ सौंप दूँगी जिन्हें तू पहले नहीं जानती थी।"
79 और यूसुफ ने उसे जवाब दिया, "देखो, पूरी धरती का परमेश्वर मुझे उन सब चीज़ों से बचा सकता है जो तुम मेरे साथ कर सकती हो, क्योंकि वह अंधों की आँखें खोलता है, और बंधे हुए लोगों को आज़ाद करता है, और उन सभी अजनबियों की रक्षा करता है जो देश से अनजान हैं।"
80 और जब ज़ेलिका यूसुफ को अपनी बात मानने के लिए मना नहीं पाई, तो उसने उसे फुसलाना छोड़ दिया; और यूसुफ अब भी जेल में बंद था। और यूसुफ का पिता याकूब, और कनान देश में रहने वाले उसके सभी भाई उन दिनों यूसुफ के लिए दुख मनाते और रोते रहे, क्योंकि याकूब अपने बेटे यूसुफ के लिए दिलासा पाने से इनकार कर रहा था, और याकूब उन सभी दिनों में ज़ोर-ज़ोर से रोता और दुख मनाता रहा।

अध्याय 45

1 और उसी साल, यानी जिस साल यूसुफ अपने भाइयों के बेचने के बाद मिस्र गया था, उसी समय याकूब का बेटा रूबेन तिम्ना गया और उसने कनानी अबी की बेटी एलीयूराम को अपनी पत्नी बना लिया, और वह उसके पास गया।
2 और रूबेन की पत्नी एलीयूराम गर्भवती हुई और उसके चार बेटे हुए, हनोक, पालू, केतज्रोन और कर्मीम; और उसके भाई शिमोन ने अपनी बहन दीना से शादी की, और उससे ममूएल, यामीन, ओहद, याकिन और ज़ोखर नाम के पाँच बेटे हुए।
3 और उसके बाद वह कनानी औरत बूना के पास गया, वही बूना जिसे शिमोन ने शेकेम शहर से बंदी बनाकर लाया था, और बूना दीना के सामने थी और उसकी सेवा करती थी, और शिमोन उसके पास गया, और उसने उसके लिए शाऊल को जन्म दिया।
4 उस समय यहूदा अदुलाम गया, और वह अदुलाम के एक आदमी के पास पहुँचा, जिसका नाम हीरा था, और यहूदा ने वहाँ कनान के एक आदमी की बेटी को देखा, जिसका नाम अलियात था, जो शुआ की बेटी थी, और वह उसे लेकर उसके पास गया, और अलियात ने यहूदा को एर, ओनान और शिलोह नाम के तीन बेटे पैदा किए।
5 और लेवी और इस्साकार पूरब के देश में गए, और उन्होंने योकतान के बेटे योबाब की बेटियों से शादी कर ली, जो एबर का पोता था; और योकतान के बेटे योबाब की दो बेटियाँ थीं; बड़ी का नाम अदीना था, और छोटी का नाम अरीदा था।
6 और लेवी ने अदीना को और इस्साकार ने अरीदा को ब्याह लिया, और वे कनान देश में अपने पिता के घर आए, और अदीना ने लेवी से गेर्शोन, कहात और मरारी नाम तीन बेटे पैदा किए।
7 और अरीदा ने इस्साकार को तोला, पुवा, योब और शोमरोन नाम के चार बेटे पैदा किए; और दान मोआब देश गया और उसने मोआबी चामूदान की बेटी अफलालेत से शादी कर ली, और उसे कनान देश में ले आया।
8 और अफलालेत बांझ थी, उसके कोई बच्चा नहीं था, और बाद में परमेश्वर ने दान की पत्नी अफलालेत को याद किया, और वह गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम चूशीम रखा।
9 तब गाद और नप्ताली हारान गए और वहां से अमूराम की बेटियों को ब्याह लिया, जो ऊज़ का बेटा था और नाहोर का पोता था।
10 और अमूराम की बेटियों के नाम ये हैं; बड़ी का नाम मरीमा और छोटी का नाम उज़ीत था; और नप्ताली ने मरीमा को और गाद ने उज़ीत को ब्याह लिया; और उन्हें कनान देश में उनके पिता के घर ले आया।
11 और मरीमा ने नप्ताली से यखज़ेल, गूनी, याज़ेर और शालेम नाम के चार बेटे पैदा किए; और उज़ीत ने गाद से सफ़ियोन, चागी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी और अराली नाम के सात बेटे पैदा किए।
12 तब आशेर ने जाकर अदोन को, जो अफलाल की बेटी थी और हदद का बेटा था, और इश्माएल का पोता था, ब्याह लिया, और उसे कनान देश में ले आया।
13 और उन्हीं दिनों आशेर की पत्नी अदोन की मौत हो गई; उसके कोई बच्चा नहीं था; और अदोन की मौत के बाद आशेर नदी के दूसरी तरफ गया और उसने हदुराह से शादी कर ली, जो शेम के बेटे एबर के बेटे अबीमेल की बेटी थी।
14 वह जवान औरत सुंदर और समझदार थी, और वह शेम के बेटे एलाम के बेटे मलकीएल की पत्नी थी।
15 और हदुराह ने मलकीएल से एक बेटी को जन्म दिया, और उसने उसका नाम सेराक रखा, और इसके बाद मलकीएल की मृत्यु हो गई, और हदुराह अपने पिता के घर जाकर रहने लगी।

16 और आशेर में उसकी पत्नी की मौत के बाद वह गया और हदुराह को अपनी पत्नी बनाकर कनान देश ले आया, और उसकी बेटी सेराक को भी अपने साथ ले आया, जो तीन साल की थी, और वह लड़की याकूब के घर में पली-बढ़ी।
17 और वह लड़की सुंदर दिखने वाली थी, और याकूब के बच्चों के पवित्र मार्गों पर चलती थी; उसे किसी चीज़ की कमी नहीं थी, और यहोवा ने उसे बुद्धि और समझ दी।
18 और आशेर की पत्नी हदुराह गर्भवती हुई और उससे यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी और बरीआ नाम के चार बेटे पैदा हुए।
19 और जबूलून मिद्यान गया, और मिद्यान के अबीदा के बेटे मोलाद की बेटी मरीशा से शादी की, और उसे कनान देश में ले आया।
20 और मेरूशाह ने जबूलून से सेरेद, एलोन और याकलील नाम के तीन बेटे पैदा किए।
21 और याकूब ने अराम के पास भेजा, जो ज़ोबा का बेटा था और तेराह का बेटा था। उसने अपने बेटे बिन्यामीन के लिए अराम की बेटी मेकलिया को लिया, और वह कनान देश में याकूब के घर आई; और बिन्यामीन दस साल का था जब उसने अराम की बेटी मेकलिया को शादी के लिए लिया।
22 और मेकलिया प्रेग्नेंट हुई और बिन्यामीन से बेला, बेकेर, अशबेल, गेरा और नामान नाम के पाँच बेटे हुए; और बिन्यामीन ने बाद में जाकर अपनी पहली पत्नी के अलावा, अब्राहम के बेटे शोमरोन की बेटी अरीबात से शादी कर ली, और वह अठारह साल का था; और अरीबात ने बिन्यामीन से अकी, वोश, मुपीम, चुपीम और ओर्द नाम के पाँच बेटे पैदा किए।
23 उन दिनों यहूदा शेम के घर गया और अपने जेठे बेटे एर के लिए शेम के बेटे एलाम की बेटी तामार को ब्याह लिया।
24 और एर अपनी पत्नी तामार के पास गया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और जब वह उसके पास गया तो उसने बाहर से अपने वंश को नष्ट कर दिया, और उसका काम यहोवा की नज़र में बुरा था, और यहोवा ने उसे मार डाला।
25 और यहूदा के जेठे बेटे एर की मौत के बाद, यहूदा ने ओनान से कहा, अपने भाई की पत्नी के पास जाओ और उससे शादी करके अपने भाई के लिए वंश बढ़ाओ।
26 और ओनान ने तामार से शादी की और उसके पास गया। ओनान ने भी अपने भाई के कामों की तरह काम किया, और उसका काम यहोवा की नज़र में बुरा था, इसलिए उसने उसे भी मार डाला।
27 जब ओनान मर गया, तो यहूदा ने तामार से कहा, "जब तक मेरा बेटा शिलोह बड़ा न हो जाए, तब तक अपने पिता के घर में रहना।" यहूदा को तामार से कोई लगाव नहीं था, इसलिए उसने उसे शिलोह को देने की सोची, क्योंकि उसने सोचा, "हो सकता है कि वह भी अपने भाइयों की तरह मर जाए।"
28 तब तामार उठकर अपने पिता के घर में रहने लगी, और तामार कुछ समय तक अपने पिता के घर में रही।
29 और नए साल के आते ही यहूदा की पत्नी अलियात मर गई; और यहूदा को अपनी पत्नी के लिए तसल्ली मिली, और अलियात की मौत के बाद यहूदा अपने दोस्त हीरा के साथ अपनी भेड़ों का ऊन कतरने के लिए तिम्ना गया।
30 और तामार ने सुना कि यहूदा भेड़ों का ऊन कतरने के लिए तिम्ना गया है, और शीलो बड़ा हो गया है, और यहूदा उससे खुश नहीं है।
31 तब तामार उठी और अपने विधवापन के कपड़े उतार दिए, और घूंघट ओढ़कर अपने आप को पूरी तरह ढक लिया, और वह जाकर तिम्ना के रास्ते पर, जो आम रास्ते पर है, बैठ गई।
32 और यहूदा वहाँ से गुज़रा और उसे देखा और उसे ले गया, और वह उसके पास गया, और वह उससे प्रेग्नेंट हुई, और जब वह पैदा हुई, तो देखा कि उसके पेट में जुड़वाँ बच्चे थे, और उसने पहले का नाम पेरेस और दूसरे का नाम ज़ारा रखा।

अध्याय 46

1 उन दिनों यूसुफ मिस्र देश के जेलखाने में बंद था।
2 उस समय फिरौन के सेवक, जो मिस्र के राजा के पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान थे, उसके सामने खड़े थे।
3 और भण्डारी ने शराब लेकर राजा के सामने पीने के लिए रखी, और बेकर ने राजा के सामने खाने के लिए रोटी रखी, और राजा ने शराब पी और रोटी खाई, उसने और उसके नौकरों और मंत्रियों ने जो राजा की मेज पर खाए थे।
4 जब वे खा-पी रहे थे, तो भण्डारी और बेकर वहीं रुके रहे, और फिरौन के सेवकों को भण्डारी की लाई हुई शराब में बहुत सी मक्खियाँ मिलीं, और बेकर की रोटी में नाइट्र के पत्थर मिले।
5 और पहरेदारों के सरदार ने यूसुफ को फिरौन के हाकिमों का सेवक बना दिया, और फिरौन के हाकिम एक साल तक जेल में रहे।
6 और साल के आखिर में, उन दोनों ने एक ही रात में, कैद की जगह पर जहाँ वे थे, सपना देखा। सुबह यूसुफ हमेशा की तरह उनकी देखभाल करने के लिए उनके पास आया, और उसने उन्हें देखा, और देखा कि उनके चेहरे उदास और उदास थे।
7 तब यूसुफ ने उनसे पूछा, "आज तुम्हारे चेहरे उदास और उदास क्यों हैं?" उन्होंने उससे कहा, "हमने एक सपना देखा है, और उसका मतलब बताने वाला कोई नहीं है।" यूसुफ ने उनसे कहा, "कृपया मुझे अपना सपना बताओ, और परमेश्वर तुम्हें शांति का जवाब देगा जैसा तुम चाहते हो।"
8 और भण्डारी ने यूसुफ को अपना सपना बताया, और कहा, मैंने अपने सपने में देखा, और देखो, मेरे सामने एक बड़ी बेल थी, और उस बेल पर मैंने तीन डालियाँ देखीं, और बेल में जल्दी ही फूल आ गए और वह बहुत ऊँची हो गई, और उसके गुच्छे पक गए और अंगूर बन गए।
9 तब मैंने अंगूर लेकर उन्हें एक प्याले में निचोड़ा, और उसे फिरौन के हाथ में दिया, और उसने पिया; और यूसुफ ने उससे कहा, "बेल पर जो तीन डालियाँ थीं, वे तीन दिन की हैं।"
10 फिर भी तीन दिन के अंदर राजा तुम्हें बाहर लाने का हुक्म देगा और वह तुम्हें तुम्हारे पद पर वापस रख देगा, और तुम राजा को उसकी शराब पिलाओगे जैसे पहले पिलाते थे जब तुम उसके बटलर थे; लेकिन मुझ पर तुम्हारी मेहरबानी हो, कि जब तुम्हारा भला हो तो तुम मुझे फिरौन के सामने याद करो, और मुझ पर मेहरबानी करो, और मुझे इस जेल से निकलवा दो, क्योंकि मुझे कनान देश से चुराकर इस जगह गुलाम बनाकर बेच दिया गया था।
11 और मेरे मालिक की पत्नी के बारे में जो कुछ तुमसे कहा गया था, वह भी झूठ है, क्योंकि उन्होंने मुझे इस कालकोठरी में बेकार में डाला है; और भण्डारी ने यूसुफ को जवाब दिया, "अगर राजा मेरे साथ पहले जैसा अच्छा बर्ताव करे, जैसा तुमने पिछली बार

मुझसे कहा था, तो मैं तुम्हारी हर बात मानूंगा और तुम्हें इस कालकोठरी से बाहर निकाल दूंगा।"
12 और जब रसोइए ने देखा कि यूसुफ ने भण्डारी के सपने का सही मतलब बता दिया है, तो वह भी पास आया और उसने अपना पूरा सपना यूसुफ को बता दिया।
13 और उसने उससे कहा, "मैंने सपने में देखा कि मेरे सिर पर तीन सफेद टोकरियाँ हैं, और मैंने देखा कि सबसे ऊपर वाली टोकरी में फिरौन के लिए हर तरह का पका हुआ मांस था, और पक्षी उन्हें मेरे सिर से खा रहे थे।"
14 तब यूसुफ ने उससे कहा, "जो तीन टोकरियाँ तूने देखीं, वे तीन दिन हैं; फिर भी तीन दिन के अंदर फिरौन तेरा सिर काटकर तुझे एक पेड़ पर लटका देगा, और पक्षी तेरा मांस खाएँगे, जैसा कि तूने अपने सपने में देखा था।"
15 उन दिनों रानी की डिलीवरी होने वाली थी, और उसी दिन उसने मिस्र के राजा को एक बेटा दिया, और उन्होंने ऐलान किया कि राजा को उसका पहला बेटा हुआ है और मिस्र के सभी लोगों ने, फिरौन के अफ़सरों और नौकरों के साथ मिलकर बहुत खुशी मनाई।
16 और उसके जन्म के तीसरे दिन फिरौन ने अपने अफ़सरों और नौकरों के लिए, और सोअर देश और मिस्र देश की सेनाओं के लिए एक दावत रखी।
17 और मिस्र के सभी लोग और फिरौन के सेवक राजा के साथ उसके बेटे की दावत में खाने-पीने और राजा की खुशी में खुश होने आए।
18 उस समय राजा के सभी अधिकारी और उसके सेवक आठ दिनों तक दावत में खुशियाँ मनाते रहे, और उन्होंने आठ दिनों तक राजा के घर में तरह-तरह के संगीत वाद्ययंत्रों, डफों और नाच-गानों के साथ खुशियाँ मनाईं।
19 और भण्डारी, जिसे यूसुफ ने अपने सपने का मतलब बताया था, यूसुफ को भूल गया, और उसने राजा से उसके बारे में बात नहीं की, जैसा उसने वादा किया था, क्योंकि यह बात यहोवा की तरफ से थी ताकि यूसुफ को सज़ा मिले क्योंकि उसने इंसान पर भरोसा किया था।
20 इसके बाद यूसुफ दो साल तक जेल में रहा, यानी बारह साल पूरे होने तक।

अध्याय 47

1 उन दिनों अब्राहम का बेटा इसहाक कनान देश में रहता था; वह बहुत बूढ़ा था, एक सौ अस्सी साल का, और उसका बेटा एसाव, जो याकूब का भाई था, एदोम देश में था, और सेईर के लोगों के बीच उसकी और उसके बेटों की ज़मीन-जायदाद थी।
2 और एसाव ने सुना कि उसके पिता की मौत का समय पास आ गया है, और वह और उसके बेटे और घराने के लोग कनान देश में अपने पिता के घर आए। और याकूब और उसके बेटे हेब्रोन में जहाँ वे रहते थे, वहाँ से निकलकर अपने पिता इसहाक के पास आए, और उन्होंने एसाव और उसके बेटों को तंबू में पाया।
3 और याकूब और उसके बेटे अपने पिता इसहाक के सामने बैठे थे, और याकूब अभी भी अपने बेटे यूसुफ के लिए शोक मना रहा था।
4 तब इसहाक ने याकूब से कहा, अपने बेटों को मेरे पास ले आओ, मैं उन्हें आशीर्वाद दूंगा; और याकूब अपने ग्यारह बच्चों को अपने पिता इसहाक के सामने ले आया।
5 और इसहाक ने याकूब के सभी बेटों पर हाथ रखे, और उन्हें पकड़कर गले लगाया, और एक-एक करके चूमा, और इसहाक ने उस दिन उन्हें आशीर्वाद दिया, और उनसे कहा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हारे वंश को आकाश के तारों की तरह बढ़ाए।
6 और इसहाक ने एसाव के बेटों को आशीर्वाद देते हुए कहा, "परमेश्वर तुम्हें उन सभी के लिए डर और आतंक का कारण बनाए जो तुम्हें देखेंगे, और तुम्हारे सभी दुश्मनों के लिए भी।"
7 तब इसहाक ने याकूब और उसके बेटों को बुलाया, और वे सब आकर इसहाक के सामने बैठ गए, और इसहाक ने याकूब से कहा, सारी धरती के परमेश्वर यहोवा ने मुझसे कहा है, कि अगर तेरे बच्चे मेरे नियमों और मेरे मार्गों पर चलें, तो मैं यह ज़मीन तेरे वंश को विरासत में दूंगा, और मैं उनसे वह कसम पूरी करूंगा जो मैंने तेरे पिता अब्राहम से खाई थी।
8 इसलिए अब मेरे बेटे, अपने बच्चों और अपने पोतों के बच्चों को यहोवा का डर मानना और उस अच्छे रास्ते पर चलना सिखाओ जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को पसंद हो, क्योंकि अगर तुम यहोवा के रास्तों और उसके नियमों को मानोगे तो यहोवा भी अब्राहम के साथ किया अपना वादा तुम्हारे साथ निभाएगा और हमेशा तुम्हारा और तुम्हारे वंश का भला करेगा।
9 और जब इसहाक ने याकूब और उसके बच्चों को आज्ञा देना पूरा कर लिया, तो उसने प्राण त्याग दिए और मर गया, और अपने लोगों में जा मिला।
10 और याकूब और एसाव अपने पिता इसहाक के मुँह पर गिरकर रोए। इसहाक एक सौ अस्सी साल का था जब वह कनान देश के हेब्रोन में मरा। उसके बेटे उसे मकपेला की गुफा में ले गए, जिसे अब्राहम ने हेथ के बच्चों से कब्रिस्तान के लिए खरीदा था।
11 और कनान देश के सभी राजा याकूब और एसाव के साथ इसहाक को दफ़नाने गए, और कनान के सभी राजाओं ने इसहाक की मौत पर उसे बहुत सम्मान दिया।
12 और याकूब के बेटे और एसाव के बेटे नंगे पैर घूमते रहे, और चलते-चलते और रोते हुए किर्यत-अरबा तक पहुँच गए।
13 और याकूब और एसाव ने अपने पिता इसहाक को हेब्रोन के किरेत-अरबा में मकपेला की गुफा में दफ़नाया, और उन्हें बहुत बड़े सम्मान के साथ दफ़नाया, जैसे राजाओं के अंतिम संस्कार में किया जाता है।
14 और याकूब और उसके बेटों, और एसाव और उसके बेटों, और कनान के सभी राजाओं ने बहुत बड़ा और भारी मातम मनाया, और उसे दफ़नाया और कई दिनों तक उसके लिए मातम मनाया।
15 और जब इसहाक मर गया, तो उसने अपने मवेशी, अपनी जायदाद और अपनी सारी चीज़ें अपने बेटों को दे दीं; और एसाव ने याकूब से कहा, "देखो, हमारे पिता ने जो कुछ छोड़ा है, हम उसे दो हिस्सों में बाँट लेंगे, और मुझे चुनने का मौका मिलेगा।" याकूब ने कहा, "हम ऐसा ही करेंगे।"
16 और याकूब ने वह सब कुछ लिया जो इसहाक ने कनान देश में छोड़ा था, यानी जानवर और ज़मीन-जायदाद, और उसने उन्हें एसाव और उसके बेटों के सामने दो हिस्सों में बाँट दिया, और

एसाव से कहा, "देखो, यह सब तुम्हारे सामने है, तुम अपने लिए वह आधा हिस्सा चुन लो जो तुम लेना चाहते हो।"
17 तब याकूब ने एसाव से कहा, "मैं जो तुमसे कहना चाहता हूँ, उसे सुनो। स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा ने हमारे पूर्वजों अब्राहम और इसहाक से कहा था, "मैं यह देश तुम्हारे वंश को हमेशा के लिए विरासत में दूँगा।"
18 इसलिए अब जो कुछ हमारे पिता ने छोड़ा है, वह सब तुम्हारे सामने है, और देखो, सारा देश भी तुम्हारे सामने है; उनमें से जो चाहो चुन लो।
19 अगर तुम पूरी ज़मीन चाहते हो तो इसे अपने और अपने बच्चों के लिए हमेशा के लिए ले लो, और मैं यह दौलत ले लूँगा, और अगर तुम दौलत चाहते हो तो इसे अपने लिए ले लो, और मैं यह ज़मीन अपने और अपने बच्चों के लिए हमेशा के लिए ले लूँगा।
20 उस समय इश्माएल का बेटा नबायोत अपने बच्चों के साथ उस देश में था, और एसाव उस दिन गया और उससे सलाह ली।
21 याकूब ने मुझसे ऐसा कहा है, और उसने मुझे ऐसा जवाब दिया है, अब अपनी सलाह दो और हम सुनेंगे।
22 तब नबायोत ने कहा, याकूब ने तुझसे यह क्या कहा है? देख, कनान के सब लोग अपनी ज़मीन पर सुरक्षित रहते हैं, और याकूब कहता है कि वह अपनी संतान के साथ हमेशा के लिए इसे अपने पास रखेगा।
23 इसलिए अब जाओ और अपने पिता की सारी दौलत ले लो और अपने भाई याकूब को देश में रहने दो, जैसा उसने कहा है।
24 तब एसाव उठकर याकूब के पास लौट आया, और इश्माएल के बेटे नेबायोत की सलाह के अनुसार सब कुछ किया; और एसाव ने इसहाक की छोड़ी हुई सारी दौलत, प्राण, जानवर, गाय-बैल, जायदाद, और सारी दौलत ले ली; उसने अपने भाई याकूब को कुछ नहीं दिया; और याकूब ने मिस्र के नाले से लेकर फरात नदी तक कनान की सारी ज़मीन ले ली, और उसे हमेशा के लिए अपनी और अपने बच्चों और अपने बाद अपनी संतानों के लिए ले लिया।
25 याकूब ने अपने भाई एसाव से हेब्रोन में मकपेला की गुफा भी ले ली, जिसे अब्राहम ने एप्रोन से खरीदा था ताकि वह उसके और उसके वंश के लिए हमेशा के लिए कब्रिस्तान बन जाए।
26 और याकूब ने ये सारी बातें खरीद की किताब में लिखीं, और उस पर साइन किए, और चार भरोसेमंद गवाहों के सामने यह सब बताया।
27 और याकूब ने किताब में ये बातें लिखीं: कनान देश और हित्तियों, हिव्वियों, यबूसियों, एमोरियों, परिज्जियों और गरगाशियों के सभी शहर, मिस्र की नदी से लेकर फरात नदी तक के सभी सात देश।
28 और हेब्रोन शहर किरेअत-अरबा, और उसमें जो गुफा है, वह सब याकूब ने अपने भाई एसाव से मोल लेकर खरीदा, कि वह उसके बाद हमेशा के लिए उसकी संतान के लिए एक जायदाद और विरासत हो।
29 और याकूब ने खरीद की किताब और दस्तखत, हुक्म, नियम और बताई गई किताब ली, और उन्हें एक मिट्टी के बर्तन में रखा ताकि वे लंबे समय तक रहें, और उसने उन्हें अपने बच्चों के हाथों में सौंप दिया।
30 एसाव ने अपने भाई याकूब से वह सब कुछ ले लिया जो उसके पिता ने उसकी मौत के बाद उसके लिए छोड़ा था, और उसने सारी जायदाद ले ली, इंसान और जानवर, ऊँट और गधा, बैल और भेड़, चाँदी और सोना, पत्थर और मोती, और वह सारी दौलत जो अब्राहम के बेटे इसहाक की थी; इसहाक की मौत के बाद जो कुछ भी बचा था, उसमें से कुछ भी ऐसा नहीं बचा था जो एसाव ने अपने लिए न लिया हो।
31 और एसाव यह सब लेकर अपने बच्चों के साथ अपने भाई याकूब और बच्चों से दूर होरी सेईर देश में अपने घर चला गया।
32 और एसाव को सेईर के बच्चों के बीच संपत्ति मिली, और एसाव उस दिन के बाद कनान देश में वापस नहीं लौटा।
33 और कनान की पूरी ज़मीन इस्राएलियों की विरासत बन गई, हमेशा के लिए, और एसाव और उसके सभी बच्चों को सेईर पहाड़ विरासत में मिला।

अध्याय 48

1 उन दिनों में, इसहाक की मौत के बाद, यहोवा ने आज्ञा दी और पूरी धरती पर अकाल डाल दिया।
2 उस समय मिस्र का राजा फिरौन मिस्र देश में अपनी गद्दी पर बैठा था, और अपने बिस्तर पर लेटा हुआ सपना देख रहा था, और फिरौन ने सपने में देखा कि वह मिस्र की नदी के किनारे खड़ा है।
3 और जब वह खड़ा था, तो उसने देखा कि नदी से सात मोटी-ताज़ी और सुंदर गायें निकल रही हैं।
4 और उनके पीछे सात और गायें निकलीं, जो दुबली-पतली और भद्दी थीं, और उन सात भद्दी गायों ने भद्दी गायों को निगल लिया, और वे भी पहले जैसी ही भद्दी दिखीं।
5 और वह जागा, और फिर सो गया और उसने दूसरी बार सपना देखा, और उसने देखा कि एक डंठल पर सात अच्छी-अच्छी बालें उग आई हैं, और उनके पीछे सात पतली बालें निकलीं, जो पूरब की हवा से उड़ गई थीं, और पतली बालों ने भरी हुई बालों को निगल लिया, और फिरौन अपने सपने से जाग गया।
6 सुबह राजा को अपने सपने याद आए, और सपनों की वजह से उसका मन बहुत परेशान हो गया। राजा ने जल्दी से मिस्र के सभी जादूगरों और ज्ञानियों को बुलाया, और वे फिरौन के सामने आकर खड़े हो गए।
7 राजा ने उनसे कहा, मैंने सपने देखे हैं, और उनका मतलब बताने वाला कोई नहीं है; तब उन्होंने राजा से कहा, अपने सपने अपने सेवकों को बताओ और हम उन्हें सुनें।
8 तब राजा ने उन्हें अपने सपने बताए, और सबने एक स्वर में राजा से कहा, राजा सदा जीवित रहे; और तेरे सपनों का मतलब यह है।
9 जो सात अच्छी गायें तुमने देखीं, वे सात बेटियाँ हैं जो आने वाले दिनों में तुम्हारे यहाँ पैदा होंगी, और जो सात गायें तुमने उनके बाद आकर उन्हें निगलते हुए देखीं, वे इस बात की निशानी हैं कि जो बेटियाँ तुम्हारे यहाँ पैदा होंगी, वे सब राजा के जीवनकाल में ही मर जाएँगी।
10 और दूसरे सपने में जो तुमने देखा कि एक डंठल पर सात अच्छी-अच्छी बालें उग रही हैं, उसका मतलब यह है कि तुम आने वाले दिनों में मिस्र देश में अपने लिए सात शहर बनाओगे; और जो तुमने देखा कि सात सूखी हुई बालें उनके बाद उग रही हैं और जब तुम उन्हें अपनी आँखों से देख रहे थे, तो उन्हें निगल रही हैं, यह इस बात का संकेत है कि जो शहर तुम बनाओगे, वे आने वाले दिनों में, राजा के जीवनकाल में, नष्ट हो जाएँगे।

11 और जब उन्होंने ये बातें कहीं, तो राजा ने उनकी बातों पर कान नहीं लगाया, न ही उन पर अपना दिल लगाया, क्योंकि राजा अपनी समझ से जानता था कि वे सपनों का सही मतलब नहीं बता रहे हैं; और जब उन्होंने राजा के सामने अपनी बात खत्म की, तो राजा ने उनसे कहा, यह क्या बात है जो तुमने मुझसे कही है? पक्का तुमने झूठ बोला है; इसलिए अब मेरे सपनों का सही मतलब बताओ, ताकि तुम मर न जाओ।
12 इसके बाद राजा ने हुक्म दिया, और दूसरे समझदार आदमियों को फिर से बुलाया, और वे आकर राजा के सामने खड़े हो गए, और राजा ने उन्हें अपने सपने बताए, और उन सबने उसे पहले मतलब के हिसाब से जवाब दिया, और राजा का गुस्सा भड़क उठा और वह बहुत गुस्से में आ गया, और राजा ने उनसे कहा, "तुम पक्का झूठ बोल रहे हो और जो कुछ तुमने कहा है, वह झूठ है।"
13 और राजा ने हुक्म दिया कि पूरे मिस्र देश में यह ऐलान किया जाए, कि राजा और उसके बड़े आदमियों ने यह तय किया है कि जो भी समझदार आदमी सपनों का मतलब जानता और समझता है, और आज राजा के सामने नहीं आएगा, उसे मार दिया जाएगा।
14 और जो आदमी राजा को उसके सपनों का सही मतलब बताएगा, उसे वह सब दिया जाएगा जो वह राजा से मांगेगा। और मिस्र देश के सभी ज्ञानी लोग, मिस्र और गोशेन, रामेसेस, तखपंचेस, सोअर और मिस्र की सीमाओं पर सभी जगहों के सभी जादूगरों और जादूगरों के साथ राजा के सामने आए, और वे सभी राजा के सामने खड़े हो गए।
15 और मिस्र के सभी शहरों से सभी अमीर लोग, हाकिम और राजा के सेवक इकट्ठा हुए, और वे सब राजा के सामने बैठ गए, और राजा ने अपने सपने ज्ञानियों और हाकिमों को बताए, और जो लोग राजा के सामने बैठे थे, वे सब यह देखकर हैरान रह गए।
16 और राजा के सामने मौजूद सभी बुद्धिमान लोग उसके सपनों का मतलब बताने में बहुत बंटे हुए थे; उनमें से कुछ ने राजा को उनका मतलब बताते हुए कहा, 'सात अच्छी गायें सात राजा हैं, जो राजा के वंश से मिस्र पर राज करेंगे।'
17 और सात बुरी गायें सात राजकुमार हैं, जो आने वाले दिनों में उनके खिलाफ खड़े होकर उन्हें खत्म कर देंगे; और सात अनाज की बालें मिस्र के सात बड़े राजकुमार हैं, जो हमारे प्रभु राजा की लड़ाइयों में अपने दुश्मनों के सात कम ताकतवर राजकुमारों के हाथों मारे जाएंगे।
18 और उनमें से कुछ ने राजा को यह मतलब बताया, "सात अच्छी गायें मिस्र के मज़बूत शहर हैं, और सात बुरी गायें कनान देश के सात देश हैं, जो आने वाले दिनों में मिस्र के सात शहरों पर हमला करेंगे और उन्हें तबाह कर देंगे।"
19 और जो तुमने दूसरे सपने में देखा, यानी सात अच्छी और बुरी बालें, यह इस बात का संकेत है कि मिस्र का राज फिर से तुम्हारी संतानों के पास पहले की तरह लौट आएगा।
20 और उसके राज में मिस्र के शहरों के लोग कनान के उन सात शहरों के खिलाफ हो जाएंगे जो उनसे ज़्यादा ताकतवर हैं, और उन्हें खत्म कर देंगे, और मिस्र का राज तुम्हारे वंश के हाथ में वापस आ जाएगा।
21 और उनमें से कुछ ने राजा से कहा, "तुम्हारे सपनों का मतलब यह है; सात अच्छी गायें सात रानियां हैं, जिनसे तुम बाद के दिनों में शादी करोगे, और सात बुरी गायें यह बताती हैं कि वे सभी औरतें राजा के जीवनकाल में ही मर जाएंगी।"
22 और दूसरे सपने में जो सात अच्छी और बुरी बालें तुमने देखीं, वे चौदह बच्चे हैं, और आने वाले दिनों में वे खड़े होकर आपस में लड़ेंगे, और उनमें से सात उन सातों को मार डालेंगे जो ज़्यादा ताकतवर हैं।
23 और उनमें से कुछ ने राजा से ये बातें कहीं, "सात अच्छी गायें बताती हैं कि तुम्हारे सात बच्चे पैदा होंगे, और वे आने वाले दिनों में तुम्हारे सात बेटों के बच्चों को मार डालेंगी; और सात अच्छी बालें जो तुमने दूसरे सपने में देखीं, वे राजकुमार हैं जिनसे आने वाले दिनों में सात दूसरे कम ताकतवर राजकुमार लड़ेंगे और उन्हें खत्म कर देंगे, और तुम्हारे बच्चों के मामले का बदला लेंगे, और राज फिर से तुम्हारे वंश को मिल जाएगा।"
24 और राजा ने मिस्र के ज्ञानियों की सारी बातें और अपने सपनों का मतलब सुना, लेकिन उनमें से कोई भी बात राजा को पसंद नहीं आई।
25 और राजा अपनी समझ से जानता था कि वे ये सब बातें पूरी तरह से सही नहीं कह रहे थे, क्योंकि यह यहोवा की तरफ से था ताकि मिस्र के समझदार लोगों की बातें बेकार हो जाएं, ताकि यूसुफ कैद से बाहर निकल सके, और मिस्र में बड़ा बन सके।
26 और राजा ने देखा कि मिस्र के सभी ज्ञानियों और जादूगरों में से कोई भी उससे सही बात नहीं कर रहा है, और राजा का गुस्सा भड़क उठा, और उसका गुस्सा उसके अंदर जल उठा।
27 और राजा ने हुक्म दिया कि सभी ज्ञानी और जादूगर उसके सामने से चले जाएं, और वे सब शर्म और बेइज्जती के साथ राजा के सामने से चले गए।
28 और राजा ने हुक्म दिया कि पूरे मिस्र में यह ऐलान किया जाए कि मिस्र के सभी जादूगरों को मार डाला जाए, और उनमें से किसी को भी ज़िंदा न छोड़ा जाए।
29 तब राजा के पहरेदारों के सरदार उठे, और हर एक ने अपनी तलवार निकाली, और वे मिस्र के जादूगरों और बुद्धिमानों को मारने लगे।
30 इसके बाद राजा का मुख्य भण्डारी मेरोद आया और राजा के सामने झुककर बैठ गया।
31 और भण्डारी ने राजा से कहा, "राजा हमेशा जिए, और देश में उसकी हुकूमत बुलंद रहे।"
32 उन दिनों, यानी दो साल पहले, तू अपने नौकर से नाराज़ था, और मुझे जेल में डाल दिया था। मैं और बेकर्स का सरदार कुछ समय तक जेल में रहे।
33 और हमारे साथ गार्ड के कैप्टन का एक हिब्रू नौकर था, उसका नाम यूसुफ था, क्योंकि उसका मालिक उससे नाराज़ था और उसने उसे जेल में डाल दिया था, और वह वहीं हमारी देखभाल करता था।
34 और कुछ समय बाद जब हम वार्ड में थे, तो मैंने और बेकर्स के मुखिया ने एक ही रात में सपना देखा; हम दोनों ने अपने-अपने सपने का मतलब बताया।
35 और हम सुबह आए और उस नौकर को बताया, और उसने हर आदमी को उसके सपने के हिसाब से हमारे सपनों का मतलब बताया, क्या उसने सही मतलब बताया।
36 और जैसा उसने हमें मतलब बताया, वैसा ही हुआ; उसकी कोई भी बात बेकार नहीं गई।
37 और अब मेरे मालिक और राजा, मिस्र के लोगों को यूँ ही मत मारो; देखो, वह गुलाम अभी भी अपने मालिक के गार्ड के कैप्टन के घर में, कैदखाने में बंद है।

38 अगर राजा को अच्छा लगे तो वह उसे बुलाए ताकि वह तुम्हारे सामने आए और वह तुम्हें उस सपने का सही मतलब बताएगा जो तुमने देखा था।
39 और राजा ने मुख्य भण्डारी की बातें सुनीं, और राजा ने आदेश दिया कि मिस्र के बुद्धिमान लोगों को न मारा जाए।
40 तब राजा ने अपने सेवकों को यूसुफ को उसके सामने लाने का आदेश दिया, और राजा ने उनसे कहा, उसके पास जाओ और उसे डराओ मत, कहीं ऐसा न हो कि वह भ्रमित हो जाए और ठीक से बोलना न जान ले।
41 तब राजा के सेवक यूसुफ के पास गए, और उसे जल्दी से तहखाने से बाहर निकाला, और राजा के सेवकों ने उसका सिर मुंडवाया, और उसने अपने जेल के कपड़े बदले, और वह राजा के सामने आया।
42 और राजा अपनी शाही गद्दी पर एक शाही पोशाक में बैठा था, जिसके चारों ओर सोने का एफ़ोद था, और उस पर लगा हुआ शुद्ध सोना चमक रहा था, और लाल-लाल, माणिक, पन्ना, और राजा के सिर पर लगे सभी कीमती पत्थर आँखों को चौंधिया रहे थे, और यूसुफ राजा को देखकर बहुत हैरान हुआ।
43 और जिस सिंहासन पर राजा बैठा था, वह सोने और चांदी और गोमेद पत्थरों से मढ़ा हुआ था, और उसमें सत्तर सीढ़ियाँ थीं।
44 और पूरे मिस्र देश में यह रिवाज था कि जो भी आदमी राजा से बात करने आता था, चाहे वह राजकुमार हो या राजा की नज़र में इज़्ज़तदार हो, वह राजा के सिंहासन तक इकतीसवीं सीढ़ी तक चढ़ता था, और राजा छत्तीसवीं सीढ़ी तक उतरकर उससे बात करता था।
45 अगर वह आम लोगों में से होता, तो वह तीसरी सीढ़ी पर चढ़ जाता, और राजा चौथी सीढ़ी पर उतरकर उससे बात करता। और उनका रिवाज यह भी था कि जो कोई भी सत्तर भाषाएँ बोलना जानता था, वह सत्तर सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाता और तब तक बात करता जब तक वह राजा के पास न पहुँच जाए।
46 और जो आदमी सत्तर सीढ़ियाँ पूरी नहीं कर पाया, उसे उतनी ही सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं जितनी भाषाएँ वह बोलना जानता था।
47 और उन दिनों मिस्र में यह रिवाज था कि उन पर कोई ऐसा राजा न हो जो सत्तर भाषाएँ बोलना जानता हो।
48 और जब यूसुफ राजा के सामने आया, तो उसने राजा के सामने ज़मीन पर झुककर प्रणाम किया, और वह तीसरी सीढ़ी पर चढ़ गया, और राजा चौथी सीढ़ी पर बैठकर यूसुफ से बातें करने लगा।
49 और राजा ने यूसुफ से कहा, "मैंने एक सपना देखा है, और उसका सही मतलब बताने वाला कोई नहीं है, और मैंने आज मिस्र के सभी जादूगरों और ज्ञानियों को मेरे सामने आने का हुक्म दिया है, और मैंने उन्हें अपने सपने बताए, लेकिन किसी ने भी मुझे उनका सही मतलब नहीं बताया।"
50 और इसके बाद आज मैंने तुम्हारे बारे में सुना कि तुम एक बुद्धिमान आदमी हो, और जो भी सपना तुम सुनते हो, उसका सही मतलब बता सकते हो।
51 तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, फिरौन अपने सपने बताए जो उसने देखे हैं; निश्चय ही उनका अर्थ परमेश्वर का है; और फिरौन ने यूसुफ को अपने सपने बताए, गायों का सपना, और अनाज की बालियों का सपना, और राजा ने बोलना बंद कर दिया।
52 तब यूसुफ को राजा के सामने परमेश्वर की आत्मा मिली, और वह जानता था कि उस दिन से राजा पर क्या-क्या बीतेगी, और वह राजा के सपने का सही मतलब भी जानता था, और उसने राजा के सामने बात की।
53 और यूसुफ राजा की नज़र में अच्छा लगा, और राजा ने अपने कान और दिल लगाकर यूसुफ की सारी बातें सुनीं। और यूसुफ ने राजा से कहा, यह मत सोचो कि ये दो सपने हैं, क्योंकि यह तो सिर्फ़ एक सपना है, क्योंकि जो कुछ परमेश्वर ने पूरे देश में करने के लिए चुना है, वह उसने राजा को सपने में दिखाया है, और तुम्हारे सपने का सही मतलब यह है:
54 सात अच्छी गायें और अनाज की बालियां सात साल हैं, और सात बुरी गायें और अनाज की बालियां भी सात साल हैं; यह एक ही सपना है।
55 देखो, आने वाले सात सालों में पूरे देश में बहुत ज़्यादा पैदावार होगी, और उसके बाद सात साल अकाल के आएंगे, बहुत भयानक अकाल; और देश से सारी पैदावार भुला दी जाएगी, और अकाल देश के रहने वालों को खत्म कर देगा।
56 राजा ने एक सपना देखा, और वह सपना फिरौन को दोहराया गया, क्योंकि यह बात परमेश्वर ने पक्की कर दी है, और परमेश्वर इसे जल्द ही पूरा करेगा।
57 इसलिए अब मैं तुम्हें सलाह दूँगा और तुम्हारी और इस देश के रहने वालों की जान को अकाल की बुराई से बचाऊँगा। तुम अपने पूरे राज्य में एक ऐसे आदमी को ढूँढ़ो जो बहुत समझदार और बुद्धिमान हो, जो सरकार के सभी मामलों को जानता हो, और उसे मिस्र देश की देखरेख करने के लिए नियुक्त करो।
58 और जिस आदमी को तू मिस्र का अधिकारी ठहराए, वह अपने नीचे अफ़सरों को रखे, कि वे आने वाले अच्छे सालों का सारा खाना इकट्ठा करें, और अनाज जमा करके तेरे तय किए गए भंडार में जमा करें।
59 और वे उस भोजन को अकाल के सात सालों के लिए बचाकर रखें, ताकि वह तुम्हारे, तुम्हारे लोगों और तुम्हारी पूरी ज़मीन के लिए मिल सके, और तुम और तुम्हारी ज़मीन अकाल से खत्म न हो जाएं।
60 देश के सभी रहने वालों को यह भी हुक्म दिया जाए कि वे सात अच्छे सालों में अपने खेत की हर तरह की खाने की चीज़ें इकट्ठा करें और उन्हें अपने स्टोर में रखें, ताकि अकाल के दिनों में उन्हें वह मिल जाए और वे उस पर गुज़ारा कर सकें।
61 यही तुम्हारे सपने का सही मतलब है, और यही सलाह तुम्हारी और तुम्हारी सारी प्रजा की जान बचाने के लिए दी गई है।
62 राजा ने यूसुफ से कहा, "कौन कहता है और कौन जानता है कि तुम्हारी बातें सही हैं?" उसने राजा से कहा, "यह तुम्हारे लिए मेरी सभी बातों का संकेत होगा कि वे सच हैं और मेरी सलाह तुम्हारे लिए अच्छी है।"
63 देख, तेरी पत्नी आज डिलीवरी के समय बैठी है, और वह तेरे लिए एक बेटे को जन्म देगी और तू उसके साथ खुश होगा; जब तेरा बच्चा अपनी माँ के पेट से निकल जाएगा, तो तेरा पहला बेटा जो इन दो साल पहले पैदा हुआ है, मर जाएगा, और तू उस बच्चे से आराम पाएगा जो आज तेरे लिए पैदा होगा।
64 जब यूसुफ ने राजा से ये बातें कह दीं, तो उसने राजा को प्रणाम किया और वह बाहर चला गया। जब यूसुफ राजा के सामने से चला गया, तो वे चिन्ह जो यूसुफ ने राजा से कहे थे, उसी दिन पूरे हो गए।
65 और उस दिन रानी को एक बेटा हुआ और राजा ने अपने बेटे के बारे में खुशखबरी सुनी, और वह बहुत खुश हुआ। और जब

खबर देने वाला राजा के पास से चला गया, तो राजा के सेवकों ने राजा के जेठे बेटे को ज़मीन पर मरा हुआ पाया।
66 और राजा के घर में बहुत ज़्यादा दुख और शोर हो रहा था, और राजा ने यह सुनकर कहा, "मैंने घर में यह क्या शोर और दुख सुना है?" और उन्होंने राजा को बताया कि उसका पहला बेटा मर गया है; तब राजा को पता चला कि यूसुफ ने जो कुछ भी कहा था, वह सब सही था, और राजा को उस बच्चे से अपने बेटे के लिए तसल्ली मिली जो उसी दिन उसके यहाँ पैदा हुआ था, जैसा यूसुफ ने कहा था।

अध्याय 49

1 इन बातों के बाद राजा ने अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों, और राजा के सभी राजकुमारों और अमीरों को इकट्ठा किया, और वे सभी राजा के सामने आए।
2 राजा ने उनसे कहा, "देखो, तुमने इस इब्री आदमी की सारी बातें देखी और सुनी हैं, और वे सारे संकेत भी जो उसने बताए थे कि वे सच होंगे, और उसकी कोई भी बात बेकार नहीं गई।"
3 तुम जानते हो कि उसने सपने का सही मतलब बताया है, और वह ज़रूर पूरा होगा, इसलिए अब सलाह लो, और जानो कि तुम क्या करोगे और देश को अकाल से कैसे बचाया जाएगा।
4 अब खोजो और देखो कि क्या कोई ऐसा मिल सकता है, जिसके दिल में समझदारी और ज्ञान हो, और मैं उसे देश का अधिकारी बनाऊंगा।
5 क्योंकि तुमने सुना है कि इब्री आदमी ने इस बारे में क्या सलाह दी है ताकि देश को अकाल से बचाया जा सके, और मैं जानता हूँ कि इब्री आदमी की सलाह के बिना देश अकाल से नहीं बचेगा, जिसने मुझे सलाह दी थी।
6 और सबने राजा को जवाब दिया, "इब्री ने इस बारे में जो सलाह दी है, वह अच्छी है; इसलिए अब, हमारे मालिक और राजा, देखो, सारा देश तुम्हारे हाथ में है, जो तुम्हें ठीक लगे वही करो।"
7 जिसे तुम चुनो, और जिसे तुम अपनी समझ से बुद्धिमान और अपनी समझ से देश को बचाने में सक्षम समझते हो, उसे राजा अपने अधीन देश पर नियुक्त करेगा।
8 और राजा ने सभी अधिकारियों से कहा: मैंने सोचा है कि जब से परमेश्वर ने उस इब्री आदमी को वह सब बताया है जो उसने कहा है, तब से पूरे देश में उसके जैसा समझदार और बुद्धिमान कोई नहीं है; अगर यह तुम्हें अच्छा लगे तो मैं उसे देश का अधिकारी बना दूँगा, क्योंकि वह अपनी समझदारी से देश को बचाएगा।
9 और सभी अधिकारियों ने राजा को जवाब दिया, "लेकिन यह बात मिस्र के कानूनों में लिखी है, और इसे तोड़ा नहीं जाना चाहिए, कि मिस्र पर कोई भी आदमी राज नहीं करेगा, और न ही राजा के बाद दूसरा होगा, बल्कि वह आदमी होगा जिसे इंसानों की सभी भाषाओं का ज्ञान हो।"
10 अब हमारे मालिक और राजा, देखो, यह इब्रानी आदमी सिर्फ़ इब्रानी भाषा बोल सकता है, तो फिर वह हम पर दूसरे नंबर का राज कैसे कर सकता है, जबकि वह हमारी भाषा भी नहीं जानता?
11 अब हम आपसे गुज़ारिश करते हैं कि उसे बुलाओ, और उसे अपने सामने आने दो, और सब बातों में उसे परखो, और जैसा तुम्हें ठीक लगे वैसा करो।
12 तब राजा ने कहा, यह काम कल होगा, और जो बात तुमने कही है वह अच्छी है; और उस दिन सब अधिकारी राजा के सामने आए।
13 और उस रात प्रभु ने अपने एक सेवक स्वर्गदूत को भेजा, और वह मिस्र देश में यूसुफ के पास आया, और प्रभु का स्वर्गदूत यूसुफ के ऊपर खड़ा था, और देखो यूसुफ रात में अपने मालिक के घर के तहखाने में बिस्तर पर लेटा हुआ था, क्योंकि उसके मालिक ने उसे उसकी पत्नी के कारण फिर से तहखाने में डाल दिया था।
14 और स्वर्गदूत ने उसे नींद से जगाया, और यूसुफ उठकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया, और देखो, प्रभु का स्वर्गदूत उसके सामने खड़ा था; और प्रभु के स्वर्गदूत ने यूसुफ से बात की, और उस रात उसे इंसानों की सब भाषाएँ सिखाईं, और उसने उसका नाम यहोसेफ रखा।
15 तब प्रभु का दूत उसके पास से चला गया, और यूसुफ लौटकर अपने बिस्तर पर लेट गया, और यूसुफ उस दर्शन को देखकर जो उसने देखा था, हैरान रह गया।
16 और सुबह राजा ने अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बुलाया, और वे सब राजा के सामने आकर बैठ गए, और राजा ने यूसुफ को लाने का आदेश दिया, और राजा के कर्मचारी गए और यूसुफ को फिरौन के सामने ले आए।
17 और राजा बाहर आया और सिंहासन की सीढ़ियों पर चढ़ गया, और यूसुफ ने राजा से सब भाषाओं में बात की, और यूसुफ उसके पास गया और राजा से तब तक बात करता रहा जब तक वह सत्तरवीं सीढ़ी पर राजा के सामने नहीं पहुँच गया, और वह राजा के सामने बैठ गया।
18 और राजा यूसुफ के कारण बहुत खुश हुआ, और राजा के सब अधिकारी भी यूसुफ की सारी बातें सुनकर राजा के साथ बहुत खुश हुए।
19 और राजा और अधिकारियों को यह बात अच्छी लगी कि यूसुफ को पूरे मिस्र देश पर राजा के बाद दूसरा अधिकारी बनाया जाए, और राजा ने यूसुफ से कहा,
20 अब तूने मुझे सलाह दी है कि मिस्र देश पर एक समझदार आदमी को रखूं, ताकि वह अपनी समझदारी से देश को अकाल से बचा सके; अब जब परमेश्वर ने तुझे यह सब और तेरी कही हुई सारी बातें बता दी हैं, तो पूरे देश में तेरे जैसा समझदार और बुद्धिमान आदमी नहीं है।
21 और तेरा नाम अब यूसुफ न रहेगा, बल्कि तेरा नाम सापनाथ पानाह होगा; तू मेरे बाद दूसरा होगा, और मेरे राज के सारे काम तेरे कहने के अनुसार होंगे, और मेरे लोग तेरे कहने से आएंगे-जाएंगे।
22 और मेरे नौकर और अफ़सर भी तुम्हारे हाथ से अपनी सैलरी लेंगे जो उन्हें हर महीने दी जाती है, और देश के सभी लोग तुम्हारे सामने झुकेंगे; बस अपनी गद्दी पर मैं तुमसे बड़ा रहूँगा।
23 तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी उतारकर यूसुफ के हाथ में पहना दी, और राजा ने यूसुफ को राजसी वस्त्र पहनाए, और उसके सिर पर सोने का मुकुट और गले में सोने की जंजीर पहनाई।
24 और राजा ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, और उन्होंने उसे राजा के दूसरे रथ पर सवार किया, जो राजा के रथ के सामने चलता था, और उसने उसे राजा के घोड़ों में से एक बड़े और

मज़बूत घोड़े पर सवार किया, और मिस्र देश की सड़कों पर घुमाया।
25 और राजा ने हुक्म दिया कि जो लोग डफ, वीणा और दूसरे साज़ बजाते हैं, वे सब यूसुफ के साथ चलें; एक हज़ार डफ, एक हज़ार मेचोलोथ और एक हज़ार नेबालिम उसके पीछे-पीछे चलें।
26 और पाँच हज़ार आदमी, जिनके हाथों में चमकती हुई तलवारें थीं, यूसुफ के आगे-आगे चलते और खेलते हुए चले, और राजा के बीस हज़ार बड़े आदमी सोने से मढ़े चमड़े के कमरबंद पहने हुए यूसुफ के दाहिने हाथ और बीस हज़ार उसके बाएँ हाथ चले, और सभी औरतें और लड़कियाँ छतों पर या सड़कों पर खड़ी होकर यूसुफ के साथ खेलती और खुशियाँ मनाती रहीं, और यूसुफ के रूप और उसकी सुंदरता को देखती रहीं।
27 और राजा के लोग उसके आगे-पीछे चले, और रास्ते को लोबान, तेजपत्ते और तरह-तरह के बढ़िया इत्र से महकाया, और रास्ते में लोबान और अगर छिड़का, और बीस आदमियों ने पूरे देश में उसके सामने ये बातें ऊँची आवाज़ में सुनाईं:
28 क्या तुम इस आदमी को देख रहे हो जिसे राजा ने अपना दूसरा चुना है? सरकार के सारे काम वही चलाएगा, और जो कोई उसके हुक्मों को तोड़ेगा, या उसके सामने ज़मीन पर झुकेगा नहीं, वह मारा जाएगा, क्योंकि उसने राजा और उसके दूसरे के खिलाफ बगावत की है।
29 और जब ऐलान करने वालों ने ऐलान करना बंद कर दिया, तो मिस्र के सभी लोग यूसुफ के सामने ज़मीन पर झुककर कहने लगे, राजा ज़िंदा रहे, और उसका राजा भी ज़िंदा रहे; और मिस्र के सभी रहने वाले रास्ते में झुककर प्रणाम करने लगे, और जब ऐलान करने वाले उनके पास आए, तो उन्होंने झुककर यूसुफ के सामने तरह-तरह के डफ, मेचोल और नेबाल बजाकर खुशी मनाई।
30 और यूसुफ ने अपने घोड़े पर बैठकर आसमान की तरफ़ आँखें उठाईं, और पुकारकर कहा, "वह गरीब आदमी को धूल से उठाता है, वह ज़रूरतमंद को कूड़े के ढेर से ऊपर उठाता है। हे सेनाओं के मालिक, खुशनसीब है वह आदमी जो तुझ पर भरोसा करता है।"
31 और यूसुफ फिरौन के नौकरों और अफ़सरों के साथ मिस्र देश में घूमा, और उन्होंने उसे मिस्र का पूरा देश और राजा का सारा खज़ाना दिखाया।
32 और यूसुफ उसी दिन लौटकर फिरौन के सामने गया, और राजा ने यूसुफ को मिस्र देश में एक ज़मीन दी, खेत और अंगूर के बाग, और राजा ने यूसुफ को तीन हज़ार टैलेंट चांदी और एक हज़ार टैलेंट सोना, और गोमेद पत्थर और मोती और बहुत सारे तोहफ़े दिए।
33 और अगले दिन राजा ने मिस्र के सभी लोगों को हुक्म दिया कि वे यूसुफ के लिए भेंट और तोहफ़े लाएँ, और जो कोई राजा की आज्ञा न माने उसे मार दिया जाए; और उन्होंने शहर की सड़क पर एक ऊँची जगह बनाई, और वहाँ कपड़े बिछा दिए, और जो कोई यूसुफ के लिए कुछ लाए, उसे ऊँची जगह पर रख दिया।
34 और मिस्र के सभी लोगों ने ऊँची जगह पर कुछ न कुछ डाला, एक आदमी ने सोने की बाली, और दूसरे ने अंगूठियां और झुमके, और सोने और चांदी के काम के अलग-अलग बर्तन, और गोमेद पत्थर और मोती ऊँची जगह पर डाले; हर एक ने अपनी-अपनी चीज़ों में से कुछ दिया।
35 और यूसुफ ने ये सब चीज़ें लेकर अपने खजाने में रख दीं, और राजा के सभी अधिकारियों और अमीरों ने यूसुफ की तारीफ़ की, और उसे बहुत सारे तोहफ़े दिए, यह देखकर कि राजा ने उसे अपना दूसरा चुना था।
36 और राजा ने ओन के पुजारी अहीराम के बेटे पोतीफेरा के पास भेजा, और उसने अपनी छोटी बेटी ओसनाथ को लेकर यूसुफ को पत्नी के रूप में दे दिया।
37 और वह लड़की बहुत सुंदर थी, एक कुंवारी लड़की, जिसे कोई आदमी नहीं जानता था, और यूसुफ ने उसे अपनी पत्नी बना लिया; और राजा ने यूसुफ से कहा, मैं फिरौन हूँ, और तुम्हारे अलावा कोई भी मिस्र देश में मेरे लोगों पर राज करने के लिए हाथ या पैर उठाने की हिम्मत नहीं करेगा।
38 जब यूसुफ फिरौन के सामने खड़ा हुआ, तब वह तीस साल का था। यूसुफ राजा के सामने से चला गया, और मिस्र में राजा का दूसरा आदमी बन गया।
39 और राजा ने यूसुफ को अपने घर में सेवा करने के लिए सौ नौकर दिए, और यूसुफ ने भी बहुत से नौकर खरीद लिए और वे यूसुफ के घर में रहने लगे।
40 फिर यूसुफ ने अपने लिए राजाओं के घरों जैसा एक बहुत शानदार घर बनवाया, जो राजा के महल के सामने था। उसने घर में एक बड़ा मंदिर बनवाया, जो दिखने में बहुत सुंदर और उसके रहने के लिए आसान था। यूसुफ को अपना घर बनाने में तीन साल लगे।
41 और यूसुफ ने अपने लिए बहुत सारे सोने और चांदी का एक बहुत सुंदर सिंहासन बनाया, और उसे गोमेद पत्थरों और मोती से मढ़ा, और उस पर पूरे मिस्र देश की आकृति और मिस्र की उस नदी की आकृति बनाई जो पूरे मिस्र देश को पानी देती है; और यूसुफ अपने घर में अपने सिंहासन पर सुरक्षित बैठा और प्रभु ने यूसुफ की बुद्धि बढ़ाई।
42 और मिस्र के सभी रहने वाले और फिरौन के नौकर और उसके हाकिम यूसुफ से बहुत प्यार करते थे, क्योंकि यह बात यूसुफ के लिए यहोवा की तरफ से थी।
43 और यूसुफ के पास एक सेना थी जो युद्ध कर रही थी, जिसमें चालीस हज़ार छह सौ सैनिक थे, जो दुश्मन के खिलाफ़ राजा और यूसुफ की मदद करने के लिए हथियार उठाने में सक्षम थे, इसके अलावा राजा के अफ़सर, उसके नौकर और मिस्र के अनगिनत निवासी भी थे।
44 और यूसुफ ने अपने वीर सैनिकों और अपनी पूरी सेना को ढालें, भाले, टोपियां, कवच और गोफन चलाने के लिए पत्थर दिए।

अध्याय 50

1 उस समय तर्शीश के लोग इश्माएल के बेटों पर हमला करने आए, और उनसे लड़ाई की, और तर्शीश के लोग इश्माएलियों को बहुत समय तक लूटते रहे।
2 उन दिनों इश्माएल के बच्चे गिनती में कम थे, और वे तर्शीश के बच्चों पर हावी नहीं हो सके, और उन पर बहुत ज़ुल्म हुआ।
3 और इश्माएलियों के बूढ़े लोगों ने मिस्र के राजा के पास यह लिखकर भेजा, "अपने सेवकों के पास अफ़सर और सेना भेजो जो हमें तर्शीश के लोगों से लड़ने में मदद करें, क्योंकि हम बहुत समय से हार रहे हैं।"

4 और फिरौन ने यूसुफ को अपने साथ के वीर सैनिकों और सेना के साथ, और राजा के घर से अपने वीर सैनिकों के साथ भेजा।
5 और वे हवीला देश में इश्माएल के बच्चों के पास गए, ताकि तर्शीश के बच्चों के खिलाफ उनकी मदद करें, और इश्माएल के बच्चों ने तर्शीश के बच्चों से लड़ाई की, और यूसुफ ने तर्शीशियों को हरा दिया और उनकी सारी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया, और इश्माएल के बच्चे आज तक उसमें रहते हैं।
6 और जब तर्शीश देश पर कब्ज़ा हो गया, तो सभी तर्शीश भाग गए, और अपने भाइयों यावान के बच्चों की सीमा पर आ गए, और यूसुफ अपने सभी वीर सैनिकों और सेना के साथ मिस्र लौट आया, और उनमें से एक भी आदमी गायब नहीं हुआ।
7 और मिस्र पर यूसुफ के राज के दूसरे साल, यानी साल के शुरू में, जैसा यूसुफ ने कहा था, यहोवा ने सात साल तक पूरे देश में बहुत ज़्यादा पैदावार दी, क्योंकि यहोवा ने उन दिनों सात साल तक धरती की सारी पैदावार पर आशीर्वाद दिया, और लोग खाकर बहुत खुश हुए।
8 उस समय यूसुफ के पास अफ़सर थे, और वे अच्छे सालों का सारा खाना इकट्ठा करते थे, और हर साल अनाज जमा करते थे, और उसे यूसुफ के खज़ानों में रखते थे।
9 और जब भी वे खाना इकट्ठा करते, यूसुफ हुक्म देता कि वे बालियों में लगा अनाज ले आएं, और उसके साथ खेत की कुछ मिट्टी भी ले आएं, ताकि वह खराब न हो।
10 और यूसुफ हर साल ऐसा ही करता रहा, और उसने अनाज को समुद्र की रेत के बराबर बहुत ज़्यादा जमा किया, क्योंकि उसके पास इतना ज़्यादा अनाज था कि उसकी गिनती नहीं हो सकती थी।
11 और मिस्र के सभी निवासियों ने भी सात अच्छे सालों में अपने भंडार में हर तरह का खाना बहुत सारा इकट्ठा किया, लेकिन उन्होंने यूसुफ जैसा नहीं किया।
12 और यूसुफ और मिस्रियों ने जो सारा खाना सात साल की खुशहाली में इकट्ठा किया था, उसे अकाल के सात सालों के लिए ज़मीन के लिए स्टोर में जमा कर लिया गया, ताकि पूरी ज़मीन का गुज़ारा हो सके।
13 और मिस्र के रहने वालों ने अपने-अपने भंडार और अपनी छिपी हुई जगह को अनाज से भर लिया, ताकि अकाल के समय सहारा मिल सके।
14 और यूसुफ ने मिस्र के सभी शहरों में इकट्ठा किया हुआ सारा खाना रख दिया, और सारे भंडार बंद करके उन पर पहरेदार बिठा दिए।
15 और यूसुफ की पत्नी ओसनाथ, जो पोतीफेरा की बेटी थी, ने उसके दो बेटे पैदा किए, मनश्शे और एप्रैम, और जब यूसुफ ने उन्हें जन्म दिया तब वह चौंतीस साल का था।
16 और लड़के बड़े हुए और वे उसके बताए रास्ते और उसकी शिक्षाओं पर चले, वे उस रास्ते से न भटके जो उनके पिता ने उन्हें सिखाया था, न दाएं न बाएं।
17 और यहोवा लड़कों के साथ था, और वे बड़े हुए और उन्हें हर तरह की समझ और ज्ञान और सरकार के सभी कामों में महारत हासिल हुई, और राजा के सभी अधिकारियों और मिस्र के रहने वालों में से उसके बड़े लोगों ने लड़कों को ऊंचा दर्जा दिया, और वे राजा के बच्चों के बीच पले-बढ़े।
18 और देश में सात साल जो अच्छी पैदावार के थे, खत्म हो गए, और उनके बाद अकाल के सात साल आए, जैसा यूसुफ ने कहा था, और पूरे देश में अकाल पड़ गया।
19 और मिस्र के सभी लोगों ने देखा कि मिस्र देश में अकाल शुरू हो गया है, और मिस्र के सभी लोगों ने अपने अनाज के भंडार खोल दिए क्योंकि अकाल उन पर हावी हो गया था।
20 और उन्होंने पाया कि उनके भंडार में जो भी खाना था, वह कीड़ों से भरा हुआ था और खाने लायक नहीं था, और पूरे देश में अकाल फैल गया, और मिस्र के सभी निवासी फिरौन के सामने आए और रोए, क्योंकि अकाल उन पर बहुत भारी था।
21 तब उन्होंने फिरौन से कहा, अपने दासों को खाना दे, फिर हम और हमारे बच्चे तेरी आंखों के सामने भूख से क्यों मरें?
22 फिरौन ने उनसे कहा, "तुम मुझसे क्यों रो रहे हो? क्या यूसुफ ने यह हुक्म नहीं दिया था कि सात साल की अच्छी पैदावार के दौरान अनाज अकाल के सालों के लिए जमा किया जाए? और तुमने उसकी बात क्यों नहीं मानी?"
23 और मिस्र के लोगों ने राजा को जवाब दिया, "हमारे मालिक, आपकी ज़िंदगी की कसम, आपके सेवकों ने यूसुफ की सारी आज्ञा का पालन किया है, और आपके सेवकों ने सात सालों की खुशहाली में अपने खेतों की सारी उपज इकट्ठा की और उसे आज तक स्टोर में रखा है।"
24 और जब तेरे सेवकों पर अकाल पड़ा, तो हमने अपने भंडार खोले, और देखा कि हमारी सारी उपज कीड़े-मकौड़ों से भर गई थी और खाने लायक नहीं थी।
25 जब राजा ने मिस्र के लोगों पर आई सारी मुसीबतों के बारे में सुना, तो वह अकाल की वजह से बहुत डर गया, और बहुत घबरा गया; और राजा ने मिस्र के लोगों से कहा, "तुम्हारे साथ यह सब हुआ है, इसलिए यूसुफ के पास जाओ, वह जो कुछ कहे, वही करो, उसकी आज्ञा मत तोड़ो।"
26 तब मिस्र के सब लोग यूसुफ के पास गए, और उससे कहा, "हमें खाना दो, तो हम तुम्हारे सामने भूख से क्यों मरें?" क्योंकि हमने सात साल में तुम्हारी आज्ञा के अनुसार अपनी उपज इकट्ठा की, और उसे जमा करके रखा, और हमारी यह हालत हो गई है।
27 जब यूसुफ ने मिस्र के लोगों की सारी बातें और उनके साथ जो हुआ था, वह सुना, तो यूसुफ ने अपनी सारी उपज खोलकर मिस्र के लोगों को बेच दी।
28 और सारे देश में अकाल पड़ा, और अकाल सब देशों में था, परन्तु मिस्र देश में बिक्री के लिए उपज थी।
29 और मिस्र के सभी निवासी अनाज खरीदने के लिए यूसुफ के पास आए, क्योंकि उन पर अकाल पड़ा था, और उनका सारा अनाज खराब हो गया था, और यूसुफ उसे मिस्र के सभी लोगों को रोज़ बेचता था।
30 और कनान देश के सभी रहने वालों और पलिश्तियों, और यरदन के पार के लोगों, और पूरब के लोगों और दूर-दूर के देशों के सभी शहरों ने सुना कि मिस्र में अनाज है, और वे सब अनाज खरीदने के लिए मिस्र आए, क्योंकि उन पर अकाल बहुत ज़्यादा था।
31 और यूसुफ ने अनाज के भंडार खोल दिए और उन पर अधिकारी नियुक्त कर दिए, और वे हर दिन खड़े होकर आने वाले सभी लोगों को अनाज बेचते थे।
32 और यूसुफ जानता था कि उसके भाई भी अनाज खरीदने के लिए मिस्र आएंगे, क्योंकि पूरी धरती पर अकाल पड़ा हुआ था।

इसलिए यूसुफ ने अपने सभी लोगों को आज्ञा दी कि वे पूरे मिस्र देश में यह ऐलान करवा दें,
33 राजा, उसके दूसरे और उनके बड़े आदमियों की यह मर्ज़ी है कि जो कोई मिस्र में अनाज खरीदना चाहे, वह अपने नौकरों को मिस्र खरीदने के लिए न भेजे, बल्कि अपने बेटों को भेजे, और कोई भी मिस्री या कनानी, जो मिस्र में अनाज खरीदकर किसी भी दुकान से आए, और जाकर उसे पूरे देश में बेचे, वह मारा जाए, क्योंकि कोई भी अपने घराने के गुज़ारे के अलावा कुछ नहीं खरीदेगा।
34 और जो कोई दो या तीन जानवरों को ले जाएगा, वह मारा जाएगा, क्योंकि एक आदमी को सिर्फ़ अपने जानवर को ले जाना चाहिए।
35 और यूसुफ ने मिस्र के फाटकों पर पहरेदार तैनात कर दिए, और उन्हें हुक्म दिया, "जो कोई अनाज खरीदने आए, उसे तब तक अंदर न आने देना जब तक उसका नाम, उसके पिता का नाम, और उसके पिता के पिता का नाम न लिख लिया जाए, और जो कुछ भी दिन में लिखा जाए, शाम को उनके नाम मेरे पास भेज देना ताकि मैं उनके नाम जान सकूँ।"
36 और यूसुफ ने पूरे मिस्र देश में अधिकारी नियुक्त किए, और उन्हें ये सब काम करने की आज्ञा दी।
37 और यूसुफ ने ये सब काम किए, और ये नियम बनाए, ताकि उसे पता रहे कि उसके भाई अनाज खरीदने के लिए मिस्र कब आएंगे; और यूसुफ के लोगों ने इन बातों और नियमों के अनुसार, जिनका हुक्म यूसुफ ने दिया था, मिस्र में रोज़ाना ऐलान करवाया।
38 और पूरब और पश्चिम देश के, और सारी धरती के रहने वालों ने उन नियमों और कानूनों के बारे में सुना जो यूसुफ ने मिस्र में बनाए थे, और धरती के कोने-कोने के रहने वाले आए और उन्होंने हर दिन मिस्र में अनाज खरीदा, और फिर चले गए।
39 और मिस्र के सभी अधिकारियों ने यूसुफ की आज्ञा के अनुसार काम किया। जो कोई अनाज खरीदने मिस्र आता था, दरबान उसके नाम और उसके पिता के नाम लिखकर रोज़ शाम को यूसुफ के सामने लाते थे।

अध्याय 51

1 और बाद में याकूब ने सुना कि मिस्र में अनाज है, और उसने अपने बेटों को अनाज खरीदने के लिए मिस्र जाने के लिए कहा, क्योंकि उन पर भी अकाल पड़ा था, और उसने अपने बेटों को यह कहकर बुलाया,
2 देखो, मैंने सुना है कि मिस्र में अनाज है, और दुनिया के सभी लोग उसे खरीदने के लिए वहाँ जाते हैं, तो अब तुम पूरी दुनिया के सामने खुश क्यों दिखते हो? तुम भी मिस्र जाओ और वहाँ आने वालों के बीच हमारे लिए थोड़ा अनाज खरीदो, ताकि हम मर न जाएँ।
3 और याकूब के बेटों ने अपने पिता की बात मानकर मिस्र जाने के लिए निकल पड़े, ताकि वहाँ आने वाले बाकी लोगों के साथ अनाज खरीद सकें।
4 और उनके पिता याकूब ने उन्हें आज्ञा दी, "जब तुम शहर में आओ, तो देश के निवासियों के कारण एक ही फाटक से एक साथ प्रवेश न करना।"
5 और याकूब के बेटे मिस्र चले गए, और याकूब के बेटों ने अपने पिता की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया, और याकूब ने बिन्यामीन को नहीं भेजा, क्योंकि उसने सोचा, कहीं ऐसा न हो कि उसके भाई की तरह रास्ते में उसके साथ भी कोई दुर्घटना हो जाए; और याकूब के दस बेटे चले गए।
6 और जब याकूब के बेटे रास्ते में जा रहे थे, तो उन्हें यूसुफ के साथ किए अपने किए पर पछतावा हुआ, और वे आपस में कहने लगे, "हम जानते हैं कि हमारा भाई यूसुफ मिस्र चला गया है, और अब हम जहाँ भी जाएँगे, उसे ढूँढ़ेंगे, और अगर वह मिल गया तो हम उसे उसके मालिक से फिरौती लेकर ले लेंगे, और अगर नहीं मिला तो ज़बरदस्ती ले लेंगे, और उसके लिए मर जाएँगे।"
7 और याकूब के बेटों ने यह बात मान ली और यूसुफ के लिए हिम्मत जुटाई, ताकि उसे उसके मालिक के हाथ से छुड़ा सकें। और याकूब के बेटे मिस्र चले गए; और जब वे मिस्र के पास पहुँचे तो एक-दूसरे से अलग हो गए, और वे मिस्र के दस फाटकों से होकर आए, और दरबानों ने उसी दिन उनके नाम लिखे, और शाम को उन्हें यूसुफ के पास ले आए।
8 और यूसुफ ने शहर के दरबानों के हाथ से नाम पढ़े, और पाया कि उसके भाई शहर के दस दरवाज़ों से अंदर आ चुके हैं, और यूसुफ ने उसी समय हुक्म दिया कि पूरे मिस्र देश में यह ऐलान किया जाए, और कहा,
9 हे सब दुकानदारों, जाओ, अनाज की सारी दुकानें बंद कर दो, और सिर्फ़ एक दुकान खुली रहने दो, ताकि जो लोग आएं वे उससे खरीद सकें।
10 और उस समय यूसुफ के सब सरदारों ने वैसा ही किया, और सब भण्डार बन्द कर दिए, और केवल एक भण्डार खुला छोड़ दिया।
11 और यूसुफ ने अपने भाइयों के लिखे हुए नाम उसे दिए जो खुले भंडार का अधिकारी था, और उससे कहा, "जो कोई भी तुम्हारे पास अनाज खरीदने आए, उसका नाम पूछो, और जब इन नामों वाले लोग तुम्हारे सामने आएं, तो उन्हें पकड़कर भेज दो," और उन्होंने ऐसा ही किया।
12 और जब याकूब के बेटे शहर में आए, तो वे अनाज खरीदने से पहले यूसुफ को ढूंढने के लिए शहर में इकट्ठा हुए।
13 और वे वेश्याओं की दीवारों के पास गए, और उन्होंने यूसुफ को वेश्याओं की दीवारों में तीन दिन तक ढूंढा, क्योंकि उन्हें लगा कि यूसुफ वेश्याओं की दीवारों में आएगा, क्योंकि यूसुफ बहुत सुंदर और सुंदर था, और याकूब के बेटों ने यूसुफ को तीन दिन तक ढूंढा, और वे उसे नहीं ढूंढ पाए।
14 और जो आदमी खुले भंडार का काम देखता था, उसने उन नामों को ढूँढ़ा जो यूसुफ ने उसे बताए थे, लेकिन उसे वे नहीं मिले।
15 और उसने यूसुफ के पास यह कहला भेजा, "तीन दिन बीत गए हैं, और जिन आदमियों के नाम तूने मुझे बताए थे, वे नहीं आए हैं; और यूसुफ ने अपने नौकरों को पूरे मिस्र में उन आदमियों को ढूंढ़ने और उन्हें यूसुफ के सामने लाने के लिए भेजा।"
16 और यूसुफ के सेवक मिस्र में गए, लेकिन उन्हें नहीं ढूंढ पाए, और गोशेन गए, लेकिन वे वहां नहीं थे, और फिर रामेसेस शहर गए, लेकिन उन्हें नहीं ढूंढ पाए।
17 और यूसुफ ने अपने भाइयों को ढूंढने के लिए सोलह नौकर भेजे, और वे जाकर शहर के चारों कोनों में फैल गए, और चार नौकर वेश्याओं के घर में गए, और उन्होंने वहाँ दस आदमियों को अपने भाई को ढूंढते हुए पाया।

18 और वे चार आदमी उन्हें पकड़कर उसके सामने ले आए, और उन्होंने ज़मीन पर झुककर उसे प्रणाम किया, और यूसुफ अपने मंदिर में अपने सिंहासन पर बैठा था, उसने शाही कपड़े पहने हुए थे, और उसके सिर पर सोने का एक बड़ा ताज था, और सभी ताकतवर आदमी उसके चारों ओर बैठे थे।
19 और याकूब के बेटों ने यूसुफ को देखा, और उसका रूप, सुंदरता और चेहरे की शान उनकी आँखों में अद्भुत लगी, और वे फिर से ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम करने लगे।
20 और यूसुफ ने अपने भाइयों को देखा, और वह उन्हें पहचान गया, पर वे उसे नहीं पहचान पाए, क्योंकि यूसुफ उनकी नज़र में बहुत बड़ा था, इसलिए वे उसे नहीं पहचान पाए।
21 तब यूसुफ ने उनसे पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" सबने जवाब दिया, "तेरे नौकर कनान देश से अनाज खरीदने आए हैं, क्योंकि पूरी धरती पर अकाल पड़ा है, और तेरे नौकरों ने सुना है कि मिस्र में अनाज है, इसलिए वे दूसरे लोगों के बीच अनाज खरीदने आए हैं ताकि अपना गुज़ारा कर सकें।"
22 तब यूसुफ ने उनसे कहा, "अगर तुम जैसा कह रहे हो, खरीदने आए हो, तो शहर के दस फाटकों से क्यों आए हो? हो सकता है कि तुम देश में जासूसी करने आए हो।"
23 तब सबने एक साथ यूसुफ को जवाब दिया, "ऐसा नहीं है मेरे मालिक, हम सही कह रहे हैं, आपके नौकर जासूस नहीं हैं, बल्कि हम अनाज खरीदने आए हैं, क्योंकि आपके नौकर सब भाई हैं, कनान देश में एक ही आदमी के बेटे हैं, और हमारे पिता ने हमें हुक्म दिया था, कि जब तुम शहर में आओ तो देश के रहने वालों की वजह से एक ही गेट से अंदर मत जाना।"
24 तब यूसुफ ने फिर उन्हें उत्तर दिया, "यही बात मैंने तुमसे कही थी, तुम देश में जासूसी करने आए हो, इसलिए तुम सब शहर के दस फाटकों से होकर आए हो; तुम देश की नंगी हालत देखने आए हो।"
25 ज़रूर, जो कोई अनाज खरीदने आता है, वह अपने रास्ते चला जाता है, और तुम तीन दिन से उस देश में हो, और तुम उन वेश्याओं की दीवारों के अंदर क्या कर रहे हो, जहाँ तुम इन तीन दिनों से हो? ज़रूर जासूसों को ऐसी ही चीज़ें पसंद होती हैं।
26 और उन्होंने यूसुफ से कहा, "हमारे मालिक, ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि हम बारह भाई हैं, हमारे पिता याकूब के बेटे, जो कनान देश में रहते हैं, इसहाक का बेटा, अब्राहम का बेटा, जो हिब्रू था, और देखो, सबसे छोटा आज हमारे पिता के पास कनान देश में है, और एक नहीं है, क्योंकि वह हमसे खो गया था, और हमने सोचा कि शायद वह इसी देश में हो, इसलिए हम उसे पूरे देश में ढूंढ रहे हैं, और उसे ढूंढने के लिए वेश्याओं के घरों तक भी आए हैं।"
27 तब यूसुफ ने उनसे कहा, "तो क्या तुम उसे पूरी धरती पर ढूंढते रहे, कि सिर्फ़ मिस्र ही बचा है जहां तुम उसे ढूंढ सको? और तुम्हारा भाई मिस्र में रहते हुए भी वेश्याओं के घरों में क्या करे? क्या तुमने यह नहीं कहा कि तुम अब्राहम के बेटे इसहाक के बेटों में से हो, तो याकूब के बेटे वेश्याओं के घरों में क्या करेंगे?"
28 और उन्होंने उससे कहा, "क्योंकि हमने सुना था कि इश्माएलियों ने उसे हमसे चुरा लिया है, और हमें बताया गया था कि उन्होंने उसे मिस्र में बेच दिया है, और तुम्हारा नौकर, हमारा भाई, बहुत सुंदर और सुंदर है, इसलिए हमने सोचा कि वह ज़रूर वेश्याओं के घरों में होगा, इसलिए तुम्हारे नौकर उसे ढूंढने और उसके लिए फिरौती देने वहाँ गए थे।"
29 यूसुफ ने फिर भी उन्हें जवाब दिया, "तुम लोग सच-सच झूठ बोलते हो कि तुम अब्राहम के बेटे हो; फिरौन के जीते जी तुम जासूस हो, इसलिए तुम वेश्याओं के घरों में गए हो ताकि कोई तुम्हें पहचान न सके।"
30 तब यूसुफ ने उनसे कहा, "अगर वह तुम्हें मिल जाए और उसका मालिक तुमसे ज़्यादा कीमत मांगे, तो क्या तुम उसे दे दोगे?" उन्होंने कहा, "दे दी जाएगी।"
31 उसने उनसे कहा, "अगर उसका मालिक उसे ज़्यादा कीमत पर देने को राज़ी न हो, तो तुम उसके लिए उसके साथ क्या करोगे?" उन्होंने जवाब दिया, "अगर वह उसे हमें नहीं देगा तो हम उसे मार डालेंगे और अपने भाई को लेकर चले जाएँगे।"
32 तब यूसुफ ने उनसे कहा, यही बात मैंने तुमसे कही है; तुम जासूस हो, क्योंकि तुम देश के रहने वालों को मारने आए हो, क्योंकि हमने सुना है कि तुम्हारे दो भाइयों ने तुम्हारी बहन के कारण कनान देश के शेकेम के सभी रहने वालों को मार डाला था, और अब तुम अपने भाई के कारण मिस्र में भी ऐसा ही करने आए हो।
33 मैं सिर्फ़ इसी से जानूँगा कि तुम सच्चे आदमी हो; अगर तुम अपने में से किसी को भेजोगे कि वह तुम्हारे सबसे छोटे भाई को तुम्हारे पिता के पास से ले आए, और उसे यहाँ मेरे पास ले आए, और ऐसा करने से मैं जान जाऊँगा कि तुम सही हो।
34 तब यूसुफ ने अपने सत्तर वीर सैनिकों को बुलाकर कहा, इन सैनिकों को पकड़कर जेल में ले आओ।
35 और ताकतवर आदमियों ने उन दस आदमियों को पकड़कर जेल में डाल दिया, और वे तीन दिन जेल में रहे।
36 और तीसरे दिन यूसुफ ने उन्हें वार्ड से बाहर निकलवाया, और उनसे कहा, "अगर तुम सच्चे आदमी हो, तो यह करो, ताकि तुम ज़िंदा रह सको। तुम्हारे भाइयों में से एक वार्ड में बंद रहेगा, जब तुम अपने घराने के लिए अनाज लेकर कनान देश जाओगे, और अपने सबसे छोटे भाई को ले आओगे, और उसे यहाँ मेरे पास ले आना, ताकि मुझे पता चल जाए कि जब तुम यह काम करोगे तो तुम सच्चे आदमी हो।"
37 तब यूसुफ उनके पास से निकलकर कमरे में आया, और फूट-फूट कर रोया, क्योंकि उसे उन पर तरस आ रहा था, और उसने अपना चेहरा धोया, और फिर उनके पास लौटा, और शिमोन को उनसे अलग करके उसे बांधने का हुक्म दिया, लेकिन शिमोन ऐसा करने को तैयार नहीं था, क्योंकि वह बहुत ताकतवर आदमी था और वे उसे बांध नहीं सकते थे।
38 तब यूसुफ ने अपने वीर सैनिकों को बुलाया, और सत्तर वीर सैनिक हाथों में तलवारें लिए उसके सामने आए, और याकूब के बेटे उनसे डर गए।
39 तब यूसुफ ने उनसे कहा, इस आदमी को पकड़कर जेल में डाल दो, जब तक इसके भाई इसके पास न आ जाएं। यूसुफ के बहादुर आदमी जल्दी से गए और सबने शिमोन को बांधने के लिए पकड़ लिया। शिमोन ने बहुत ज़ोर से और भयानक चीख मारी और उसकी चीख दूर तक सुनाई दी।
40 और यूसुफ के सभी बहादुर आदमी चीख की आवाज़ सुनकर डर गए, और मुँह के बल गिर पड़े, और बहुत डरकर भाग गए।
41 और यूसुफ के साथ के सभी आदमी भाग गए, क्योंकि वे अपनी जान के डर से बहुत डर गए थे, और सिर्फ़ यूसुफ और उसका बेटा मनश्शे ही वहाँ रह गए, और यूसुफ के बेटे मनश्शे ने शिमोन की ताकत देखी, और वह बहुत गुस्से में था।

42 तब यूसुफ का बेटा मनश्शे शिमोन के पास गया, और मनश्शे ने शिमोन की गर्दन के पिछले हिस्से पर ज़ोर से मुक्का मारा, और शिमोन गुस्से से शांत हो गया।
43 और मनश्शे ने शिमोन को पकड़ लिया और उसे ज़ोर से पकड़कर बाँध दिया और उसे कैदखाने में ले गया, और याकूब के सभी बेटे उस जवान की हरकत देखकर हैरान रह गए।
44 शिमोन ने अपने भाइयों से कहा, "तुम में से कोई यह न कहे कि यह किसी मिस्री की मार है, बल्कि यह मेरे पिता के घराने की मार है।"
45 इसके बाद यूसुफ ने गोदाम के अधिकारी को बुलाने का आदेश दिया, ताकि वह उनके बोरे में उतना अनाज भर दे जितना वे ले सकें, और हर आदमी के पैसे उसके बोरे में वापस रख दे, और उन्हें रास्ते के लिए सामान दे दे, और उसने उनके साथ ऐसा ही किया।
46 और यूसुफ ने उन्हें हुक्म दिया, "सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे हुक्म को तोड़कर अपने भाई को ले आओ, जैसा मैंने तुमसे कहा है। जब तुम अपने भाई को मेरे पास यहाँ ले आओगे, तब मुझे पता चल जाएगा कि तुम सच्चे आदमी हो, और तुम इस देश में व्यापार करोगे, और मैं तुम्हें तुम्हारा भाई लौटा दूँगा, और तुम शांति से अपने पिता के पास लौट जाओगे।"
47 तब सब ने उत्तर दिया, कि जैसा हमारा प्रभु कहता है, हम वैसा ही करेंगे, और वे भूमि पर गिरकर उसके आगे दण्डवत् करने लगे।
48 और हर आदमी ने अपना अनाज अपने गधे पर लादा, और वे कनान देश में अपने पिता के पास जाने को निकल पड़े; और वे सराय में पहुँचे और लेवी ने अपने गधे को चारा देने के लिए अपनी बोरी फैलाई, और देखा कि उसका पूरा पैसा अभी भी उसकी बोरी में है।
49 और वह आदमी बहुत डर गया, और उसने अपने भाइयों से कहा, मेरा पैसा वापस मिल गया है, और देखो, वह मेरे बोरे में है, और वे आदमी बहुत डर गए, और कहने लगे, यह क्या है जो भगवान ने हमारे साथ किया है?
50 और सब कहने लगे, "और हमारे पुरखों, अब्राहम, इसहाक और याकूब पर यहोवा की जो मेहरबानी थी, वह कहाँ रही? कि आज यहोवा ने हमें मिस्र के राजा के हाथ में सौंप दिया है, ताकि वह हमारे खिलाफ साज़िश करे?"
51 तब यहूदा ने उनसे कहा, "हम अपने भाई को बेचकर अपने परमेश्वर यहोवा के सामने पापी हैं, फिर तुम क्यों कहते हो कि हमारे पुरखों पर यहोवा की दया कहाँ रही?"
52 तब रूबेन ने उनसे कहा, "मैंने तुमसे कहा था, उस लड़के के खिलाफ पाप मत करो, और तुम मेरी बात भी नहीं सुनते? अब परमेश्वर उसे हमसे चाहता है, और तुम यह कैसे कह सकते हो, कि जब तुमने यहोवा के खिलाफ पाप किया है, तो हमारे पुरखों के साथ यहोवा की दया कहाँ रही?"
53 और वे रात भर वहीं रुके, और सुबह जल्दी उठकर अपने गधों पर अनाज लादकर, उन्हें आगे ले जाकर कनान देश में अपने पिता के घर पहुँचे।
54 और याकूब और उसका परिवार अपने बेटों से मिलने के लिए बाहर गया, और याकूब ने देखा कि उनका भाई शिमोन उनके साथ नहीं है, और याकूब ने अपने बेटों से कहा, तुम्हारा भाई शिमोन कहाँ है, जिसे मैं नहीं देख रहा हूँ? और उसके बेटों ने उसे मिस्र में जो कुछ भी हुआ था, वह सब बताया।

अध्याय 52

1 और वे अपने घर में गए, और हर आदमी ने अपना बोरा खोला और देखा कि हर आदमी के पैसे का बंडल उसमें था, जिससे वे और उनके पिता बहुत डर गए।
2 तब याकूब ने उनसे कहा, "तुमने मेरे साथ यह क्या किया है? मैंने तुम्हारे भाई यूसुफ को तुम्हारा हालचाल पूछने के लिए भेजा था और तुमने मुझसे कहा कि एक जंगली जानवर ने उसे खा लिया।"
3 और शिमोन तुम्हारे साथ खाना खरीदने गया था और तुम कहते हो कि मिस्र के राजा ने उसे जेल में डाल दिया है, और तुम बिन्यामीन को भी ले जाकर उसे भी मार डालना चाहते हो, और बिन्यामीन और उसके भाई यूसुफ की वजह से मेरे बूढ़े बाल दुख के साथ कब्र में ले जाना चाहते हो।
4 इसलिए अब मेरा बेटा तुम्हारे साथ नीचे नहीं जाएगा, क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह अकेला रह गया है, और जिस रास्ते से तुम जाओगे, उस रास्ते से उस पर भी मुसीबत आ सकती है, जैसी उसके भाई पर आई थी।
5 तब रूबेन ने अपने पिता से कहा, "अगर मैं तुम्हारे बेटे को लाकर तुम्हारे सामने न रखूं, तो तुम मेरे दोनों बेटों को मार डालोगे।" याकूब ने अपने बेटों से कहा, "तुम यहीं रहो और मिस्र मत जाओ, क्योंकि मेरा बेटा तुम्हारे साथ मिस्र नहीं जाएगा, और न ही अपने भाई की तरह मरेगा।"
6 तब यहूदा ने उनसे कहा, जब तक अनाज खत्म न हो जाए, तब तक तुम उससे दूर रहो, और तब वह कहेगा, अपने भाई को ले जाओ, जब वह अपनी और अपने घराने की जान को अकाल से खतरे में पाएगा।
7 उन दिनों पूरे देश में बहुत ज़्यादा अकाल पड़ा, और दुनिया के सभी लोग खाना खरीदने के लिए मिस्र आए, क्योंकि उनके बीच बहुत ज़्यादा अकाल पड़ा था, और याकूब के बेटे कनान में एक साल और दो महीने तक रहे जब तक उनका अनाज खत्म नहीं हो गया।
8 और जब उनका अनाज खत्म हो गया, तो याकूब का पूरा घराना भूख से परेशान हो गया, और याकूब के बेटों के सभी बच्चे इकट्ठा होकर याकूब के पास आए, और सबने उसे घेर लिया, और उससे कहा, हमें रोटी दो, और हम सब तुम्हारे सामने भूख से क्यों मरें?
9 याकूब ने अपने बेटे के बच्चों की बातें सुनीं, और वह फूट-फूट कर रोया, और उसे उन पर तरस आया, और याकूब ने अपने बेटों को बुलाया, और वे सब आकर उसके सामने बैठ गए।
10 तब याकूब ने उनसे कहा, "क्या तुमने नहीं देखा कि आज तुम्हारे बच्चे मेरे लिए रो रहे हैं और कह रहे हैं, 'हमें रोटी दो, पर है नहीं?' इसलिए अब वापस जाओ और हमारे लिए थोड़ा खाना खरीदो।"
11 यहूदा ने अपने पिता से कहा, "अगर आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजेंगे तो हम नीचे जाकर आपके लिए अनाज खरीद लेंगे, और अगर आप उसे नहीं भेजेंगे तो हम नीचे नहीं जाएंगे, क्योंकि मिस्र के राजा ने हमें खास तौर पर यह कहकर मना किया है, "अगर तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो तो तुम मुझसे नहीं मिल पाओगे, क्योंकि मिस्र का राजा एक ताकतवर और

शक्तिशाली राजा है, और देखो, अगर हम अपने भाई के बिना उसके पास जाएंगे तो हम सब मारे जाएंगे।"
12 क्या तुम नहीं जानते और क्या तुमने नहीं सुना कि यह राजा बहुत ताकतवर और समझदार है, और पूरी धरती पर उसके जैसा कोई नहीं है? देखो, हमने धरती के सभी राजाओं को देखा है और हमने उस राजा, मिस्र के राजा जैसा कोई नहीं देखा; ज़रूर धरती के सभी राजाओं में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक से बड़ा कोई नहीं है, फिर भी मिस्र का राजा उससे बड़ा और ताकतवर है, और अबीमेलेक की तुलना सिर्फ़ उसके किसी अफ़सर से की जा सकती है।
13 हे पिता, तुमने उसका महल और उसकी राजगद्दी, और उसके सामने खड़े उसके सभी सेवकों को नहीं देखा; तुमने उस राजा को उसकी राजगद्दी पर उसकी शान और शाही रूप में, उसके शाही कपड़े पहने और सिर पर सोने का बड़ा ताज पहने नहीं देखा; तुमने वह सम्मान और महिमा नहीं देखी जो परमेश्वर ने उसे दी है, क्योंकि पूरी धरती पर उसके जैसा कोई नहीं है।
14 हे पिता, तूने वह बुद्धि, समझ और ज्ञान नहीं देखा जो परमेश्वर ने उसके हृदय में दिया है, और न ही उसकी मीठी आवाज़ सुनी है जब उसने हमसे बात की थी।
15 हे पिता, हम नहीं जानते कि उसे हमारे नाम और हमारी सारी बातें किसने बताईं, फिर भी उसने तुम्हारे बारे में पूछा, कि क्या तुम्हारे पिता अभी भी जीवित हैं और क्या वे कुशल से हैं?
16 तुमने मिस्र के राज के कामों को उसके मालिक फिरौन से पूछे बिना कंट्रोल करते हुए नहीं देखा; तुमने वह डर और खौफ नहीं देखा जो उसने सभी मिस्रियों पर डाला था।
17 और जब हम उसके पास से गए, तो हमने मिस्र के साथ भी वैसा ही करने की धमकी दी जैसा एमोरियों के बाकी शहरों के साथ किया था, और हम उसकी उन सभी बातों से बहुत ज़्यादा नाराज़ हुए जो उसने हमारे बारे में जासूसों के तौर पर कही थीं, और अब जब हम फिर से उसके सामने आएंगे तो उसका डर हम सब पर छा जाएगा, और हममें से कोई भी उससे न तो छोटी बात कह पाएगा और न ही बड़ी।
18 इसलिए अब हे पिता, उस लड़के को हमारे साथ भेज दो, और हम नीचे जाकर तुम्हारे लिए खाना खरीदकर खा लेंगे, और भूखे नहीं मरेंगे। याकूब ने कहा, तुमने मेरे साथ इतना बुरा क्यों किया कि राजा से कहा कि तुम्हारा एक भाई भी है? तुमने मेरे साथ यह क्या किया है?
19 तब यहूदा ने अपने पिता याकूब से कहा, "लड़के को मेरी देखभाल में दे दो, और हम मिस्र जाकर अनाज खरीदेंगे, और फिर लौट आएंगे। और जब हम लौटेंगे, तो अगर लड़का हमारे साथ न हो, तो हमेशा के लिए तुम्हारी गलती मुझे भुगतने दो।"
20 क्या तुमने हमारे सभी बच्चों को भूख से रोते हुए देखा है और तुम्हारे हाथ में उन्हें संतुष्ट करने की कोई शक्ति नहीं है? अब उन पर दया करो और हमारे भाई को हमारे साथ भेज दो और हम चलेंगे।
21 क्योंकि जब तुम कहते हो कि मिस्र का राजा तुम्हारे बेटे को ले जाएगा, तो हमारे पुरखों पर यहोवा की दया तुम पर कैसे ज़ाहिर होगी? यहोवा के जीवन की शपथ, मैं उसे तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक उसे लाकर तुम्हारे सामने न रख दूं; लेकिन हमारे लिए यहोवा से प्रार्थना करो, कि वह हम पर दया करे, ताकि मिस्र के राजा और उसके आदमियों के सामने हमारा स्वागत हो, क्योंकि अगर हमने देर न की होती, तो हम ज़रूर तुम्हारे बेटे के साथ दूसरी बार लौटते।
22 तब याकूब ने अपने बेटों से कहा, "मुझे प्रभु परमेश्वर पर भरोसा है कि वह तुम्हें बचाएगा और मिस्र के राजा और उसके सभी आदमियों की नज़र में तुम्हें कृपा देगा।"
23 इसलिए अब उठो और उस आदमी के पास जाओ, और अपने हाथों में उसके लिए एक तोहफ़ा लो जो देश में मिल सकता है और उसे उसके सामने लाओ, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम पर उसके सामने दया करे कि वह तुम्हारे भाइयों बिन्यामीन और शिमोन को तुम्हारे साथ भेज दे।
24 तब सब लोग उठे, और अपने भाई बिन्यामीन को पकड़कर देश की सबसे अच्छी चीज़ों में से एक बड़ा तोहफ़ा लिया, और दुगनी चाँदी भी ली।
25 और याकूब ने अपने बेटों को बिन्यामीन के बारे में सख्त आदेश दिया, और कहा, "जिस रास्ते पर तुम जाओ, उस पर ध्यान रखना, और रास्ते में या मिस्र में उससे अलग मत होना।"
26 तब याकूब अपने बेटों के पास से उठा और अपने हाथ फैलाकर अपने बेटों के लिए यहोवा से प्रार्थना की, और कहा, हे स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा, हमारे पिता अब्राहम के साथ किए अपने करार को याद कर, मेरे पिता इसहाक के साथ किए अपने करार को याद कर, और मेरे बेटों पर दया कर और उन्हें मिस्र के राजा के हाथ में न सौंप; हे परमेश्वर, अपनी दया के कारण ऐसा कर, और मेरे सभी बच्चों को छुड़ा ले, और उन्हें मिस्र के अधिकार से छुड़ा, और उनके दो भाइयों को भेज दे।
27 और याकूब के बेटों की सभी पत्नियों और उनके बच्चों ने अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाईं और वे सब यहोवा के सामने रोए, और उससे गिड़गिड़ाकर कहा कि वह उनके पिताओं को मिस्र के राजा के हाथ से छुड़ाए।
28 और याकूब ने मिस्र के राजा के लिए एक रिकॉर्ड लिखा और उसे यहूदा और उसके बेटों के हाथ में मिस्र के राजा के लिए दिया, जिसमें लिखा था,
29 तेरे सेवक याकूब की ओर से, जो इब्रानी अब्राहम के बेटे इसहाक का बेटा है, जो परमेश्वर का राजकुमार है, शक्तिशाली और बुद्धिमान राजा, रहस्यों को खोलने वाला, मिस्र का राजा, तुम्हें नमस्कार।
30 मेरे मालिक, मिस्र के राजा, यह जान लो कि कनान देश में हम पर बहुत ज़्यादा अकाल पड़ा था, और मैंने अपने बेटों को तुम्हारे पास भेजा था कि वे हमारे गुज़ारे के लिए थोड़ा सा खाना खरीद लें।
31 क्योंकि मेरे बेटों ने मुझे घेर लिया है और मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, इसलिए अपनी आँखों से देख नहीं सकता, क्योंकि उम्र के कारण मेरी आँखें बहुत भारी हो गई हैं, और मैं अपने बेटे यूसुफ के लिए, जो मुझसे बिछड़ गया था, रोज़ रोता रहता हूँ, और मैंने अपने बेटों को हुक्म दिया था कि जब वे मिस्र आएँ, तो उस देश के रहने वालों की वजह से शहर के फाटकों से अंदर न जाएँ।
32 और मैंने उन्हें यह भी हुक्म दिया कि वे मेरे बेटे यूसुफ को ढूंढने के लिए मिस्र में घूमें, शायद वे उसे वहाँ पा लें, और उन्होंने ऐसा ही किया, और तुमने उन्हें देश के जासूस समझा।
33 क्या हमने तुम्हारे बारे में नहीं सुना कि तुमने फिरौन के सपने का मतलब बताया और उससे सच-सच बात की? तो फिर तुम अपनी समझ से यह कैसे नहीं जानते कि मेरे बेटे जासूस हैं या नहीं?

34 इसलिए अब, मेरे मालिक और राजा, देखो, मैंने अपने बेटे को तुम्हारे आगे भेज दिया है, जैसा तुमने मेरे बेटों से कहा था; मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि जब तक वह अपने भाइयों के साथ शांति से मेरे पास वापस न आ जाए, तब तक उस पर नज़र रखना।
35 क्योंकि क्या तुम नहीं जानते, या तुमने नहीं सुना कि हमारे परमेश्वर ने फिरौन के साथ क्या किया जब उसने मेरी माँ सारा को ले लिया, और उसके कारण उसने पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के साथ क्या किया, और हमारे पिता अब्राहम ने एलाम के नौ राजाओं के साथ क्या किया, कि उसने अपने साथ के कुछ आदमियों के साथ उन सभी को कैसे मार डाला?
36 और मेरे दोनों बेटों शिमोन और लेवी ने एमोरियों के आठ शहरों के साथ क्या किया, कैसे उन्होंने अपनी बहन दीना के कारण उन्हें नष्ट कर दिया?
37 और अपने भाई बिन्यामीन के कारण भी उन्होंने अपने भाई यूसुफ के खोने पर खुद को दिलासा दिया; तो जब वे देखेंगे कि उसके कारण कोई जाति उन पर हावी हो रही है, तो वे उसके लिए क्या करेंगे?
38 हे मिस्र के राजा, क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर की शक्ति हमारे साथ है, और परमेश्वर हमेशा हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है और हमें हर समय नहीं छोड़ता?
39 और जब मेरे बेटों ने मुझे बताया कि तुमने उनके साथ क्या किया, तो मैंने तुम्हारे लिए यहोवा को नहीं पुकारा, क्योंकि तब तुम अपने आदमियों के साथ मेरे बेटे बिन्यामीन के आने से पहले ही खत्म हो जाते। लेकिन मैंने सोचा कि क्योंकि मेरा बेटा शिमोन तुम्हारे घर में है, तो शायद तुम उसके साथ अच्छा बर्ताव करोगे, इसलिए मैंने तुम्हारे साथ ऐसा नहीं किया।
40 इसलिए अब देखो, मेरा बेटा बिन्यामीन मेरे बेटों के साथ तुम्हारे पास आ रहा है, उस पर ध्यान दो और उस पर अपनी नज़र रखो, और तब परमेश्वर अपनी नज़र तुम पर और तुम्हारे पूरे राज्य पर रखेगा।
41 अब मैंने तुम्हें अपने दिल की सारी बातें बता दी हैं, और देखो, मेरे बेटे अपने भाई के साथ तुम्हारे पास आ रहे हैं, उनके लिए पूरी धरती का जायज़ा लो और उन्हें उनके भाइयों के पास शांति से वापस भेज दो।
42 और याकूब ने यह पत्र अपने बेटों को यहूदा के हवाले कर दिया, ताकि वे इसे मिस्र के राजा को दे सकें।

अध्याय 53

1 तब याकूब के बेटे उठे और बिन्यामीन और सारा तोहफ़ा लेकर मिस्र में आए और यूसुफ के सामने खड़े हुए।
2 और यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को उनके साथ देखा, और उन्हें सलाम किया, और वे लोग यूसुफ के घर आए।
3 और यूसुफ ने अपने घर के मैनेजर को हुक्म दिया कि अपने भाइयों को खाने को दे, और उसने वैसा ही किया।
4 दोपहर के समय यूसुफ ने उन आदमियों को बिन्यामीन के साथ अपने पास बुलाया। उन आदमियों ने यूसुफ के घर के सुपरिटेंडेंट को उस चाँदी के बारे में बताया जो उनके बोरों में वापस आई थी। उसने उनसे कहा, "तुम्हारा भला होगा, डरो मत।" फिर वह उनके भाई शिमोन को उनके पास ले आया।
5 शिमोन ने अपने भाइयों से कहा, "मिस्र के मालिक ने मुझ पर बहुत मेहरबानी की है, उसने मुझे बांधकर नहीं रखा, जैसा तुमने अपनी आँखों से देखा, क्योंकि जब तुम शहर से बाहर गए तो उसने मुझे आज़ाद कर दिया और अपने घर में मेरे साथ मेहरबानी की।"
6 तब यहूदा ने बिन्यामीन का हाथ पकड़ा, और वे यूसुफ के सामने आए, और ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम किया।
7 तब उन आदमियों ने वह तोहफ़ा यूसुफ को दिया और वे सब उसके सामने बैठ गए, और यूसुफ ने उनसे पूछा, "तुम्हारे बच्चे ठीक हैं, तुम्हारे बूढ़े पिता ठीक हैं?" उन्होंने कहा, "ठीक हैं।" तब यहूदा ने वह कागज़ात लिया जो याकूब ने भेजा था और यूसुफ के हाथ में दे दिया।
8 और यूसुफ ने चिट्ठी पढ़ी और अपने पिता की लिखी हुई बात जान ली, और उसे रोने का मन हुआ, इसलिए वह अंदर के कमरे में गया और खूब रोया; और फिर बाहर चला गया।
9 और उसने अपनी आँखें उठाकर अपने भाई बिन्यामीन को देखा, और कहा, क्या यह तुम्हारा भाई है जिसके बारे में तुमने मुझसे बात की थी? और बिन्यामीन यूसुफ के पास गया, और यूसुफ ने अपना हाथ उसके सिर पर रखा और उससे कहा, मेरे बेटे, परमेश्वर तुम पर दया करे।
10 और जब यूसुफ ने अपने भाई को, जो उसकी माँ का बेटा था, देखा, तो उसे फिर से रोने का मन हुआ, और वह कमरे में गया, और वहाँ रोया, और अपना चेहरा धोया, और बाहर जाकर रोना बंद कर दिया, और कहा, खाना तैयार करो।
11 और यूसुफ के पास एक प्याला था जिससे वह पीता था, और वह चाँदी का बना था, जिस पर गोमेद और मोती जड़े हुए थे, और यूसुफ ने अपने भाइयों के देखते हुए प्याले पर मारा, जब वे उसके साथ खाने के लिए बैठे थे।
12 तब यूसुफ ने उन आदमियों से कहा, "मैं इस प्याले से जानता हूँ कि जेठा रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार और जबूलून एक ही माँ के बच्चे हैं, इसलिए तुम लोग अपने-अपने खानदान के हिसाब से बैठकर खाना खाओ।"
13 और उसने दूसरों को भी उनके जन्म के हिसाब से रखा, और कहा, मैं जानता हूँ कि तुम्हारे इस सबसे छोटे भाई का कोई भाई नहीं है, और मेरा भी कोई भाई नहीं है, इसलिए वह मेरे साथ खाना खाने बैठेगा।
14 और बिन्यामीन यूसुफ के सामने गया और सिंहासन पर बैठ गया, और उन आदमियों ने यूसुफ के काम देखे, और वे उनसे हैरान हो गए; और आदमियों ने उस समय यूसुफ के साथ खाया-पिया, और फिर उसने उन्हें तोहफ़े दिए, और यूसुफ ने बिन्यामीन को एक तोहफ़ा दिया, और मनश्शे और एप्रैम ने अपने पिता के काम देखे, और उन्होंने भी उसे तोहफ़े दिए, और ओसनाथ ने उसे एक तोहफ़ा दिया, और वे बिन्यामीन के हाथ में पाँच तोहफ़े थे।
15 और यूसुफ उन्हें पीने के लिए शराब लाया, पर उन्होंने पीना नहीं चाहा, और कहा, "जिस दिन से यूसुफ खो गया है, उस दिन से हमने न तो शराब पी है, और न ही कोई स्वादिष्ट खाना खाया है।"
16 और यूसुफ ने उनसे कसम खाई, और उन पर बहुत दबाव डाला, और उस दिन उन्होंने उसके साथ खूब शराब पी, और बाद में यूसुफ अपने भाई बिन्यामीन से बात करने के लिए उसके पास गया, और बिन्यामीन अब भी यूसुफ के सामने सिंहासन पर बैठा था।

17 तब यूसुफ ने उससे पूछा, क्या तेरे कोई बच्चे हैं? उसने कहा, तेरे दास के दस बेटे हैं, और उनके नाम ये हैं, बेला, बेकेर, अशबल, गेरा, नामान, आकी, रोश, मुपीम, चुपीम, और ओर्द, और मैंने उनके नाम अपने भाई के नाम पर रखे हैं जिसे मैंने नहीं देखा।
18 और उसने उन्हें हुक्म दिया कि वे उसके सामने तारों का नक्शा ले आएं, जिससे यूसुफ को हर समय का पता था। यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा, "मैंने सुना है कि इब्री लोग हर तरह की समझदारी जानते हैं, क्या तुम इसके बारे में कुछ जानते हो?"
19 तब बिन्यामीन ने कहा, "तेरा सेवक भी वह सारी बुद्धि जानता है जो मेरे पिता ने मुझे सिखाई थी।" यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा, "अब इस कागज़ को देखो और समझो कि तुम्हारा भाई यूसुफ मिस्र में कहाँ है, जिसके बारे में तुमने कहा था कि वह मिस्र गया था।"
20 और बेंजामिन ने आसमान के तारों के नक्शे वाला वह औज़ार देखा, और वह समझदार था और उसने उसमें देखा कि उसका भाई कहाँ है, और बेंजामिन ने मिस्र की पूरी ज़मीन को चार हिस्सों में बाँटा, और उसने पाया कि जो उसके सामने गद्दी पर बैठा है, वह उसका भाई यूसुफ है, और बेंजामिन को बहुत हैरानी हुई, और जब यूसुफ ने देखा कि उसका भाई बेंजामिन इतना हैरान है, तो उसने बेंजामिन से कहा, तुमने क्या देखा है, और तुम क्यों हैरान हो?
21 तब बिन्यामीन ने यूसुफ से कहा, मैं इससे देख सकता हूँ कि मेरा भाई यूसुफ यहाँ मेरे साथ सिंहासन पर बैठा है, और यूसुफ ने उससे कहा, मैं तेरा भाई यूसुफ हूँ, यह बात अपने भाइयों को मत बताना; देख, जब वे चले जाएँगे, तो मैं तुझे उनके साथ भेजूँगा, और मैं उन्हें शहर में वापस लाने का आदेश दूँगा, और मैं तुझे उनसे दूर ले जाऊँगा।
22 और अगर वे अपनी जान देकर तुम्हारे लिए लड़ें, तो मैं जान लूँगा कि उन्होंने मेरे साथ जो किया, उससे उन्हें पछतावा है, और मैं खुद को उनके सामने ज़ाहिर करूँगा, और अगर वे तुम्हें तब छोड़ दें जब मैं तुम्हें ले जाऊँ, तो तुम मेरे साथ रहना, और मैं उनसे झगड़ा करूँगा, और वे चले जाएँगे, और मैं उनके सामने ज़ाहिर नहीं होऊँगा।
23 उस समय यूसुफ ने अपने अधिकारी को आज्ञा दी कि उनके बोरे में खाना भर दो, और हर आदमी के पैसे उसके बोरे में डाल दो, और प्याला बिन्यामीन के बोरे में रख दो, और उन्हें रास्ते के लिए सामान दे दो, और उन्होंने उनके साथ वैसा ही किया।
24 और अगले दिन वे लोग सुबह-सुबह उठे, और अपने गधों पर अनाज लादकर बिन्यामीन के साथ निकल पड़े, और अपने भाई बिन्यामीन के साथ कनान देश चले गए।
25 वे मिस्र से ज़्यादा दूर नहीं गए थे कि यूसुफ ने अपने घर के अफ़सर को हुक्म दिया, "उठो, इन आदमियों का पीछा करो, इससे पहले कि वे मिस्र से बहुत दूर निकल जाएं, और उनसे पूछो, तुमने मेरे मालिक का प्याला क्यों चुराया?"
26 तब यूसुफ का सरदार उठा, और उनके पास जाकर यूसुफ की सारी बातें उनसे कहीं; और जब उन्होंने यह बात सुनी, तो वे बहुत गुस्सा हुए, और कहने लगे, "जिसके पास तुम्हारे मालिक का प्याला मिलेगा, वह मर जाएगा, और हम भी गुलाम हो जाएंगे।"
27 और वे जल्दी से गए और हर आदमी ने अपने गधे से अपना बोरा उतारा, और अपने थैलों में देखा और प्याला बिन्यामीन के थैले में मिला, और सबने अपने कपड़े फाड़े और शहर लौट आए, और उन्होंने बिन्यामीन को रास्ते में मारा, और जब तक वह शहर में नहीं आया, तब तक उसे मारते रहे, और वे यूसुफ के सामने खड़े हो गए।
28 तब यहूदा का गुस्सा भड़क उठा, और उसने कहा, यह आदमी मुझे आज मिस्र को खत्म करने के लिए ही वापस लाया है।
29 और वे लोग यूसुफ के घर आए, और उन्होंने यूसुफ को अपनी गद्दी पर बैठा हुआ पाया, और सभी ताकतवर आदमी उसके दाएं और बाएं खड़े थे।
30 तब यूसुफ ने उनसे कहा, "तुमने यह क्या किया कि मेरा चांदी का प्याला लेकर चले गए? लेकिन मैं जानता हूँ कि तुमने मेरा प्याला इसलिए लिया ताकि यह जान सको कि तुम्हारा भाई देश के किस हिस्से में है।"
31 तब यहूदा ने कहा, हम अपने मालिक से क्या कहें, क्या बोलें और कैसे खुद को सही ठहराएं, क्योंकि आज परमेश्वर ने तेरे सब दासों का अधर्म पाया है, इसलिए उसने आज हमारे साथ ऐसा किया है।
32 तब यूसुफ उठा और बिन्यामीन को पकड़कर उसके भाइयों से छीनकर घर में ले गया, और उनके लिए दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी को आज्ञा दी कि वह उनसे कहे, राजा कहता है, अपने पिता के पास शांति से जाओ, देखो, जिसके हाथ में मेरा प्याला मिला था, मैंने उस आदमी को पकड़ लिया है।

अध्याय 54

1 जब यहूदा ने यूसुफ का उनके साथ किया हुआ व्यवहार देखा, तो यहूदा उसके पास गया, और दरवाज़ा तोड़कर अपने भाइयों के साथ यूसुफ के सामने आया।
2 तब यहूदा ने यूसुफ से कहा, "मेरे मालिक, यह बात आपको बुरी न लगे; क्या मैं आपका सेवक आपसे एक बात कह सकता हूँ?" यूसुफ ने उससे कहा, "बोलो।"
3 और यहूदा ने यूसुफ के सामने बात की, और उसके भाई उनके सामने खड़े थे; और यहूदा ने यूसुफ से कहा, "ज़रूर, जब हम पहली बार अपने मालिक के पास खाना खरीदने आए थे, तो तुमने हमें देश के जासूस समझा था, और हम बिन्यामीन को तुम्हारे सामने लाए थे, और तुम आज भी हमारा मज़ाक उड़ाते हो।"
4 इसलिए अब राजा मेरी बातें सुन लें, और हमारे भाई को हमारे साथ हमारे पिता के पास भेज दें, कहीं ऐसा न हो कि आज मिस्र के सभी निवासियों के साथ आपकी भी जान चली जाए।
5 क्या तुम नहीं जानते कि मेरे दो भाइयों, शिमोन और लेवी ने हमारी बहन दीना के कारण शेकेम शहर और एमोरियों के सात शहरों के साथ क्या किया, और अपने भाई बिन्यामीन के लिए भी क्या किया?
6 और मैं अपनी ताकत के साथ, जो उन दोनों से बड़ा और ताकतवर हूँ, आज तुम पर और तुम्हारी ज़मीन पर हमला करने आ रहा हूँ, अगर तुम हमारे भाई को भेजने को तैयार नहीं हो।
7 क्या तुमने नहीं सुना कि हमारे परमेश्वर ने, जिसने हमें चुना, हमारी माँ सारा के कारण फिरौन के साथ क्या किया, जिसे उसने हमारे पिता से छीन लिया था, कि उसने उसे और उसके घराने को भारी मुसीबतों से मारा, कि आज तक मिस्र के लोग एक-दूसरे को यह हैरानी की बात बताते हैं? हमारा परमेश्वर भी तुम्हारे साथ

वैसा ही करेगा, बिन्यामीन के कारण जिसे तुमने आज उसके पिता से छीन लिया है, और उन बुराइयों के कारण जो तुम आज अपने देश में हम पर कर रहे हो; क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे पिता अब्राहम के साथ किए अपने वादे को याद रखेगा और तुम पर बुराई लाएगा, क्योंकि तुमने आज हमारे पिता की आत्मा को दुखी किया है।
8 इसलिए अब मेरी बातें सुनो जो मैंने आज तुमसे कही हैं, और हमारे भाई को भेज दो कि वह चला जाए, कहीं ऐसा न हो कि तुम और तुम्हारे देश के लोग तलवार से मर जाएं, क्योंकि तुम सब मुझ पर हावी नहीं हो सकते।
9 तब यूसुफ ने यहूदा से कहा, "तूने हम पर इतना घमंड क्यों किया है, और यह क्यों कहा है कि तेरे पास ताकत है? फिरौन के जीवन की शपथ, अगर मैं अपने सभी बहादुर आदमियों को तेरे साथ लड़ने का हुक्म दूँ, तो तू और तेरे ये भाई ज़रूर कीचड़ में धंस जाएँगे।"
10 और यहूदा ने यूसुफ से कहा, "तुम्हें और तुम्हारे लोगों को मुझसे डरना चाहिए; यहोवा के जीवन की शपथ, अगर मैं एक बार अपनी तलवार निकाल लूँ, तो उसे फिर कभी म्यान में नहीं रखूँगा, जब तक कि मैं आज पूरे मिस्र को मार न डालूँ, और मैं तुमसे शुरू करूँगा और तुम्हारे मालिक फिरौन पर खत्म करूँगा।"
11 यूसुफ ने जवाब दिया, "सच में ताकत सिर्फ़ तुम्हारी नहीं है; मैं तुमसे ज़्यादा ताकतवर और ताकतवर हूँ। अगर तुम अपनी तलवार निकालोगे तो मैं उसे तुम्हारी और तुम्हारे सभी भाइयों की गर्दन पर डाल दूँगा।"
12 और यहूदा ने उससे कहा, "अगर मैं आज तेरे खिलाफ़ अपना मुँह खोलूँ तो मैं तुझे निगल जाऊँगा और तू धरती से खत्म हो जाएगा और आज ही अपने राज्य से खत्म हो जाएगा।" और यूसुफ ने कहा, "अगर तू अपना मुँह खोलेगा तो मुझमें इतनी ताकत और ताकत है कि मैं तेरा मुँह पत्थर से बंद कर दूँगा, जब तक तू एक शब्द भी न बोल सके; देख हमारे सामने कितने पत्थर हैं, सच में मैं एक पत्थर लेकर, उसे ज़बरदस्ती तेरे मुँह में डालकर तेरे जबड़े तोड़ सकता हूँ।"
13 तब यहूदा ने कहा, परमेश्वर हमारे बीच गवाह है, कि हमने अब तक तुझसे लड़ाई करने की इच्छा नहीं की, बस हमें हमारा भाई दे दे, तो हम तेरे पास से चले जाएंगे; और यूसुफ ने उत्तर दिया, फिरौन के जीवन की शपथ, यदि कनान के सब राजा तेरे पास आएं, तो भी तू उसे मेरे हाथ से न छीनना।
14 इसलिए अब तुम अपने पिता के पास जाओ, और तुम्हारा भाई मेरा गुलाम होगा, क्योंकि उसने राजा के घर को लूटा है। यहूदा ने कहा, तुम्हें या राजा के चरित्र को इससे क्या लेना-देना? राजा तो अपने घर से पूरे देश में तोहफे या खर्च के तौर पर सोना-चांदी भेजता है, और तुम अब भी अपने उस प्याले के बारे में बात कर रहे हो जो तुमने हमारे भाई के थैले में रखा था और कहते हो कि उसने इसे तुमसे चुराया है?
15 भगवान न करे कि हमारा भाई बिन्यामीन या अब्राहम के वंश में से कोई भी ऐसा काम करे कि तुमसे या किसी और से, चाहे वह राजा हो, राजकुमार हो, या कोई और आदमी हो, चोरी करे।
16 इसलिए अब यह इल्ज़ाम लगाना बंद करो, कहीं ऐसा न हो कि पूरी धरती तुम्हारी बातें सुन ले, कि मिस्र के राजा ने थोड़े से पैसे के लिए उन आदमियों से झगड़ा किया, और उन पर इल्ज़ाम लगाया, और उनके भाई को गुलाम बना लिया।
17 तब यूसुफ ने उत्तर दिया, "यह प्याला लो और मेरे पास से चले जाओ, और अपने भाई को दास बना लो, क्योंकि दास होना चोर की सज़ा है।"
18 तब यहूदा ने कहा, "तुम्हें अपनी बातों पर शर्म क्यों नहीं आती कि तुम हमारे भाई को छोड़कर अपना प्याला ले रहे हो? अगर तुम हमें अपना प्याला, या उससे हज़ार गुना ज़्यादा भी दो, तो भी हम अपने भाई को किसी के हाथ में मिली चाँदी के लिए नहीं छोड़ेंगे, ताकि हम उसके लिए मर न जाएँ।"
19 यूसुफ ने जवाब दिया, "और तुमने अपने भाई को क्यों छोड़ दिया और उसे आज तक बीस चांदी के टुकड़ों में क्यों बेचा? और फिर तुम अपने इस भाई के साथ भी ऐसा ही क्यों नहीं करते?"
20 तब यहूदा ने कहा, यहोवा मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है कि हम तुमसे लड़ाई नहीं चाहते; इसलिए अब हमें हमारा भाई दे दो और हम बिना झगड़ा किए तुम्हारे पास से चले जाएंगे।
21 यूसुफ ने जवाब दिया, "अगर देश के सभी राजा भी इकट्ठा हो जाएं, तो भी वे तुम्हारे भाई को मेरे हाथ से नहीं ले जा पाएंगे।" यहूदा ने कहा, "जब हमारे पिता देखेंगे कि हमारा भाई हमारे साथ नहीं आ रहा है, तो हम उनसे क्या कहेंगे और उसके लिए दुखी होंगे?"
22 यूसुफ ने जवाब दिया, "यह बात तुम अपने पिता से कहोगे, रस्सी बाल्टी के पीछे चली गई है।"
23 तब यहूदा ने कहा, "तुम तो राजा हो, फिर भी तुम ये बातें क्यों कहते हो, और झूठा फैसला क्यों देते हो? धिक्कार है उस राजा पर जो तुम्हारे जैसा है।"
24 तब यूसुफ ने जवाब दिया, "मैंने तुम्हारे भाई यूसुफ के बारे में जो बात कही है, उसमें कोई झूठ नहीं है। तुम सबने उसे मिद्यानियों के हाथ बीस चांदी के टुकड़ों में बेच दिया था, और तुम सबने अपने पिता से मना करके उससे कहा था, "किसी बुरे जानवर ने उसे खा लिया है, यूसुफ टुकड़े-टुकड़े हो गया है।"
25 तब यहूदा ने कहा, देखो, शेम की आग मेरे दिल में जल रही है, अब मैं तुम्हारी सारी ज़मीन आग से जला दूँगा; और यूसुफ ने जवाब दिया, ज़रूर तुम्हारी भाभी तामार ने, जिसने तुम्हारे बेटों को मार डाला था, शेकेम की आग बुझाई होगी।
26 तब यहूदा ने कहा, "अगर मैं अपने शरीर से एक बाल भी नोच लूँ, तो मैं पूरे मिस्र को उसके खून से भर दूँगा।"
27 यूसुफ ने जवाब दिया, "तुम्हारा रिवाज़ ऐसा ही है कि तुमने अपने भाई के साथ किया, जिसे तुमने बेच दिया था, और तुमने उसका कपड़ा खून में डुबोया और अपने पिता के पास ले गए ताकि वह कहे कि किसी बुरे जानवर ने उसे खा लिया और यह रहा उसका खून।"
28 और जब यहूदा ने यह बात सुनी तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसका गुस्सा उसके अंदर भड़क उठा। और उस जगह उसके सामने एक पत्थर था, जिसका वज़न लगभग चार सौ शेकेल था। यहूदा का गुस्सा भड़क उठा और उसने पत्थर को एक हाथ में लेकर आसमान की तरफ फेंका और अपने बाएं हाथ से उसे पकड़ लिया।
29 और फिर उसने उसे अपने पैरों के नीचे रख लिया, और वह पूरी ताकत से उस पर बैठ गया, और यहूदा के ज़ोर से पत्थर धूल में बदल गया।
30 और यूसुफ ने यहूदा का काम देखा और वह बहुत डर गया। फिर उसने अपने बेटे मनश्शे को हुक्म दिया और उसने भी यहूदा के काम जैसा ही दूसरा पत्थर बनाया। तब यहूदा ने अपने भाइयों

से कहा, "तुम में से कोई यह न कहे कि यह आदमी मिस्री है, बल्कि इस काम से वह हमारे पिता के खानदान का है।"
31 तब यूसुफ ने कहा, "सिर्फ तुम्हें ही ताकत नहीं दी गई है, क्योंकि हम भी ताकतवर आदमी हैं, फिर तुम हम सब पर क्यों घमंड करते हो?" तब यहूदा ने यूसुफ से कहा, "हमारे भाई को भेज दो और आज अपने देश को बर्बाद मत करो।"
32 तब यूसुफ ने उनसे कहा, जाओ और अपने पिता से कहो, जैसा कि तुमने अपने भाई यूसुफ के विषय में कहा था, एक दुष्ट जानवर ने उसे खा लिया है।
33 तब यहूदा ने अपने भाई नप्ताली से कहा, "जल्दी जाओ, मिस्र की सारी सड़कों को गिन लो और आकर मुझे बताओ।" शिमोन ने उससे कहा, "यह बात तुम्हें परेशान न करे; अब मैं पहाड़ पर जाऊँगा और पहाड़ से एक बड़ा पत्थर उठाकर मिस्र के हर एक आदमी पर गिरा दूँगा, और उसमें जितने भी हैं, उन सबको मार डालूँगा।"
34 और यूसुफ ने ये सारी बातें सुनीं जो उसके भाई उससे पहले कह रहे थे, और वे नहीं जानते थे कि यूसुफ उन्हें समझता है या नहीं, क्योंकि उन्होंने सोचा कि वह हिब्रू नहीं बोल सकता।
35 और यूसुफ अपने भाइयों की बातों से बहुत डर गया कि कहीं वे मिस्र को खत्म न कर दें, इसलिए उसने अपने बेटे मनश्शे को हुक्म दिया, "जल्दी जाओ और मिस्र के सभी रहने वालों और सभी बहादुर आदमियों को मेरे पास इकट्ठा करो, और उन्हें घोड़ों पर, पैदल और हर तरह के गाने-बजाने के औज़ारों के साथ मेरे पास आने दो।" और मनश्शे गया और वैसा ही किया।
36 और नप्ताली यहूदा की आज्ञा के अनुसार चला, क्योंकि नप्ताली तेज़ हिरण की तरह फुर्तीला था, और वह अनाज की बालियों पर चलता था और वे उसके नीचे नहीं टूटती थीं।
37 तब वह गया और मिस्र की सारी सड़कों को गिना, और पाया कि वे बारह हैं, और वह जल्दी से यहूदा के पास गया और उसे बताया, और यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, जल्दी करो और हर आदमी अपनी कमर पर तलवार बांध लो और हम मिस्र पर चढ़ेंगे, और उन सभी को मार डालेंगे, और कोई भी नहीं बचेगा।
38 तब यहूदा ने कहा, देखो, मैं अपनी ताकत से तीन गलियां तोड़ दूंगा, और तुम में से हर एक एक गलियां तोड़ेगा; और जब यहूदा यह बात कह ही रहा था, तो देखो मिस्र के रहने वाले और सब ताकतवर आदमी तरह-तरह के गाने-बजाने के औजार और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए उनकी तरफ आए।
39 और उनकी गिनती पाँच सौ घुड़सवार और दस हज़ार पैदल सैनिक थे, और चार सौ ऐसे आदमी थे जो बिना तलवार या भाले के, सिर्फ़ अपने हाथों और ताकत से लड़ सकते थे।
40 और सभी ताकतवर लोग ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए आए, और उन सबने याकूब के बेटों को घेर लिया और उन्हें डरा दिया, और उनके चिल्लाने की आवाज़ से ज़मीन कांप उठी।
41 और जब याकूब के बेटों ने इन सैनिकों को देखा तो वे अपनी जान को लेकर बहुत डर गए, और यूसुफ ने ऐसा इसलिए किया ताकि याकूब के बेटे डर जाएं और बेहोश हो जाएं।
42 यहूदा ने अपने कुछ भाइयों को डरा हुआ देखकर उनसे कहा, "जब परमेश्वर की कृपा हम पर है, तो तुम क्यों डर रहे हो?" और जब यहूदा ने देखा कि मिस्र के सभी लोग यूसुफ के कहने पर उन्हें डराने के लिए घेर रहे हैं, तो यूसुफ ने उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया, "उनमें से किसी को मत छूना।"
43 तब यहूदा ने जल्दी से अपनी तलवार निकाली, और ज़ोर से और भयानक चीख़ मारी, और अपनी तलवार से वार किया, और वह ज़मीन पर गिर पड़ा और वह अब भी सब लोगों के ख़िलाफ़ चिल्लाता रहा।
44 और जब उसने यह काम किया, तो यहोवा ने यहूदा और उसके भाइयों का डर उन बहादुर आदमियों और उनके आस-पास के सभी लोगों पर डाल दिया।
45 और वे सब चिल्लाने की आवाज़ सुनकर भाग गए, और डरकर एक-दूसरे पर गिर पड़े, और उनमें से बहुत से गिरते-गिरते मर गए, और वे सब यहूदा और उसके भाइयों और यूसुफ के सामने से भाग गए।
46 और जब वे भाग रहे थे, तो यहूदा और उसके भाइयों ने उनका पीछा फिरौन के घर तक किया, और वे सब भाग निकले, और यहूदा फिर यूसुफ के सामने बैठ गया और उस पर शेर की तरह दहाड़ा, और उस पर एक बड़ी और ज़बरदस्त चीख मारी।
47 और वह चीख दूर तक सुनाई दी, और सुक्कोत के सभी रहने वालों ने उसे सुना, और चीख की आवाज़ से पूरा मिस्र कांप उठा, और मिस्र और गोशेन देश की दीवारें भी धरती के हिलने से गिर गईं, और फिरौन भी अपनी गद्दी से ज़मीन पर गिर पड़ा, और मिस्र और गोशेन की सभी प्रेग्नेंट औरतों का गर्भपात हो गया जब उन्होंने हिलने की आवाज़ सुनी, क्योंकि वे बहुत डर गई थीं।
48 तब फिरौन ने यह कहला भेजा, "आज मिस्र देश में यह क्या हुआ है?" और उन्होंने आकर उसे शुरू से आखिर तक सब बातें बता दीं, और फिरौन घबरा गया, और उसे बहुत हैरानी हुई और वह बहुत डर गया।
49 और ये सब बातें सुनकर वह और डर गया, और उसने यूसुफ के पास यह कहला भेजा, "तू इब्रियों को मेरे पास लाया है कि सारे मिस्र को खत्म कर दे; उस चोर गुलाम का क्या करोगे? उसे भेज दो और उसके भाइयों के साथ जाने दो, और हम, तुम और सारा मिस्र, उनकी बुराई से खत्म न हों।"
50 और अगर तुम यह काम नहीं करना चाहते, तो मेरी सारी कीमती चीज़ें उतारकर उनके साथ उनके देश चले जाओ, अगर तुम्हें इसमें मज़ा आता है, क्योंकि वे आज मेरे पूरे देश को तबाह कर देंगे और मेरे सभी लोगों को मार डालेंगे; मिस्र की सभी औरतें उनके चिल्लाने से ही गिर गई हैं; देखो उन्होंने सिर्फ़ चिल्लाने और बोलने से क्या किया है, और अगर वे तलवार से लड़ेंगी, तो वे देश को तबाह कर देंगी; इसलिए अब जो तुम चाहते हो, उसे चुन लो, चाहे मैं या हिब्रू, चाहे मिस्र हो या हिब्रू लोगों का देश।
51 और वे आए और यूसुफ को फिरौन की सारी बातें बताईं जो उसने उसके बारे में कही थीं। यूसुफ फिरौन की बातों से बहुत डर गया और यहूदा और उसके भाई गुस्से में यूसुफ के सामने खड़े रहे। याकूब के सभी बेटे यूसुफ पर ऐसे गरजे जैसे समुद्र और उसकी लहरें गरजती हैं।
52 और यूसुफ अपने भाइयों और फिरौन की वजह से बहुत डर गया, और यूसुफ अपने भाइयों को खुद को दिखाने का बहाना ढूंढ रहा था, कहीं ऐसा न हो कि वे पूरे मिस्र को तबाह कर दें।
53 तब यूसुफ ने अपने बेटे मनश्शे को आज्ञा दी, और मनश्शे यहूदा के पास गया, और उसके कंधे पर हाथ रखा, और यहूदा का गुस्सा शांत हो गया।

54 तब यहूदा ने अपने भाइयों से कहा, "तुम में से कोई यह न कहे कि यह किसी मिस्री लड़के का काम है, क्योंकि यह मेरे पिता के घराने का काम है।"
55 और यूसुफ ने यह देखकर और जानकर कि यहूदा का गुस्सा शांत हो गया है, यहूदा के पास जाकर नरमी से बात की।
56 और यूसुफ ने यहूदा से कहा, "तुम सच कहते हो और आज तुमने अपनी ताकत के बारे में जो कहा है, वह सच साबित हो गया है, और तुम्हारा परमेश्वर जो तुमसे खुश है, तुम्हारी भलाई बढ़ाए; लेकिन मुझे सच-सच बताओ कि तुम अपने सभी भाइयों में से उस लड़के के लिए मुझसे क्यों झगड़ रहे हो, जबकि उनमें से किसी ने भी उसके बारे में मुझसे एक बात नहीं कही।"
57 तब यहूदा ने यूसुफ से कहा, "तुम्हें ज़रूर पता होगा कि मैं उस लड़के के लिए उसके पिता के पास ज़मानत था, और मैंने कहा था, अगर मैं उसे उसके पास न ले आता तो मैं हमेशा उसकी गलती मानता।"
58 इसलिए मैं अपने सभी भाइयों में से तुम्हारे पास आया हूँ, क्योंकि मैंने देखा कि तुम उसे अपने पास से जाने नहीं देना चाहते थे; इसलिए अब मैं तुम्हारी कृपा चाहता हूँ कि तुम उसे हमारे साथ भेज दो, और देखो, मैं उसकी जगह रहूँगा, ताकि तुम जो चाहो, उसमें तुम्हारी सेवा कर सकूँ, क्योंकि तुम मुझे जहाँ भी भेजोगे, मैं पूरी ताकत से तुम्हारी सेवा करने जाऊँगा।
59 अब मुझे एक ताकतवर राजा के पास भेजो जिसने तुम्हारे खिलाफ बगावत की है, और तुम जान जाओगे कि मैं उसके और उसके देश के साथ क्या करूँगा; चाहे उसके पास घुड़सवार सेना और पैदल सेना हो या बहुत ताकतवर लोग हों, मैं उन सभी को मार डालूँगा और राजा का सिर तुम्हारे सामने लाऊँगा।
60 क्या तुम नहीं जानते या तुमने नहीं सुना कि हमारे पिता अब्राहम ने अपने सेवक एलीएजेर के साथ मिलकर एलाम के सभी राजाओं को उनकी सेनाओं के साथ एक ही रात में मार डाला, और एक को भी नहीं छोड़ा? और उस दिन से हमारे पिता की ताकत हमें विरासत में मिली, हमारे और हमारे वंश के लिए हमेशा के लिए।
61 तब यूसुफ ने जवाब दिया, "तुम सच बोलते हो, और तुम्हारे मुँह से झूठ नहीं निकलता; क्योंकि हमें यह भी बताया गया था कि इब्रियों में ताकत है और उनका परमेश्वर यहोवा उनसे बहुत खुश होता है, फिर उनके सामने कौन खड़ा हो सकता है?"
62 लेकिन, मैं तुम्हारे भाई को इस शर्त पर भेजूंगा कि तुम उसके भाई को, जो उसकी मां का बेटा है, मेरे सामने लाओ, जिसके बारे में तुमने कहा था कि वह तुम्हारे पास से मिस्र चला गया है; और जब तुम उसके भाई को मेरे पास लाओगे तो मैं उसे उसकी जगह ले लूंगा, क्योंकि तुम में से कोई भी तुम्हारे पिता के लिए उसकी सुरक्षा नहीं कर सका, और जब वह मेरे पास आएगा, तो मैं उसके भाई को तुम्हारे साथ भेजूंगा जिसके लिए तुम सुरक्षा कर रहे हो।
63 जब यूसुफ ने यह बात कही, तो यहूदा का गुस्सा यूसुफ पर भड़क उठा, और गुस्से से उसकी आँखों से खून बहने लगा। उसने अपने भाइयों से कहा, "यह आदमी आज अपनी और पूरे मिस्र की बर्बादी कैसे चाहता है!"
64 शिमोन ने यूसुफ को जवाब दिया, "क्या हमने तुम्हें पहले नहीं बताया था कि हम नहीं जानते कि वह कहाँ गया है, और वह ज़िंदा है या मरा हुआ, और मेरे मालिक ऐसी बातें क्यों कह रहे हैं?"
65 और यूसुफ ने यहूदा का चेहरा देखकर समझ लिया कि जब उसने उससे कहा, "इस भाई के बदले अपने दूसरे भाई को मेरे पास ले आओ," तो उसका गुस्सा भड़क उठा।
66 तब यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "तुमने तो कहा था कि तुम्हारा भाई या तो मर गया है या खो गया है। अब अगर मैं उसे आज बुलाऊं और वह तुम्हारे सामने आए, तो क्या तुम उसे उसके भाई के बदले मुझे दे दोगे?"
67 तब यूसुफ बोलने लगा, और पुकारने लगा, हे यूसुफ, हे यूसुफ, आज मेरे सामने आ, और अपने भाइयों को दिख और उनके सामने बैठ।
68 और जब यूसुफ ने उनके सामने यह बात कही, तो वे सब अलग-अलग तरफ देखने लगे कि यूसुफ उनके सामने कहाँ से आएगा।
69 और यूसुफ ने उनके सब काम देखे, और उनसे कहा, तुम इधर-उधर क्यों देख रहे हो? मैं यूसुफ हूँ जिसे तुमने मिस्र के हाथ बेच दिया था, इसलिए अब तुम दुखी मत हो कि तुमने मुझे बेच दिया, क्योंकि अकाल के समय सहारे के तौर पर परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा था।
70 और यूसुफ की बातें सुनकर उसके भाई उससे डर गए, और यहूदा भी उससे बहुत डर गया।
71 जब बिन्यामीन ने यूसुफ की बातें सुनीं, तो वह घर के अंदर उनके सामने था। बिन्यामीन अपने भाई यूसुफ के पास दौड़ा, और उसे गले लगाया, और उसके गले लग गया, और वे रोए।
72 और जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि बिन्यामीन अपने भाई की गर्दन पर गिरकर उसके साथ रो रहा है, तो वे भी यूसुफ पर गिर पड़े और उसे गले लगा लिया, और यूसुफ के साथ फूट-फूट कर रोए।
73 और यूसुफ के घराने में यह बात फैली कि वे यूसुफ के भाई हैं, और यह बात फिरौन को बहुत अच्छी लगी, क्योंकि वह उनसे डरता था कि कहीं वे मिस्र को तबाह न कर दें।
74 और फिरौन ने अपने सेवकों को यूसुफ के पास उसके भाइयों के बारे में बधाई देने के लिए भेजा, जो उसके पास आए थे, और मिस्र में सेनाओं और सैनिकों के सभी कप्तान यूसुफ के साथ खुशियाँ मनाने आए, और पूरा मिस्र यूसुफ के भाइयों के बारे में बहुत खुश हुआ।
75 फिरौन ने अपने सेवकों को यूसुफ के पास यह कहकर भेजा, "अपने भाइयों से कहो कि वे अपना सब कुछ लेकर मेरे पास आ जाएं, और मैं उन्हें मिस्र देश के सबसे अच्छे हिस्से में बसा दूंगा।" और उन्होंने ऐसा ही किया।
76 और यूसुफ ने अपने घर के अधिकारी को हुक्म दिया कि वह उसके भाइयों के लिए तोहफ़े और कपड़े लाए। उसने उनके लिए बहुत सारे कपड़े निकाले जो शाही कपड़े थे और बहुत सारे तोहफ़े भी लाए। यूसुफ ने उन्हें अपने भाइयों में बाँट दिया।
77 और उसने अपने हर भाई को सोने और चांदी के एक-एक जोड़े कपड़े और तीन सौ चांदी के टुकड़े दिए, और यूसुफ ने उन सबको ये कपड़े पहनाकर फिरौन के सामने लाने का हुक्म दिया।
78 और फिरौन ने यह देखकर कि यूसुफ के सभी भाई बहादुर और सुंदर दिखने वाले आदमी हैं, बहुत खुश हुआ।
79 इसके बाद वे फिरौन के पास से निकलकर कनान देश में अपने पिता के पास चले गए, और उनका भाई बिन्यामीन भी उनके साथ था।

80 तब यूसुफ उठा और उन्हें फिरौन से ग्यारह रथ दिए, और यूसुफ ने उन्हें अपना रथ भी दिया, जिस पर वह मिस्र में अपने राजतिलक के दिन सवार होकर अपने पिता को मिस्र ले गया था; और यूसुफ ने अपने सभी भाइयों के बच्चों को उनकी गिनती के हिसाब से कपड़े और हर एक को सौ-सौ चांदी के सिक्के भेजे, और उसने अपने भाइयों की पत्नियों को भी राजा की पत्नियों के कपड़ों में से कपड़े भेजे, और उसने उन्हें भेज दिए।
81 और उसने अपने हर भाई को दस आदमी दिए कि वे उनके साथ कनान देश जाएं, ताकि वे मिस्र पहुंचने पर उनकी, उनके बच्चों की और उनके सभी लोगों की सेवा करें।
82 और यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन के हाथ से अपने दस बेटों के लिए दस जोड़े कपड़े भेजे, जो याकूब के बाकी बेटों से ज़्यादा थे।
83 और उसने फिरौन के लिए हर एक को पचास चांदी के सिक्के और दस रथ भेजे, और अपने पिता के लिए मिस्र की सारी ऐशो-आराम की चीज़ों से लदे दस गधे और अपने पिता के लिए अनाज, रोटी और खाने की चीज़ों से लदी दस गधियाँ भेजीं, और जो लोग उसके साथ थे, उनके लिए रास्ते के लिए खाने-पीने की चीज़ें भेजीं।
84 और उसने अपनी बहन दीना को सोने-चांदी के कपड़े, लोबान, गंधरस, अगर औरत के गहने बहुत सारे भेजे, और वही फिरौन की पत्नियों से लेकर बिन्यामीन की पत्नियों को भी भेजे।
85 और उसने अपने सभी भाइयों और उनकी पत्नियों को भी हर तरह के गोमेद पत्थर और मोती दिए, और मिस्र के बड़े लोगों की सभी कीमती चीज़ों में से, यूसुफ ने अपने पिता के घराने के लिए जो भेजा था, उसके अलावा कुछ भी नहीं बचा।
86 तब उसने अपने भाइयों को विदा किया, और वे चले गए, और उसने अपने भाई बिन्यामीन को उनके साथ भेजा।
87 और यूसुफ उनके साथ मिस्र की सीमाओं तक जाने के लिए निकल पड़ा, और उसने अपने पिता और अपने घराने के बारे में उन्हें मिस्र आने की आज्ञा दी।
88 और उसने उनसे कहा, "रास्ते में झगड़ा मत करो, क्योंकि यह बात यहोवा की तरफ से है ताकि एक बड़ी कौम भुखमरी से बचे, क्योंकि देश में अभी पाँच साल तक अकाल पड़ेगा।"
89 और उसने उन्हें हुक्म दिया, "जब तुम कनान देश में आओ, तो इस मामले में अचानक मेरे पिता के सामने मत आना, बल्कि अपनी समझ से काम करना।"
90 और यूसुफ ने उन्हें हुक्म देना बंद कर दिया, और वह मिस्र वापस चला गया, और याकूब के बेटे खुशी-खुशी अपने पिता याकूब के पास कनान देश चले गए।
91 और वे देश की सीमा पर पहुँचे, और एक-दूसरे से कहने लगे, "हम इस मामले में अपने पिता के सामने क्या करें? क्योंकि अगर हम अचानक उनके पास जाकर उन्हें यह बात बताएँगे, तो वह हमारी बातों से बहुत घबरा जाएँगे और हम पर यकीन नहीं करेंगे।"
92 और वे चलते-चलते अपने घरों के पास पहुँचे, और उन्हें आशेर की बेटी सेराक मिली, जो उनसे मिलने के लिए आगे आ रही थी। वह लड़की बहुत अच्छी और समझदार थी, और वीणा बजाना जानती थी।
93 तब उन्होंने उसे बुलाया, और वह उनके सामने आई, और उन्हें चूमा, और उन्होंने उसे पकड़कर एक वीणा दी, और कहा, अब हमारे पिता के सामने जाओ, और उनके सामने बैठो, और वीणा बजाओ, और ये बातें कहो।
94 तब उन्होंने उसे अपने घर जाने का हुक्म दिया, और वह वीणा लेकर उनके आगे-आगे दौड़ी, और आकर याकूब के पास बैठ गई।
95 और वह खूब बजाती और गाती थी, और अपनी मीठी बातों में कहती थी, कि मेरा चाचा यूसुफ ज़िंदा है, और वह पूरे मिस्र देश पर राज करता है, और मरा नहीं है।
96 और वह ये बातें दोहराती रही, और याकूब ने उसकी बातें सुनीं और वे उसे अच्छी लगीं।
97 जब उसने दो-तीन बार बातें दोहराईं, तो याकूब सुनता रहा। उसकी मीठी बातों से याकूब का दिल खुश हो गया। परमेश्वर की आत्मा उस पर थी, और वह जान गया कि उसकी सारी बातें सच हैं।
98 और जब सेराक ने ये बातें उसके सामने कहीं, तो याकूब ने उसे आशीर्वाद दिया, और उसने उससे कहा, मेरी बेटी, मौत कभी तुझ पर हावी न हो, क्योंकि तूने मेरी आत्मा को फिर से ज़िंदा कर दिया है; बस अब मेरे सामने वही कह जो तूने कहा है, क्योंकि तूने अपनी सब बातों से मुझे खुश किया है।
99 और वह ये बातें गाती रही, और याकूब ने सुना, और उसे अच्छा लगा, और वह खुश हुआ, और परमेश्वर की आत्मा उस पर थी।
100 जब वह उससे बात कर ही रहा था, तो देखो, उसके बेटे घोड़ों, रथों, शाही कपड़ों और नौकरों के साथ उसके पास आए, जो उनके आगे दौड़ रहे थे।
101 और याकूब उनसे मिलने के लिए उठा, और उसने अपने बेटों को शाही कपड़े पहने हुए देखा, और उसने वह सारा खज़ाना भी देखा जो यूसुफ ने उनके लिए भेजा था।
102 और उन्होंने उससे कहा, "जान लो कि हमारा भाई यूसुफ ज़िंदा है, और वही पूरे मिस्र देश पर राज करता है, और वही हमसे वही बात कर रहा है जो हमने तुमसे कही थी।"
103 और याकूब ने अपने बेटों की सारी बातें सुनीं, और उनकी बातें सुनकर उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा, क्योंकि जब तक उसने वह सब नहीं देखा जो यूसुफ ने उन्हें दिया था और जो उसने उसके लिए भेजा था, और वे सारे संकेत जो यूसुफ ने उनसे कहे थे, तब तक वह उन पर विश्वास नहीं कर सका।
104 और उन्होंने उसके सामने दरवाज़े खोलकर, जो कुछ यूसुफ ने भेजा था, उसे दिखाया। उन्होंने हर एक को वह दिया जो यूसुफ ने भेजा था। तब वह जान गया कि उन्होंने सच कहा है। और वह अपने बेटे की बात सुनकर बहुत खुश हुआ।
105 तब याकूब ने कहा, मेरे लिए इतना ही काफी है कि मेरा बेटा यूसुफ अभी तक जीवित है, मैं मरने से पहले जाकर उससे मिलूंगा।
106 तब उसके बेटों ने उसे सब कुछ बताया जो उन पर बीता था, और याकूब ने कहा, मैं अपने बेटे और उसके वंश को देखने के लिए मिस्र जाऊँगा।
107 तब याकूब उठा और उसने वे कपड़े पहने जो यूसुफ ने उसे भेजे थे, और नहाकर और बाल मुंडवाकर, अपने सिर पर वह पगड़ी पहनी जो यूसुफ ने उसे भेजी थी।
108 और याकूब के घराने के सभी लोगों और उनकी पत्नियों ने वे कपड़े पहने जो यूसुफ ने उनके लिए भेजे थे, और वे यूसुफ के

लिए बहुत खुश हुए कि वह अभी भी ज़िंदा है और मिस्र में राज कर रहा है।
109 और कनान के सभी निवासियों ने यह बात सुनी, और वे याकूब के पास आए और उसके जीवित रहने पर बहुत खुश हुए।
110 और याकूब ने उनके लिए तीन दिन तक दावत दी, और कनान के सभी राजाओं और देश के अमीरों ने याकूब के घराने में खाया-पिया और खुशियाँ मनाईं।

अध्याय 55

1 इसके बाद याकूब ने कहा, मैं मिस्र जाकर अपने बेटे से मिलूंगा, और फिर कनान देश में लौट आऊंगा, जिसके बारे में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था, क्योंकि मैं अपनी जन्मभूमि नहीं छोड़ सकता।
2 देखो, यहोवा का यह वचन उसके पास आया, कि अपने सारे घराने समेत मिस्र में जाकर वहीं रहो; मिस्र जाने से मत डरो, क्योंकि मैं वहां तुम्हारे लिये एक बड़ी जाति बनाऊंगा।
3 तब याकूब ने मन में कहा, मैं जाकर अपने बेटे को देखूंगा कि मिस्र के सब रहने वालों के बीच उसके मन में अपने परमेश्वर का भय अब भी है या नहीं।
4 और यहोवा ने याकूब से कहा, यूसुफ के बारे में मत डर, क्योंकि वह अब भी मेरी सेवा करने के लिए अपनी ईमानदारी बनाए हुए है, जैसा कि तुम्हें अच्छा लगेगा, और याकूब अपने बेटे के बारे में बहुत खुश हुआ।
5 उस समय याकूब ने यहोवा की बात मानकर अपने बेटों और घराने को मिस्र जाने की आज्ञा दी। और याकूब अपने बेटों और पूरे घराने के साथ खुशी और उल्लास के साथ कनान देश से बेर्शेबा के लिए निकल पड़ा। वे मिस्र देश के लिए चल पड़े।
6 और जब वे मिस्र के पास पहुँचे, तो याकूब ने यहूदा को अपने आगे यूसुफ के पास भेजा ताकि वह उसे मिस्र की हालत दिखा सके। यहूदा ने अपने पिता की बात मानकर जल्दी से दौड़कर यूसुफ के पास पहुँचा। यूसुफ ने उसके पूरे घराने के लिए गोशेन देश में एक जगह तय की। यहूदा लौटकर अपने पिता के पास रास्ते से आया।
7 और यूसुफ ने रथ तैयार किया, और अपने सभी ताकतवर आदमियों, अपने नौकरों और मिस्र के सभी अधिकारियों को इकट्ठा किया ताकि वह अपने पिता याकूब से मिलने जाए, और यूसुफ का हुक्म मिस्र में ऐलान किया गया, कि जो कोई याकूब से मिलने नहीं जाएगा, वह मारा जाएगा।
8 और अगले दिन यूसुफ पूरे मिस्र के साथ एक बड़ी और ताकतवर सेना के साथ निकला, सबने बढ़िया लिनन और बैंगनी रंग के कपड़े पहने थे, और उनके पास सोने-चांदी के हथियार और लड़ाई के हथियार थे।
9 और वे सब तरह-तरह के वाद्य यंत्र, ढोल और डफ लेकर याकूब से मिलने गए, और रास्ते में गंधरस और एलो बिखेरते गए, और वे सब इसी तरह चले, और उनके चिल्लाने से धरती हिल गई।
10 और मिस्र की सभी औरतें याकूब से मिलने के लिए मिस्र की छतों और दीवारों पर चढ़ गईं, और यूसुफ के सिर पर फिरौन का शाही ताज था, क्योंकि फिरौन ने उसे अपने पिता से मिलने जाते समय पहनने के लिए भेजा था।
11 और जब यूसुफ अपने पिता से पचास हाथ दूर आया, तो वह रथ से उतरा और अपने पिता की ओर चला गया। और जब मिस्र के सभी अधिकारियों और अमीरों ने देखा कि यूसुफ पैदल अपने पिता की ओर गया है, तो वे भी रथ से उतर गए और पैदल याकूब की ओर चल पड़े।
12 और जब याकूब यूसुफ के कैंप के पास पहुँचा, तो याकूब ने देखा कि वह कैंप यूसुफ के साथ उसकी तरफ आ रहा है, और उसे यह देखकर खुशी हुई और याकूब हैरान रह गया।
13 तब याकूब ने यहूदा से कहा, "वह आदमी कौन है जिसे मैं मिस्र के कैंप में देख रहा हूँ, जो शाही कपड़े पहने हुए है, जिस पर बहुत लाल कपड़ा है और जिसके सिर पर शाही ताज है, और जो अपने रथ से उतरकर हमारी तरफ आ रहा है?" यहूदा ने अपने पिता से कहा, "वह आपका बेटा यूसुफ राजा है।" और याकूब अपने बेटे की शान देखकर खुश हुआ।
14 तब यूसुफ अपने पिता के पास आया और उसने अपने पिता को प्रणाम किया, और छावनी के सब लोगों ने भी उसके साथ याकूब के सामने ज़मीन पर झुककर प्रणाम किया।
15 और देखो याकूब दौड़कर अपने बेटे यूसुफ के पास गया और उसे गले लगाकर चूमा, और वे रोए, और यूसुफ ने भी अपने पिता को गले लगाकर चूमा, और वे रोए, और मिस्र के सभी लोग उनके साथ रोए।
16 तब याकूब ने यूसुफ से कहा, अब मैं तेरा चेहरा देखकर खुशी से मरूंगा, कि तू अभी भी जीवित है और महिमा के साथ है।
17 और याकूब के बेटे और उनकी पत्नियाँ और उनके बच्चे और उनके नौकर, और याकूब का सारा घराना यूसुफ के साथ बहुत रोया, और उन्होंने उसे चूमा और उसके साथ खूब रोए।
18 और यूसुफ और उसके सभी लोग उसके बाद मिस्र लौट आए, और याकूब और उसके बेटे और उसके घर के सभी बच्चे यूसुफ के साथ मिस्र आए, और यूसुफ ने उन्हें मिस्र के सबसे अच्छे इलाके, गोशेन देश में बसाया।
19 तब यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों से कहा, "मैं जाकर फिरौन को बताऊँगा कि मेरे भाई और मेरे पिता का घराना और उनका सारा सामान मेरे पास आ गया है, और वे गोशेन देश में हैं।"
20 और यूसुफ ने ऐसा ही किया, और अपने भाइयों रूबेन, इस्साकार, जबूलून और अपने भाई बिन्यामीन को लेकर फिरौन के सामने खड़ा कर दिया।
21 तब यूसुफ ने फिरौन से कहा, "मेरे भाई और मेरे पिता का घराना और उनके सभी लोग, अपने झुंड और मवेशियों के साथ कनान देश से मेरे पास मिस्र में रहने के लिए आए हैं; क्योंकि उन पर बहुत ज़्यादा अकाल पड़ा था।"
22 फिरौन ने यूसुफ से कहा, "अपने पिता और भाइयों को देश के सबसे अच्छे हिस्से में बसाओ, उनसे जो कुछ भी अच्छा है, उसे मत रोको, और उन्हें देश की अच्छी उपज खाने को दो।"
23 तब यूसुफ ने कहा, देखो, मैंने उन्हें गोशेन देश में रखा है, क्योंकि वे चरवाहे हैं, इसलिए उन्हें मिस्रियों से अलग अपने झुंड चराने के लिए गोशेन में ही रहने दो।
24 फिरौन ने यूसुफ से कहा, "अपने भाइयों के साथ वही करो जो वे तुमसे कहें।" तब याकूब के बेटों ने फिरौन को प्रणाम किया, और वे शांति से उसके पास से चले गए। इसके बाद यूसुफ अपने पिता को फिरौन के सामने ले गया।

25 तब याकूब ने आकर फिरौन को प्रणाम किया, और याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद दिया, और फिर वह बाहर चला गया; और याकूब और उसके सभी बेटे, और उसका पूरा घराना गोशेन देश में रहने लगे।
26 दूसरे साल, यानी याकूब की ज़िंदगी के एक सौ तीसवें साल में, यूसुफ ने अपने पिता, अपने भाइयों और अपने पिता के पूरे घराने का पेट भरा, और उनके बच्चों को उनके हिसाब से रोटी दी, और अकाल के सारे दिनों में उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।
27 और यूसुफ ने उन्हें पूरे देश का सबसे अच्छा हिस्सा दिया; मिस्र का सबसे अच्छा हिस्सा यूसुफ के पूरे जीवन में उनके पास रहा; और यूसुफ ने उन्हें और अपने पिता के पूरे घराने को हर साल कपड़े और वस्त्र भी दिए; और याकूब के बेटे अपने भाई के पूरे जीवन में मिस्र में सुरक्षित रहे।
28 और याकूब हमेशा यूसुफ की मेज़ पर खाता था, याकूब और उसके बेटे दिन-रात यूसुफ की मेज़ से नहीं हटते थे, सिवाय उसके जो याकूब के बच्चे अपने घरों में खाते थे।
29 और अकाल के दिनों में सारे मिस्र के लोग यूसुफ के घराने से रोटी खाते थे, क्योंकि अकाल के कारण सब मिस्रियों ने अपना सब कुछ बेच दिया था।
30 और यूसुफ ने फिरौन के लिए मिस्र की सारी ज़मीनें और खेत रोटी के बदले खरीद लिए, और यूसुफ ने अकाल के दिनों में पूरे मिस्र को रोटी दी, और यूसुफ ने वह सारा चाँदी और सोना इकट्ठा किया जो पूरे देश में अनाज खरीदने पर उसके पास आया था, और उसने बहुत सारा सोना और चाँदी जमा किया, इसके अलावा बहुत सारे गोमेद पत्थर, मोती और कीमती कपड़े भी जमा किए जो वे देश के हर हिस्से से यूसुफ के लिए लाते थे जब उनके पैसे खर्च हो जाते थे।
31 और यूसुफ ने अपने हाथ में आया सारा सोना-चांदी, लगभग बहत्तर टैलेंट सोना और चांदी, और बहुत सारे गोमेद पत्थर और मोती भी लिए, और यूसुफ ने जाकर उन्हें चार हिस्सों में छिपा दिया, एक हिस्सा उसने लाल सागर के पास जंगल में, एक हिस्सा पेराथ नदी के पास छिपा दिया, और तीसरा और चौथा हिस्सा उसने फारस और मादिया के जंगल के सामने वाले रेगिस्तान में छिपा दिया।
32 और जो सोना और चाँदी बची थी, उसमें से उसने कुछ हिस्सा लेकर अपने सभी भाइयों, अपने पिता के घराने और अपने पिता के घराने की सभी औरतों को दे दिया, और बाकी सोना और चाँदी, जो लगभग बीस टैलेंट सोना और चाँदी था, वह फिरौन के घर में ले आया।
33 और यूसुफ ने जो भी सोना और चाँदी बचा था, वह सब फिरौन को दे दिया, और फिरौन ने उसे खजाने में रख दिया, और उसके बाद देश में अकाल के दिन खत्म हो गए, और उन्होंने पूरे देश में बोया और काटा, और उन्हें हर साल अपनी रोज़ की मात्रा मिलती रही; उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।
34 और यूसुफ मिस्र में सुरक्षित रहने लगा, और सारा देश उसके अधिकार में था, और उसके पिता और उसके सभी भाई गोशेन देश में रहने लगे और उस पर अधिकार कर लिया।
35 यूसुफ बहुत बूढ़ा हो गया था, उसकी उम्र बहुत ज़्यादा हो गई थी, और उसके दोनों बेटे, एप्रैम और मनश्शे, अपने भाइयों याकूब के बेटों के बच्चों के साथ, यहोवा के रास्ते और उसके नियम सीखने के लिए हमेशा याकूब के घराने में रहते थे।
36 और याकूब और उसके बेटे मिस्र के गोशेन देश में रहने लगे, और उन्होंने उस पर कब्ज़ा कर लिया, और वे उसमें फलने-फूलने लगे और उनकी संख्या बढ़ती गई।

अध्याय 56

1 और याकूब मिस्र देश में सत्रह साल तक रहा, और याकूब की उम्र एक सौ सैंतालीस साल की थी।
2 उस समय याकूब को वह बीमारी लग गई जिससे वह मर गया, और उसने अपने बेटे यूसुफ को मिस्र से बुलवाया, और उसका बेटा यूसुफ मिस्र से आया, और यूसुफ अपने पिता के पास आया।
3 और याकूब ने यूसुफ और उसके बेटों से कहा, "देखो, मैं मर रहा हूँ, और तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें उस देश में वापस ले जाएगा, जिसे देने की कसम यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे बाद तुम्हारे बच्चों को खाई थी। इसलिए अब जब मैं मर जाऊँ, तो मुझे कनान देश के हेब्रोन में मकपेला की गुफा में, मेरे पुरखों के पास दफ़ना देना।"
4 और याकूब ने अपने बेटों से कसम खाई कि वे उसे हेब्रोन के मकपेला में दफ़नाएंगे, और उसके बेटों ने उससे इस बात की कसम खाई।
5 और उसने उन्हें आज्ञा दी, "अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करो, क्योंकि जिसने तुम्हारे पूर्वजों को बचाया था, वही तुम्हें भी हर मुसीबत से बचाएगा।"
6 तब याकूब ने कहा, अपने सब बच्चों को मेरे पास बुलाओ, और याकूब के बेटों के सब बच्चे उसके सामने आकर बैठ गए, और याकूब ने उन्हें आशीर्वाद दिया, और उसने उनसे कहा, तुम्हारे पितरों का परमेश्वर यहोवा तुम्हें हजार गुना देगा और आशीर्वाद देगा, और वह तुम्हें तुम्हारे पिता अब्राहम का आशीर्वाद दे; और याकूब के बेटों के सब बच्चे उस दिन उसके आशीर्वाद देने के बाद चले गए।
7 और अगले दिन याकूब ने फिर अपने बेटों को बुलाया, और वे सब इकट्ठा होकर उसके पास आए और उसके सामने बैठ गए, और उस दिन याकूब ने अपनी मौत से पहले अपने बेटों को आशीर्वाद दिया, हर आदमी को उसके आशीर्वाद के अनुसार आशीर्वाद दिया; देखो, यह इस्राएल से जुड़े यहोवा के कानून की किताब में लिखा है।
8 तब याकूब ने यहूदा से कहा, "मैं जानता हूँ, मेरे बेटे, कि तू अपने भाइयों के लिए एक ताकतवर आदमी है; उन पर राज कर, और तेरे बेटे उनके बेटों पर हमेशा राज करेंगे।"
9 बस अपने बेटों को धनुष और युद्ध के सभी हथियार सिखाओ, ताकि वे अपने भाई की लड़ाई लड़ सकें जो अपने दुश्मनों पर राज करेगा।
10 और उस दिन याकूब ने फिर अपने बेटों को आज्ञा दी, "देखो, आज मैं अपने लोगों के पास जा रहा हूँ; मुझे मिस्र से ले जाओ, और जैसा मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मुझे मकपेला की गुफ़ा में दफ़ना दो।"
11 लेकिन मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि ध्यान रखना कि तुम्हारे बेटों में से कोई मुझे न ले जाए, सिर्फ़ तुम ही हो, और जब तुम मेरे शरीर को कनान देश में दफ़नाने के लिए ले जाओगे, तो मेरे साथ ऐसा ही करना।
12 यहूदा, इस्साकार और जबूलून मेरी अर्थी को पूरब की ओर ले जाएंगे; रूबेन, शिमोन और गाद दक्षिण की ओर, एप्रैम, मनश्शे

और बिन्यामीन पश्चिम की ओर, और दान, आशेर और नप्ताली उत्तर की ओर।
13 लेवी को अपने साथ न ले जाने देना, क्योंकि वह और उसके बेटे छावनी में इस्राएलियों के साथ यहोवा के करार का संदूक उठाएंगे, और न ही मेरे बेटे यूसुफ को ले जाने देना, क्योंकि राजा की तरह उसकी शान होगी; लेकिन एप्रैम और मनश्शे उनकी जगह लेंगे।
14 जब तुम मुझे ले जाओ, तो मेरे साथ ऐसा करना; जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, उसमें से किसी बात को नज़रअंदाज़ मत करना; और जब तुम मेरे साथ ऐसा करोगे, तो यहोवा तुम्हें और तुम्हारे बाद तुम्हारे बच्चों को हमेशा याद रखेगा।
15 और हे मेरे बेटों, तुम अपने भाई और अपने रिश्तेदार का आदर करो, और अपने बच्चों और अपने बच्चों के बच्चों को भी आज्ञा दो कि वे हर दिन अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा की सेवा करें।
16 ताकि तुम, तुम्हारे बच्चे और तुम्हारे बच्चे इस देश में हमेशा के लिए लंबे समय तक रहें, जब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की नज़र में अच्छा और सही काम करो, और उसके सभी रास्तों पर चलो।
17 और हे यूसुफ, मेरे बेटे, मैं प्रार्थना करता हूँ कि अपने भाइयों की गलतियों और उनके सभी पापों को माफ कर दे, जो उन्होंने तुझे पहुँचाए, क्योंकि परमेश्वर ने यह तेरे और तेरे बच्चों के भले के लिए चाहा था।
18 और हे मेरे बेटे, अपने भाइयों को मिस्र के रहने वालों के पास मत छोड़ना, और न ही उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाना, क्योंकि देख, मैं उन्हें परमेश्वर के हाथ में और तेरे हाथ में सौंपता हूँ कि तू उन्हें मिस्रियों से बचाए; और याकूब के बेटों ने अपने पिता को उत्तर दिया, हे हमारे पिता, जो कुछ तूने हमें आज्ञा दी है, हम वैसा ही करेंगे; परमेश्वर हमारे साथ रहे।
19 और याकूब ने अपने बेटों से कहा, "इसी तरह जब तुम परमेश्वर के सभी मार्गों पर चलो, तो वह तुम्हारे साथ रहे; जो अच्छा और उसकी नज़र में सही है, उसे करते हुए उसके मार्गों से न तो दाएँ मुड़ना और न बाएँ।"
20 क्योंकि मैं जानता हूँ कि आने वाले दिनों में इस देश में तुम पर बहुत सी बड़ी मुसीबतें आएंगी, हाँ, तुम्हारे बच्चों और पोतों के बच्चों पर, बस तुम यहोवा की सेवा करो और वह तुम्हें हर मुसीबत से बचाएगा।
21 और जब तुम परमेश्वर के पीछे चलकर उसकी सेवा करोगे और अपने बच्चों को, और अपने बच्चों के बच्चों को भी, प्रभु को जानना सिखाओगे, तब प्रभु तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए तुम्हारे बच्चों में से एक सेवक खड़ा करेगा, और प्रभु अपने हाथ से तुम्हें सभी दुखों से बचाएगा, और तुम्हें मिस्र से निकालकर तुम्हारे पुरखों की भूमि पर वापस ले आएगा ताकि तुम उसे सुरक्षित रूप से विरासत में पा सको।
22 और याकूब ने अपने बेटों को हुक्म देना बंद कर दिया, और अपने पैर बिस्तर पर रख लिए, वह मर गया और अपने लोगों में जा मिला।
23 तब यूसुफ अपने पिता पर गिर पड़ा, और फूट-फूट कर रोया, और उसे चूमा, और कड़वी आवाज़ में पुकारकर कहा, हे मेरे पिता, हे मेरे पिता।
24 और उसके बेटे की पत्नियाँ और उसका सारा घराना याकूब के पास आया और उस पर टूट पड़ा, और वे उसके लिए रोईं, और याकूब के लिए बहुत ऊँची आवाज़ में रोईं।
25 और याकूब के सब बेटे एक साथ उठे, और उन्होंने अपने कपड़े फाड़े, और सबने अपनी कमर पर टाट बाँधा, और मुँह के बल गिर पड़े, और अपने सिर पर से धूल आसमान की तरफ़ फेंकी।
26 और यह बात यूसुफ की पत्नी ओसनाथ को बताई गई, और वह उठी और एक बोरा ओढ़ा, और अपने साथ की सभी मिस्री औरतों के साथ आकर याकूब के लिए दुख मनाने और रोने लगी।
27 और मिस्र के जितने लोग याकूब को जानते थे, वे सब उस दिन यह बात सुनकर आए, और सारा मिस्र कई दिनों तक रोता रहा।
28 और जब औरतों ने सुना कि याकूब मर गया है, तो वे भी कनान देश से मिस्र में आईं, और मिस्र में सत्तर दिन तक उसके लिए रोती रहीं।
29 इसके बाद यूसुफ ने अपने सेवकों को, जो वैद्य थे, आज्ञा दी कि वे उसके पिता के शव को गंधरस, लोबान और हर तरह की धूप और इत्र से सुगंधित करें, और वैद्यों ने यूसुफ की आज्ञा के अनुसार याकूब के शव को सुगंधित किया।
30 और मिस्र के सभी लोग और बुज़ुर्ग और गोशेन देश के सभी रहने वाले याकूब के लिए रोए और दुख मनाया, और उसके सभी बेटे और उसके घराने के बच्चे भी अपने पिता याकूब के लिए कई दिनों तक दुख मनाते रहे।
31 और जब उसके रोने के दिन बीत गए, यानी सत्तर दिन पूरे होने पर, यूसुफ ने फिरौन से कहा, "मैं जाकर अपने पिता को कनान देश में दफ़ना दूँगा, जैसा उन्होंने मुझसे कसम खाई थी, और फिर मैं लौट आऊँगा।"
32 और फिरौन ने यूसुफ को यह कहकर भेजा, "जाओ और अपने पिता को दफ़नाओ, जैसा उसने कहा था और जैसी उसने तुमसे कसम खाई थी; और यूसुफ अपने सभी भाइयों के साथ कनान देश में अपने पिता याकूब को दफ़नाने के लिए चला गया, जैसा उसने उन्हें आज्ञा दी थी।"
33 और फिरौन ने हुक्म दिया कि पूरे मिस्र में यह ऐलान किया जाए, कि जो कोई यूसुफ और उसके भाइयों के साथ याकूब को दफ़नाने के लिए कनान देश नहीं जाएगा, उसे मार दिया जाएगा।
34 और जब पूरे मिस्र ने फिरौन की यह बात सुनी, तो वे सब एक साथ उठ खड़े हुए। फिरौन के सभी नौकर, उसके घराने के बड़े-बूढ़े और मिस्र देश के सभी बड़े-बूढ़े यूसुफ के साथ गए। फिरौन के सभी अफ़सर और अमीर लोग यूसुफ के नौकर बनकर गए। वे याकूब को कनान देश में दफ़नाने गए।
35 और याकूब के बेटों ने उस अर्थी को उठाया जिस पर वह लेटा था; जैसा उनके पिता ने उन्हें आज्ञा दी थी, वैसा ही उसके बेटों ने भी किया।
36 और अर्थी शुद्ध सोने की थी, और उसके चारों ओर गोमेद पत्थर और मोती जड़े हुए थे; और अर्थी का कवर सोने का बुना हुआ था, जो धागों से जुड़ा हुआ था, और उनके ऊपर गोमेद पत्थर और मोती के हुक थे।
37 और यूसुफ ने अपने पिता याकूब के सिर पर एक बड़ा सोने का ताज रखा, और उसके हाथ में एक सोने का राजदंड दिया, और वे अर्थी के चारों ओर बैठ गए, जैसा कि राजाओं के जीवनकाल में उनका रिवाज था।
38 और मिस्र की सारी सेना उसके आगे-आगे इसी लाइन में चली, पहले फिरौन के सारे ताकतवर आदमी, और यूसुफ के ताकतवर आदमी, और उनके पीछे मिस्र के बाकी रहने वाले,

और वे सब तलवारें और कवच पहने हुए थे, और लड़ाई का सामान पहने हुए थे।
39 और सब रोने वाले और मातम मनाने वाले लोग अर्थी के सामने कुछ दूरी पर रोते और दुख मनाते हुए चले गए, और बाकी लोग अर्थी के पीछे-पीछे चले गए।
40 और यूसुफ और उसका घराना नंगे पैर रोते हुए अर्थी के पास गए, और यूसुफ के बाकी नौकर उसके चारों ओर चले; हर आदमी ने अपने गहने पहने हुए थे, और वे सब अपने-अपने युद्ध के हथियारों से लैस थे।
41 और याकूब के पचास सेवक अर्थी के आगे-आगे चले, और उन्होंने रास्ते में गंधरस, अगर और हर तरह का इत्र छिड़का, और याकूब के सभी बेटे जो अर्थी उठाए हुए थे, इत्र की दुकान पर चले, और याकूब के सेवक उनके आगे-आगे चले और रास्ते में इत्र छिड़का।
42 और यूसुफ एक भारी कैंप के साथ ऊपर गया, और वे हर दिन इसी तरह करते रहे जब तक वे कनान देश नहीं पहुँच गए, और वे आताद के खलिहान में पहुँचे, जो यरदन के दूसरी तरफ था, और उन्होंने उस जगह पर बहुत बड़ा और भारी मातम मनाया।
43 और कनान के सभी राजाओं ने यह बात सुनी और वे सब अपने-अपने घर से निकल पड़े, यानी कनान के 31 राजा, और वे सब अपने आदमियों के साथ याकूब के लिए दुख मनाने और रोने के लिए निकले।
44 और इन सभी राजाओं ने याकूब की अर्थी को देखा, और देखो कि उस पर यूसुफ का ताज था, और उन्होंने भी अपने ताज अर्थी पर रखे, और उसके चारों ओर ताज लगा दिए।
45 और इन सभी राजाओं ने उस जगह पर याकूब और मिस्र के बेटों के साथ याकूब के लिए बहुत बड़ा और भारी मातम मनाया, क्योंकि कनान के सभी राजा याकूब और उसके बेटों की बहादुरी जानते थे।
46 और यह खबर एसाव तक पहुंची कि याकूब मिस्र में मर गया है, और उसके बेटे और सारा मिस्र उसे दफ़नाने के लिए कनान देश ले जा रहा है।
47 और एसाव ने यह बात सुनी, और वह सेईर पहाड़ पर रहता था, और वह अपने बेटों, अपनी सारी प्रजा और अपने पूरे घराने के साथ, जो बहुत बड़ी प्रजा थी, उठ खड़ा हुआ, और वे याकूब के लिए दुख मनाने और रोने लगे।
48 और ऐसा हुआ कि जब एसाव आया तो उसने अपने भाई याकूब के लिए दुख मनाया, और सारा मिस्र और सारा कनान फिर से उठ खड़ा हुआ और उस जगह पर याकूब के लिए एसाव के साथ बहुत दुख मनाया।
49 और यूसुफ और उसके भाई अपने पिता याकूब को उस जगह से ले आए, और वे याकूब को उसके पुरखों के पास वाली गुफा में दफ़नाने के लिए हेब्रोन गए।
50 और वे किरेत-अरबा गुफा के पास पहुँचे, और जब वे पहुँचे तो एसाव अपने बेटों के साथ गुफा में यूसुफ और उसके भाइयों के सामने रुकावट बनकर खड़ा हो गया, और कहने लगा, याकूब को इसमें दफ़नाया नहीं जाएगा, क्योंकि यह हमारा और हमारे पिता का है।
51 जब यूसुफ और उसके भाइयों ने एसाव के बेटों की बातें सुनीं, तो वे बहुत गुस्सा हुए। यूसुफ एसाव के पास गया और कहा, "ये क्या बात है जो वे कह रहे हैं? ज़रूर मेरे पिता याकूब ने इसे तुमसे बहुत दौलत देकर खरीदा होगा, इसहाक की मौत के बाद, अब पच्चीस साल पहले, और कनान की सारी ज़मीन भी उन्होंने तुमसे, तुम्हारे बेटों से, और तुम्हारे बाद तुम्हारी संतान से खरीदी होगी।"
52 और याकूब ने इसे अपने बेटों और अपने बाद आने वाली अपनी संतानों के लिए हमेशा के लिए विरासत के तौर पर खरीदा था, और तू आज ये बातें क्यों कह रहा है?
53 तब एसाव ने जवाब दिया, "तुम झूठ बोल रहे हो, झूठ बोल रहे हो, क्योंकि जैसा तुम कहते हो, मैंने इस पूरे देश में अपनी कोई चीज़ नहीं बेची, और न ही मेरे भाई याकूब ने इस देश में मेरी कोई चीज़ खरीदी।"
54 और एसाव ने ये बातें यूसुफ को अपनी बातों से धोखा देने के लिए कहीं, क्योंकि एसाव जानता था कि यूसुफ उन दिनों वहाँ नहीं था जब एसाव ने कनान देश में अपनी सारी संपत्ति याकूब को बेच दी थी।
55 तब यूसुफ ने एसाव से कहा, "ज़रूर मेरे पिता ने ये चीज़ें तुम्हारे साथ खरीद के कागज़ में लिखवाईं, और गवाहों के सामने कागज़ की गवाही दी, और देखो, ये हमारे पास मिस्र में हैं।"
56 तब एसाव ने उससे कहा, "वह दस्तावेज़ ले आओ, उसमें जो कुछ भी तुम्हें मिले, हम वैसा ही करेंगे।"
57 तब यूसुफ ने अपने भाई नप्ताली को पुकारा, और कहा, "जल्दी करो, रुको मत, और मिस्र भाग जाओ और सारे रिकॉर्ड ले आओ; खरीद का रिकॉर्ड, मुहरबंद रिकॉर्ड, खुला रिकॉर्ड, और वे सभी शुरुआती रिकॉर्ड जिनमें जन्म के अधिकार के सभी लेन-देन लिखे हैं, ले आओ।"
58 और तुम उन्हें हमारे पास यहाँ ले आओ, ताकि हम उनसे एसाव और उसके बेटों की सारी बातें जान सकें जो उन्होंने आज कहीं।
59 और नप्ताली ने यूसुफ की बात सुनी और वह जल्दी से मिस्र जाने के लिए दौड़ा, और नप्ताली जंगल में रहने वाले किसी भी हिरण से पैदल हल्का था, क्योंकि वह अनाज की बालियों को कुचले बिना उन पर चलता था।
60 और जब एसाव ने देखा कि नप्ताली रिकॉर्ड लाने गया है, तो उसने और उसके बेटों ने गुफा के खिलाफ अपना विरोध बढ़ा दिया, और एसाव और उसके सभी लोग यूसुफ और उसके भाइयों के खिलाफ लड़ाई के लिए उठ खड़े हुए।
61 और याकूब के सभी बेटों और मिस्र के लोगों ने एसाव और उसके आदमियों से लड़ाई की, और एसाव के बेटे और उसके लोग याकूब के बेटों से हार गए, और याकूब के बेटों ने एसाव के लोगों में से चालीस आदमियों को मार डाला।
62 और चूशीम, जो याकूब का बेटा दान का बेटा था, उस समय याकूब के बेटों के साथ था, लेकिन वह लड़ाई की जगह से करीब सौ हाथ दूर था, क्योंकि वह याकूब के बेटों के साथ याकूब की अर्थी के पास उसकी रखवाली करने के लिए खड़ा था।
63 और चुशिम गूंगा और बहरा था, फिर भी वह लोगों के बीच घबराहट की आवाज़ को समझता था।
64 तब उसने पूछा, "तुम मरे हुए को क्यों नहीं दफ़नाते, और यह इतनी घबराहट क्यों है?" और उन्होंने उसे एसाव और उसके बेटों की बातें बताईं; और वह लड़ाई के बीच में एसाव के पास दौड़ा, और उसने तलवार से एसाव को मार डाला, और उसका सिर काट दिया, और वह दूर जा गिरा, और एसाव लड़ाई के लोगों के बीच गिर पड़ा।

65 और जब चूशिम ने यह काम किया, तो याकूब के बेटे एसाव के बेटों पर हावी हो गए, और याकूब के बेटों ने अपने पिता याकूब को ज़बरदस्ती गुफा में दफ़ना दिया, और एसाव के बेटों ने यह देखा।
66 और याकूब को हेब्रोन में मकपेला की गुफा में दफ़नाया गया, जिसे अब्राहम ने हेथ के बेटों से कब्रिस्तान के लिए खरीदा था, और उसे बहुत महंगे कपड़े पहनाकर दफ़नाया गया।
67 और किसी राजा को ऐसा सम्मान नहीं मिला जैसा यूसुफ ने अपने पिता को उनकी मौत पर दिया था, क्योंकि उसने उन्हें राजाओं की तरह बड़े सम्मान के साथ दफनाया था।
68 और यूसुफ और उसके भाइयों ने अपने पिता के लिए सात दिन का शोक मनाया।

अध्याय 57

1 इसके बाद एसाव के बेटों ने याकूब के बेटों से लड़ाई की, और एसाव के बेटों ने हेब्रोन में याकूब के बेटों से लड़ाई की, और एसाव अभी भी मरा हुआ पड़ा था, और उसे दफ़नाया नहीं गया था।
2 और उनके बीच बहुत बड़ी लड़ाई हुई, और एसाव के बेटे याकूब के बेटों से हार गए, और याकूब के बेटों ने एसाव के बेटों में से अस्सी आदमियों को मार डाला, और याकूब के बेटों के लोगों में से एक भी नहीं मरा; और यूसुफ का हाथ एसाव के बेटों के सभी लोगों पर हावी हो गया, और उसने एसाव के बेटे एलीपज के बेटे जेफो और उसके पचास आदमियों को बंदी बना लिया, और उन्हें लोहे की जंजीरों से बांधकर अपने नौकरों के हाथ में दे दिया ताकि वे उन्हें मिस्र ले जाएं।
3 और जब याकूब के बेटों ने ज़ेपो और उसके लोगों को बंदी बना लिया, तो एसाव के घराने के जो लोग बचे थे, वे अपनी जान को लेकर बहुत डर गए, कि कहीं वे भी बंदी न बना लिए जाएं, और वे सब एसाव के बेटे एलीफ़ाज़ और उसके लोगों के साथ, एसाव की लाश लेकर भाग गए, और वे सेईर पहाड़ की ओर चल पड़े।
4 और वे सेईर पहाड़ पर आए और उन्होंने एसाव को सेईर में दफ़ना दिया, लेकिन वे उसका सिर अपने साथ सेईर नहीं लाए थे, क्योंकि उसे हेब्रोन में उसी जगह दफ़नाया गया था जहाँ लड़ाई हुई थी।
5 और जब एसाव के बेटे याकूब के बेटों के सामने से भाग गए, तो याकूब के बेटों ने सेईर की सीमा तक उनका पीछा किया, लेकिन जब उन्होंने उनका पीछा किया तो उनमें से एक भी आदमी नहीं मारा, क्योंकि एसाव की लाश जो वे अपने साथ ले जा रहे थे, उससे वे घबरा गए, इसलिए वे भाग गए और याकूब के बेटे उनसे वापस मुड़े और हेब्रोन में उस जगह पहुँचे जहाँ उनके भाई थे, और वे उस दिन और अगले दिन भी वहीं रहे जब तक उन्होंने लड़ाई से आराम नहीं कर लिया।
6 और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि उन्होंने सेईर होरी के सभी बेटों को इकट्ठा किया, और उन्होंने पूरब के सभी लोगों को इकट्ठा किया, जो समुद्र की रेत के समान बहुत सारे लोग थे, और वे यूसुफ और उसके भाइयों से लड़ने के लिए मिस्र गए, ताकि अपने भाइयों को बचा सकें।
7 और यूसुफ और याकूब के सभी बेटों ने सुना कि एसाव के बेटे और पूरब के लोग अपने भाइयों को बचाने के लिए लड़ाई करने के लिए उन पर हमला करने आए हैं।
8 और यूसुफ और उसके भाई और मिस्र के ताकतवर लोग रामेसेस शहर में जाकर लड़े, और यूसुफ और उसके भाइयों ने एसाव के बेटों और पूरब के लोगों को ज़बरदस्त हराया।
9 और उन्होंने उनमें से छह लाख आदमियों को मार डाला, और उनमें से सेईर होरी के सब वीरों को भी मार डाला; वे थोड़े ही बचे थे, और उन्होंने पूरब के लोगों और एसाव के बहुत से लोगों को भी मार डाला; और एसाव का बेटा एलीपज और पूरब के सब लोग यूसुफ और उसके भाइयों के सामने से भाग गए।
10 और यूसुफ और उसके भाई उनका पीछा करते हुए सुक्कोत पहुँचे, और उन्होंने सुक्कोत में उनके तीस आदमियों को मार डाला, और बाकी बच निकले और वे अपने-अपने शहर भाग गए।
11 और यूसुफ और उसके भाई और मिस्र के ताकतवर लोग खुशी और खुशी के साथ उनके पास से लौट गए, क्योंकि उन्होंने अपने सभी दुश्मनों को हरा दिया था।
12 एलीपज का बेटा सपो और उसके आदमी अब भी मिस्र में याकूब के बेटों के गुलाम थे, और उनकी तकलीफें बढ़ती गईं।
13 और जब एसाव और सेईर के बेटे अपने देश लौटे, तो सेईर के बेटों ने देखा कि एसाव के बेटों की लड़ाई की वजह से वे सब याकूब के बेटों और मिस्र के लोगों के हाथ में पड़ गए हैं।
14 और सेईर के बेटों ने एसाव के बेटों से कहा, "तुमने देखा है, इसलिए तुम जानते हो कि यह कैंप तुम्हारे लिए है, और इसमें एक भी बहादुर आदमी या युद्ध में माहिर आदमी नहीं बचा है।"
15 इसलिए अब तुम हमारे देश से चले जाओ, हमारे देश से कनान देश में चले जाओ, जहाँ तुम्हारे पुरखों का घर था; तो फिर आने वाले दिनों में तुम्हारे बच्चे हमारे बच्चों की दौलत क्यों पाएँगे?
16 और एसाव के बच्चों ने सेईर के बच्चों की बात नहीं मानी, और सेईर के बच्चों ने उनसे युद्ध करने का सोचा।
17 और एसाव के बच्चों ने अफ्रीका के राजा अंगियास, जो दिन्हाबा भी कहलाता है, के पास चुपके से यह संदेश भेजा,
18 अपने कुछ आदमियों को हमारे पास भेजो, और वे हमारे पास आएं, और हम सेईर होरी के बच्चों से मिलकर लड़ेंगे, क्योंकि उन्होंने हमसे लड़ने का तय किया है ताकि हमें देश से भगा दें।
19 और दिन्हाबा के राजा अंगेस ने ऐसा ही किया, क्योंकि उन दिनों वह एसाव के बच्चों का दोस्त था, और अंगेस ने एसाव के बच्चों के पास पाँच सौ बहादुर पैदल सैनिक और आठ सौ घुड़सवार भेजे।
20 और सेईर के लोगों ने पूरब और मिद्यान के लोगों के पास यह संदेश भेजा, "तुमने देखा है कि एसाव के लोगों ने हमारे साथ क्या किया है, जिसकी वजह से हम लगभग पूरी तरह खत्म हो गए हैं, जब उन्होंने याकूब के लोगों के साथ लड़ाई की थी।"
21 इसलिए अब हमारे पास आओ और हमारी मदद करो, और हम उनसे मिलकर लड़ेंगे, और उन्हें देश से भगा देंगे और अपने उन भाइयों के कारण का बदला लेंगे जो उनके लिए उनके भाई याकूब के बेटों के साथ लड़ाई में मारे गए थे।
22 और पूरब के सभी लोगों ने सेईर के लोगों की बात सुनी, और वे लगभग आठ सौ आदमी तलवारें लेकर उनके पास आए, और एसाव के लोगों ने उस समय पारान के जंगल में सेईर के लोगों से लड़ाई की।
23 और तब सेईर के लोग एसाव के लोगों पर जीत गए, और सेईर के लोगों ने उस दिन उस लड़ाई में एसाव के लोगों में से

दिन्हाबा के राजा अंगेस के लगभग दो सौ आदमियों को मार डाला।
24 और दूसरे दिन एसाव के बच्चे दूसरी बार सेईर के बच्चों से लड़ने आए, और इस दूसरी बार लड़ाई में एसाव के बच्चे बहुत परेशान हुए, और सेईर के बच्चों की वजह से उन्हें बहुत परेशानी हुई।
25 और जब एसाव के बच्चों ने देखा कि सेईर के बच्चे उनसे ज़्यादा ताकतवर हो गए हैं, तो एसाव के बच्चों में से कुछ लोग मुड़े और अपने दुश्मन सेईर के बच्चों की मदद करने लगे।
26 और दूसरी लड़ाई में एसाव के लोगों में से दिन्हाबा के राजा अंगेस के पास 58 आदमी मारे गए।
27 और तीसरे दिन एसाव के बच्चों ने सुना कि उनके कुछ भाई दूसरी लड़ाई में उनसे लड़ने के लिए उनसे अलग हो गए हैं; और यह बात सुनकर एसाव के बच्चे बहुत दुखी हुए।
28 तब उन्होंने कहा, "हम अपने उन भाइयों के साथ क्या करें जो हमसे दूर होकर हमारे दुश्मन सेईर की मदद करने लगे हैं?" तब एसाव की संतानों ने फिर दिन्हाबा के राजा अंगेस के पास यह संदेश भेजा,
29 हमारे पास फिर से दूसरे आदमी भेजो ताकि हम उनके साथ सेईर के लोगों से लड़ सकें, क्योंकि वे हमसे पहले ही दोगुने भारी हो गए हैं।
30 और एंजियास ने फिर से एसाव के बच्चों के पास लगभग छह सौ बहादुर आदमी भेजे, और वे एसाव के बच्चों की मदद करने आए।
31 और दस दिन के अंदर एसाव के बच्चों ने पारान के जंगल में सेईर के बच्चों के साथ फिर से लड़ाई की, और लड़ाई में सेईर के बच्चों पर बहुत ज़ोरदार हमला हुआ, और इस बार एसाव के बच्चे सेईर के बच्चों पर भारी पड़े, और सेईर के बच्चे एसाव के बच्चों से हार गए, और एसाव के बच्चों ने उनमें से करीब दो हज़ार आदमियों को मार डाला।
32 और सेईर के सभी वीर इस लड़ाई में मारे गए, और उनके शहरों में सिर्फ़ उनके छोटे बच्चे ही बचे रहे।
33 और सारे मिद्यान और पूरब के लोग लड़ाई से भाग गए, और जब उन्होंने देखा कि लड़ाई उन पर बहुत भारी पड़ रही है, तो वे सेईर के लोगों को छोड़कर भाग गए, और एसाव के लोग पूरब के सभी लोगों का पीछा करते हुए उनके देश तक पहुँच गए।
34 और एसाव के बच्चों ने फिर भी उनमें से लगभग ढाई सौ आदमियों को मार डाला, और एसाव के बच्चों के लोगों में से लगभग तीस आदमी उस लड़ाई में मारे गए, लेकिन यह मुसीबत उन पर इसलिए आई क्योंकि उनके भाई उनसे मुँह मोड़कर होरी सेईर के बच्चों की मदद करने लगे, और एसाव के बच्चों ने फिर से अपने भाइयों के बुरे कामों के बारे में सुना, और वे इस बात की वजह से फिर से दुखी हुए।
35 और लड़ाई के बाद, एसाव के बच्चे वापस लौटकर सेईर में अपने घर आ गए, और एसाव के बच्चों ने सेईर के देश में बचे हुए लोगों को मार डाला; उन्होंने उनकी पत्नियों और बच्चों को भी मार डाला, उन्होंने पचास जवान लड़कों और लड़कियों को छोड़कर किसी को ज़िंदा नहीं छोड़ा, जिन्हें उन्होंने ज़िंदा छोड़ दिया, और एसाव के बच्चों ने उन्हें नहीं मारा, और लड़के उनके गुलाम बन गए, और लड़कियों को उन्होंने पत्नियाँ बना लिया।
36 और एसाव के बच्चे सेईर में सेईर के बच्चों की जगह रहने लगे, और उनकी ज़मीन विरासत में मिली और उस पर कब्ज़ा कर लिया।
37 और एसाव के बच्चों ने सेईर के बच्चों की ज़मीन का सारा सामान ले लिया, उनके झुंड, उनके बैल और उनका सामान भी, और सेईर के बच्चों का सारा सामान एसाव के बच्चों ने ले लिया, और एसाव के बच्चे सेईर के बच्चों की जगह पर आज तक रहते हैं, और एसाव के बच्चों ने ज़मीन को एसाव के पाँचों बेटों को उनके परिवारों के हिसाब से हिस्सों में बाँट दिया।
38 और उन दिनों ऐसा हुआ कि एसाव के बच्चों ने तय किया कि जिस देश पर उनका कब्ज़ा हो गया है, वहाँ वे अपने लिए एक राजा बनाएंगे। और उन्होंने एक-दूसरे से कहा, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि वह हमारे देश में हम पर राज करेगा, और हम उसकी सलाह के मुताबिक चलेंगे और वह हमारे दुश्मनों के खिलाफ हमारी लड़ाई लड़ेगा, और उन्होंने ऐसा ही किया।
39 और एसाव के सभी बच्चों ने कसम खाई, कि उनके भाइयों में से कोई भी उन पर राज नहीं करेगा, बल्कि कोई अजनबी आदमी जो उनके भाइयों में से न हो, क्योंकि एसाव के सभी बच्चों के मन में अपने बेटे, भाई और दोस्त के लिए गुस्सा था, क्योंकि जब वे सेईर के बच्चों से लड़े थे, तो उनके भाइयों ने उन्हें बहुत बुरा बर्ताव किया था।
40 इसलिए एसाव के बेटों ने कसम खाई, "उस दिन से वे अपने भाइयों में से किसी को राजा नहीं चुनेंगे, बल्कि आज तक किसी अनजान देश से किसी को चुनेंगे।"
41 और वहाँ दिन्हाबा के राजा अंगेस के लोगों में से एक आदमी था; उसका नाम बेला था जो बोर का बेटा था, वह बहुत बहादुर आदमी था, सुंदर और सुंदर और हर तरह की समझ वाला, और समझदार और सलाह देने वाला आदमी था; और अंगेस के लोगों में उसके जैसा कोई नहीं था।
42 और एसाव के सब बच्चों ने उसे पकड़कर उसका अभिषेक किया, और उसे राजा का ताज पहनाया, और उसके आगे झुककर कहा, राजा जीवित रहे, राजा जीवित रहे।
43 और उन्होंने चादर बिछाई, और हर आदमी के लिए सोने और चांदी की बालियां या अंगूठियां या कंगन लाए, और उन्होंने उसे चांदी और सोने, गोमेद पत्थरों और मोती से बहुत अमीर बना दिया, और उन्होंने उसके लिए एक शाही सिंहासन बनाया, और उसके सिर पर एक शाही ताज रखा, और उन्होंने उसके लिए एक महल बनाया और वह उसमें रहने लगा, और वह एसाव के सभी बच्चों का राजा बन गया।
44 और अंगियास के लोगों ने एसाव के बच्चों से लड़ाई का किराया लिया, और वे उसी समय दिन्हाबा में अपने मालिक के पास लौट आए।
45 और बेला ने एसाव के बच्चों पर तीस साल तक राज किया, और एसाव के बच्चे सेईर के बच्चों की जगह उस देश में बस गए, और वे आज तक उनकी जगह सुरक्षित रूप से रहते हैं।

अध्याय 58

1 और ऐसा हुआ कि इस्राएलियों के मिस्र जाने के बत्तीसवें साल में, यानी यूसुफ की ज़िंदगी के इकहत्तरवें साल में, मिस्र के राजा फिरौन की मौत हो गई, और उसका बेटा मगरोन उसकी जगह राजा बना।

2 और फिरौन ने अपनी मौत से पहले यूसुफ को हुक्म दिया कि वह उसके बेटे मगरोन का पिता बने, और मगरोन यूसुफ की देखरेख और उसकी सलाह के अंदर रहे।
3 और सारे मिस्र ने इस बात पर सहमति जताई कि यूसुफ उनका राजा होगा, क्योंकि सारे मिस्री यूसुफ को पहले से ही प्यार करते थे, सिर्फ़ फिरौन का बेटा मगरोन अपने पिता की गद्दी पर बैठा, और उन दिनों वह अपने पिता की जगह राजा बना।
4 जब मगरोन राज करने लगा, तब वह इकतालीस साल का था। उसने मिस्र में चालीस साल राज किया। पूरे मिस्र ने उसका नाम उसके पिता के नाम पर फिरौन रखा, जैसा कि मिस्र में हर राजा का रिवाज था जो उन पर राज करता था।
5 और जब फिरौन अपने पिता की जगह राज करने लगा, तो उसने मिस्र के कानून और सरकार के सारे काम यूसुफ के हाथ में सौंप दिए, जैसा उसके पिता ने उसे हुक्म दिया था।
6 और यूसुफ मिस्र का राजा बन गया, क्योंकि वह पूरे मिस्र का राजा था, और पूरा मिस्र उसकी देखरेख और सलाह के अधीन था, क्योंकि फिरौन की मौत के बाद पूरा मिस्र यूसुफ की तरफ झुक गया, और वे उससे बहुत प्यार करते थे ताकि वह उन पर राज करे।
7 लेकिन उनमें से कुछ लोग ऐसे थे, जो उसे पसंद नहीं करते थे, और कहते थे, कोई अजनबी हम पर राज नहीं करेगा; फिर भी, फिरौन की मौत के बाद, उन दिनों मिस्र का पूरा राज यूसुफ के हाथ में आ गया। वह कंट्रोलर था और पूरे देश में अपनी मर्ज़ी से काम करता था, बिना किसी के दखल के।
8 और पूरा मिस्र यूसुफ के कब्ज़े में था, और यूसुफ ने अपने आस-पास के सभी दुश्मनों से लड़ाई की, और उन्हें हरा दिया; और कनान की सीमाओं तक की सारी ज़मीन और सभी पलिश्तियों को भी यूसुफ ने हरा दिया, और वे सब उसके कब्ज़े में थे और वे यूसुफ को सालाना टैक्स देते थे।
9 और मिस्र का राजा फिरौन अपने पिता की जगह गद्दी पर बैठा, लेकिन वह यूसुफ के कंट्रोल और सलाह के नीचे था, जैसे वह पहले अपने पिता के कंट्रोल में था।
10 और उसने यूसुफ की सलाह पर सिर्फ़ मिस्र देश में ही राज नहीं किया, बल्कि यूसुफ ने उस समय मिस्र से लेकर बड़ी नदी परात तक पूरे देश पर राज किया।
11 और यूसुफ अपने सभी कामों में सफल रहा, और यहोवा उसके साथ था, और यहोवा ने यूसुफ को मिस्रियों और पूरे देश के दिलों में उसके लिए और भी बुद्धि, और सम्मान, और महिमा, और प्यार दिया, और यूसुफ ने पूरे देश पर चालीस साल तक राज किया।
12 और पलिश्तियों, कनान, सीदोन और यरदन के दूसरी तरफ के सभी देशों के लोग यूसुफ के लिए उसके जीवन भर तोहफ़े लाते रहे, और पूरा देश यूसुफ के हाथ में था, और वे उसे हर साल नियम के मुताबिक कर देते थे, क्योंकि यूसुफ ने अपने आस-पास के सभी दुश्मनों से लड़ाई करके उन्हें हरा दिया था, और पूरा देश यूसुफ के हाथ में था, और यूसुफ मिस्र में अपनी गद्दी पर सुरक्षित बैठा था।
13 और याकूब के बेटे, उसके सभी भाई भी यूसुफ के पूरे समय देश में सुरक्षित रहे, और वे देश में फले-फूले और बहुत ज़्यादा बढ़े, और उन्होंने अपने पिता याकूब की आज्ञा के अनुसार जीवन भर यहोवा की सेवा की।
14 और कई दिनों और सालों के बाद, जब एसाव के बच्चे अपने राजा बेला के साथ अपनी ज़मीन पर शांति से रह रहे थे, तो एसाव के बच्चे फलने-फूलने लगे और उनकी संख्या बढ़ गई। तब उन्होंने याकूब के बेटों और पूरे मिस्र से लड़ने और अपने भाई ज़ेफो, जो एलीफ़ाज़ का बेटा था, और उसके आदमियों को छुड़ाने का फ़ैसला किया, क्योंकि वे उन दिनों भी यूसुफ़ के गुलाम थे।
15 और एसाव के बच्चों ने पूरब के सब बच्चों के पास संदेश भेजा, और उन्होंने उनसे शांति कर ली, और पूरब के सब बच्चे एसाव के बच्चों के साथ मिस्र में लड़ने के लिए उनके पास आए।
16 और दिन्हाबा के राजा अंगेस के लोग भी उनके पास आए, और उन्होंने इश्माएल के बच्चों के पास भी कुछ भेजा, और वे भी उनके पास आए।
17 और ये सारे लोग इकट्ठा होकर एसाव के बच्चों की लड़ाई में मदद करने के लिए सेईर आए, और यह कैंप बहुत बड़ा और लोगों से भरा हुआ था, समुद्र की रेत जितने, लगभग आठ लाख आदमी, पैदल और घुड़सवार, और ये सारी फौज याकूब के बेटों से लड़ने के लिए मिस्र गई, और उन्होंने रामेसेस के पास कैंप लगाया।
18 और यूसुफ अपने भाइयों के साथ मिस्र के लगभग छह सौ ताकतवर आदमियों के साथ गया, और उन्होंने रामेसेस देश में उनसे लड़ाई की; और उस समय याकूब के बेटों ने एसाव के बच्चों से फिर लड़ाई की, यह याकूब के बेटों के मिस्र जाने के पचासवें साल में हुआ, यानी सेईर में एसाव के बच्चों पर बेला के राज का तीसवां साल।
19 और यहोवा ने एसाव और पूरब के सभी ताकतवर लोगों को यूसुफ और उसके भाइयों के हाथ में कर दिया, और एसाव और पूरब के लोग यूसुफ से हार गए।
20 और एसाव के लोगों और पूरब के लोगों में से जो मारे गए थे, उनमें से लगभग दो लाख आदमी याकूब के बेटों के सामने मारे गए, और उनका राजा बेला, जो बोर का बेटा था, लड़ाई में उनके साथ मारा गया, और जब एसाव के बच्चों ने देखा कि उनका राजा लड़ाई में मारा गया है और मर गया है, तो लड़ाई में उनके हाथ कमज़ोर हो गए।
21 और यूसुफ और उसके भाई और सारा मिस्र अब भी एसाव के घराने के लोगों को मार रहे थे, और एसाव के सारे लोग याकूब के बेटों से डरकर उनके सामने से भाग गए।
22 और यूसुफ और उसके भाइयों और पूरे मिस्र ने एक दिन तक उनका पीछा किया, और उन्होंने उनमें से लगभग तीन सौ आदमियों को मार डाला, और रास्ते में उन्हें मारते रहे; और फिर वे उनसे वापस लौट गए।
23 और यूसुफ और उसके सभी भाई मिस्र लौट आए, और उनमें से एक भी आदमी गायब नहीं हुआ, बल्कि मिस्रियों में से बारह आदमी मारे गए।
24 और जब यूसुफ मिस्र लौटा तो उसने सपो और उसके आदमियों को भी बांधने का हुक्म दिया, और उन्होंने उन्हें बेड़ियों में बांध दिया और उनका दुख और बढ़ गया।
25 और एसाव और पूरब के सभी लोग शर्मिंदा होकर अपने-अपने शहर लौट गए, क्योंकि उनके साथ के सभी ताकतवर लोग लड़ाई में मारे गए थे।
26 और जब एसाव के बच्चों ने देखा कि उनका राजा लड़ाई में मर गया है, तो वे जल्दी से पूरब के लोगों में से एक आदमी को ले आए; उसका नाम योबाब था जो बोत्ज़रा देश का ज़राक का बेटा

था, और उन्होंने उसे अपने राजा बेला की जगह राज करने के लिए बिठाया।
27 और योबाब बेला की जगह राजा बनकर उसकी गद्दी पर बैठा, और योबाब ने एदोम में एसाव के सभी बच्चों पर दस साल तक राज किया, और उस दिन के बाद एसाव के बच्चे याकूब के बेटों से लड़ने नहीं गए, क्योंकि एसाव के बेटे याकूब के बेटों की बहादुरी जानते थे, और वे उनसे बहुत डरते थे।
28 लेकिन उस दिन से एसाव के बच्चे याकूब के बच्चों से नफरत करने लगे, और उनके बीच नफरत और दुश्मनी बहुत ज़्यादा बढ़ गई, आज तक।
29 और इसके दस साल बाद, बोत्ज़रा के ज़राक के बेटे योबाब की मौत हो गई, और एसाव के बच्चों ने तेमान देश से चूशाम नाम के एक आदमी को लिया, और उसे योबाब की जगह अपना राजा बनाया, और चूशाम ने एदोम में एसाव के सभी बच्चों पर बीस साल तक राज किया।
30 और मिस्र का राजा यूसुफ, उसके भाई, और इस्राएल के सभी बच्चे उन दिनों मिस्र में सुरक्षित रहते थे, यूसुफ और उसके भाइयों के सभी बच्चे भी सुरक्षित रहते थे, उन्हें कोई परेशानी या बुरी घटना नहीं हुई और मिस्र की ज़मीन उस समय यूसुफ और उसके भाइयों के दिनों में युद्ध से शांत थी।

अध्याय 59

1 और ये उन इस्राएल के बेटों के नाम हैं जो मिस्र में रहते थे, और याकूब के साथ आए थे; याकूब के सभी बेटे अपने-अपने घराने के साथ मिस्र आए।
2 लिआ के बच्चे रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार और जबूलून और उनकी बहन दीना थे।
3 और राहेल के बेटे यूसुफ और बिन्यामीन थे।
4 और लिआ की दासी जिल्पा के बेटे गाद और आशेर थे।
5 और राहेल की दासी बिल्हा के बेटे दान और नप्ताली थे।
6 और ये उनके बच्चे थे जो उनके पिता याकूब के साथ मिस्र आने से पहले कनान देश में पैदा हुए थे।
7 रूबेन के बेटे थे कनोच, पल्लू, केतज्रोन और कर्म्मी।
8 और शिमोन के बेटे यमूएल, यामीन, ओहद, याकिन, ज़ोखर और कनानी औरत का बेटा शाऊल थे।
9 और लेवी के बच्चे गेर्शोन, कहात और मरारी थे, और उनकी बहन योकेबेद थी, जो मिस्र जाते समय उनसे पैदा हुई थी।
10 और यहूदा के बेटे एर, ओनान, शेलह, पेरेस और ज़राक थे।
11 और एर और ओनान कनान देश में मर गए; और पेरेस के बेटे केज़्रोन और चामुल थे।
12 और इस्साकार के बेटे तोला, पुवा, योब और शोमरोन थे।
13 और जबूलून के बेटे सेरेद, एलोन और याकलेल थे, और दान का बेटा कूशीम था।
14 और नप्ताली के बेटे थे: याकज़ेल, गूनी, यित्सेर और शिलाम।
15 और गाद के बेटे थे: जिप्योन, चाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी और अरेली।
16 और आशेर के बच्चे जिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, बरीआ और उनकी बहन सेराक थे; और बरीआ के बेटे केबर और मल्कीएल थे।
17 और बिन्यामीन के बेटे थे बेला, बेकेर, अशबेल, गेरा, नामान, आकी, रोश, मुपीम, चुपीम और ओर्द।
18 और यूसुफ के बेटे जो मिस्र में पैदा हुए, वे थे मनश्शे और एप्रैम।
19 और याकूब के कुल में से जो लोग निकले, वे सत्तर लोग थे; ये वे लोग थे जो अपने पिता याकूब के साथ मिस्र में रहने आए थे; और यूसुफ और उसके सभी भाई मिस्र में सुरक्षित रहे, और यूसुफ के जीवन भर उन्होंने मिस्र का सबसे अच्छा खाना खाया।
20 यूसुफ मिस्र देश में तिरानबे साल तक रहा, और यूसुफ ने पूरे मिस्र पर अस्सी साल तक राज किया।
21 जब यूसुफ के मरने का समय पास आया, तो उसने अपने भाइयों और अपने पिता के पूरे घराने को बुलाया, और वे सब इकट्ठा होकर उसके सामने बैठ गए।
22 तब यूसुफ ने अपने भाइयों और अपने पिता के पूरे घराने से कहा, देखो, मैं मरने वाला हूँ, और परमेश्वर ज़रूर तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से उस देश में ले जाएगा जिसे देने की उसने तुम्हारे पूर्वजों से कसम खाई थी।
23 और जब परमेश्वर तुम पर कृपा करके तुम्हें यहां से तुम्हारे पुरखों की भूमि पर ले जाएगा, तब मेरी हड्डियों को भी अपने साथ यहां से ले आना।
24 और यूसुफ ने इस्राएल के बेटों को उनके बाद उनके वंश के लिए यह कहकर शपथ दिलाई, कि परमेश्वर ज़रूर तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम मेरी हड्डियों को यहां से अपने साथ ले जाओगे।
25 इसके बाद ऐसा हुआ कि यूसुफ की मौत उसी साल हुई, जो इस्राएलियों के मिस्र जाने का 71वां साल था।
26 जब यूसुफ मिस्र देश में मरा, तब वह एक सौ दस साल का था। उसके सभी भाई और उसके सभी नौकर-चाकर उठे और उन्होंने अपने रिवाज के मुताबिक यूसुफ के शव को सुगंधित किया। और उसके भाइयों और पूरे मिस्र ने सत्तर दिन तक उसके लिए दुख मनाया।
27 और उन्होंने यूसुफ को मसालों और हर तरह के इत्र से भरे एक ताबूत में रखा, और उसे सीहोर नदी के किनारे दफ़ना दिया, और उसके बेटों और उसके सभी भाइयों, और उसके पिता के पूरे घराने ने उसके लिए सात दिन का मातम मनाया।
28 और ऐसा हुआ कि यूसुफ की मौत के बाद, उन दिनों सभी मिस्रियों ने इस्राएल के बच्चों पर राज करना शुरू कर दिया, और मिस्र के राजा फिरौन ने, जो अपने पिता की जगह राज कर रहा था, मिस्र के सभी कानून अपनाए और मिस्र का पूरा राज अपनी सलाह से चलाया, और वह अपने लोगों पर सुरक्षित रूप से राज करने लगा।

अध्याय 60

1 जब इस्राएलियों को मिस्र जाने में बहत्तर साल हो गया, यूसुफ की मौत के बाद, तो एसाव के बेटे एलीपज का बेटा सपो, अपने आदमियों के साथ मिस्र से भाग गया।
2 और वह अफ्रीका के राजा एंजेस के पास, जो दिन्हाबाह कहलाता है, अफ्रीका आया, और एंजेस ने उनका बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया, और उसने ज़ेफो को अपनी सेना का सेनापति बनाया।
3 और जेफो को एंजियस और उसके लोगों की नज़र में अच्छा लगा, और जेफो कई दिनों तक अफ्रीका के राजा एंजियस की सेना का सेनापति रहा।

4 और जेफो ने अफ्रीका के राजा एंजेस को फुसलाया कि वह अपनी सारी सेना इकट्ठा करके मिस्रियों और याकूब के बेटों से लड़े, और उनसे अपने भाइयों का बदला ले।
5 लेकिन एंजियास ने ज़ेफो की बात नहीं मानी, क्योंकि एंजियास याकूब के बेटों की ताकत जानता था, और यह भी कि उन्होंने एसाव के बच्चों के साथ लड़ाई में उसकी सेना के साथ क्या किया था।
6 और उन दिनों जेपो, एंजियास और उसके सभी लोगों की नज़र में बहुत बड़ा था, और वह उन्हें मिस्र के खिलाफ़ लड़ाई करने के लिए लगातार लुभाता रहा, लेकिन वे नहीं माने।
7 और उन दिनों ऐसा हुआ कि चित्तिम देश के पुज़िमना शहर में एक आदमी था, जिसका नाम उज़ू था, और चित्तिम के बच्चों ने उसे बुरी तरह से भगवान मान लिया, और वह आदमी मर गया और उसके कोई बेटा नहीं था, सिर्फ़ एक बेटी थी जिसका नाम यानिया था।
8 और वह लड़की बहुत ही सुंदर, रूपवती और बुद्धिमान थी, और पूरे देश में सुंदरता और बुद्धि में उसके जैसा कोई नहीं था।
9 और अफ्रीका के राजा एंजियस के लोगों ने उसे देखा और वे उसके पास आए और उसकी तारीफ़ की, और एंजियस ने चित्तिम के बच्चों के पास संदेश भेजा, और उसने उससे शादी करने के लिए कहा, और चित्तिम के लोगों ने उसे पत्नी के रूप में देने के लिए हाँ कर दी।
10 और जब एंजियास के दूत चिट्टिम देश से अपनी यात्रा पर निकल रहे थे, तो देखो, बिबेंटू के राजा टर्नस के दूत चिट्टिम पहुँचे। बिबेंटू के राजा टर्नस ने भी अपने दूतों को जेनिया से शादी करने के लिए रिक्वेस्ट करने के लिए भेजा था, क्योंकि उसके सभी आदमियों ने भी उसकी तारीफ़ की थी, इसलिए उसने अपने सभी नौकरों को उसके पास भेजा।
11 और टुर्नस के सेवक चित्तिम आए, और उन्होंने यानिया को अपने राजा टुर्नस के पास पत्नी के रूप में ले जाने के लिए कहा।
12 और चित्तिम के लोगों ने उनसे कहा, हम उसे नहीं दे सकते, क्योंकि अफ्रीका के राजा एंजियस ने तुम्हारे आने से पहले उसे अपनी पत्नी के तौर पर लेने की इच्छा की थी, और हम उसे उसे दे दें, और इसलिए अब हम ऐसा नहीं कर सकते कि एंजियस को उस लड़की से दूर करके उसे टर्नस को दे दें।
13 क्योंकि हम एंजियस से बहुत डरते हैं, कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे खिलाफ लड़ाई में आकर हमें खत्म कर दे, और तुम्हारा मालिक टर्नस हमें उसके हाथ से बचा न सके।
14 और जब तुरनुस के दूतों ने चित्तिम के बच्चों की सारी बातें सुनीं, तो वे अपने मालिक के पास लौट आए और उसे चित्तिम के बच्चों की सारी बातें बता दीं।
15 और चित्तिम के बच्चों ने एंजियस को एक चिट्ठी भेजी, जिसमें कहा गया, "देखो, टर्नस ने जेनिया को अपनी पत्नी बनाने के लिए बुलाया है, और हमने उसे यह जवाब दिया है; और हमने सुना है कि उसने तुम्हारे खिलाफ़ लड़ने के लिए अपनी पूरी सेना इकट्ठा कर ली है, और वह तुम्हारे भाई ल्यूकस से लड़ने के लिए सार्दुनिया के रास्ते से गुज़रने का इरादा रखता है, और उसके बाद वह तुम्हारे खिलाफ़ लड़ने आएगा।"
16 और एंजियस ने चित्तिम के बच्चों की बातें सुनीं जो उन्होंने उसे रिकॉर्ड में भेजी थीं, और उसका गुस्सा भड़क उठा और वह उठा और अपनी पूरी सेना इकट्ठा करके समुद्र के द्वीपों से होते हुए, सरदुनिया के रास्ते, अपने भाई लुकस के पास आया जो सरदुनिया का राजा था।
17 और ल्यूकस के बेटे निब्लोस ने सुना कि उसका चाचा एंजेस आ रहा है, और वह एक बड़ी सेना के साथ उससे मिलने गया, और उसने उसे चूमा और गले लगाया, और निब्लोस ने एंजेस से कहा, जब तुम मेरे पिता का हालचाल पूछना, जब मैं तुम्हारे साथ टर्नस से लड़ने जाऊँ, तो उनसे कहना कि मुझे अपनी सेना का कप्तान बना दें, और एंजेस ने वैसा ही किया, और वह अपने भाई के पास आया और उसका भाई उससे मिलने आया, और उसने उससे उसका हालचाल पूछा।
18 और एंजियस ने अपने भाई ल्यूकस से उसकी खैरियत पूछी, और अपने बेटे निब्लोस को अपनी सेना का कप्तान बनाने को कहा, और ल्यूकस ने वैसा ही किया, और एंजियस और उसका भाई ल्यूकस उठकर टर्नस की ओर लड़ाई के लिए गए, और उनके साथ एक बड़ी सेना और भारी लोग थे।
19 और वह जहाज़ों में आया, और वे अश्तोराश प्रांत में पहुँचे, और देखो, टर्नस उनकी तरफ़ आया, क्योंकि वह सार्दुनिया गया था, और उसे तबाह करने का इरादा रखता था और बाद में वहाँ से एंजियास जाकर उससे लड़ना चाहता था।
20 और एंजियस और उसका भाई ल्यूकस, कैनोपिया की घाटी में टर्नस से मिले, और उस जगह उनके बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई।
21 और सार्दुनिया के राजा लूकस पर बहुत बुरा युद्ध हुआ, और उसकी सारी सेना हार गई, और उसका बेटा निब्लोस भी उस युद्ध में मारा गया।
22 और उसके चाचा एंजियस ने अपने नौकरों को हुक्म दिया और उन्होंने निब्लोस के लिए एक सोने का ताबूत बनाया और उसे उसमें डाल दिया, और एंजियस ने फिर से टर्नस की तरफ लड़ाई की, और एंजियस उससे ज़्यादा ताकतवर था, और उसने उसे मार डाला, और उसने उसके सभी लोगों को तलवार की धार से मार डाला, और एंजियस ने अपने भाई के बेटे निब्लोस और अपने भाई ल्यूकस की सेना की हार का बदला लिया।
23 और जब टर्नस की मौत हो गई, तो लड़ाई में बचे हुए लोगों के हाथ कमज़ोर हो गए, और वे एंजियस और उसके भाई ल्यूकस के सामने से भाग गए।
24 और एंजियस और उसके भाई ल्यूकस ने उनका पीछा उस बड़े रास्ते तक किया, जो अल्फानू और रोमा के बीच था, और उन्होंने तलवार की धार से टर्नस की पूरी सेना को मार डाला।
25 और सार्दुनिया के राजा लूकस ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे पीतल का एक ताबूत बनाएं, और उसमें उसके बेटे निब्लोस का शव रखें, और उन्होंने उसे उसी जगह दफना दिया।
26 और उन्होंने वहाँ हाईवे पर एक ऊँची मीनार बनाई, और उसका नाम निब्लोस के नाम पर आज तक रखा, और उन्होंने बिबेंटू के राजा टर्नस को भी निब्लोस के साथ उसी जगह पर दफ़नाया।
27 और देखो, अल्फानू और रोमा के बीच हाईवे पर एक तरफ निब्लोस की कब्र है और दूसरी तरफ टुर्नस की कब्र है, और उनके बीच आज तक एक फ़र्श है।
28 और जब निब्लोस को दफ़नाया गया, तो उसका पिता ल्यूकस अपनी सेना के साथ अपनी ज़मीन सार्दुनिया लौट गया, और उसका भाई, अफ्रीका का राजा एंजियस, अपने लोगों के साथ बिबेंटू शहर गया, जो कि टर्नस का शहर है।

29 और बिबेंटू के रहने वालों ने उसकी शोहरत सुनी और वे उससे बहुत डर गए, और वे रोते-बिलखते और मिन्नतें करते हुए उससे मिलने गए, और बिबेंटू के रहने वालों ने एंजेस से गुज़ारिश की कि वह उन्हें न मारे और न ही उनके शहर को तबाह करे; और उसने ऐसा ही किया, क्योंकि उन दिनों बिबेंटू चित्तिम के बच्चों के शहरों में से एक माना जाता था; इसलिए उसने शहर को तबाह नहीं किया।
30 लेकिन उस दिन से अफ़्रीका के राजा की सेना चित्तिम को लूटने और लूटने के लिए वहाँ जाती थी, और जब भी वे जाते थे, तो अंगियास की सेना का सेनापति ज़ेपो उनके साथ जाता था।
31 और इसके बाद एंजियस अपनी सेना के साथ वापस लौटा और वे पुज़िमना शहर पहुँचे, और एंजियस ने वहाँ से उज़ू की बेटी जेनिया को अपनी पत्नी के रूप में लिया और उसे अफ़्रीका में अपने शहर ले आया।

अध्याय 61

1 उस समय मिस्र के राजा फिरौन ने अपनी सारी प्रजा को आज्ञा दी कि वे उसके लिए मिस्र में एक मजबूत महल बनाएं।
2 और उसने याकूब के बेटों को भी मिस्रियों की मदद करने का हुक्म दिया, और मिस्रियों ने शाही रहने के लिए एक सुंदर और शानदार महल बनाया, और वह उसमें रहने लगा और उसने अपनी सरकार को फिर से बनाया और उसने सुरक्षित रूप से राज किया।
3 और याकूब का बेटा ज़ेबुलून उसी साल मर गया, यानी इस्राएलियों के मिस्र जाने का बहत्तरवां साल, और ज़ेबुलून एक सौ चौदह साल का होकर मरा, और उसे एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
4 और पचहत्तरवें साल में उसका भाई शिमोन मर गया, वह मरने के समय एक सौ बीस साल का था, और उसे भी ताबूत में रखकर उसके बच्चों के हाथों में सौंप दिया गया।
5 और एसाव के बेटे एलीपज का बेटा जेपो, जो दिन्हाबा के राजा अंगेस की सेना का सेनापति था, अब भी हर दिन अंगेस को मिस्र में याकूब के बेटों से लड़ने के लिए तैयार होने के लिए फुसला रहा था, और अंगेस यह काम करने को तैयार नहीं था, क्योंकि उसके सेवकों ने उसे याकूब के बेटों की सारी ताकत के बारे में बताया था, कि उन्होंने एसाव के बच्चों के साथ लड़ाई में उनके साथ क्या किया था।
6 और उन दिनों सपो हर दिन अंगियास को याकूब के बेटों से लड़ने के लिए फुसलाता था।
7 और कुछ समय बाद एंजियस ने ज़ेफो की बातें मानकर उसे मिस्र में याकूब के बेटों से लड़ने के लिए मान लिया, और एंजियस ने अपने सभी लोगों को इकट्ठा किया, जो समुद्र किनारे की रेत जितने अनगिनत थे, और उसने मिस्र जाकर लड़ने का फैसला किया।
8 और अंगियास के सेवकों में पंद्रह साल का एक लड़का था, जिसका नाम बिलाम था, जो बोर का बेटा था। वह लड़का बहुत बुद्धिमान था और जादू-टोना जानता था।
9 और एंजियस ने बिलाम से कहा, "हम जादू-टोना करके हमारे लिए जादू कर, ताकि हम जान सकें कि इस लड़ाई में कौन जीतेगा, जिसमें हम अभी जा रहे हैं।"
10 और बिलाम ने हुक्म दिया कि वे उसके लिए मोम लाएँ, और उसने उससे रथों और घुड़सवारों की आकृतियाँ बनाईं जो एंगियास की सेना और मिस्र की सेना को दिखाते थे, और उसने उन्हें उस काम के लिए चालाकी से तैयार किए गए पानी में डाल दिया, और उसने अपने हाथ में मेंहदी के पेड़ों की डालियाँ लीं, और उसने अपनी चालाकी से काम लिया, और उन्हें पानी के ऊपर जोड़ दिया, और पानी में उसे एंगियास की सेनाओं की मिलती-जुलती आकृतियाँ दिखाई दीं जो मिस्रियों और याकूब के बेटों की मिलती-जुलती आकृतियों के सामने गिर रही थीं।
11 और बिलाम ने यह बात अंगियास को बताई, और अंगियास निराश हो गया और उसने मिस्र में लड़ाई के लिए जाने के लिए हथियार नहीं उठाए, और वह अपने शहर में ही रहा।
12 और जब एलीफ़ाज़ के बेटे ज़ेफ़ो ने देखा कि अंगियास मिस्रियों से लड़ने के लिए आगे बढ़ने से निराश हो गया है, तो ज़ेफ़ो अफ़्रीका से अंगियास के पास से भाग गया, और वह जाकर चित्तिम में आ गया।
13 और चित्तिम के सभी लोगों ने उसका बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया, और उन्होंने उसे हर दिन अपनी लड़ाइयों में लड़ने के लिए काम पर रखा, और उन दिनों ज़ेफो बहुत अमीर हो गया, और अफ़्रीका के राजा की सेना उन दिनों भी फैली हुई थी, और चित्तिम के लोग इकट्ठा होकर अफ़्रीका के राजा एंजेस की सेना की वजह से माउंट कुट्टीज़िया गए, जो उन पर आगे बढ़ रही थी।
14 एक दिन सपो ने एक बछिया खो दी, और वह उसे ढूंढने गया, और उसने उसे पहाड़ के चारों ओर रंभाते हुए सुना।
15 और ज़ेफो गया और उसने देखा कि पहाड़ के नीचे एक बड़ी गुफा है, और गुफा के दरवाज़े पर एक बड़ा पत्थर था, और ज़ेफो ने पत्थर को चीर दिया और वह गुफा में आया और उसने देखा कि एक बड़ा जानवर बैल को खा रहा है; बीच से ऊपर की तरफ वह एक आदमी जैसा दिख रहा था, और बीच से नीचे की तरफ वह एक जानवर जैसा दिख रहा था, और ज़ेफो जानवर के खिलाफ़ उठा और उसे अपनी तलवारों से मार डाला।
16 जब चित्तिम के लोगों ने यह बात सुनी, तो वे बहुत खुश हुए और कहने लगे, "हम उस आदमी का क्या करें जिसने हमारे जानवरों को खाने वाले इस जानवर को मार डाला है?"
17 और वे सब साल में एक दिन उसके लिए पवित्र करने के लिए इकट्ठा हुए, और उन्होंने उसके नाम पर उसका नाम ज़ेफो रखा, और वे हर साल उस दिन उसके लिए ड्रिंक चढ़ाते थे, और वे उसके लिए तोहफ़े लाते थे।
18 उस समय राजा एंजियस की पत्नी उज़ू की बेटी जेनिया बीमार हो गई, और उसकी बीमारी एंजियस और उसके अधिकारियों को बहुत ज़्यादा महसूस हुई, और एंजियस ने अपने जानकारों से पूछा, मैं जेनिया का क्या करूँ और उसे उसकी बीमारी से कैसे ठीक करूँ? और उसके जानकारों ने उससे कहा, क्योंकि हमारे देश की हवा चित्तिम देश की हवा जैसी नहीं है, और हमारा पानी उनके पानी जैसा नहीं है, इसलिए रानी बीमार हो गई है।
19 क्योंकि हवा और पानी के बदलने से वह बीमार हो गई, और इसलिए भी कि अपने देश में उसने सिर्फ़ पुरमा का पानी पिया, जिसे उसके पुरखे पुल बनाकर लाए थे।
20 और एंजियस ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, और वे चिट्टिम के पुरमाह का पानी बर्तनों में भरकर उसके पास लाए, और उन्होंने उस पानी को अफ़्रीका की ज़मीन के सारे पानी से तौला, और पाया कि वह पानी अफ़्रीका के पानी से हल्का था।

21 और एंजियस ने यह देखा, और उसने अपने सभी अधिकारियों को हज़ारों और लाखों की संख्या में पत्थर काटने वालों को इकट्ठा करने का आदेश दिया, और उन्होंने अनगिनत पत्थर काटे, और बनाने वाले आए और उन्होंने एक बहुत मज़बूत पुल बनाया, और उन्होंने चिट्टिम की ज़मीन से पानी का झरना अफ़्रीका तक पहुँचाया, और वह पानी रानी जेनिया और उसके सभी कामों के लिए था, जिससे वे पीते थे, पकाते थे, धोते थे और नहाते थे, और उससे सभी बीज भी सींचते थे जिनसे खाना मिल सकता था, और ज़मीन के सभी फल भी।
22 और राजा ने हुक्म दिया कि वे चित्तिम की मिट्टी बड़े-बड़े जहाज़ों में लाएँ, और वे उससे बनाने के लिए पत्थर भी लाए, और बनाने वालों ने रानी यानिया के लिए महल बनाए, और रानी अपनी बीमारी से ठीक हो गई।
23 और साल के शुरू में अफ़्रीका की सेना हमेशा की तरह चिट्टिम देश में लूटपाट करने आई, और एलीफ़ाज़ के बेटे ज़ेफ़ो ने उनकी खबर सुनी, और उसने उनके बारे में आदेश दिए और उनसे लड़ा, और वे उसके सामने से भाग गए, और उसने चिट्टिम देश को उनसे छुड़ा लिया।
24 और चित्तिम के बच्चों ने ज़ेफो की बहादुरी देखी, और चित्तिम के बच्चों ने ठान लिया और ज़ेफो को अपना राजा बनाया, और वह उनका राजा बन गया, और जब वह राज कर रहा था, तो वे तूबल के बच्चों और आस-पास के सभी द्वीपों पर कब्ज़ा करने गए।
25 और उनका राजा ज़ेफो उनके आगे गया और उन्होंने तूबल और द्वीपों से लड़ाई की, और उन्हें हरा दिया, और जब वे लड़ाई से लौटे तो उन्होंने उसके लिए उसका राज फिर से बनाया, और उसके शाही घर और बैठने की जगह के लिए एक बहुत बड़ा महल बनाया, और उसके लिए एक बड़ी राजगद्दी बनाई, और ज़ेफो ने पूरे चित्तिम और इटालिया देश पर पचास साल तक राज किया।

अध्याय 62

1 उस साल, जो इस्राएलियों के मिस्र जाने का उनहत्तरवाँ साल था, याकूब का बेटा रूबेन मिस्र देश में मर गया; जब रूबेन मरा तब वह एक सौ पच्चीस साल का था, और उसे एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
2 और अस्सीवें साल में उसका भाई दान मर गया; मरने के समय वह एक सौ बीस साल का था, और उसे भी ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
3 और उसी साल एदोम का राजा कूशाम मर गया, और उसके बाद बेदाद का बेटा हदद पैंतीस साल तक राज करता रहा; और इक्यासीवें साल में याकूब का बेटा इस्साकार मिस्र में मर गया, और इस्साकार अपनी मौत के समय एक सौ बाईस साल का था, और उसे मिस्र में एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
4 और बयासीवें साल में उसका भाई आशेर मर गया। मरने के समय वह एक सौ तेईस साल का था। उसे मिस्र में एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
5 और गाद की मौत तिरासी साल में हुई, जब वह मरा तो उसकी उम्र एक सौ पच्चीस साल थी, और उसे मिस्र में एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
6 और ऐसा हुआ कि एदोम के राजा हदद, बेदाद के बेटे, के राज के पचासवें साल यानी चौरासीवें साल में, हदद ने एसाव के सभी बच्चों को इकट्ठा किया, और उसने अपनी पूरी सेना, लगभग चार लाख आदमियों को तैयार किया, और वह मोआब देश की ओर चल पड़ा, और मोआब से लड़ने और उन्हें अपना कर देने वाला बनाने के लिए चला गया।
7 और मोआब के लोगों ने यह बात सुनी, और वे बहुत डर गए, और उन्होंने मिद्यान के लोगों को भेजा कि वे एदोम के राजा बेदाद के बेटे हदद से लड़ने में उनकी मदद करें।
8 और हदद मोआब के देश में आया, और मोआब और मिद्यान के लोग उससे मिलने निकले, और मोआब के मैदान में उसके खिलाफ लड़ाई के लिए लाइन में खड़े हो गए।
9 और हदद ने मोआब से लड़ाई की, और मोआब और मिद्यान के बहुत से लोग मारे गए, लगभग दो लाख आदमी।
10 और मोआब के खिलाफ लड़ाई बहुत मुश्किल थी, और जब मोआब के लोगों ने देखा कि लड़ाई उन पर भारी पड़ रही है, तो उन्होंने हार मान ली और पीठ फेर ली, और मिद्यान के लोगों को लड़ाई जारी रखने के लिए छोड़ दिया।
11 और मिद्यान के लोग मोआब के इरादों को नहीं जानते थे, लेकिन उन्होंने लड़ाई में खुद को मज़बूत किया और हदद और उसकी पूरी सेना से लड़े, और सारे मिद्यान उसके सामने हार गए।
12 और हदद ने सारे मिद्यानियों को बुरी तरह मारा, और उन्हें तलवार से मार डाला, और मोआब की मदद करने आए किसी को भी नहीं छोड़ा।
13 और जब मिद्यान के सभी बच्चे लड़ाई में मारे गए, और मोआब के बच्चे बच निकले, तो हदद ने उस समय पूरे मोआब को अपने अधीन कर लिया, और वे उसके अधीन हो गए, और उन्होंने आदेश के अनुसार सालाना कर दिया, और हदद वापस अपने देश चला गया।
14 और साल के शुरू में, जब देश में रहने वाले मिद्यान के बाकी लोगों ने सुना कि उनके सभी भाई मोआब की वजह से हदद के साथ लड़ाई में मारे गए हैं, क्योंकि मोआब के बच्चों ने लड़ाई में पीठ फेर ली थी और मिद्यान को छोड़कर लड़ने चले गए थे, तब मिद्यान के पाँच राजकुमारों ने अपने देश में बचे हुए बाकी भाइयों के साथ मिलकर मोआब से लड़ने का फैसला किया ताकि अपने भाइयों की वजह से बदला लिया जा सके।
15 और मिद्यान के लोगों ने अपने सभी भाइयों, यानी पूरब के लोगों के पास भेजा, और उनके सभी भाई, यानी कतूरा के सभी लोग, मोआब से लड़ने के लिए मिद्यान की मदद करने आए।
16 जब मोआब के लोगों ने यह बात सुनी, तो वे बहुत डर गए क्योंकि पूरब के सभी लोग उनके खिलाफ लड़ाई के लिए इकट्ठा हो गए थे। इसलिए उन्होंने एदोम देश में बेदाद के बेटे हदद के पास यह कहकर एक चिट्ठी भेजी,
17 अब हमारे पास आओ और हमारी मदद करो, और हम मिद्यान को हरा देंगे, क्योंकि वे सब इकट्ठा होकर अपने सभी भाईयों, यानी पूरब के लोगों के साथ हमारे खिलाफ लड़ने आए हैं, ताकि लड़ाई में मारे गए मिद्यान का बदला ले सकें।
18 और एदोम के राजा बेदाद का बेटा हदद अपनी पूरी सेना के साथ मिद्यान से लड़ने के लिए मोआब देश में गया, और मिद्यान और पूरब के लोगों ने मोआब के मैदान में मोआब से लड़ाई की, और उनके बीच बहुत ज़ोरदार लड़ाई हुई।

19 और हदद ने तलवार से सभी मिद्यानियों और पूरब के लोगों को मार डाला, और उस समय हदद ने मोआब को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ाया, और जो मिद्यानियों और पूरब के लोग बचे थे, वे हदद और उसकी सेना के सामने से भाग गए, और हदद ने उनका पीछा करके उनके देश तक पहुँचाया, और उन्हें बहुत बुरी तरह मारा, और जो मारे गए वे रास्ते में ही गिर पड़े।
20 और हदद ने मोआब को मिद्यान के हाथ से छुड़ाया, क्योंकि मिद्यान के सभी बच्चे तलवार की धार से मारे गए थे, और हदद मुड़कर अपने देश लौट गया।
21 और उस दिन से मिद्यान के लोग मोआब के लोगों से नफ़रत करने लगे, क्योंकि वे उनकी वजह से लड़ाई में मारे गए थे, और उनके बीच हर दिन बड़ी और ज़बरदस्त दुश्मनी रही।
22 और जितने मिद्यान के लोग मोआब देश के रास्ते में मिले, वे सब मोआब की तलवार से मारे गए; और जितने मोआब के लोग मिद्यान देश के रास्ते में मिले, वे सब मिद्यान की तलवार से मारे गए; ऐसा ही मिद्यान ने मोआब के साथ और मोआब ने मिद्यान के साथ बहुत दिनों तक किया।
23 और उस समय ऐसा हुआ कि याकूब का बेटा यहूदा मिस्र में मर गया, याकूब के मिस्र जाने के छियासीवें साल में, और यहूदा अपनी मौत के समय एक सौ उनतीस साल का था, और उन्होंने उसका शवदाह किया और उसे एक ताबूत में रखा, और उसे उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
24 और अस्सी-नौवें साल में नप्ताली की मौत हो गई, वह एक सौ बत्तीस साल का था, और उसे एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
25 और ऐसा हुआ कि जब इस्राएली मिस्र गए, तो इक्यानवे साल में, यानी एसाव के बेटे एलीपज के बेटे जेफो के चित्तियों पर राज के तीसवें साल में, अफ़्रीका के लोग चित्तियों पर हमेशा की तरह लूटने आए, लेकिन वे इन तेरह सालों से उन पर हमला नहीं कर पाए थे।
26 और वे उस साल उनके पास आए, और एलीफ़ाज़ का बेटा ज़ेफ़ो अपने कुछ आदमियों के साथ उनके पास गया और उन्हें बुरी तरह मारा, और अफ़्रीका के सैनिक ज़ेफ़ो के सामने से भाग गए और मारे गए लोग उसके सामने गिर पड़े, और ज़ेफ़ो और उसके आदमियों ने उनका पीछा किया, और उन्हें तब तक मारते रहे जब तक वे अफ़्रीका के पास नहीं पहुँच गए।
27 और अफ़्रीका के राजा एंजियस ने ज़ेफो की बात सुनी, और वह बहुत गुस्सा हुआ, और एंजियस पूरे दिन ज़ेफो से डरता रहा।

अध्याय 63

1 और तिरानबे साल में याकूब का बेटा लेवी मिस्र में मर गया, और जब लेवी मरा तब वह एक सौ सैंतीस साल का था, और उसे एक ताबूत में रखकर उसके बच्चों को सौंप दिया गया।
2 और लेवी की मौत के बाद, जब पूरे मिस्र ने देखा कि याकूब के बेटे, यानी यूसुफ के भाई, मर गए हैं, तो सभी मिस्रियों ने याकूब के बच्चों को सताना शुरू कर दिया, और उस दिन से लेकर उनके मिस्र से निकलने के दिन तक उनकी ज़िंदगी को मुश्किल बना दिया, और उन्होंने उनके हाथों से वे सभी अंगूर के बाग और खेत छीन लिए जो यूसुफ ने उन्हें दिए थे, और वे सभी शानदार घर जिनमें इस्राएल के लोग रहते थे, और मिस्र की सारी अच्छी चीज़ें, मिस्रियों ने उन दिनों याकूब के बेटों से सब कुछ छीन लिया।
3 और उन दिनों में सारे मिस्र का हाथ इस्राएलियों पर और भी बुरा हो गया, और मिस्रियों ने इस्राएलियों को तब तक सताया जब तक कि इस्राएली मिस्रियों के कारण अपनी जान से थक नहीं गए।
4 और उन दिनों में, इस्राएल के मिस्र जाने के एक सौ दोवें साल में, मिस्र का राजा फिरौन मर गया, और उसका बेटा मेलोल उसकी जगह राजा बना, और मिस्र के सभी ताकतवर लोग और वह पूरी पीढ़ी जो यूसुफ और उसके भाइयों को जानती थी, उन दिनों में मर गई।
5 और उनकी जगह एक और पीढ़ी आई, जो याकूब के बेटों को नहीं जानती थी, न ही यह जानती थी कि उन्होंने उनके साथ क्या-क्या अच्छा किया था, और मिस्र में उनकी सारी ताकत को भी नहीं जानती थी।
6 इसलिए उस दिन से पूरे मिस्र ने याकूब के बेटों की ज़िंदगी को दुख देना शुरू कर दिया, और उन्हें हर तरह की मुश्किलों से परेशान करना शुरू कर दिया, क्योंकि वे अपने उन पुरखों को नहीं जानते थे जिन्होंने अकाल के दिनों में उन्हें बचाया था।
7 और यह भी यहोवा की तरफ से इस्राएल के बच्चों के लिए था, ताकि उनके आखिरी दिनों में उन्हें फायदा हो, ताकि इस्राएल के सभी बच्चे अपने परमेश्वर यहोवा को जान सकें।
8 और यह जानने के लिए कि यहोवा मिस्र में अपने लोगों इस्राएल के लिए क्या-क्या निशानियाँ और बड़े-बड़े चमत्कार करेगा, ताकि इस्राएल के बच्चे अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा का डर मानें, और वे और उनके बाद उनके वंश हमेशा उसके सभी मार्गों पर चलें।
9 जब मेलोल राज करने लगा, तब वह बीस साल का था, और उसने चौरानबे साल राज किया, और पूरे मिस्र ने उसका नाम उसके पिता के नाम पर फिरौन रखा, जैसा कि मिस्र में राज करने वाले हर राजा का रिवाज था।
10 उस समय अफ़्रीका के राजा एंजियस की सारी सेना हमेशा की तरह लूटपाट के लिए चित्तिम देश में फैल गई।
11 और एसाव के बेटे एलीपज के बेटे सपो ने उनकी खबर सुनी, और वह अपनी सेना के साथ उनका सामना करने के लिए निकला, और उसने वहीं रास्ते में उनसे लड़ाई की।
12 और ज़ेपो ने अफ़्रीका के राजा की सेना को तलवार से मार डाला, और उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ा, और एक भी अफ़्रीका में अपने मालिक के पास वापस नहीं लौटा।
13 और एंजियास ने सुना कि एलीपज के बेटे जेफो ने अपनी सारी सेना के साथ क्या किया है, कि उसने उन्हें खत्म कर दिया है, और एंजियास ने अपनी सारी सेना, अफ़्रीका देश के सभी लोगों को इकट्ठा किया, जो समुद्र किनारे की रेत की तरह बहुत ज़्यादा थे।
14 और एंजियस ने अपने भाई लूकस के पास यह संदेश भेजा, "अपने सभी आदमियों के साथ मेरे पास आओ और ज़ेफो और चित्तिम के सभी बच्चों को मारने में मेरी मदद करो, जिन्होंने मेरे आदमियों को मार डाला है।" लूकस अपनी पूरी सेना, एक बहुत बड़ी सेना के साथ, अपने भाई एंजियस की मदद करने के लिए ज़ेफो और चित्तिम के बच्चों से लड़ने आया।
15 और सपो और चित्तिम के बच्चों ने यह बात सुनी, और वे बहुत डर गए, और उनके दिलों में बहुत डर बैठ गया।

16 और सपो ने एदोम के देश में एदोम के राजा बेदाद के बेटे हदद और एसाव के सभी बच्चों को एक चिट्ठी भेजी, जिसमें लिखा था,
17 मैंने सुना है कि अफ्रीका का राजा एंजियस अपने भाई के साथ हमसे लड़ने आ रहा है, और हम उससे बहुत डरे हुए हैं, क्योंकि उसकी सेना बहुत बड़ी है, खासकर इसलिए क्योंकि वह अपने भाई और उसकी सेना के साथ हम पर हमला करने आ रहा है।
18 इसलिए अब तुम भी मेरे साथ ऊपर आओ और मेरी मदद करो, और हम मिलकर एंजियस और उसके भाई ल्यूकस से लड़ेंगे, और तुम हमें उनके हाथों से बचाओगे, लेकिन अगर नहीं, तो जान लो कि हम सब मर जाएंगे।
19 और एसाव के बच्चों ने चित्तिम के बच्चों और उनके राजा ज़ेपो को एक चिट्ठी भेजी, जिसमें लिखा था, "हम अंगियास और उसके लोगों से नहीं लड़ सकते, क्योंकि हमारे बीच कई सालों से शांति का एक करार है, पहले राजा बेला के दिनों से, और मिस्र के राजा याकूब के बेटे यूसुफ के दिनों से, जिसके साथ हमने यरदन के दूसरी तरफ लड़ाई की थी, जब उसने अपने पिता को दफ़नाया था।"
20 और जब सपो ने अपने भाई एसाव के बच्चों की बातें सुनीं, तो वह उनसे दूर हो गया, और सपो अनगेस से बहुत डर गया।
21 और एंजियस और उसके भाई लूकस ने अपनी पूरी सेना, यानी करीब आठ लाख आदमियों को, चित्तिम के बच्चों के खिलाफ खड़ा किया।
22 और चित्तिम के सभी बच्चों ने सपो से कहा, "अपने पुरखों के भगवान से हमारे लिए प्रार्थना करो, शायद वह हमें अंगियास और उसकी सेना के हाथ से बचा ले, क्योंकि हमने सुना है कि वह एक महान भगवान है और वह उन सभी को बचाता है जो उस पर भरोसा करते हैं।"
23 और सपो ने उनकी बातें सुनीं, और सपो ने यहोवा से पूछा,
24 हे मेरे पूर्वजों अब्राहम और इसहाक के परमेश्वर यहोवा, आज मैं जान गया कि तू ही सच्चा परमेश्वर है, और सब जातियों के देवता व्यर्थ और बेकार हैं।
25 आज मुझे वह वाचा याद कर जो तूने हमारे पिता अब्राहम के साथ की थी, जो हमारे पुरखों ने हमें बताई थी, और आज हमारे पुरखों अब्राहम और इसहाक की खातिर मुझ पर मेहरबानी कर, और मुझे और चित्तिम के बच्चों को अफ्रीका के राजा के हाथ से बचा, जो हमारे खिलाफ लड़ाई के लिए आ रहा है।
26 और यहोवा ने ज़ेफो की बात मान ली, और अब्राहम और इसहाक के कारण उस पर ध्यान दिया, और यहोवा ने ज़ेफो और चित्तिम के बच्चों को अंगियास और उसके लोगों के हाथ से बचाया।
27 और उस दिन ज़ेपो ने अफ्रीका के राजा अंगियास और उसके सभी लोगों से लड़ाई की, और यहोवा ने अंगियास के सभी लोगों को चित्तिम के बच्चों के हाथों में दे दिया।
28 और एंजियास पर बहुत भयानक लड़ाई हुई, और ज़ेफो ने एंजियास के सभी आदमियों और उसके भाई लूकस को तलवार से मार डाला, और उस दिन शाम तक उनमें से लगभग चार लाख आदमी मारे गए।
29 और जब एंजियस ने देखा कि उसके सभी आदमी मर गए हैं, तो उसने अफ्रीका के सभी रहने वालों को एक चिट्ठी भेजी कि वे उसके पास आएं, लड़ाई में उसकी मदद करें, और उसने चिट्ठी में लिखा, 'अफ्रीका में जो भी दस साल और उससे ज़्यादा उम्र के हों, वे सब मेरे पास आएं; वे सब मेरे पास आएं, और देखो, अगर वह नहीं आया तो वह मर जाएगा, और जो कुछ भी उसके पास है, और उसका पूरा घराना, राजा ले लेगा।'
30 और अफ्रीका के बाकी सभी लोग एंजियस की बातों से डर गए, और शहर से लगभग तीन लाख आदमी और लड़के, जिनकी उम्र दस साल से ज़्यादा थी, निकलकर एंजियस आ गए।
31 और दस दिन के आखिर में अंगियास ने ज़ेफो और चित्तिम के बच्चों के खिलाफ़ फिर से लड़ाई शुरू की, और उनके बीच लड़ाई बहुत बड़ी और ज़ोरदार हुई।
32 और एन्जियस और लूकस की सेना में से, जेफो ने बहुत से घायलों को, जो लगभग दो हज़ार आदमी थे, उसके पास भेजा, और एन्जियस की सेना का सेनापति सोसिफ्तर उस लड़ाई में मारा गया।
33 और जब सोसिफ्तर गिर गया, तो अफ्रीकी सैनिक भागने के लिए पीछे मुड़ गए, और वे भाग गए, और एंजियस और उसका भाई ल्यूकस उनके साथ थे।
34 और ज़ेफो और चित्तिम के लोगों ने उनका पीछा किया, और उन्होंने रास्ते में उन्हें बुरी तरह मारा, लगभग दो सौ आदमी थे, और उन्होंने अंगेस के बेटे अज़द्रुबल का पीछा किया जो अपने पिता के साथ भाग गया था, और उन्होंने रास्ते में उसके बीस आदमियों को मारा, और अज़द्रुबल चित्तिम के लोगों से बच निकला, और उन्होंने उसे नहीं मारा।
35 और एंजियास और उसका भाई लूकस अपने बाकी आदमियों के साथ भाग गए, और वे डर और घबराहट के साथ अफ्रीका पहुँचे, और एंजियास को हर दिन डर लगा रहता था कि कहीं एलीफ़ाज़ का बेटा ज़ेफ़ो उसके साथ लड़ाई में न चला जाए।

अध्याय 64

1 उस समय बोर का बेटा बिलाम लड़ाई में अंगियास के साथ था। जब उसने देखा कि सपो अंगियास से जीत गया है, तो वह वहाँ से भागकर चित्तिम आ गया।
2 और सपो और चित्तिम के बच्चों ने उसका बड़े आदर के साथ स्वागत किया, क्योंकि सपो बिलाम की बुद्धिमानी जानता था, और सपो ने बिलाम को बहुत से तोहफ़े दिए और वह उसके साथ रहा।
3 और जब सपो युद्ध से लौटा, तो उसने चित्तिम के उन सभी बच्चों की गिनती करने की आज्ञा दी जो उसके साथ युद्ध में गए थे, और देखो, एक भी छूटा नहीं।
4 और सपो इस बात से बहुत खुश हुआ, और उसने अपना राज फिर से बनाया, और अपनी सारी प्रजा के लिए दावत रखी।
5 लेकिन ज़ेफो ने यहोवा को याद नहीं किया और यह नहीं सोचा कि यहोवा ने लड़ाई में उसकी मदद की थी, और उसने उसे और उसके लोगों को अफ्रीका के राजा के हाथ से बचाया था, लेकिन वह अब भी चित्तिम के बच्चों और एसाव के बुरे बच्चों के रास्ते पर चलता रहा, और दूसरे देवताओं की सेवा करता रहा जिन्हें उसके भाई एसाव के बच्चों ने उसे सिखाया था; इसलिए कहा जाता है, बुरे लोगों से ही बुराई निकलती है।
6 और ज़ेफो ने चित्तिम के सभी लोगों पर सुरक्षित रूप से राज किया, लेकिन वह उस प्रभु को नहीं जानता था जिसने उसे और उसके सभी लोगों को अफ्रीका के राजा के हाथ से बचाया था;

और अफ्रीका के सैनिक हमेशा की तरह लूटपाट करने के लिए चित्तिम नहीं आए, क्योंकि वे ज़ेफो की ताकत को जानते थे जिसने उन सभी को तलवार की धार से मार डाला था, इसलिए एंजियास पूरे दिन एलीपज के बेटे ज़ेफो और चित्तिम के बच्चों से डरता रहा।

7 उस समय जब ज़ेफो युद्ध से लौटा, और जब ज़ेफो ने देखा कि उसने अफ्रीका के सभी लोगों पर कैसे जीत हासिल की है और उन्हें तलवार की धार पर युद्ध में हरा दिया है, तब ज़ेफो ने चित्तिम के बच्चों के साथ मिस्र जाने की सलाह दी, ताकि याकूब के बेटों और मिस्र के राजा फिरौन से लड़ सकें।

8 क्योंकि सपो ने सुना कि मिस्र के वीर लोग मर गए हैं, और यूसुफ और उसके भाई जो याकूब के बेटे हैं, वे भी मर गए हैं, और उनके सब बच्चे, अर्थात् इस्राएल के बच्चे, मिस्र में ही रह गए हैं।

9 और सपो ने उनसे और पूरे मिस्र से लड़ने का सोचा, ताकि अपने भाई एसाव के बच्चों का बदला ले सके, जिन्हें यूसुफ ने अपने भाइयों और पूरे मिस्र के साथ कनान देश में तब मारा था, जब वे हेब्रोन में याकूब को दफनाने गए थे।

10 और सपो ने एदोम के राजा बेदाद के बेटे हदद और उसके सभी भाइयों एसाव के बच्चों के पास यह कहकर दूत भेजे,

11 क्या तुमने नहीं कहा था कि तुम अफ्रीका के राजा के खिलाफ नहीं लड़ोगे क्योंकि वह तुम्हारे करार का सदस्य है? देखो, मैंने उससे लड़ाई की और उसे और उसके सभी लोगों को मार डाला।

12 इसलिए अब मैंने मिस्र और वहां रहने वाले याकूब के बच्चों से लड़ने का फैसला किया है, और मैं उनसे बदला लूंगा जो यूसुफ, उसके भाइयों और पूर्वजों ने कनान देश में हमारे साथ किया था, जब वे हेब्रोन में अपने पिता को दफनाने गए थे।

13 अब अगर तुम उनके और मिस्र के खिलाफ लड़ने में मेरी मदद करने के लिए मेरे पास आना चाहते हो, तो हम अपने भाइयों का बदला लेंगे।

14 और एसाव के बच्चों ने ज़ेफो की बातें मान लीं, और एसाव के बच्चों ने एक बहुत बड़ी जमात इकट्ठा की, और वे लड़ाई में ज़ेफो और चित्तिम के बच्चों की मदद करने गए।

15 और सपो ने पूरब के सभी लोगों और इश्माएल के सभी लोगों के पास ऐसी ही बातें भेजीं, और वे इकट्ठा होकर मिस्र के खिलाफ लड़ाई में सपो और चित्तिम के लोगों की मदद के लिए आगे आए।

16 और ये सब राजा, एदोम का राजा और पूरब के लोग, और इश्माएल की सारी संतानें, और चित्तिम का राजा सपो, सब निकलकर हेब्रोन में अपनी सारी सेना को इकट्ठा करने लगे।

17 और कैंप बहुत भारी था, जो तीन दिन के सफ़र तक फैला हुआ था, और लोग समुद्र किनारे की रेत जितने ज़्यादा थे जिन्हें गिना नहीं जा सकता।

18 और ये सभी राजा और उनकी सेनाएं नीचे गईं और पूरे मिस्र पर हमला करके युद्ध किया, और पथ्रोस की घाटी में एक साथ डेरा डाला।

19 और सारे मिस्र ने उनकी बात सुनी, और वे भी इकट्ठा हुए, मिस्र देश के सब लोग और मिस्र के सब शहरों के लोग, जो लगभग तीन लाख आदमी थे।

20 और मिस्र के लोगों ने उन दिनों गोशेन देश में रहने वाले इस्राएलियों के पास भी संदेश भेजा कि वे उनके पास आएं और इन राजाओं से लड़ें।

21 और इस्राएल के लोग इकट्ठा हुए, जिनकी संख्या लगभग 150 थी, और वे मिस्रियों की मदद करने के लिए लड़ाई में गए।

22 और इस्राएल और मिस्र के लोग, करीब तीन लाख आदमी और डेढ़ सौ आदमी, इन राजाओं से लड़ने के लिए निकले, और गोशेन देश के बाहर से पथ्रोस के सामने खड़े हो गए।

23 और मिस्रियों ने इस्राएल पर विश्वास नहीं किया कि वे उनके साथ उनके कैंप में लड़ाई के लिए जाएं, क्योंकि सब मिस्रियों ने कहा, शायद इस्राएल के बच्चे हमें एसाव और इश्माएल के बच्चों के हाथ में सौंप दें, क्योंकि वे उनके भाई हैं।

24 और सभी मिस्रियों ने इस्राएलियों से कहा, तुम सब यहीं अपनी जगह पर रहो, और हम जाकर एसाव और इश्माएल की संतानों से लड़ेंगे, और अगर ये राजा हम पर हावी हो जाएं, तो तुम सब मिलकर उन पर हमला करो और हमारी मदद करो, और इस्राएलियों ने वैसा ही किया।

25 और चित्तिम के राजा एसाव के बेटे एलीपज का बेटा सपो, और एदोम के राजा बेदाद के बेटे हदद, और उनके सारे कैंप, और पूरब के सारे लोग, और इश्माएल के बच्चे, जो रेत के बराबर बहुत ज़्यादा थे, उन्होंने मिलकर पट्रोस घाटी में तचपंचेस के सामने डेरा डाला।

26 और सीरियाई बोर का बेटा बिलाम, जो कित्तिम के बच्चों के साथ लड़ाई के लिए आया था, सपो के कैंप में था। बिलाम सपो और उसके आदमियों की नज़र में बहुत इज़्ज़तदार आदमी था।

27 तब सपो ने बिलाम से कहा, "हमारे लिए भविष्यवाणी करके पूछो ताकि हम जान सकें कि लड़ाई में कौन जीतेगा, हम या मिस्री।"

28 तब बिलाम उठा और उसने भविष्य बताने की कला की कोशिश की, और वह इसमें माहिर भी था, लेकिन वह कंफ्यूज हो गया और उसका काम उसके हाथ से खराब हो गया।

29 और उसने फिर कोशिश की, लेकिन कामयाब नहीं हुआ। बिलाम निराश होकर उसे छोड़ गया और पूरा नहीं किया। यह यहोवा की तरफ से था, ताकि सपो और उसके लोग इस्राएलियों के हाथ में पड़ जाएं, जिन्होंने अपनी लड़ाई में अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा किया था।

30 और सपो और हदद ने अपनी सेना को लड़ाई के लिए तैयार किया, और सारे मिस्री अकेले ही उनके खिलाफ़ गए, लगभग तीन लाख आदमी, और इस्राएल का एक भी आदमी उनके साथ नहीं था।

31 और सभी मिस्रियों ने पत्रोस और तचपंचेस के सामने इन राजाओं से लड़ाई की, और मिस्रियों के खिलाफ लड़ाई बहुत कड़ी थी।

32 और उस लड़ाई में राजा मिस्रियों से ज़्यादा ताकतवर थे, और उस दिन मिस्र के करीब 180 आदमी मारे गए, और राजाओं की सेना के करीब 30 आदमी मारे गए, और मिस्र के सभी आदमी राजाओं के सामने से भाग गए, इसलिए एसाव और इश्माएल के बच्चों ने मिस्रियों का पीछा किया, और उन्हें उस जगह तक मारते रहे जहाँ इस्राएल के बच्चों का कैंप था।

33 और सब मिस्रियों ने इस्राएलियों से पुकारकर कहा, "जल्दी हमारे पास आओ, हमारी मदद करो, और हमें एसाव, इश्माएल और चित्तियों के हाथ से बचाओ।"

34 और इस्राएलियों के डेढ़ सौ आदमी अपनी जगह से भागकर इन राजाओं के कैंप में गए, और इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा से उन्हें बचाने के लिए पुकारा।

35 और यहोवा ने इस्राएल की बात सुनी, और यहोवा ने राजाओं के सभी आदमियों को उनके हाथ में कर दिया, और इस्राएल के बच्चों ने उन राजाओं से लड़ाई की, और इस्राएल के बच्चों ने राजाओं के लगभग चार हज़ार आदमियों को मार डाला।
36 और यहोवा ने राजाओं के कैंप में बहुत घबराहट फैला दी, जिससे इस्राएल के बच्चे डर गए।
37 और राजाओं की सारी सेना इस्राएलियों के सामने से भाग गई और इस्राएली उनका पीछा करते हुए कूश देश की सीमाओं तक उन्हें मारते रहे।
38 और इस्राएलियों ने रास्ते में उनमें से दो हज़ार और आदमियों को मार डाला, और इस्राएलियों में से एक भी नहीं मरा।
39 और जब मिस्रियों ने देखा कि इस्राएल के लोग इतने कम आदमियों के साथ राजाओं से लड़े हैं, और यह लड़ाई उनके खिलाफ बहुत कड़ी थी,
40 इस ज़बरदस्त लड़ाई की वजह से सभी मिस्री अपनी जान को लेकर बहुत डर गए, और सभी मिस्री भाग गए, हर कोई खड़ी सेना से छिपकर रास्ते में छिप गया, और उन्होंने इस्राएलियों को लड़ने के लिए छोड़ दिया।
41 और इस्राएलियों ने राजा के आदमियों को बुरी तरह मारा, और जब उन्होंने उन्हें कूश देश की सीमा तक खदेड़ दिया, तो वे उनके पास से लौट गए।
42 और सारे इस्राएलियों को पता चल गया कि मिस्र के लोगों ने उनके साथ क्या किया था, कि वे लड़ाई में उनसे भाग गए थे, और उन्हें अकेले लड़ने के लिए छोड़ दिया था।
43 इसलिए इस्राएलियों ने भी चालाकी से काम लिया, और जब इस्राएली लड़ाई से लौट रहे थे, तो उन्हें रास्ते में कुछ मिस्री मिले और उन्होंने उन्हें वहीं मार डाला।
44 और जब वे उन्हें मार रहे थे, तो उन्होंने उनसे ये बातें कहीं:
45 तुम हमें क्यों छोड़कर चले गए और हमें, जो कुछ ही लोग थे, इन राजाओं से लड़ने क्यों गए, जिनके पास हमें मारने के लिए बहुत बड़ी सेना थी, ताकि तुम अपनी जान बचा सको?
46 और रास्ते में जो इस्राएली मिले, उनमें से इस्राएलियों ने आपस में कहा, मारो, मारो, क्योंकि वह इश्माएली, या एदोमी, या चित्तिम के बच्चों में से है। तब वे उसके पास खड़े हो गए और उसे मार डाला, और वे जान गए कि वह मिस्री है।
47 और इस्राएलियों ने मिस्रियों के खिलाफ ये काम चालाकी से किए, क्योंकि वे लड़ाई में उनका साथ छोड़कर भाग गए थे।
48 और इस्राएलियों ने रास्ते में मिस्र के लगभग दो सौ आदमियों को इसी तरह मार डाला।
49 और मिस्र के सभी लोगों ने देखा कि इस्राएलियों ने उनके साथ क्या बुरा किया था, इसलिए पूरा मिस्र इस्राएलियों से बहुत डर गया, क्योंकि उन्होंने उनकी बड़ी ताकत देखी थी, और यह भी कि उनमें से एक भी आदमी नहीं मरा था।
50 इसलिए इस्राएल के सभी लोग खुशी-खुशी गोशेन के रास्ते पर लौट आए, और बाकी मिस्र के लोग भी अपनी-अपनी जगह लौट गए।

अध्याय 65

1 इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि मिस्र के राजा फिरौन के सब सलाहकार और मिस्र के सब बुज़ुर्ग इकट्ठा हुए और राजा के सामने आए, और ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम किया, और वे उसके सामने बैठ गए।
2 और मिस्र के सलाहकारों और बुज़ुर्गों ने राजा से कहा,
3 देखो, इस्राएल के लोग हमसे ज़्यादा ताकतवर और ताकतवर हैं, और तुम जानते हो कि जब हम लड़ाई से लौट रहे थे, तो उन्होंने रास्ते में हमारे साथ क्या-क्या बुरा किया।
4 और तुमने उनकी ज़बरदस्त ताकत भी देखी है, क्योंकि यह ताकत उन्हें उनके पुरखों से मिली है, क्योंकि कुछ ही लोग रेत के कणों जितने बहुत सारे लोगों के खिलाफ़ खड़े हुए, और उन्हें तलवार की धार से मार डाला, और उनमें से एक भी नहीं मरा, इसलिए अगर वे बहुत ज़्यादा होते तो वे उन्हें पूरी तरह खत्म कर देते।
5 इसलिए अब हमें सलाह दो कि हम उनके साथ क्या करें, जब तक कि हम उन्हें धीरे-धीरे अपने बीच से खत्म न कर दें, कहीं ऐसा न हो कि वे इस देश में हमसे ज़्यादा हो जाएं।
6 क्योंकि अगर इस्राएल के बच्चे इस देश में बढ़ गए, तो वे हमारे लिए रुकावट बनेंगे, और अगर कोई लड़ाई हुई, तो वे अपनी बड़ी ताकत से हमारे दुश्मन के साथ मिलकर हमारे खिलाफ लड़ेंगे, और हमें इस देश से खत्म कर देंगे और इससे दूर चले जाएंगे।
7 तब राजा ने मिस्र के बुज़ुर्गों को जवाब दिया, "यह वही प्लान है जो इस्राएल के खिलाफ़ बनाया गया है, जिससे हम पीछे नहीं हटेंगे।"
8 देखो, इस देश में पिथोम और रामेसेस हैं, ये शहर लड़ाई के लिए कमज़ोर हैं, तुम्हें और हमें इन्हें बनाना चाहिए और मज़बूत करना चाहिए।
9 इसलिए अब तुम भी जाओ और उनके साथ चालाकी से पेश आओ, और राजा के हुक्म पर मिस्र और गोशेन में यह ऐलान करो,
10 हे मिस्र, गोशेन, पथ्रोस और उसके सभी निवासियों! राजा ने हमें पिथोम और रामेसेस को बनाने और लड़ाई के लिए उन्हें मज़बूत करने का हुक्म दिया है; तुममें से जो भी मिस्र, इस्राएल के बच्चों और शहरों के सभी निवासियों में से हमारे साथ बनाने को तैयार होगा, उसे राजा के हुक्म पर हर दिन उसकी मज़दूरी दी जाएगी; इसलिए तुम पहले जाओ और चालाकी से काम करो, और इकट्ठा होकर पिथोम और रामेसेस में बनाने के लिए आओ।
11 और जब तुम बना रहे हो, तो राजा के हुक्म से पूरे मिस्र में हर दिन इस तरह का ऐलान करवाओ।
12 और जब इस्राएल के कुछ बच्चे तुम्हारे साथ काम करने आएं, तो तुम उन्हें कुछ दिनों तक हर दिन उनकी मज़दूरी देना।
13 और जब वे तुम्हारे साथ अपने रोज़ के किराए पर काम कर लें, तो तुम रोज़ एक-एक करके चुपके से उनसे दूर चले जाओ, और फिर तुम उठकर उनके मालिक और अफ़सर बन जाओ, और बाद में उन्हें बिना मज़दूरी के काम करने के लिए छोड़ दो, और अगर वे मना कर दें, तो अपनी पूरी ताकत से उन्हें काम करने के लिए मजबूर करो।
14 और अगर तुम ऐसा करोगे तो हमारे लिए अच्छा होगा कि हम अपनी ज़मीन को इस्राएलियों के खिलाफ़ मज़बूत कर लें, क्योंकि बनाने और काम की थकान की वजह से इस्राएली कमज़ोर होते जाएँगे, क्योंकि तुम उन्हें दिन-ब-दिन उनकी पत्नियों से दूर करते जाओगे।

15 और मिस्र के सभी बुज़ुर्गों ने राजा की सलाह सुनी, और यह सलाह उन्हें, फिरौन के कर्मचारियों को, और पूरे मिस्र को अच्छी लगी, और उन्होंने राजा की बात मान ली।
16 तब सब सेवक राजा के पास से चले गए, और उन्होंने सारे मिस्र में, तखपंचेस, गोशेन और मिस्र के आस-पास के सब शहरों में यह ऐलान करवाया,
17 तुमने देखा है कि एसाव और इश्माएल की संतानों ने हमारे साथ क्या किया, जो हमसे लड़ने आए थे और हमें खत्म करना चाहते थे।
18 इसलिए अब राजा ने हमें हुक्म दिया कि हम देश को मज़बूत करें, पिथोम और रामेसेस शहर बनाएं, और अगर वे फिर से हम पर हमला करें तो लड़ाई के लिए उन्हें मज़बूत करें।
19 तुम में से जो कोई भी पूरे मिस्र और इस्राएल के लोगों में से हमारे साथ बनाने आएगा, उसे राजा की तरफ से उसकी रोज़ की मज़दूरी दी जाएगी, जैसा कि उसका हुक्म है।
20 और जब मिस्र और सभी इस्राएलियों ने फिरौन के सेवकों की सारी बातें सुनीं, तो मिस्रियों और इस्राएलियों में से पिथोम और रामेसेस फिरौन के सेवकों के साथ बनाने के लिए आए, लेकिन लेवी के बच्चों में से कोई भी अपने भाइयों के साथ बनाने के लिए नहीं आया।
21 और फिरौन के सब सेवक और उसके हाकिम पहले धोखे से सारे इस्राएल के साथ दिहाड़ी मज़दूर बनकर आए, और उन्होंने इस्राएल को शुरू में ही उनका रोज़ का किराया दे दिया।
22 और फिरौन के सेवकों ने पूरे इस्राएल के साथ मिलकर निर्माण कार्य किया, और वे एक महीने तक इस्राएल के साथ उस काम में लगे रहे।
23 और महीने के आखिर में, फिरौन के सभी सेवक रोज़ाना चुपके से इस्राएल के लोगों से दूर जाने लगे।
24 और उस समय इस्राएल ने काम जारी रखा, लेकिन उन्हें तब अपनी रोज़ की मज़दूरी मिली, क्योंकि मिस्र के कुछ आदमी उस समय भी इस्राएल के साथ काम कर रहे थे; इसलिए मिस्रियों ने उन दिनों इस्राएलियों को उनकी मज़दूरी दी, ताकि वे, जो उनके साथी मिस्री थे, अपनी मेहनत का पैसा भी ले सकें।
25 और एक साल और चार महीने के आखिर में सभी मिस्री इस्राएलियों से दूर हो गए, इसलिए इस्राएली अकेले ही काम में लगे रहे।
26 और जब सभी मिस्री इस्राएलियों से दूर हो गए, तो वे वापस आकर उन पर ज़ुल्म करने वाले और उन पर अफ़सर बन गए, और उनमें से कुछ इस्राएलियों पर काम करने वाले बन गए, ताकि वे उनसे वह सब ले सकें जो वे उन्हें अपनी मेहनत के बदले देते थे।
27 और मिस्री लोग इस्राएलियों के साथ हर दिन ऐसा ही करते रहे, ताकि उनके काम में उन्हें तकलीफ़ हो।
28 और इस्राएल के सभी बच्चे अकेले ही काम में लगे रहे, और मिस्रियों ने उस समय से इस्राएल के बच्चों को कोई भी वेतन देना बंद कर दिया।
29 और जब इस्राएल के कुछ आदमियों ने मज़दूरी न मिलने की वजह से काम करने से मना कर दिया, तो फिरौन के करदाताओं और सेवकों ने उन पर ज़ुल्म किया, उन्हें बुरी तरह मारा-पीटा, और उन्हें ज़बरदस्ती वापस भेज दिया, ताकि वे अपने भाइयों के साथ काम करें; ऐसा ही सब मिस्री इस्राएल के बच्चों के साथ हमेशा करते रहे।
30 और इस बात से सारे इस्राएली मिस्रियों से बहुत डर गए, और सारे इस्राएली वापस लौट आए और बिना पैसे के अकेले काम करने लगे।
31 और इस्राएल के बच्चों ने पिथोम और रामेसेस को बनाया, और इस्राएल के सभी बच्चों ने काम किया, कुछ ने ईंटें बनाईं, और कुछ ने बिल्डिंग बनाई, और इस्राएल के बच्चों ने मिस्र की सारी ज़मीन और उसकी दीवारों को बनाया और मज़बूत किया, और इस्राएल के बच्चे कई सालों तक काम में लगे रहे, जब तक कि वह समय नहीं आया जब प्रभु ने उन्हें याद किया और उन्हें मिस्र से बाहर निकाला।
32 लेकिन लेवी के बच्चों को शुरू से लेकर मिस्र से निकलने के दिन तक अपने इस्राएली भाइयों के साथ काम पर नहीं रखा गया।
33 क्योंकि लेवी के सभी बच्चे जानते थे कि मिस्रियों ने ये सब बातें इस्राएलियों से धोखे से कही थीं, इसलिए लेवी के बच्चे अपने भाइयों के साथ काम पर जाने से बचते रहे।
34 और मिस्रियों ने बाद में लेवी के बच्चों से काम करवाने पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे शुरू में अपने भाइयों के साथ नहीं थे, इसलिए मिस्रियों ने उन्हें अकेला छोड़ दिया।
35 और मिस्र के लोग इस काम में इस्राएलियों के खिलाफ़ लगातार सख्ती से काम करते रहे, और मिस्रियों ने इस्राएलियों से सख्ती से काम करवाया।
36 और मिस्रियों ने इस्राएलियों से गारे और ईंटों के काम और खेत में हर तरह के काम में कड़ी मेहनत करवाकर उनकी ज़िंदगी खराब कर दी।
37 और इस्राएल के बच्चों ने मिस्र के राजा मेलोल को "मिस्र का राजा मेरोर" कहा, क्योंकि उसके दिनों में मिस्रियों ने हर तरह के काम से उनकी ज़िंदगी खराब कर दी थी।
38 और मिस्रियों ने इस्राएलियों से जो भी काम करवाया, वे उनसे बहुत ज़्यादा करवाया, ताकि इस्राएलियों को तकलीफ़ दें। लेकिन जितना ज़्यादा वे उन्हें तकलीफ़ देते, उतना ही वे बढ़ते गए और बढ़ते गए, और मिस्रियों को इस्राएलियों की वजह से दुख हुआ।

अध्याय 66

1 उस समय एदोम के राजा बेदाद का बेटा हदद मर गया, और उसकी जगह पूर्व के देश के मेसरेका का सम्ला राजा बना।
2 मिस्र के राजा फिरौन के राज के तेरहवें साल में, जो इस्राएलियों के मिस्र जाने का एक सौ पच्चीसवां साल था, सम्ला ने एदोम पर अठारह साल राज किया।
3 और जब वह राज करने लगा, तो उसने अपनी सेना को एलीपज के बेटे ज़ेफो और चित्तिम के बच्चों से लड़ने के लिए भेजा, क्योंकि उन्होंने अफ्रीका के राजा एंजेस के खिलाफ लड़ाई की थी, और उसकी पूरी सेना को खत्म कर दिया था।
4 लेकिन उसने उससे लड़ाई नहीं की, क्योंकि एसाव के बच्चों ने उसे यह कहकर रोक दिया कि वह उनका भाई है। इसलिए समला ने एसाव के बच्चों की बात मान ली और अपनी पूरी सेना के साथ एदोम देश लौट गया, और एलीपज के बेटे सपो से लड़ने के लिए आगे नहीं बढ़ा।
5 और मिस्र के राजा फिरौन ने यह बात सुनी, और कहा, एदोम के राजा सम्ला ने चित्तियों से लड़ने का फैसला किया है, और उसके बाद वह मिस्र से लड़ने आएगा।

6 जब मिस्रियों ने यह बात सुनी, तो उन्होंने इस्राएलियों पर और ज़्यादा मेहनत की, कहीं ऐसा न हो कि इस्राएली उनके साथ वैसा ही करें जैसा उन्होंने हदद के दिनों में एसाव के बच्चों के साथ लड़ाई में किया था।
7 तब मिस्रियों ने इस्राएलियों से कहा, "जल्दी करो और अपना काम पूरा करो, और देश को मज़बूत करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे भाई एसाव के बच्चे हमसे लड़ने आएँ, क्योंकि वे तुम्हारे ही कारण हमसे लड़ने आएँगे।"
8 और इस्राएल के बच्चे हर दिन मिस्र के लोगों का काम करते रहे, और मिस्र के लोग इस्राएल के बच्चों को परेशान करते रहे ताकि देश में उनकी संख्या कम हो जाए।
9 लेकिन जैसे-जैसे मिस्रियों ने इस्राएलियों पर ज़्यादा मेहनत की, वैसे-वैसे इस्राएली भी बढ़ते गए और उनकी संख्या बढ़ती गई, और पूरा मिस्र इस्राएलियों से भर गया।
10 और जब इस्राएल मिस्र गया, तो एक सौ पच्चीसवें साल में सभी मिस्रियों ने देखा कि इस्राएल के खिलाफ उनकी साज़िश कामयाब नहीं हुई, बल्कि वे बढ़ते गए और बढ़ते गए, और मिस्र और गोशेन की ज़मीन इस्राएल के बच्चों से भर गई।
11 इसलिए मिस्र के सभी बुज़ुर्ग और बुद्धिमान लोग राजा के सामने आए और उसे प्रणाम करके उसके सामने बैठ गए।
12 और मिस्र के सभी बुज़ुर्गों और समझदार लोगों ने राजा से कहा, "राजा हमेशा ज़िंदा रहें; आपने हमें इस्राएलियों के खिलाफ़ सलाह दी थी, और हमने राजा की बात के मुताबिक उनके साथ किया।"
13 लेकिन मेहनत के हिसाब से वे भी बढ़ते हैं और देश में बढ़ते हैं, और देखो पूरा देश उनसे भर गया है।
14 इसलिए अब हमारे मालिक और राजा, सारे मिस्र की नज़रें आप पर लगी हैं कि आप अपनी समझ से उन्हें सलाह दें, जिससे वे इस्राएल पर जीत हासिल करके उन्हें खत्म कर दें, या देश से उनका नामोनिशान मिटा दें; और राजा ने उनसे कहा, इस मामले में आप सलाह दें ताकि हम जान सकें कि उनके साथ क्या करना है।
15 और राजा के सलाहकारों में से एक अय्यूब नाम के एक अधिकारी ने, जो ऊज़ देश के मेसोपोटामिया से था, राजा को जवाब दिया,
16 अगर राजा को अच्छा लगे तो वह अपने सेवक की सलाह सुन ले; और राजा ने उससे कहा, बोलो।
17 तब अय्यूब ने राजा, हाकिमों और मिस्र के सब बुज़ुर्गों के सामने कहा,
18 देखो, राजा ने इस्राएलियों की मेहनत के बारे में जो सलाह पहले दी थी, वह बहुत अच्छी है, और तुम मेहनत करने वालों को हमेशा के लिए दूर न करना।
19 लेकिन यह सलाह दी गई है जिससे तुम उन्हें कम कर सकते हो, अगर राजा को उन्हें तकलीफ देना अच्छा लगे।
20 देखो, हम बहुत समय से युद्ध से डरते रहे हैं, और हमने कहा था, जब इस्राएल इस देश में फलने-फूलने लगेगा, तो अगर युद्ध हुआ तो वे हमें इस देश से निकाल देंगे।
21 अगर राजा को अच्छा लगे, तो एक शाही हुक्म जारी किया जाए, और मिस्र के कानून में यह लिखा जाए जिसे बदला न जाए, कि इस्राएलियों के यहाँ पैदा होने वाले हर लड़के का खून ज़मीन पर बहाया जाए।
22 और जब तुम ऐसा करोगे, तो जब इस्राएल के सभी लड़के मर जाएँगे, तो उनकी लड़ाइयों की बुराई बंद हो जाएगी; राजा ऐसा ही करे और सभी इब्री दाइयों को बुलाकर उन्हें इस मामले में काम करने का हुक्म दे; इसलिए यह बात राजा और हाकिमों को अच्छी लगी, और राजा ने अय्यूब की बात मान ली।
23 और राजा ने इब्रानी दाइयों को बुलवाया, जिनमें से एक का नाम शेफरा और दूसरी का नाम पुआ था।
24 और दाइयां राजा के सामने आईं और उसके सामने खड़ी हो गईं।
25 और राजा ने उनसे कहा, "जब तुम इब्री औरतों के लिए दाई का काम करो और उन्हें स्टूल पर देखो, तो अगर बेटा हो, तो उसे मार डालो, लेकिन अगर बेटी हो, तो उसे ज़िंदा रहने दो।"
26 लेकिन अगर तुम यह काम नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें और तुम्हारे सारे घरों को आग में जला दूँगा।
27 लेकिन दाइयां परमेश्वर से डरती थीं और मिस्र के राजा या उसकी बातों पर ध्यान नहीं देती थीं। इसलिए जब इब्री औरतें दाई के पास बेटा या बेटी को जन्म देती थीं, तो दाई बच्चे के लिए जो कुछ भी ज़रूरी होता था, वह करती थी और उसे ज़िंदा रहने देती थी। दाइयां हमेशा ऐसा ही करती थीं।
28 जब यह बात राजा को बताई गई, तो उसने दाइयों को बुलाकर उनसे पूछा, "तुमने यह काम क्यों किया और बच्चों को ज़िंदा क्यों बचाया?"
29 तब दाइयों ने राजा के सामने एक साथ कहा,
30 राजा यह न सोचे कि इब्रानी औरतें मिस्री औरतों जैसी हैं, क्योंकि इस्राएल के सभी बच्चे ठीक हैं, और दाई के आने से पहले ही वे बच्चे को जन्म दे देती हैं, और हम तेरी दासियों के लिए, बहुत दिनों से किसी इब्रानी औरत ने बच्चा नहीं दिया है, क्योंकि सभी इब्रानी औरतें अपनी दाई हैं, क्योंकि वे ठीक हैं।
31 और फिरौन ने उनकी बातें सुनकर उन पर यकीन कर लिया, और दाइयां राजा के पास से चली गईं, और परमेश्वर ने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया, और लोग बहुत बढ़ गए।

अध्याय 67

1 मिस्र देश में लेवी वंश का एक आदमी था, जिसका नाम अम्राम था, जो लेवी के बेटे, इस्राएल के बेटे, कहत का बेटा था।
2 और यह आदमी गया और उसने एक पत्नी को ब्याह लिया, जिसका नाम योकेबेद था, जो उसके पिता की बहन लेवी की बेटी थी, और वह एक सौ छब्बीस साल की थी, और वह उसके पास गया।
3 और वह औरत प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटी हुई, और उसने उसका नाम मरियम रखा, क्योंकि उन दिनों मिस्रियों ने इस्राएलियों की जान को दुख पहुँचाया था।
4 और वह फिर से प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम हारून रखा, क्योंकि उसके प्रेग्नेंट होने के दिनों में फिरौन ने इस्राएल के लड़कों का खून बहाना शुरू कर दिया था।
5 उन्हीं दिनों चित्तिम के राजा एसाव के बेटे एलीपज का बेटा सपो मर गया, और उसकी जगह यनीस राजा बना।
6 और जब सपो ने चित्तिम के बच्चों पर पचास साल तक राज किया, तो वह मर गया और उसे चित्तिम देश के नबना शहर में दफ़नाया गया।

7 और उसके बाद चित्तियों के वीरों में से एक, जनेस राजा बना, और उसने पचास साल तक राज किया।
8 और चित्तिम के राजा की मौत के बाद बोर का बेटा बिलाम चित्तिम देश से भाग गया, और मिस्र के राजा फिरौन के पास मिस्र में आया।
9 और फिरौन ने उसे बड़े आदर के साथ स्वीकार किया, क्योंकि उसने उसकी बुद्धिमानी के बारे में सुना था, और उसने उसे तोहफ़े दिए और उसे सलाहकार बनाया, और उसकी इज़्ज़त की।
10 और बिलाम मिस्र में राजा के सभी अमीरों के साथ इज़्ज़त से रहने लगा, और अमीरों ने उसकी बड़ाई की, क्योंकि वे सब उसकी समझदारी सीखना चाहते थे।
11 और जब इस्राएल मिस्र गया, तो एक सौ तीसवें साल में फिरौन ने सपना देखा कि वह अपनी राजगद्दी पर बैठा है, और उसने आँखें उठाकर देखा कि उसके सामने एक बूढ़ा आदमी खड़ा है, और बूढ़े आदमी के हाथों में तराजू थे, ऐसे तराजू जैसे व्यापारी इस्तेमाल करते हैं।
12 तब बूढ़े ने तराजू लेकर फिरौन के सामने लटका दिया।
13 और बूढ़े आदमी ने मिस्र के सभी बुज़ुर्गों और उसके सभी अमीरों और बड़े लोगों को लिया, और उन्हें एक साथ बाँधकर एक तराजू में रख दिया।
14 और उसने एक दूध का बच्चा लिया और उसे दूसरे पलड़े में रखा, और बच्चा सब से बड़ा निकला।
15 और फिरौन इस डरावने सपने से हैरान रह गया, कि बकरी का बच्चा सब से ज़्यादा क्यों है, और फिरौन जाग गया और देखा कि यह एक सपना था।
16 फिरौन सुबह-सुबह उठा और अपने सब नौकरों को बुलाकर उन्हें सपना बताया, और वे बहुत डर गए।
17 तब राजा ने अपने सब बुद्धिमानों से कहा, जो स्वप्न मैंने देखा है, उसका अर्थ बताओ, ताकि मैं उसे जान सकूं।
18 और बोर के बेटे बिलाम ने राजा को जवाब दिया, "इसका मतलब कुछ और नहीं बल्कि एक बड़ी मुसीबत है जो आने वाले दिनों में मिस्र पर आएगी।"
19 क्योंकि इस्राएल में एक बेटा पैदा होगा जो सारे मिस्र और उसके रहने वालों को खत्म कर देगा, और इस्राएलियों को अपने बड़े हाथ से मिस्र से बाहर निकालेगा।
20 इसलिए अब, हे राजा, इस मामले पर सलाह ले, ताकि मिस्र पर यह मुसीबत आने से पहले ही तुम इस्राएलियों की उम्मीद और उनकी उम्मीद को खत्म कर दो।
21 तब राजा ने बिलाम से कहा, "तो हम इस्राएल के साथ क्या करें? ज़रूर हमने पहले उनके खिलाफ़ एक खास तरीके से सलाह की थी, लेकिन हम उन पर हावी नहीं हो सके।"
22 इसलिए अब तुम भी उनके खिलाफ ऐसी सलाह दो जिससे हम उन पर जीत हासिल कर सकें।
23 तब बिलाम ने राजा को उत्तर दिया, "अपने दोनों सलाहकारों को बुलाओ, और हम देखेंगे कि इस मामले में उनकी क्या सलाह है, और उसके बाद आपका सेवक कुछ कहेगा।"
24 और राजा ने अपने दो सलाहकारों, मिद्यानी रूएल और ऊजी अय्यूब को बुलाया, और वे आकर राजा के सामने बैठ गए।
25 राजा ने उनसे कहा, "देखो, तुम दोनों ने मेरा सपना और उसका मतलब सुन लिया है; इसलिए अब सलाह लो और जानो और देखो कि इस्राएलियों के साथ क्या करना है, जिससे हम उन पर जीत हासिल कर सकें, इससे पहले कि उनकी बुराई हम पर हावी हो जाए।"
26 मिद्यानी रूएल ने राजा को उत्तर दिया, "राजा जीवित रहे, राजा सदा जीवित रहे।"
27 अगर राजा को अच्छा लगे, तो वह इब्रियों से दूर रहे और उन्हें छोड़ दे, और उन पर हाथ न बढ़ाए।
28 क्योंकि ये वे लोग हैं जिन्हें प्रभु ने पुराने दिनों में चुना था, और पृथ्वी के सभी राष्ट्रों और पृथ्वी के राजाओं में से अपनी विरासत के हिस्से के रूप में चुना था; और ऐसा कौन है जिसने बिना किसी सज़ा के उन पर हाथ बढ़ाया, जिनसे उनके परमेश्वर ने बदला नहीं लिया?
29 तुम्हें तो पता ही होगा कि जब अब्राहम मिस्र गया, तो मिस्र के पुराने राजा फिरौन ने अपनी पत्नी सारा को देखा और उससे शादी कर ली, क्योंकि अब्राहम ने कहा था, 'वह मेरी बहन है', क्योंकि उसे डर था कि कहीं मिस्र के लोग उसकी पत्नी की वजह से उसे मार न डालें।
30 और जब मिस्र के राजा ने सारा को ले लिया, तब परमेश्वर ने उस पर और उसके घराने पर बहुत बड़ी मुसीबतें डालीं, जब तक कि उसने अब्राहम को उसकी पत्नी सारा वापस नहीं कर दी, तब वह ठीक हो गया।
31 और पलिश्तियों के राजा गेरारी अबीमेलेक को परमेश्वर ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण सज़ा दी, कि वह आदमी से लेकर जानवर तक सब के गर्भ में से निकल गया।
32 जब उनके परमेश्वर ने रात के सपने में अबीमेलेक के पास आकर उसे डरा दिया ताकि वह सारा को, जिसे उसने ले लिया था, अब्राहम को लौटा दे। और बाद में सारा के कारण गरार के सभी लोगों को सज़ा मिली, और अब्राहम ने उनके लिए अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने विनती की, और उसने उन्हें ठीक कर दिया।
33 और अबीमेलेक को अपने और अपने लोगों पर आने वाली सारी मुसीबतों का डर था, इसलिए वह अब्राहम के पास अपनी पत्नी सारा के पास लौट आया, और उसे बहुत सारे तोहफ़े दिए।
34 उसने इसहाक के साथ भी ऐसा ही किया, जब उसने उसे गरार से निकाल दिया था, और परमेश्वर ने उसके साथ अद्भुत काम किए थे, जिससे गरार के सभी पानी के रास्ते सूख गए थे, और उनके फल देने वाले पेड़ फल नहीं दे रहे थे।
35 तब गरार का अबीमेलेक, उसका एक दोस्त अहुज्जत, और उसकी सेना का सेनापति पीकोल, उसके पास गए और उसके सामने ज़मीन पर झुककर प्रणाम किया।
36 और उन्होंने उससे विनती की कि वह उनके लिए प्रार्थना करे, और उसने उनके लिए प्रभु से प्रार्थना की, और प्रभु ने उसकी विनती सुनी और उन्हें चंगा किया।
37 याकूब भी, जो सीधा-सादा आदमी था, अपनी ईमानदारी की वजह से अपने भाई एसाव और अपने मामा लाबान के हाथ से बच गया, जो उसकी जान लेना चाहता था; और इसी तरह कनान के सभी राजाओं के हाथ से भी, जो उसके और उसके बच्चों को खत्म करने के लिए उसके खिलाफ इकट्ठा हुए थे, और यहोवा ने उन्हें उनके हाथों से छुड़ाया, कि वे उन पर पलटकर उन्हें मार डालें, क्योंकि ऐसा कौन था जिसने कभी बिना सज़ा के उन पर हाथ बढ़ाया हो?
38 ज़रूर, तुम्हारे पिता के पिता फिरौन ने याकूब के बेटे यूसुफ को मिस्र देश के सभी हाकिमों से ऊपर उठाया, जब उसने

उसकी समझदारी देखी, क्योंकि उसकी समझदारी से उसने देश के सभी रहने वालों को अकाल से बचाया था।
39 इसके बाद उसने याकूब और उसके बच्चों को मिस्र आने का आदेश दिया, ताकि उनके अच्छे कामों से मिस्र और गोशेन देश को अकाल से बचाया जा सके।
40 इसलिए अब अगर तुम्हें अच्छा लगे, तो इस्राएल के बच्चों को खत्म करना बंद करो। लेकिन अगर तुम्हारी मर्ज़ी नहीं है कि वे मिस्र में रहें, तो उन्हें यहाँ से भेज दो, ताकि वे कनान देश में चले जाएँ, वह देश जहाँ उनके पुरखे रहते थे।
41 जब फिरौन ने यित्रो की बातें सुनीं, तो वह उस पर बहुत गुस्सा हुआ। वह शर्म से राजा के सामने से उठ गया और अपने देश मिद्यान चला गया, और यूसुफ की लाठी अपने साथ ले गया।
42 तब राजा ने उजी अय्यूब से पूछा, अय्यूब, तू क्या कहता है, और इब्रियों के विषय में तेरी क्या सलाह है?
43 तब अय्यूब ने राजा से कहा, "देखो, इस देश के सभी निवासी तुम्हारे वश में हैं; राजा जैसा उसे अच्छा लगे वैसा ही करे।"
44 तब राजा ने बिलाम से कहा, "बिलाम, तू क्या कहता है? अपनी बात कह कि हम उसे सुन सकें।"
45 तब बिलाम ने राजा से कहा, "राजा ने इब्रियों के खिलाफ जो भी सलाह दी है, वे उससे बच जाएंगे, और राजा किसी भी सलाह से उन पर काबू नहीं पा सकेगा।"
46 क्योंकि अगर तुम उन्हें जलती हुई आग से कम करने की सोचते हो, तो तुम उन पर हावी नहीं हो सकते, क्योंकि यकीनन उनके परमेश्वर ने उनके पिता अब्राहम को कसदियों के ऊर से बचाया था; और अगर तुम उन्हें तलवार से खत्म करने की सोचते हो, तो यकीनन उनके पिता इसहाक को इससे बचाया गया था, और उनकी जगह एक मेढ़ा रखा गया था।
47 और अगर तुम कड़ी मेहनत करके उन्हें कम करने की सोचते हो, तो भी तुम इसमें कामयाब नहीं हो पाओगे, क्योंकि उनके पिता याकूब ने लाबान की हर तरह की कड़ी मेहनत की थी, और कामयाब हुए थे।
48 इसलिए अब, हे राजा, मेरी बातें सुनो, क्योंकि यही वह सलाह है जो उनके खिलाफ दी गई है, जिससे तुम उन पर जीत हासिल करोगे, और जिससे तुम्हें पीछे नहीं हटना चाहिए।
49 अगर राजा को अच्छा लगे तो वह हुक्म दे कि आज के बाद उनके जितने भी बच्चे पैदा होंगे, उन्हें पानी में फेंक दिया जाए, क्योंकि इससे तुम उनका नाम मिटा दोगे, क्योंकि उनमें से किसी को, या उनके बाप को, इस तरह से नहीं आज़माया गया था।
50 राजा ने बिलाम की बातें सुनीं, और यह बात राजा और हाकिमों को अच्छी लगी, और राजा ने बिलाम की बात के अनुसार किया।
51 और राजा ने पूरे मिस्र देश में एक घोषणा और कानून बनाने का आदेश दिया, जिसमें कहा गया, आज से आगे इब्रियों के यहाँ पैदा होने वाला हर लड़का पानी में फेंक दिया जाएगा।
52 फिरौन ने अपने सब सेवकों को बुलाकर कहा, "जाओ और गोशेन देश में इस्राएल के बच्चों को ढूंढो, और देखो कि इब्रियों के पैदा हुए हर बेटे को नदी में फेंक दिया जाएगा, लेकिन हर बेटी को ज़िंदा छोड़ दो।"
53 जब इस्राएलियों ने यह बात सुनी जो फिरौन ने हुक्म दिया था कि अपने लड़कों को नदी में फेंक दो, तो कुछ लोग अपनी पत्नियों से अलग हो गए और कुछ उनके साथ रहने लगे।
54 और उस दिन से, जब इस्राएल की उन औरतों का डिलीवरी का समय आया जो अपने पतियों के साथ रह गई थीं, तो वे बच्चे को जन्म देने के लिए खेत में गईं, और उन्होंने खेत में ही बच्चे को जन्म दिया, और अपने बच्चों को खेत में छोड़कर घर लौट गईं।
55 और प्रभु, जिसने उनके पूर्वजों से कसम खाई थी कि वह उन्हें बढ़ाएगा, ने स्वर्ग में अपने सेवा करने वाले स्वर्गदूतों में से एक को भेजा ताकि वह हर बच्चे को पानी से नहलाए, उसका तेल लगाए और उसे लपेटे, और उसके हाथों में दो चिकने पत्थर दिए, जिनमें से एक से उसने दूध और दूसरे से शहद पिया, और उसके घुटनों तक बाल बढ़ाए, जिससे वह खुद को ढक सके; ताकि वह उस पर दया करके उसे आराम दे और उससे चिपका रहे।
56 और जब परमेश्वर को उन पर दया आई और उसने चाहा कि वे ज़मीन पर बढ़ जाएं, तो उसने अपनी धरती को आदेश दिया कि वे बड़े होने तक उसमें रहें, जिसके बाद धरती ने अपना मुंह खोला और उन्हें उगल दिया और वे शहर से धरती की घास और जंगल की घास की तरह उग आए, और वे हर एक अपने परिवार और अपने पिता के घर लौट गए, और उनके साथ रहे।
57 और इस्राएल के बच्चों के बच्चे परमेश्वर की कृपा से, खेत की घास की तरह धरती पर थे।
58 और जब सभी मिस्रियों ने यह देखा, तो वे अपने-अपने बैलों और हल के फाल के साथ अपने-अपने खेत की ओर निकल पड़े, और उन्होंने उसे वैसे ही जोता जैसे कोई बीज बोने के समय ज़मीन जोतता है।
59 और जब वे हल चलाते थे तो वे इस्राएल के बच्चों को चोट नहीं पहुँचा पाते थे, इसलिए लोग बहुत ज़्यादा बढ़ गए।
60 और फिरौन ने अपने अफ़सरों को रोज़ाना गोशेन जाकर इस्राएल के बच्चों को ढूंढने का हुक्म दिया।
61 और जब उन्हें एक मिल गया, तो उन्होंने उसे ज़बरदस्ती उसकी माँ की गोद से छीनकर नदी में फेंक दिया, लेकिन लड़की को उसकी माँ के पास छोड़ दिया; मिस्रियों ने इस्राएलियों के साथ हमेशा ऐसा ही किया।

अध्याय 68

1 और उसी समय परमेश्वर की आत्मा हारून की बहन, अमराम की बेटी मरियम पर आई, और वह बाहर जाकर घर के बारे में भविष्यवाणी करने लगी, और कहने लगी, देखो, इस बार मेरे माता-पिता से हमारे लिए एक बेटा पैदा होगा, और वह इस्राएल को मिस्र के हाथों से बचाएगा।
2 और जब अम्राम ने अपनी बेटी की बातें सुनीं, तो वह गया और अपनी पत्नी को घर वापस ले आया, क्योंकि उसने उसे उस समय भगा दिया था जब फिरौन ने याकूब के घराने के हर लड़के को पानी में फेंकने का हुक्म दिया था।
3 इसलिए अम्राम ने अपनी पत्नी योकेबेद को, जिसे उसने तीन साल पहले भगा दिया था, अपने साथ ले लिया, और वह उसके पास गया और वह गर्भवती हो गई।
4 और जब वह प्रेग्नेंट हुई, तो सात महीने बाद उसके एक बेटा हुआ, और पूरा घर सूरज और चाँद की रोशनी की तरह तेज़ रोशनी से भर गया।
5 और जब उस औरत ने देखा कि बच्चा अच्छा और देखने में अच्छा है, तो उसने उसे तीन महीने तक एक अंदर के कमरे में छिपा दिया।

6 उन दिनों मिस्रियों ने वहाँ के सभी इब्रियों को खत्म करने की साज़िश रची।
7 और मिस्र की औरतें गोशेन गईं जहाँ इस्राएल के बच्चे थे, और वे अपने बच्चों को अपने कंधों पर उठाए हुए थीं, जो अभी बोल नहीं सकते थे।
8 और उन दिनों में, जब इस्राएलियों की औरतें बच्चे को जन्म देती थीं, तो हर औरत अपने बेटे को मिस्रियों से छिपा लेती थी, ताकि मिस्रियों को उनके बच्चे के बारे में पता न चले, और वे उन्हें देश से खत्म न कर दें।
9 और मिस्री औरतें गोशेन आईं और उनके बच्चे जो बोल नहीं सकते थे, उनके कंधों पर थे, और जब एक मिस्री औरत एक हिब्रू औरत के घर में आई तो उसका बच्चा रोने लगा।
10 और जब वह रोई तो अंदर वाले कमरे में जो बच्चा था उसने जवाब दिया, तो मिस्री औरतें गईं और फिरौन के घर जाकर यह खबर दी।
11 और फिरौन ने अपने अफ़सरों को बच्चों को पकड़कर मार डालने के लिए भेजा; मिस्री लोग इब्री औरतों के साथ दिन भर ऐसा ही करते रहे।
12 और यह उस समय की बात है, जब योकेबेद ने अपने बेटे को छिपाया था, लगभग तीन महीने बाद, यह बात फिरौन के घराने में पता चली।
13 और वह औरत अपने बेटे को अधिकारियों के आने से पहले ही ले जाने के लिए जल्दी से निकल गई। उसने उसके लिए सरकंडों का एक बक्सा लिया, और उसे कीचड़ और राल से पोत दिया, और बच्चे को उसमें रखकर नदी के किनारे झंडों में रख दिया।
14 और उसकी बहन मरियम दूर खड़ी यह जानने के लिए खड़ी थी कि उसके साथ क्या किया जाएगा, और उसकी बातों का क्या होगा।
15 और उस समय परमेश्वर ने मिस्र देश में बहुत ज़्यादा गर्मी भेजी, जिससे इंसान का शरीर सूरज की तरह जलने लगा, और मिस्रियों पर बहुत ज़ुल्म होने लगा।
16 और सभी मिस्री नदी में नहाने के लिए गए, क्योंकि बहुत ज़्यादा गर्मी थी और उनका शरीर जल रहा था।
17 और फिरौन की बेटी बतिया भी बहुत गर्मी की वजह से नदी में नहाने गई, और उसकी लड़कियाँ और मिस्र की सारी औरतें भी नदी के किनारे-किनारे चली गईं।
18 और बतिया ने नदी की ओर देखा, और पानी पर सन्दूक देखा, और अपनी दासी को उसे लाने के लिए भेजा।
19 और उसने उसे खोला और बच्चे को देखा, और देखो बच्चा रो रहा था, और उसे उस पर तरस आया, और उसने कहा, यह इब्री बच्चों में से एक है।
20 और मिस्र की सभी औरतें जो नदी के किनारे चलती थीं, उसे दूध पिलाना चाहती थीं, लेकिन वह दूध नहीं पीता था, क्योंकि यह बात यहोवा की तरफ से थी, ताकि वह अपनी माँ के स्तन के पास वापस आ जाए।
21 उस समय उसकी बहन मिरियम नदी के किनारे मिस्र की औरतों के बीच थी। उसने यह देखा और फिरौन की बेटी से कहा, "क्या मैं जाकर हिब्रू औरतों में से किसी को बुला लाऊं, जो तुम्हारे लिए बच्चे को दूध पिला सके?"
22 फिरौन की बेटी ने उससे कहा, जाओ, और वह लड़की जाकर बच्चे की माँ को बुला लाई।
23 फिरौन की बेटी ने योकेबेद से कहा, "इस बच्चे को ले जाओ और इसे मेरे लिए दूध पिलाओ, और मैं तुम्हें तुम्हारी मज़दूरी, यानी हर दिन दो सिक्के चाँदी दूँगी।" औरत ने बच्चे को ले लिया और उसे दूध पिलाने लगी।
24 और दो साल के बाद, जब बच्चा बड़ा हो गया, तो वह उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसके लिए बेटे जैसा था, और उसने उसका नाम मूसा रखा, क्योंकि उसने कहा, "क्योंकि मैंने उसे पानी से बाहर निकाला था।"
25 और उसके पिता अम्राम ने उसका नाम हबार रखा, क्योंकि उसने कहा, यह उसके लिए था कि उसने अपनी पत्नी से रिश्ता जोड़ा, जिसे उसने छोड़ दिया था।
26 और उसकी माँ योकेबेद ने उसका नाम यकुथीएल रखा, क्योंकि उसने कहा, मैंने सर्वशक्तिमान पर उसकी आशा रखी थी, और परमेश्वर ने उसे मुझे लौटा दिया।
27 और उसकी बहन मरियम ने उसका नाम येरेद रखा, क्योंकि वह यह जानने के लिए नदी तक उसके पीछे गई थी कि उसका क्या होगा।
28 और उसके भाई हारून ने उसका नाम अबी जॅनूक रखा, और कहा, "मेरे पिता मेरी माँ को छोड़कर उसके पास लौट आए।"
29 और अम्राम के पिता केहाथ ने उसका नाम अबिगदोर रखा, क्योंकि उसी की वजह से परमेश्वर ने याकूब के घराने की दरार को ठीक किया, जिससे वे अब अपने लड़कों को पानी में नहीं फेंक सकते थे।
30 और उनकी दाई ने उसका नाम अबी सोको रखा, और कहा, कि हाम के बच्चों की वजह से उसे तीन महीने तक अपने डेरे में छिपाकर रखा गया था।
31 और सारे इस्राएल ने उसका नाम नतनेल का बेटा शमायाह रखा, क्योंकि वे कहते थे, उसके दिनों में परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी है और उन्हें उनके ज़ुल्म करने वालों से बचाया है।
32 और मूसा फिरौन के घर में रहा, और फिरौन की बेटी बतिया के लिए बेटे जैसा था, और मूसा राजा के बच्चों के बीच बड़ा हुआ।

अध्याय 69

1 और उन्हीं दिनों, अपने राज के अठारहवें साल में एदोम का राजा मर गया, और उसे उसी मंदिर में दफ़नाया गया जिसे उसने एदोम देश में अपने शाही घर के तौर पर बनवाया था।
2 और एसाव के बच्चों ने पेथोर को भेजा, जो नदी के किनारे है, और वहाँ से वे सुंदर आँखों और सुंदर रूप वाले एक जवान आदमी को लाए, जिसका नाम शाऊल था, और उन्होंने उसे सम्ला की जगह पर अपना राजा बनाया।
3 और शाऊल ने एदोम देश में एसाव के सभी बच्चों पर चालीस साल तक राज किया।
4 और जब मिस्र के राजा फिरौन ने देखा कि बिलाम ने इस्राएलियों के बारे में जो सलाह दी थी, वह कामयाब नहीं हुई, बल्कि वे फिर भी फल-फूल रहे हैं, और मिस्र के पूरे देश में उनकी संख्या बढ़ गई है,
5 तब फिरौन ने उन दिनों पूरे मिस्र में इस्राएलियों के लिए यह ऐलान जारी करने का हुक्म दिया कि कोई भी आदमी अपने रोज़ के काम में कोई कमी न करे।

6 और जो आदमी अपने रोज़ के काम में, चाहे गारे या ईंटों में, कमी करेगा, तो उसकी जगह उसके सबसे छोटे बेटे को लगाया जाएगा।
7 और उन दिनों मिस्र की मेहनत इस्राएलियों पर भारी पड़ गई, और देखो, अगर किसी आदमी की रोज़ की मेहनत में एक ईंट भी कम पड़ जाती थी, तो मिस्री उसके सबसे छोटे बेटे को उसकी माँ से ज़बरदस्ती छीन लेते थे, और उसे उस ईंट की जगह घर में लगा देते थे जो उसके पिता ने कम छोड़ी थी।
8 और मिस्र के लोगों ने इस्राएल के सभी बच्चों के साथ ऐसा ही किया, दिन-प्रतिदिन, लंबे समय तक।
9 लेकिन उस समय लेवी के कबीले ने शुरू से ही अपने भाई इस्राएलियों के साथ काम नहीं किया, क्योंकि लेवी के बच्चे मिस्रियों की चालाकी जानते थे, जो उन्होंने शुरू में इस्राएलियों के साथ की थी।

अध्याय 70

1 मूसा के जन्म के तीसरे साल में, फिरौन एक दावत में बैठा था, जब रानी अलपरनित उसके दाहिनी ओर और बतिया उसके बाईं ओर बैठी थी, और लड़का मूसा उसकी गोद में लेटा हुआ था, और बोर का बेटा बिलाम अपने दोनों बेटों के साथ, और राज्य के सभी राजकुमार राजा के सामने खाने पर बैठे थे।
2 और लड़के ने राजा के सिर पर हाथ रखा, और राजा के सिर से ताज उतारकर अपने सिर पर रख लिया।
3 और जब राजा और राजकुमारों ने लड़के का किया हुआ काम देखा, तो राजा और राजकुमार डर गए, और एक आदमी ने अपने पड़ोसी से हैरानी जताई।
4 और राजा ने उन हाकिमों से जो उसके सामने खाने की मेज पर बैठे थे, पूछा, "इस मामले में तुम क्या कहते हो, और इस लड़के के इस काम के लिए उसके खिलाफ क्या सज़ा होगी?"
5 तब बोर के बेटे जादूगर बिलाम ने राजा और हाकिमों के सामने जवाब दिया, "हे मेरे मालिक और राजा, याद करो कि तुमने बहुत दिन पहले क्या सपना देखा था, और तुम्हारे नौकर ने तुम्हें क्या मतलब बताया था।"
6 इसलिए अब यह इब्रानी बच्चों में से एक बच्चा है, जिसमें परमेश्वर की आत्मा है, और मेरे प्रभु राजा यह न सोचें कि इस लड़के ने बिना जानकारी के यह काम किया है।
7 क्योंकि वह एक इब्री लड़का है, और बुद्धि और समझ उसके पास है, हालाँकि वह अभी बच्चा ही है, और उसने बुद्धि से यह काम किया है और मिस्र का राज्य अपने लिए चुना है।
8 क्योंकि सभी इब्रियों का यही तरीका है कि वे राजाओं और उनके अमीरों को धोखा दें, और ये सब काम चालाकी से करें, ताकि धरती के राजा और उनके लोग डर जाएं।
9 तुम ज़रूर जानते हो कि उनके पिता अब्राहम ने ऐसा ही किया था, जिसने बाबेल के राजा निम्रोद और गरार के राजा अबीमेलेक की सेना को धोखा दिया था, और उसने हित्तियों की ज़मीन और कनान के सभी राज्यों पर कब्ज़ा कर लिया था।
10 और वह मिस्र में गया और अपनी पत्नी सारा के बारे में कहा, "वह मेरी बहन है," ताकि मिस्र और उसके राजा को गुमराह कर सके।
11 उसके बेटे इसहाक ने भी ऐसा ही किया, जब वह गरार गया और वहाँ रहने लगा, और उसकी ताकत ने पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक की सेना को हरा दिया।
12 उसने यह भी सोचा कि पलिश्तियों के राज्य को गिरा दे, क्योंकि उसने कहा कि उसकी पत्नी रिबका उसकी बहन है।
13 याकूब ने भी अपने भाई के साथ विश्वासघात किया, और उसके हाथ से उसका जन्म का अधिकार और आशीर्वाद छीन लिया।
14 फिर वह पदान-अराम में अपने मामा लाबान के घर गया, और चालाकी से उससे उसकी बेटी, उसके जानवर और उसका सारा सामान छीन लिया, और भागकर कनान देश में अपने पिता के पास लौट आया।
15 उसके बेटों ने अपने भाई यूसुफ को बेच दिया, जो मिस्र जाकर गुलाम बन गया और बारह साल तक जेल में रहा।
16 जब तक पहले फिरौन ने सपने नहीं देखे, और उसे जेल से बाहर नहीं निकाला, और मिस्र के सभी राजकुमारों से ज़्यादा उसे बड़ा नहीं किया, क्योंकि उसने उसके सपनों का मतलब उसे बताया था।
17 और जब परमेश्वर ने पूरे देश में अकाल डाला, तो उसने अपने पिता, अपने सभी भाइयों और अपने पिता के पूरे घराने को बुलाया, और बिना दाम या इनाम के उनका गुज़ारा किया, और मिस्रियों को गुलामों के लिए खरीद लिया।
18 इसलिए अब मेरे प्रभु राजा, देखो, यह बच्चा मिस्र में उनकी जगह उठ खड़ा हुआ है, ताकि उनके जैसे काम करे और हर राजा, हाकिम और जज के साथ मज़ाक करे।
19 अगर राजा को अच्छा लगे, तो हम उसका खून ज़मीन पर बहा दें, कहीं ऐसा न हो कि वह बड़ा होकर तुम्हारे हाथ से राज छीन ले, और उसके राज करने के बाद मिस्र की उम्मीद खत्म हो जाए।
20 और बिलाम ने राजा से कहा, "हम मिस्र के सभी जजों और ज्ञानियों को बुलाकर बताएं कि क्या इस लड़के को मौत की सज़ा मिलनी चाहिए, जैसा आपने कहा था, और फिर हम उसे मार डालेंगे।"
21 फिरौन ने मिस्र के सभी ज्ञानियों को बुलाया और वे राजा के सामने आए, और प्रभु का एक दूत उनके बीच आया, और वह मिस्र के ज्ञानियों में से एक जैसा था।
22 तब राजा ने बुद्धिमानों से कहा, "तुमने सुना होगा कि घर में रहने वाले इस इब्री लड़के ने क्या किया है, और बिलाम ने इस मामले में यही फैसला किया है।"
23 अब तुम भी फैसला करो और देखो कि लड़के ने जो काम किया है, उसके लिए उसे क्या मिलना चाहिए।
24 और उस स्वर्गदूत ने, जो फिरौन के ज्ञानियों में से एक जैसा लग रहा था, मिस्र के सभी ज्ञानियों और राजा और हाकिमों के सामने यह जवाब दिया:
25 अगर राजा को अच्छा लगे तो वह आदमियों को बुलाए जो उसके सामने एक गोमेद पत्थर और आग का कोयला लाकर बच्चे के सामने रख दें, और अगर बच्चा अपना हाथ बढ़ाकर गोमेद पत्थर ले ले, तो हम जान लेंगे कि उस लड़के ने जो कुछ किया है, वह समझदारी से किया है, और हमें उसे मार डालना चाहिए।

26 लेकिन अगर वह कोयले पर हाथ उठाए, तो हम जान लेंगे कि उसने यह काम बिना जानकारी के नहीं किया, और वह ज़िंदा रहेगा।
27 और यह बात राजा और हाकिमों को अच्छी लगी, इसलिए राजा ने प्रभु के दूत की बात के अनुसार किया।
28 और राजा ने आदेश दिया कि गोमेद पत्थर और कोयला लाकर मूसा के सामने रखा जाए।
29 और उन्होंने लड़के को अपने सामने खड़ा किया, और लड़के ने गोमेद पत्थर की ओर अपना हाथ बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन प्रभु के दूत ने उसका हाथ पकड़कर कोयले पर रख दिया, और कोयला उसके हाथ में बुझ गया, और उसने उसे उठाकर अपने मुंह में डाल लिया, और उसके होंठ और जीभ का कुछ हिस्सा जल गया, और उसका मुंह और जीभ भारी हो गए।
30 और जब राजा और हाकिमों ने यह देखा, तो वे जान गए कि मूसा ने राजा के सिर से ताज उतारकर समझदारी नहीं दिखाई।
31 इसलिए राजा और हाकिमों ने बच्चे को मारने से मना कर दिया, इसलिए मूसा फिरौन के घर में ही रहा, और बड़ा हुआ, और यहोवा उसके साथ था।
32 और जब वह लड़का राजा के घर में था, तो उसे बैंगनी कपड़े पहनाए गए और वह राजा के बच्चों के बीच बड़ा हुआ।
33 और जब मूसा राजा के घर में बड़ा हुआ, तो फिरौन की बेटी बतिया ने उसे बेटे जैसा माना, और फिरौन के सारे घराने ने उसका आदर किया, और मिस्र के सब लोग उससे डरते थे।
34 और वह हर दिन गोशेन देश में जाता था, जहाँ उसके भाई इस्राएली रहते थे, और मूसा उन्हें हर दिन साँस की तकलीफ़ और मुश्किल प्रसव पीड़ा में देखता था।
35 तब मूसा ने उनसे पूछा, "तुमसे हर दिन यह काम क्यों करवाया जाता है?"
36 और उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो उन पर बीता था, और वे सभी नियम जो फिरौन ने उसके जन्म से पहले उन पर लगाए थे।
37 और उन्होंने उसे वे सारी बातें बताईं जो बोर के बेटे बिलाम ने उनके खिलाफ की थीं, और यह भी कि जब उसने राजा का ताज उसके सिर से उतार लिया था, तो उसे मार डालने के लिए उसने उसके खिलाफ क्या-क्या सलाह दी थी।
38 जब मूसा ने ये बातें सुनीं, तो उसका गुस्सा बिलाम पर भड़क उठा, और वह उसे मार डालना चाहता था, और वह हर दिन उसकी घात में लगा रहता था।
39 और बिलाम मूसा से डर गया, और वह और उसके दोनों बेटे मिस्र से निकलकर चले गए, और वे भागकर अपनी जान बचाकर कूश देश में कूश के राजा किकियानुस के पास चले गए।
40 और मूसा राजा के घर में आता-जाता रहता था, और यहोवा ने फिरौन, उसके सब कर्मचारियों, और मिस्र के सब लोगों की नज़र में उस पर कृपा की, और वे मूसा से बहुत प्यार करते थे।
41 और वह दिन आया जब मूसा अपने भाइयों से मिलने गोशेन गया, और उसने इस्राएलियों को बोझ और कड़ी मेहनत में देखा, और मूसा उनके कारण दुखी हुआ।
42 तब मूसा मिस्र लौट आया और फिरौन के घर में जाकर राजा के सामने झुका।
43 तब मूसा ने फिरौन से कहा, हे मेरे प्रभु, मैं तुझसे एक छोटी सी बात पूछने आया हूं, मेरा मुंह खाली मत मोड़; तब फिरौन ने उससे कहा, बोल।
44 तब मूसा ने फिरौन से कहा, "अपने सेवकों को, जो इस्राएल के बच्चे गोशेन में हैं, एक दिन दिया जाए, ताकि वे अपने काम से आराम कर सकें।"
45 राजा ने मूसा को जवाब दिया, "देखो, मैंने इस बात के लिए तुम्हारी बात मान ली है।
46 और फिरौन ने पूरे मिस्र और गोशेन में यह ऐलान जारी करने का हुक्म दिया,
47 हे इस्राएल के सब बच्चों, राजा ने तुम से कहा है, छःदिन तुम अपना काम और मेहनत करो, पर सातवें दिन तुम आराम करो, और कोई काम न करो, और तुम सारे दिन ऐसा ही करो, जैसा राजा और बतिया के बेटे मूसा ने हुक्म दिया है।
48 और मूसा इस बात से खुश हुआ जो राजा ने उसे दी थी, और सब इस्राएलियों ने मूसा की आज्ञा के अनुसार किया।
49 क्योंकि यह बात यहोवा की ओर से इस्राएल के बच्चों के लिए थी, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के बच्चों को उनके पूर्वजों के कारण बचाने के लिए याद करना शुरू कर दिया था।
50 और यहोवा मूसा के साथ था, और उसकी ख्याति पूरे मिस्र में फैल गई।
51 और मूसा सब मिस्रियों और सब इस्राएलियों की नज़र में महान हो गया। वह अपने लोगों इस्राएल की भलाई चाहता था और राजा से उनके बारे में शांति की बातें कहता था।

अध्याय 71

1 जब मूसा अठारह साल का हुआ, तो उसे अपने माता-पिता से मिलने की इच्छा हुई और वह उनके पास गोशेन गया। जब मूसा गोशेन के पास पहुँचा, तो वह उस जगह पहुँचा जहाँ इस्राएल के बच्चे काम कर रहे थे। उसने उनका बोझ देखा और देखा कि एक मिस्री आदमी उसके एक हिब्रू भाई को मार रहा है।
2 और जब पीटा हुआ आदमी मूसा को देखा, तो वह मदद के लिए उसके पास दौड़ा, क्योंकि मूसा फिरौन के घर में बहुत इज्ज़तदार आदमी था, और उसने मूसा से कहा, मेरे मालिक, मेरी बात सुनो, यह मिस्री रात में मेरे घर आया, मुझे बांधा, और मेरे सामने मेरी पत्नी के पास आया, और अब वह मेरी जान लेना चाहता है।
3 जब मूसा ने यह बुरी बात सुनी, तो उसका गुस्सा मिस्री पर भड़क उठा। वह इधर-उधर घूमने लगा। जब उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं है, तो उसने मिस्री को मारकर रेत में छिपा दिया। उसने इब्री को मारने वाले के हाथ से छुड़ा लिया।
4 तब इब्री अपने घर चला गया, और मूसा अपने घर लौट आया, और निकलकर राजा के घर में लौट आया।
5 जब वह आदमी घर लौटा, तो उसने अपनी पत्नी को छोड़ने की सोची, क्योंकि याकूब के घराने में यह ठीक नहीं था कि कोई आदमी अपनी पत्नी के पास जाए, जब वह अशुद्ध हो जाए।
6 औरत ने जाकर अपने भाइयों को बताया, और औरत के भाई उसे मार डालना चाहते थे, और वह अपने घर भाग गया।
7 दूसरे दिन मूसा अपने भाइयों के पास गया, और देखा कि दो आदमी झगड़ रहे हैं, और उसने उस बुरे आदमी से कहा, तू अपने पड़ोसी को क्यों मार रहा है?
8 उसने जवाब दिया, "किसने तुम्हें हमारा राजा और जज बनाया है? क्या तुम मुझे भी वैसे ही मारना चाहते हो जैसे तुमने मिस्री को

मारा था?” मूसा डर गया और उसने कहा, “क्या बात पता चल गई है?”
9 और फिरौन को यह बात पता चली, और उसने मूसा को मार डालने का हुक्म दिया, इसलिए परमेश्वर ने अपना फ़रिश्ता भेजा, और वह पहरेदारों के सरदार के रूप में फिरौन के सामने आया।
10 और प्रभु के दूत ने पहरेदारों के सरदार के हाथ से तलवार ले ली, और उसका सिर भी काट डाला, क्योंकि पहरेदारों के सरदार का रूप मूसा जैसा हो गया था।
11 और प्रभु के दूत ने मूसा का दाहिना हाथ पकड़ा, और उसे मिस्र से बाहर ले आया, और मिस्र की सीमाओं के बाहर, चालीस दिन की यात्रा की दूरी पर रख दिया।
12 और उसका भाई हारून अकेला मिस्र देश में रह गया, और उसने इस्राएलियों से भविष्यवाणी करते हुए कहा,
13 तुम्हारे पुरखों का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, “हर एक आदमी अपनी आँखों से घिनौनी चीज़ें फेंक दे, और मिस्र की मूर्तियों से खुद को गंदा न करे।”
14 और इस्राएल के बच्चों ने बगावत की और उस समय हारून की बात नहीं मानी।
15 और यहोवा ने उन्हें खत्म करने का सोचा, अगर यहोवा को वह वाचा याद न आती जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ की थी।
16 उन दिनों फिरौन का हाथ इस्राएलियों पर लगातार सख़्त होता रहा, और वह उन्हें तब तक कुचलता और सताता रहा जब तक कि परमेश्वर ने अपना संदेश भेजकर उन पर ध्यान नहीं दिया।

अध्याय 72

1 और उन्हीं दिनों कूश के बच्चों और पूरब और अराम के बच्चों के बीच एक बड़ी लड़ाई हुई, और उन्होंने कूश के राजा के खिलाफ बगावत कर दी, जिसके हाथ में वे थे।
2 इसलिए कूश का राजा किकियानुस कूश के सभी लोगों के साथ निकला, जो रेत के कणों जितने अनगिनत थे, और वह अराम और पूरब के लोगों से लड़ने के लिए निकला, ताकि उन्हें अपने काबू में कर सके।
3 और जब किकियानुस बाहर गया, तो उसने जादूगर बिलाम को उसके दो बेटों के साथ शहर और देश के सबसे गरीब लोगों की रखवाली के लिए छोड़ दिया।
4 इसलिए किकियानुस अराम और पूरब के लोगों के पास गया, और उनसे लड़ा और उन्हें हरा दिया, और वे सब किकियानुस और उसके लोगों के सामने घायल होकर गिर पड़े।
5 और उसने उनमें से बहुतों को बंदी बना लिया और उन्हें पहले की तरह अपने वश में कर लिया, और हमेशा की तरह उनसे कर लेने के लिए उनकी ज़मीन पर डेरा डाल दिया।
6 और जब कूश के राजा ने बोर के बेटे बिलाम को शहर और शहर के गरीबों की रखवाली करने के लिए छोड़ दिया, तो वह उठा और उसने देश के लोगों के साथ मिलकर राजा किकियानुस के खिलाफ बगावत करने की सलाह दी, ताकि जब वह घर आए तो उसे शहर में न आने दिया जाए।
7 और देश के लोगों ने उसकी बात मान ली, और उससे कसम खाकर उसे अपना राजा बनाया, और उसके दोनों बेटों को सेना का कप्तान बनाया।
8 इसलिए वे उठे और शहर की दीवारें दोनों कोनों पर खड़ी कर दीं, और एक बहुत मज़बूत इमारत बनाई।
9 और तीसरे कोने पर उन्होंने शहर और उस नदी के बीच अनगिनत खाइयां खोदीं जो कूश की पूरी ज़मीन को घेरे हुए थी, और उन्होंने वहां नदी का पानी फूटने दिया।
10 चौथे कोने पर उन्होंने अपने मंत्रों और जादू-टोने से बहुत सारे साँप इकट्ठा किए, और उन्होंने शहर को मज़बूत किया और उसमें रहने लगे, और कोई भी उनके सामने न तो अंदर आया और न ही बाहर।
11 और किकियानुस ने अराम और पूरब के लोगों से लड़ाई की और उन्हें पहले की तरह हरा दिया, और उन्होंने उसे हमेशा की तरह कर दिया, और वह चला गया और अपने देश लौट गया।
12 और जब कूश का राजा किकियानुस और उसके साथ सेना के सभी कप्तान अपने शहर के पास पहुँचे, तो उन्होंने अपनी आँखें उठाकर देखा कि शहर की दीवारें बनी हुई थीं और बहुत ऊँची थीं, इसलिए वे लोग यह देखकर हैरान रह गए।
13 और उन्होंने एक-दूसरे से कहा, “क्योंकि उन्होंने देखा कि हम लड़ाई में देर कर रहे हैं, और वे हमसे बहुत डर गए हैं, इसलिए उन्होंने यह काम किया है और शहर की दीवारें ऊँची करके उन्हें मज़बूत कर दिया है ताकि कनान के राजा उनके खिलाफ लड़ाई में न आ सकें।”
14 तब राजा और सैनिक शहर के दरवाज़े के पास पहुँचे और उन्होंने ऊपर देखा, तो शहर के सभी दरवाज़े बंद थे। उन्होंने पहरेदारों को आवाज़ दी, और कहा, हमारे लिए दरवाज़े खोलो, ताकि हम शहर में जा सकें।
15 लेकिन पहरेदारों ने उनके राजा जादूगर बिलाम के हुक्म से उनके लिए दरवाज़ा खोलने से मना कर दिया, और उन्हें अपने शहर में अंदर आने नहीं दिया।
16 इसलिए उन्होंने शहर के गेट के सामने उनसे लड़ाई की, और उस दिन किकियानस की सेना के एक सौ तीस आदमी मारे गए।
17 और अगले दिन भी वे लड़ते रहे और नदी के किनारे लड़े; उन्होंने पार करने की कोशिश की लेकिन कर नहीं पाए, इसलिए उनमें से कुछ गड्ढों में डूब गए और मर गए।
18 इसलिए राजा ने उन्हें पेड़ काटकर नावें बनाने का आदेश दिया, जिन पर बैठकर वे उनके पास जा सकें, और उन्होंने ऐसा ही किया।
19 और जब वे खाइयों की जगह पर पहुँचे, तो पानी में चक्कियाँ घूमने लगीं, और दस नावों पर सवार दो सौ आदमी डूब गए।
20 और तीसरे दिन वे उस तरफ लड़ने आए जहाँ साँप थे, लेकिन वे वहाँ तक नहीं पहुँच सके, क्योंकि साँपों ने उनके एक सौ सत्तर आदमियों को मार डाला, और उन्होंने कूश से लड़ना बंद कर दिया, और उन्होंने नौ साल तक कूश को घेरे रखा, कोई भी बाहर या अंदर नहीं आया।
21 जिस समय कूश के खिलाफ लड़ाई और घेराबंदी चल रही थी, मूसा मिस्र से भाग गया, फिरौन उसे मारना चाहता था क्योंकि उसने मिस्री को मार डाला था।
22 जब मूसा मिस्र से फिरौन के सामने से भागा, तब वह अठारह साल का था। वह भागकर किकियानुस के कैंप में पहुँच गया, जो उस समय कूश को घेरे हुए था।
23 और मूसा नौ साल तक कूश के राजा किकियानुस के कैंप में रहा, जब तक वे कूश को घेरे हुए थे, और मूसा उनके साथ आता-जाता रहा।

24 और राजा, हाकिम और सभी लड़ाके मूसा से प्यार करते थे, क्योंकि वह बड़ा और काबिल था, उसकी कद-काठी एक बड़े शेर जैसी थी, उसका चेहरा सूरज जैसा था, और उसकी ताकत शेर जैसी थी, और वह राजा का सलाहकार था।
25 और नौ साल के आखिर में, किकियानस को एक जानलेवा बीमारी हो गई, और उसकी बीमारी उस पर हावी हो गई, और सातवें दिन उसकी मौत हो गई।
26 इसलिए उसके सेवकों ने उसकी लाश में सुगन्धित पदार्थ भरे और उसे ले जाकर मिस्र देश के उत्तर में शहर के फाटक के सामने दफ़ना दिया।
27 और उन्होंने उसके ऊपर एक सुंदर, मज़बूत और ऊँची इमारत बनाई, और नीचे बड़े-बड़े पत्थर रखे।
28 और राजा के लेखकों ने उन पत्थरों पर अपने राजा किकियानस की सारी ताकत और उसके सभी युद्धों को खुदवा दिया, देखो वे आज भी वहां लिखे हुए हैं।
29 अब कूश के राजा किकियानुस की मौत के बाद उसके आदमी और सैनिक युद्ध की वजह से बहुत दुखी हुए।
30 तब उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हमें सलाह दो कि इस समय हमें क्या करना चाहिए, क्योंकि हम अपने घरों से नौ साल दूर जंगल में रह रहे हैं।"
31 अगर हम कहें कि हम शहर के खिलाफ लड़ेंगे तो हममें से कई लोग घायल हो जाएंगे या मारे जाएंगे, और अगर हम घेराबंदी में यहीं रहे तो हम भी मर जाएंगे।
32 क्योंकि अब जब अराम के सभी राजा और पूरब के लोग सुनेंगे कि हमारा राजा मर गया है, तो वे अचानक दुश्मनी से हम पर हमला करेंगे, और हमसे लड़ेंगे और हममें से किसी को नहीं छोड़ेंगे।
33 इसलिए अब हम जाकर अपने ऊपर एक राजा बना लें, और जब तक शहर हमें न मिल जाए, तब तक घेरे में ही रहें।
34 और उस दिन वे किकियानस की सेना में से किसी को राजा चुनना चाहते थे, लेकिन उन्हें मूसा के जैसा कोई पसंद का आदमी नहीं मिला जो उन पर राज कर सके।
35 और उन्होंने जल्दी से अपने-अपने कपड़े उतारकर ज़मीन पर फेंक दिए, और एक बड़ा ढेर बनाकर मूसा को उस पर रख दिया।
36 तब वे उठे और तुरहियां बजाकर उसके सामने पुकारने लगे, और कहने लगे, राजा जीवित रहे, राजा जीवित रहे!
37 और सब लोगों और अमीरों ने उससे कसम खाई कि हम उसे कूशी रानी अदोन्याह, किकियानुस की पत्नी, देंगे, और उन्होंने उस दिन मूसा को अपना राजा बनाया।
38 और उस दिन कूश के सभी लोगों ने यह ऐलान किया, "हर आदमी को अपनी चीज़ों में से कुछ मूसा को देना होगा।"
39 और उन्होंने ढेर पर एक चादर बिछाई, और हर आदमी ने उसमें अपनी-अपनी चीज़ें डालीं, एक ने सोने की बाली और दूसरे ने एक सिक्का।
40 और कूश के बच्चों ने मूसा के लिए गोमेद पत्थर, मोती, मोती और संगमरमर के ढेर पर ढेर सारा सोना और चाँदी भी फेंक दी।
41 और मूसा ने सारा चाँदी, सोना, सारे बर्तन, मोती और गोमेद पत्थर लिए, जो कूश के सभी बच्चों ने उसे दिए थे, और उन्हें अपने खज़ानों में रख दिया।
42 और उस दिन मूसा ने कूश के राजा किकियानुस की जगह कूश के बच्चों पर राज किया।

अध्याय 73

1 मिस्र के राजा फिरौन के राज के पचपनवें साल में, यानी इस्राएलियों के मिस्र जाने के एक सौ सत्तावनवें साल में, मूसा ने कूश में राज किया।
2 जब मूसा ने कूश पर राज करना शुरू किया, तब वह सत्ताईस साल का था, और उसने चालीस साल तक राज किया।
3 और यहोवा ने मूसा को कूश के सभी बच्चों की नज़र में कृपा और कृपा दी, और कूश के बच्चे उससे बहुत प्यार करते थे, इसलिए मूसा यहोवा और इंसानों का कृपापात्र था।
4 और उसके राज के सातवें दिन, कूश के सभी बच्चे इकट्ठा हुए और मूसा के सामने आए और ज़मीन पर गिरकर उसे प्रणाम किया।
5 और सब बच्चों ने राजा के सामने एक साथ कहा, "हमें सलाह दीजिए ताकि हम देख सकें कि इस शहर के साथ क्या किया जाए।"
6 क्योंकि अब नौ साल हो गए हैं कि हम शहर के चारों ओर घेरा डाले हुए हैं, और हमने अपने बच्चों और पत्नियों को नहीं देखा है।
7 तब राजा ने उनसे कहा, "अगर तुम मेरी हर बात मानोगे जो मैं तुम्हें कहूँगा, तो यहोवा शहर हमारे हाथ में कर देगा और हम उसे जीत लेंगे।"
8 क्योंकि अगर हम उनसे वैसे ही लड़ें जैसे किकियानस की मौत से पहले हमने उनसे लड़ाई की थी, तो हममें से बहुत से लोग पहले की तरह ही घायल होकर गिर पड़ेंगे।
9 इसलिए अब देखो, इस मामले में तुम्हारे लिए यह सलाह है; अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो शहर हमारे हाथ में आ जाएगा।
10 तब सारी सेना ने राजा को उत्तर दिया, कि जो कुछ हमारा प्रभु आज्ञा देगा, हम वही करेंगे।
11 तब मूसा ने उनसे कहा, "जाओ और पूरी छावनी में सब लोगों से यह कहो,
12 राजा ने कहा, "जंगल में जाओ और सारस के बच्चों को अपने साथ ले आओ, हर आदमी अपने हाथ में एक बच्चा ले।
13 और जो कोई राजा की बात तोड़कर अपने बच्चे को न लाए, वह मार डाला जाएगा, और राजा उसका सब कुछ ले लेगा।
14 और जब तुम उन्हें लाओगे तो वे तुम्हारी देखरेख में रहेंगे, तुम उन्हें तब तक पालोगे जब तक वे बड़े न हो जाएं, और तुम उन्हें उड़ना सिखाओगे, जैसे बाज़ के बच्चों का तरीका होता है।
15 तब कूश के सभी लोगों ने मूसा की बातें सुनीं, और वे उठकर पूरी छावनी में यह ऐलान करवा दिया,
16 हे कूश के सब बच्चों, राजा का हुक्म है कि तुम सब मिलकर जंगल में जाओ, और वहाँ से सारस के बच्चे पकड़ो, हर कोई अपने हाथ में एक-एक बच्चा लेकर घर ले आए।
17 और जो कोई राजा की आज्ञा का उल्लंघन करेगा, वह मारा जाएगा, और राजा उसका सब कुछ ले लेगा।
18 और सब लोगों ने वैसा ही किया, और वे जंगल में गए और देवदार के पेड़ों पर चढ़ गए और हर आदमी ने अपने हाथ में एक-एक बच्चा पकड़ा, और वे उन्हें रेगिस्तान में ले आए और राजा के आदेश पर उन्हें पाला, और उन्होंने उन्हें छोटे बाज़ों की तरह उड़ना सिखाया।

19 और जब छोटे सारस बड़े हो गए, तो राजा ने उन्हें तीन दिन तक भूखा रखने का आदेश दिया, और सभी लोगों ने वैसा ही किया।
20 और तीसरे दिन राजा ने उनसे कहा, "खुद को मज़बूत करो और बहादुर बनो, और हर आदमी अपने कवच और तलवार पहन ले, और हर आदमी अपने घोड़े पर सवार हो और हर कोई अपने हाथ में अपना छोटा सारस ले ले।"
21 और हम उठकर उस शहर से लड़ेंगे जहाँ साँप हैं; और सब लोगों ने राजा की आज्ञा के अनुसार किया।
22 और वे सब अपने-अपने बच्चे को हाथ में लेकर चले गए, और जब वे साँपों की जगह पर पहुँचे, तो राजा ने उनसे कहा, "हर आदमी अपने-अपने बच्चे सारस को साँपों पर भेज दो।"
23 और राजा के कहने पर हर आदमी ने अपने छोटे सारस को भेजा, और छोटे सारस साँपों पर दौड़े और उन्होंने उन सबको खा लिया और उस जगह से खत्म कर दिया।
24 और जब राजा और लोगों ने देखा कि उस जगह के सभी साँप खत्म हो गए हैं, तो सब लोग ज़ोर से चिल्लाने लगे।
25 और वे पास आए और शहर से लड़े, उसे ले लिया और अपने कब्ज़े में कर लिया, और वे शहर में घुस गए।
26 और उस दिन शहर के लोगों में से एक हज़ार एक सौ आदमी मारे गए, शहर में रहने वाले सभी लोग, लेकिन घेराबंदी करने वाले लोगों में से एक भी नहीं मरा।
27 इसलिए कूश के सभी बच्चे अपने-अपने घर, अपनी पत्नी, बच्चों और अपने सभी रिश्तेदारों के पास चले गए।
28 और जादूगर बिलाम ने जब देखा कि शहर पर कब्ज़ा कर लिया गया है, तो उसने दरवाज़ा खोल दिया और वह और उसके दो बेटे और आठ भाई भागकर मिस्र के राजा फिरौन के पास लौट आए।
29 ये वे जादूगर और जादूगर हैं जिनका ज़िक्र कानून की किताब में है, और ये मूसा के खिलाफ खड़े थे जब यहोवा ने मिस्र पर मुसीबतें लाई थीं।
30 इसलिए मूसा ने अपनी समझदारी से शहर पर कब्ज़ा कर लिया, और कूश के बच्चों ने उसे कूश के राजा किकियानुस की जगह गद्दी पर बिठाया।
31 और उन्होंने उसके सिर पर शाही ताज रखा, और उसे कूशी रानी अदोन्याह, जो किकियानुस की पत्नी थी, ब्याह दिया।
32 और मूसा अपने पुरखों के परमेश्वर यहोवा का डर मानता था, इसलिए वह उसके पास नहीं गया, और न उसकी ओर देखा।
33 मूसा को याद आया कि अब्राहम ने अपने नौकर एलीएजेर को कसम खिलाई थी, कि तू मेरे बेटे इसहाक के लिए कनान की लड़कियों में से कोई लड़की न लाएगा।
34 और जब याकूब अपने भाई के पास से भाग गया था, तब इसहाक ने भी यही किया था। याकूब ने उसे यह हुक्म दिया था, कि तू कनान की लड़कियों में से किसी से शादी न करना, और न हाम के बच्चों में से किसी से रिश्ता रखना।
35 क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने नूह के बेटे हाम, और उसके बच्चों और उसकी सारी संतान को शेम और येपेत की संतानों, और उनके बाद उनकी संतानों के लिए हमेशा के लिए गुलाम बना दिया।
36 इसलिए मूसा ने जितने दिन कूश पर राज किया, उतने दिन तक न तो अपना दिल और न ही अपनी आँखें किकियानुस की पत्नी की तरफ लगाईं।
37 और मूसा ज़िंदगी भर अपने परमेश्वर यहोवा का डर मानता रहा, और मूसा सच्चाई से, पूरे दिल और पूरी जान से यहोवा के सामने चलता रहा, वह ज़िंदगी भर सही रास्ते से नहीं हटा; वह उस रास्ते से न तो दाएँ मुड़ा और न बाएँ, जिस पर अब्राहम, इसहाक और याकूब चले थे।
38 और मूसा ने कूश के बच्चों के राज्य में खुद को मज़बूत किया, और उसने अपनी हमेशा की समझदारी से कूश के बच्चों को रास्ता दिखाया, और मूसा अपने राज्य में कामयाब रहा।
39 और उस समय अराम और पूरब के लोगों ने सुना कि कूश का राजा किकियानुस मर गया है, इसलिए उन दिनों अराम और पूरब के लोगों ने कूश के खिलाफ बगावत कर दी।
40 और मूसा ने कूश के सभी लोगों को इकट्ठा किया, जो बहुत ताकतवर थे, लगभग तीस हज़ार आदमी, और वह अराम और पूरब के लोगों से लड़ने के लिए निकल पड़ा।
41 और वे पहले पूरब के लोगों के पास गए, और जब पूरब के लोगों ने उनकी खबर सुनी, तो वे उनसे मिलने गए, और उनसे लड़ाई की।
42 और पूरब के लोगों के खिलाफ़ लड़ाई बहुत ज़्यादा थी, इसलिए यहोवा ने पूरब के सभी लोगों को मूसा के हाथ में कर दिया, और लगभग तीन सौ आदमी मारे गए।
43 और पूरब के सब लोग पीछे मुड़े, तो मूसा और कूश के लोगों ने उनका पीछा किया, और उन्हें हरा दिया, और जैसा उनका रिवाज था, उन पर टैक्स लगा दिया।
44 इसलिए मूसा और उसके साथ के सभी लोग वहाँ से लड़ाई के लिए अराम देश की ओर चल पड़े।
45 और अराम के लोग भी उनसे मिलने गए, और उनसे लड़े, और यहोवा ने उन्हें मूसा के हाथ में कर दिया, और अराम के बहुत से आदमी घायल होकर गिर पड़े।
46 और अरामियों को भी मूसा और कूश के लोगों ने काबू में कर लिया, और उन्होंने भी अपना टैक्स देना शुरू कर दिया।
47 और मूसा ने अराम और पूरब के लोगों को कूश के लोगों के अधीन कर दिया, और मूसा और उसके साथ के सभी लोग कूश देश की ओर लौट गए।
48 और मूसा ने कूश के बच्चों के राज्य में खुद को मज़बूत किया, और यहोवा उसके साथ था, और कूश के सभी बच्चे उससे डरते थे।

अध्याय 74

1 सालों के आखिर में एदोम का राजा शाऊल मर गया, और अकबोर का बेटा बाल-चानान उसकी जगह राजा बना।
2 मूसा के कूश पर राज के सोलहवें साल में, अकबोर के बेटे बाल चानान ने एदोम देश में सभी एदोमियों पर अड़तीस साल तक राज किया।
3 उसके दिनों में मोआब ने एदोम की ताकत के खिलाफ बगावत की। वह बेदाद के बेटे हदद के दिनों से एदोम के अधीन था। हदद ने उन्हें और मिद्यान को हराया और मोआब को एदोम के अधीन कर दिया।
4 और जब अकबोर का बेटा बाल चानान एदोम पर राज करने लगा, तो मोआब के सभी बच्चों ने एदोम से अपना भरोसा वापस ले लिया।

5 उन दिनों अफ्रीका का राजा एंजेस मर गया, और उसका बेटा अज़द्रुबल उसकी जगह राजा बना।
6 और उन्हीं दिनों चित्तिम के बच्चों का राजा जेनियस मर गया, और उसे उसके मंदिर में दफ़नाया गया, जिसे उसने कैनोपिया के मैदान में अपने रहने के लिए बनवाया था, और लैटिनस उसकी जगह राजा बना।
7 मूसा के कूश वंश पर राज करने के बाईसवें साल में, लेटीनुस ने चित्तिम वंश पर पैंतालीस साल राज किया।
8 और उसने अपने लिए एक बड़ा और ताकतवर टावर भी बनवाया, और उसमें अपने रहने के लिए एक सुंदर मंदिर भी बनवाया, ताकि वह अपनी सरकार चला सके, जैसा कि रिवाज था।
9 अपने राज के तीसरे साल में उसने अपने सभी काबिल आदमियों से एक ऐलान करवाया, जिन्होंने उसके लिए बहुत सारे जहाज़ बनाए।
10 और लैटिनस ने अपनी सारी सेना इकट्ठा की, और वे जहाज़ों में आए, और अफ्रीका के राजा एंजेस के बेटे अज़द्रुबल से लड़ने के लिए गए, और वे अफ्रीका आए और अज़द्रुबल और उसकी सेना के साथ लड़ाई की।
11 और लैटिनस ने अज़द्रुबल को हरा दिया, और लैटिनस ने अज़द्रुबल से वह पानी का रास्ता छीन लिया जो उसके पिता ने चित्तिम के बच्चों से तब खरीदा था, जब उसने उज़ी की बेटी जनिया से शादी की थी, इसलिए लैटिनस ने पानी के रास्ते का पुल तोड़ दिया, और अज़द्रुबल की पूरी सेना को बुरी तरह मारा।
12 और अज़द्रुबल के बचे हुए ताकतवर लोगों ने खुद को मज़बूत किया, और उनके दिल जलन से भर गए, और उन्होंने मौत को दावत दी, और फिर से चिट्टिम के राजा लेटीनस के साथ लड़ाई में शामिल हो गए।
13 और लड़ाई में अफ्रीका के सभी लोग बुरी तरह हार गए, और वे सभी लैटिनस और उसके लोगों के सामने घायल हो गए, और राजा अज़द्रुबल भी उस लड़ाई में मारा गया।
14 राजा अज़द्रुबल की एक बहुत सुंदर बेटी थी, जिसका नाम उशपेज़ेना था, और अफ्रीका के सभी पुरुषों ने उसकी सुंदरता और सुंदर रूप के कारण अपने कपड़ों पर उसकी आकृति कढ़ाई की थी।
15 और लैटिनस के आदमियों ने अज़द्रुबल की बेटी उशपेज़ेना को देखा, और अपने राजा लैटिनस के सामने उसकी तारीफ़ की।
16 और लेटीनस ने उसे अपने पास लाने का आदेश दिया, और लेटीनस ने उशपेज़ेना को पत्नी के रूप में ले लिया, और वह वापस चिट्टिम के रास्ते पर चला गया।
17 और एंजेस के बेटे अज़द्रुबल की मौत के बाद, जब लैटिनस लड़ाई से अपने देश लौट आया, तो अफ्रीका के सभी रहने वाले उठ खड़े हुए और एंजेस के बेटे अनीबाल को, जो अज़द्रुबल का छोटा भाई था, पकड़ लिया, और उसे उसके भाई की जगह अफ्रीका के पूरे देश का राजा बना दिया।
18 और जब वह राज करने लगा, तो उसने चित्तिम के बच्चों से लड़ने के लिए चित्तिम जाने का फैसला किया, ताकि अपने भाई अज़द्रुबल और अफ्रीका के लोगों के नुकसान का बदला ले सके, और उसने ऐसा ही किया।
19 और उसने बहुत से जहाज़ बनाए, और अपनी पूरी सेना के साथ वहाँ से चिट्टिम पहुँचा।
20 इसलिए अनीबाल ने चित्तिम के बच्चों से लड़ाई की, और चित्तिम के बच्चे अनीबाल और उसकी सेना के सामने घायल हो गए, और अनीबाल ने अपने भाई का बदला लिया।
21 और अनीबाल ने चित्तिम के बच्चों के साथ अठारह साल तक लड़ाई जारी रखी, और अनीबाल चित्तिम के देश में रहा और वहाँ लंबे समय तक डेरा डाला।
22 और अनीबाल ने चित्तिम के लोगों को बहुत बुरी तरह मारा, और उनके बड़े-बड़े लोगों और राजकुमारों को मार डाला, और बाकी लोगों में से उसने लगभग 80 हज़ार आदमियों को मारा।
23 और दिनों और सालों के आखिर में, अनीबाल अपने देश अफ्रीका लौट आया, और उसने अपने भाई अज़द्रुबल की जगह सुरक्षित रूप से राज किया।

अध्याय 75

1 उस समय, जब इस्राएलियों के मिस्र जाने का एक सौ अस्सीवाँ साल था, तो मिस्र से इस्राएलियों में से तीस हज़ार वीर सैनिक पैदल निकले, जो यूसुफ के गोत्र के थे, यानी यूसुफ के बेटे एप्रैम के वंशज थे।
2 क्योंकि उन्होंने कहा कि वह समय पूरा हो गया है जो प्रभु ने इस्राएल के बच्चों के लिए पुराने समय में तय किया था, जिसके बारे में उसने अब्राहम से कहा था।
3 और इन आदमियों ने कमर कस ली, और हर आदमी ने अपनी तलवार कमर में और हर आदमी ने अपना कवच पहन लिया, और वे अपनी ताकत पर भरोसा करके, एक साथ मिस्र से बड़े ज़ोर से निकल पड़े।
4 लेकिन वे रास्ते के लिए कोई सामान नहीं लाए, सिर्फ़ चाँदी और सोना, यहाँ तक कि उस दिन के लिए रोटी भी नहीं लाए, क्योंकि वे पलिश्तियों से पैसे वसूलने की सोच रहे थे, और अगर नहीं तो वे उसे ज़बरदस्ती ले लेंगे।
5 और ये लोग बहुत ताकतवर और बहादुर थे, एक आदमी हज़ार लोगों का पीछा कर सकता था और दो आदमी दस हज़ार को हरा सकते थे, इसलिए उन्होंने अपनी ताकत पर भरोसा किया और जैसे थे वैसे ही साथ-साथ चले।
6 और वे गत देश की ओर बढ़े, और नीचे जाकर गत के चरवाहों को गत के बच्चों के जानवर चराते हुए पाया।
7 तब उन्होंने चरवाहों से कहा, "हमें कुछ भेड़ें पैसे देकर दे दो, ताकि हम खा सकें, क्योंकि हम भूखे हैं, और आज हमने कुछ नहीं खाया।"
8 तब चरवाहों ने कहा, क्या ये हमारी भेड़ें या गाय-बैल हैं कि हम तुम्हें पैसे लेकर दे दें? तब एप्रैम के लोग उन्हें ज़बरदस्ती ले जाने के लिए पास आए।
9 और गत के चरवाहों ने उन पर चिल्लाकर ऐसा शोर मचाया कि उनकी चीख दूर तक सुनाई दी, इसलिए गत के सभी बच्चे उनके पास गए।
10 और जब गत के लोगों ने एप्रैम के बच्चों के बुरे काम देखे, तो वे लौट आए और गत के आदमियों को इकट्ठा किया, और हर आदमी ने अपने हथियार पहने, और लड़ाई के लिए एप्रैम के बच्चों के पास गए।
11 और उन्होंने गत घाटी में उनसे लड़ाई की, और लड़ाई बहुत भयानक थी, और उस दिन उन्होंने एक-दूसरे को बहुत मारा।

12 और दूसरे दिन गत के लोगों ने पलिश्तियों के सब शहरों में यह कहला भेजा कि वे उनकी मदद के लिए आएं,
13 हमारे पास आओ और हमारी मदद करो, ताकि हम एप्रैम के बच्चों को हरा सकें जो मिस्र से हमारे जानवर छीनने और बिना वजह हमसे लड़ने आए हैं।
14 अब एप्रैम के बच्चे भूख और प्यास से थक चुके थे, क्योंकि उन्होंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया था। और पलिश्तियों के शहरों से चालीस हज़ार आदमी गत के आदमियों की मदद के लिए निकले।
15 और ये लोग एप्रैम के बच्चों से लड़ाई में लगे हुए थे, और यहोवा ने एप्रैम के बच्चों को पलिश्तियों के हाथ में कर दिया।
16 और उन्होंने एप्रैम के सभी बच्चों को मार डाला, जो मिस्र से निकले थे, उनमें से कोई नहीं बचा, सिवाय दस आदमियों के जो लड़ाई से भाग गए थे।
17 यह बुराई यहोवा की तरफ से एप्रैम के बच्चों पर हुई थी, क्योंकि उन्होंने यहोवा की बात मानकर मिस्र से निकलने का समय नहीं निकाला था, बल्कि उस समय के आने से पहले जो यहोवा ने पुराने दिनों में इस्राएल के लिए तय किया था।
18 और पलिश्तियों में से भी बहुत सारे, लगभग बीस हज़ार आदमी मारे गए, और उनके भाइयों ने उन्हें ले जाकर अपने शहरों में दफ़ना दिया।
19 और एप्रैम के मारे हुए लोग कई दिनों और सालों तक गत घाटी में छोड़े गए, और उन्हें दफ़नाया नहीं गया, और घाटी इंसानों की हड्डियों से भर गई।
20 और जो लोग लड़ाई से बच निकले थे, वे मिस्र आए और उन्होंने सब इस्राएलियों को सब कुछ बताया जो उनके साथ हुआ था।
21 और उनके पिता एप्रैम ने कई दिनों तक उनके लिए दुख मनाया, और उसके भाई उसे दिलासा देने आए।
22 और वह अपनी पत्नी के पास गया, और उसने एक बेटे को जन्म दिया, और उसने उसका नाम बरीआ रखा, क्योंकि वह उसके घर में बदनसीब थी।

अध्याय 76

1 उन दिनों अम्राम का बेटा मूसा कूश देश में राजा था, और वह अपने राज्य में कामयाब रहा, और उसने कूश के बच्चों का राज न्याय, नेकी और ईमानदारी से चलाया।
2 और जितने दिन मूसा उन पर राज करता रहा, कूश के सभी बच्चे उससे प्यार करते थे, और कूश देश के सभी रहने वाले उससे बहुत डरते थे।
3 और कूश पर मूसा के राज के चालीसवें साल में, मूसा शाही गद्दी पर बैठा था, और रानी अदोन्याह उसके सामने थी, और सब अमीर लोग उसके चारों ओर बैठे थे।
4 तब रानी अदोन्याह ने राजा और हाकिमों के सामने कहा, "कूश के बच्चों, तुम इतने दिनों से यह क्या काम कर रहे हो?"
5 तुम्हें तो पता ही होगा कि चालीस साल से यह आदमी कूश पर राज कर रहा है, लेकिन उसने कभी मेरे पास नहीं आया, और न ही कूश के बच्चों के देवताओं की सेवा की।
6 इसलिए अब हे कूश के बच्चों, सुनो, और इस आदमी को अपने ऊपर राज न करने दो, क्योंकि वह हमारा नहीं है।
7 देखो, मेरा बेटा मेनाक्रस बड़ा हो गया है, उसे अपने ऊपर राज करने दो, क्योंकि तुम्हारे लिए अपने मालिक के बेटे की सेवा करना, मिस्र के राजा के गुलाम, किसी अजनबी की सेवा करने से बेहतर है।
8 और कूश के बच्चों के सभी लोगों और अमीरों ने वे बातें सुनीं जो रानी अदोन्याह ने उनके कानों में कही थीं।
9 और सभी लोग शाम तक तैयारी करते रहे, और सुबह जल्दी उठकर उन्होंने किकियानस के बेटे मेनाक्रस को अपना राजा बनाया।
10 और कूश के सभी बच्चे मूसा पर हाथ उठाने से डरते थे, क्योंकि यहोवा मूसा के साथ था, और कूश के बच्चों को वह कसम याद थी जो उन्होंने मूसा से खाई थी, इसलिए उन्होंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।
11 लेकिन कूश के बच्चों ने मूसा को बहुत सारे तोहफ़े दिए, और उसे बड़े सम्मान के साथ अपने पास से विदा किया।
12 इसलिए मूसा कूश देश से निकलकर अपने घर चला गया और कूश पर राज करना छोड़ दिया। जब मूसा कूश देश से निकला, तब वह 66 साल का था। यह बात यहोवा की तरफ से थी, क्योंकि वह समय आ गया था जो उसने पुराने दिनों में तय किया था, ताकि इस्राएल को हाम के बच्चों की तकलीफों से निकाला जा सके।
13 इसलिए मूसा मिद्यान चला गया, क्योंकि वह फिरौन के डर से मिस्र लौटने से डर रहा था, और वह मिद्यान में पानी के एक कुएँ के पास जाकर बैठ गया।
14 और मिद्यानी रूएल की सात बेटियाँ अपने पिता के झुंड को चराने के लिए बाहर गईं।
15 और वे कुएँ के पास आए और अपने पिता के झुंड को पानी पिलाने के लिए पानी भरा।
16 तब मिद्यान के चरवाहे आए और उन्हें भगा दिया, और मूसा ने उठकर उनकी मदद की और झुंड को पानी पिलाया।
17 और वे अपने पिता रूएल के पास घर आए, और उसे बताया कि मूसा ने उनके लिए क्या किया।
18 तब उन्होंने कहा, एक मिस्री आदमी ने हमें चरवाहों के हाथ से छुड़ाया है, उसने हमारे लिए पानी भरकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाया है।
19 तब रूएल ने अपनी बेटियों से कहा, "वह कहाँ है? तुम उस आदमी को क्यों छोड़ आई हो?"
20 तब रूएल ने उसे बुलवाया, और अपने घर ले आया, और उसके साथ रोटी खाई।
21 और मूसा ने रूएल को बताया कि वह मिस्र से भाग गया था और उसने कूश पर चालीस साल तक राज किया, और उसके बाद उन्होंने उससे राज का काम छीन लिया, और उसे इज्ज़त और तोहफ़ों के साथ शांति से विदा किया।
22 जब रूएल ने मूसा की बातें सुनीं, तो उसने मन में सोचा, "मैं इस आदमी को जेल में डाल दूँगा, और कूश के बच्चों को समझाऊँगा, क्योंकि वह उनके पास से भाग गया है।"
23 और उन्होंने उसे पकड़कर जेल में डाल दिया, और मूसा दस साल जेल में रहा। और जब मूसा जेल में था, तो रूएल की बेटी सिप्पोरा को उस पर दया आई, और उसने हर समय उसे रोटी और पानी दिया।

24 और इस्राएल के सभी बच्चे मिस्र देश में मिस्रियों की सेवा में हर तरह का कठिन काम करते रहे, और उन दिनों में मिस्र का हाथ इस्राएल के बच्चों पर सख्ती से बना रहा।
25 उस समय यहोवा ने मिस्र के राजा फिरौन को मारा, और उसके पैर के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक कोढ़ की बीमारी हो गई; इस्राएल के बच्चों के साथ बुरे बर्ताव की वजह से उस समय यहोवा की तरफ से यह बीमारी मिस्र के राजा फिरौन पर आई थी।
26 क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों, यानी इस्राएलियों की प्रार्थना सुन ली थी, और उनकी कड़ी मेहनत की वजह से उनकी पुकार उस तक पहुँची थी।
27 फिर भी उसका गुस्सा उनसे दूर नहीं हुआ, और फिरौन का हाथ इस्राएलियों पर बढ़ा रहा, और फिरौन ने यहोवा के सामने अपना सिर कड़ा कर लिया, और इस्राएलियों पर अपना बोझ बढ़ा दिया, और हर तरह की मेहनत से उनकी ज़िंदगी को कड़वा बना दिया।
28 और जब यहोवा ने मिस्र के राजा फिरौन पर मुसीबत डाली, तो उसने अपने ज्ञानियों और जादूगरों से उसे ठीक करने के लिए कहा।
29 और उसके ज्ञानियों और जादूगरों ने उससे कहा, कि अगर छोटे बच्चों का खून उसके घावों पर लगाया जाए तो वह ठीक हो जाएगा।
30 और फिरौन ने उनकी बात मानकर अपने सेवकों को इस्राएलियों के पास गोशेन भेजा, कि वे उनके छोटे बच्चों को ले आएं।
31 और फिरौन के मंत्री जाकर इस्राएलियों के बच्चों को उनकी माँओं की गोद से ज़बरदस्ती छीन लेते थे, और वे उन्हें रोज़ फिरौन के पास लाते थे, हर दिन एक बच्चा, और वैद्य उन्हें मारकर बीमारी पर लगाते थे; और वे दिन भर ऐसा ही करते थे।
32 और फिरौन ने जिन बच्चों को मारा उनकी गिनती तीन सौ पचहत्तर थी।
33 लेकिन यहोवा ने मिस्र के राजा के डॉक्टरों की बात नहीं सुनी, और महामारी बहुत बढ़ती गई।
34 और फिरौन दस साल तक उस मुसीबत से परेशान रहा, फिर भी फिरौन का दिल इस्राएलियों के खिलाफ और भी सख्त होता गया।
35 और दस साल के आखिर में यहोवा ने फिरौन को खतरनाक मुसीबतों से परेशान करना जारी रखा।
36 और प्रभु ने उसके पेट में एक भयंकर ट्यूमर और बीमारी पैदा कर दी, और वह बीमारी एक गंभीर फोड़े में बदल गई।
37 उस समय फिरौन के दो सेवक गोशेन देश से आए, जहाँ इस्राएल के सभी बच्चे रहते थे। वे फिरौन के घर गए और उससे कहा, "हमने इस्राएल के बच्चों को काम में आलस करते और मेहनत में लापरवाही करते देखा है।"
38 जब फिरौन ने अपने मंत्रियों की बातें सुनीं, तो उसका गुस्सा इस्राएलियों पर बहुत ज़्यादा भड़क उठा, क्योंकि वह अपने शरीर में दर्द से बहुत दुखी था।
39 उसने जवाब दिया, "अब जब इस्राएल के बच्चों को पता चला है कि मैं बीमार हूँ, तो वे हमारा मज़ाक उड़ा रहे हैं, इसलिए अब मेरे लिए मेरा रथ तैयार करो, और मैं गोशेन जाकर देखूंगा कि इस्राएल के बच्चे मेरा कितना मज़ाक उड़ा रहे हैं; इसलिए उसके सेवकों ने उसके लिए रथ तैयार किया।"
40 और उन्होंने उसे पकड़कर घोड़े पर सवार किया, क्योंकि वह आप से सवार नहीं हो सकता था।
41 और वह अपने साथ दस घुड़सवार और दस पैदल सैनिक लेकर इस्राएलियों के पास गोशेन गया।
42 और जब वे मिस्र की सीमा पर पहुँचे, तो राजा का घोड़ा एक तंग जगह में गया, जो अंगूर के बाग के खोखले हिस्से में ऊँची थी, जिसके दोनों तरफ बाड़ लगी हुई थी, और दूसरी तरफ नीचा, समतल इलाका था।
43 और घोड़े उस जगह तेज़ी से दौड़े और एक-दूसरे से टकराए, और दूसरे घोड़े राजा के घोड़े से टकराए।
44 और राजा का घोड़ा उस समय नीची जगह पर गिर गया जब राजा उस पर सवार था, और जब वह गिरा तो रथ राजा के मुँह पर पलट गया और घोड़ा राजा के ऊपर गिर गया, और राजा चिल्लाया, क्योंकि उसका शरीर बहुत दुख रहा था।
45 और राजा का मांस फट गया, और उसकी हड्डियाँ टूट गईं और वह सवारी नहीं कर सका, क्योंकि यह बात उसके लिए यहोवा की ओर से थी, क्योंकि यहोवा ने अपने लोगों, इस्राएल के बच्चों की पुकार और उनकी तकलीफ सुनी थी।
46 और उसके सेवकों ने उसे अपने कंधों पर उठाकर, थोड़ा-थोड़ा करके, मिस्र वापस ले आए, और उसके साथ के घुड़सवार भी मिस्र वापस आ गए।
47 और उन्होंने उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया, और राजा जान गया कि उसकी मौत आ गई है, इसलिए उसकी पत्नी रानी अपरनिथ आई और राजा के सामने रोने लगी, और राजा भी उसके साथ फूट-फूट कर रोया।
48 उस दिन उसके सभी अमीर और नौकर आए और राजा को उस दुख में देखकर उसके साथ खूब रोए।
49 और राजा के हाकिमों और उसके सब सलाहकारों ने राजा को सलाह दी कि वह अपने बेटों में से जिसे चाहे, उसे देश में अपनी जगह राजा बनाए।
50 और राजा के तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं, जो उसकी पत्नी रानी अपरनिथ से पैदा हुई थीं, इसके अलावा राजा की रखैलों से भी बच्चे थे।
51 और उनके नाम ये थे, जेठा ओथरी, दूसरा अदीकाम, तीसरा मोरियन, और उनकी बहनों का नाम था, बड़ी का नाम बतिया और दूसरी का नाम अकूज़ी।
52 और राजा का जेठा ओथरी मूर्ख था, वह जल्दबाज़ और जल्दबाज़ बातें करता था।
53 लेकिन अदीकाम चालाक और बुद्धिमान आदमी था और मिस्र की सारी बुद्धिमानी जानता था, लेकिन उसका रूप-रंग अजीब था, शरीर मोटा और कद बहुत छोटा था; उसकी लंबाई एक हाथ थी।
54 और जब राजा ने अपने बेटे आदिकाम को हर चीज़ में समझदार और बुद्धिमान देखा, तो राजा ने तय किया कि उसकी मौत के बाद उसे ही राजा बनना चाहिए।
55 और उसने अबीलोत की बेटी गदूदा से शादी की, और वह दस साल का था, और उससे उसके चार बेटे हुए।
56 इसके बाद उसने जाकर तीन पत्नियाँ कीं और उसके आठ बेटे और तीन बेटियाँ हुईं।
57 और राजा पर बहुत ज़्यादा अशांति फैल गई, और उसका मांस गर्मी के मौसम में, सूरज की तपिश में खेत में पड़ी लाश के मांस की तरह बदबूदार हो गया।

58 और जब राजा ने देखा कि उसकी बीमारी उस पर बहुत ज़्यादा हावी हो गई है, तो उसने अपने बेटे आदिकाम को अपने पास लाने का हुक्म दिया, और उसे उसकी जगह देश का राजा बना दिया।
59 और तीन साल के आखिर में, राजा शर्म, बेइज्जती और घिन में मर गया, और उसके सेवकों ने उसे ले जाकर सोअन मिस्रैम में मिस्र के राजाओं की कब्र में दफ़ना दिया।
60 लेकिन उन्होंने उसे राजाओं की तरह नहीं रखा, क्योंकि उसका मांस सड़ गया था, और बदबू के कारण वे उसे रखने के लिए पास नहीं जा सके, इसलिए उन्होंने उसे जल्दी में दफ़ना दिया।
61 क्योंकि यह बुराई उस पर यहोवा की ओर से हुई थी, क्योंकि यहोवा ने उस बुराई का बदला उससे लिया था जो उसने अपने दिनों में इस्राएल के साथ की थी।
62 और वह डर और शर्म के साथ मर गया, और उसका बेटा अदीकाम उसकी जगह राजा बना।

अध्याय 77

1 जब अदीकाम ने मिस्र पर राज किया, तब वह बीस साल का था, उसने चार साल राज किया।
2 इस्राएल के मिस्र जाने के दो सौ छठे साल में अदीकाम ने मिस्र पर राज किया, लेकिन वह मिस्र पर उतना लंबा राज नहीं कर पाया जितना उसके पूर्वजों ने किया था।
3 क्योंकि उसका पिता मेलोल मिस्र में चौरानबे साल तक राज करता रहा, लेकिन वह दस साल बीमार रहा और मर गया, क्योंकि वह यहोवा के सामने बुरा था।
4 और सभी मिस्रियों ने अदीकाम फिरौन का नाम उसके पूर्वजों के नाम के समान रखा, जैसा कि मिस्र में उनका रिवाज था।
5 और फिरौन के सभी बुद्धिमान लोगों ने अदीकाम का नाम आहूज रखा, जिसे मिस्र की भाषा में संक्षेप में आहूज कहा जाता है।
6 और आदिकाम बहुत बदसूरत था, और वह एक हाथ और एक हाथ लंबा था और उसकी दाढ़ी बहुत लंबी थी जो उसके पैरों के तलवों तक पहुंचती थी।
7 और फिरौन अपने पिता की गद्दी पर बैठकर मिस्र पर राज करने लगा, और उसने अपनी समझदारी से मिस्र का राज चलाया।
8 और जब वह राज कर रहा था, तो उसने अपने पिता और उससे पहले के सभी राजाओं से भी ज़्यादा बुराई की, और उसने इस्राएलियों पर अपना बोझ बढ़ा दिया।
9 और वह अपने सेवकों के साथ गोशेन में इस्राएलियों के पास गया, और उन पर काम का बोझ बढ़ा दिया, और उनसे कहा, अपना काम, हर दिन का काम पूरा करो, और आज से आगे हमारे काम में अपने हाथ ढीले मत पड़ने देना, जैसा तुमने मेरे पिता के दिनों में किया था।
10 और उसने इस्राएलियों में से उन पर अफ़सर रखे, और इन अफ़सरों पर उसने अपने नौकरों में से काम के मालिक रखे।
11 और उसने उन पर ईंटों का एक नाप रखा, ताकि वे हर दिन उसी गिनती के हिसाब से काम करें, और वह वापस मिस्र चला गया।
12 उस समय फिरौन के काम करने वालों ने फिरौन की आज्ञा के अनुसार इस्राएलियों के सरदारों को यह आदेश दिया,
13 फिरौन कहता है, हर दिन अपना काम करो, और अपना काम पूरा करो, और ईंटों की रोज़ाना की गिनती का ध्यान रखो; कुछ भी कम मत करो।
14 और अगर तुम रोज़ाना की ईंटों में कमी करोगे, तो मैं तुम्हारी जगह तुम्हारे छोटे बच्चों को रख दूँगा।
15 और मिस्र के मेहनताने वाले उन दिनों वैसा ही करते थे जैसा फिरौन ने उन्हें हुक्म दिया था।
16 और जब कभी इस्राएलियों की रोज़ की ईंटों के नाप में कोई कमी पाई जाती, तो फिरौन के मज़दूर इस्राएलियों की पत्नियों के पास जाते और उनके बच्चों को ईंटों की कमी के हिसाब से उनकी माँओं की गोद से ज़बरदस्ती उठा लेते, और ईंटों की जगह उन्हें घर में लगा देते;
17 जब उनके माता-पिता उनके लिए रो रहे थे और उन्होंने इमारत की दीवार में अपने बच्चों के रोने की आवाज़ सुनी, तो वे भी रो पड़े।
18 और मज़दूरों ने इस्राएल पर दबाव डाला कि इस्राएली अपने बच्चों को उस इमारत में रखें, इसलिए एक आदमी ने अपने बेटे को दीवार में रखा और उस पर गारा डाल दिया, जबकि उसकी आँखें उस पर रो रही थीं, और उसके आँसू उसके बच्चे पर बह रहे थे।
19 और मिस्र के मज़दूरों ने कई दिनों तक इस्राएल के बच्चों के साथ ऐसा ही किया, और किसी ने भी इस्राएल के बच्चों पर दया या दया नहीं की।
20 और बिल्डिंग में मारे गए सभी बच्चों की संख्या दो सौ सत्तर थी, कुछ ऐसे थे जिन्हें उन्होंने उन ईंटों की जगह बनाया था जिन्हें उनके पिताओं ने खराब छोड़ दिया था, और कुछ ऐसे थे जिन्हें उन्होंने बिल्डिंग से मरा हुआ निकाला था।
21 और अदीकाम के दिनों में इस्राएलियों पर जो मेहनत की गई, वह उसके पिता के दिनों में की गई मेहनत से ज़्यादा मुश्किल थी।
22 और इस्राएल के बच्चे अपने भारी काम के कारण हर दिन आहें भरते थे, क्योंकि वे आपस में कहते थे, देखो, जब फिरौन मर जाएगा, तो उसका बेटा उठेगा और हमारा काम हल्का कर देगा!
23 लेकिन उन्होंने दूसरे काम को पहले वाले से ज़्यादा बढ़ा दिया, और इस्राएल के बच्चों ने इस पर आह भरी और उनकी मेहनत की वजह से उनकी पुकार परमेश्वर तक पहुँची।
24 और उन दिनों परमेश्वर ने इस्राएल के बच्चों की आवाज़ और उनकी पुकार सुनी, और परमेश्वर ने उन्हें अपना वह करार याद दिलाया जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ किया था।
25 और परमेश्वर ने इस्राएल के बच्चों का बोझ और उन दिनों का उनका भारी काम देखा, और उन्हें बचाने का फैसला किया।
26 और उन दिनों अम्राम का बेटा मूसा मिद्यानी रूएल के घर में जेल में बंद था, और रूएल की बेटी सिप्पोरा हर दिन चुपके से उसे खाना देकर मदद करती थी।
27 और मूसा को दस साल तक रूएल के घराने की काल कोठरी में बंद रखा गया।
28 और दस साल के आखिर में, जो मिस्र पर फिरौन के राज का पहला साल था, अपने पिता की जगह पर,

29 सिप्पोरा ने अपने पिता रूएल से कहा, "कोई भी उस इब्री आदमी के बारे में नहीं पूछता या उसे नहीं ढूँढ़ता, जिसे तुमने दस साल से जेल में बंद रखा है।"
30 इसलिए अब अगर तुम्हें अच्छा लगे तो हम भेजकर देखें कि वह ज़िंदा है या मर गया, लेकिन उसके पिता को नहीं पता था कि उसने उसका साथ दिया था।
31 उसके पिता रूएल ने उससे कहा, "क्या कभी ऐसा हुआ है कि कोई आदमी दस साल तक बिना खाए जेल में बंद रहे और फिर वह ज़िंदा रहे?"
32 सिप्पोरा ने अपने पिता को जवाब दिया, "तुमने ज़रूर सुना होगा कि इब्रियों का परमेश्वर महान और भयानक है, और वह हर समय उनके लिए चमत्कार करता है।"
33 उसी ने अब्राहम को कसदियों के ऊर से, इसहाक को उसके पिता की तलवार से, और याकूब को यहोवा के उस दूत से बचाया था, जो उसके साथ यबूक के घाट पर कुश्ती लड़ रहा था।
34 और इस आदमी के साथ भी उसने बहुत कुछ किया है, उसने उसे मिस्र की नदी से, फिरौन की तलवार से, और कूश के बच्चों से बचाया है, वैसे ही वह उसे अकाल से भी बचा सकता है और उसे ज़िंदा रख सकता है।
35 और यह बात रूएल को अच्छी लगी, और उसने अपनी बेटी की बात मानकर मूसा का क्या हुआ, यह जानने के लिए कालकोठरी में भेजा।
36 और उसने देखा, और देखो, मूसा नाम का आदमी जेल में अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने पुरखों के परमेश्वर की तारीफ़ और प्रार्थना कर रहा था।
37 और रूएल ने मूसा को कालकोठरी से बाहर लाने का हुक्म दिया, तो उन्होंने उसके बाल मुंडवाए और उसने अपने जेल के कपड़े बदले और रोटी खाई।
38 इसके बाद मूसा रूएल के बगीचे में गया जो घर के पीछे था, और वहाँ उसने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की, जिसने उसके लिए बड़े-बड़े चमत्कार किए थे।
39 और जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो उसने अपनी तरफ देखा, और देखा कि एक नीलम की छड़ी ज़मीन में रखी हुई थी, जो बगीचे के बीच में लगाई गई थी।
40 और वह छड़ी के पास गया और उसने देखा, और देखो, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का नाम उस छड़ी पर खुदा हुआ था, लिखा हुआ और बड़ा किया हुआ था।
41 और उसने उसे पढ़ा और अपना हाथ बढ़ाकर उसे जंगल के पेड़ की तरह झाड़ी से तोड़ लिया, और छड़ी उसके हाथ में थी।
42 और यह वह छड़ी है जिससे हमारे परमेश्वर ने सारे काम किए, जब उसने स्वर्ग और पृथ्वी, और उनके सारे जीव, समुद्र, नदियाँ और उनकी सारी मछलियाँ बनाईं।
43 और जब परमेश्वर ने आदम को अदन के बाग से निकाल दिया, तो उसने अपने हाथ में छड़ी ली और जाकर उस ज़मीन को जोता, जहाँ से उसे निकाला गया था।
44 और वह छड़ी नूह के पास आई और शेम और उसके वंशजों को दी गई, जब तक कि वह इब्रानी अब्राहम के हाथ में नहीं आ गई।
45 और जब अब्राहम ने अपना सब कुछ अपने बेटे इसहाक को दे दिया, तो उसने उसे यह छड़ी भी दी।
46 और जब याकूब पदान-अराम भाग गया, तो उसने उसे अपने हाथ में ले लिया, और जब वह अपने पिता के पास लौटा, तो उसने उसे पीछे नहीं छोड़ा।
47 और जब वह मिस्र गया, तो उसने उसे अपने हाथ में लेकर यूसुफ को दे दिया, जो उसके भाइयों से एक हिस्सा ज़्यादा था, क्योंकि याकूब ने उसे ज़बरदस्ती अपने भाई एसाव से छीन लिया था।
48 और यूसुफ की मौत के बाद, मिस्र के अमीर लोग यूसुफ के घर आए, और वह छड़ी मिद्यानी रूएल के हाथ में आ गई, और जब वह मिस्र से बाहर निकला, तो उसने उसे अपने हाथ में लिया और अपने बगीचे में लगा दिया।
49 और किन्नियों के सभी ताकतवर आदमियों ने जब उसकी बेटी सिप्पोरा को पाने की कोशिश की, तो उसे तोड़ने की कोशिश की, लेकिन वे कामयाब नहीं हुए।
50 इसलिए वह छड़ी रूएल के बाग में तब तक लगी रही, जब तक वह आदमी नहीं आया जिसका उस पर हक था और उसने उसे ले लिया।
51 जब रूएल ने मूसा के हाथ में छड़ी देखी, तो उसे बहुत हैरानी हुई, और उसने अपनी बेटी सिप्पोरा को मूसा को पत्नी के तौर पर दे दिया।

अध्याय 78

1 उस समय एदोम के राजा अकबोर के बेटे बालचन्नान की मौत हो गई, और उसे एदोम देश में उसके घर में दफ़नाया गया।
2 और उसकी मौत के बाद एसाव के बच्चों ने एदोम देश में भेजा, और वहाँ से एदोम में रहने वाले एक आदमी को, जिसका नाम हदद था, ले आए, और उसे अपने राजा बालचन्नान की जगह पर राजा बनाया।
3 और हदद ने एदोम के लोगों पर अड़तालीस साल तक राज किया।
4 और जब वह राज करने लगा, तो उसने मोआब के लोगों से लड़ने का फैसला किया, ताकि उन्हें एसाव के लोगों के काबू में कर सके, जैसा वे पहले थे। लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि मोआब के लोगों ने यह बात सुनी, और वे उठ खड़े हुए और अपने भाइयों में से किसी को अपने लिए राजा चुनने के लिए जल्दी करने लगे।
5 इसके बाद उन्होंने एक बड़ी सेना इकट्ठा की और अपने भाई अम्मोनियों को एदोम के राजा हदद से लड़ने के लिए मदद के लिए भेजा।
6 और हदद ने मोआब के बच्चों की बात सुनी, और उनसे बहुत डर गया, और उनसे लड़ने से रुक गया।
7 उन दिनों मिद्यान में अम्राम के बेटे मूसा ने मिद्यान के रूएल की बेटी सिप्पोरा से शादी कर ली।
8 और सिप्पोरा याकूब की बेटियों के रास्ते पर चली, वह सारा, रेबेका, राहेल और लिआ की नेकी से कम नहीं थी।
9 और सिप्पोरा गर्भवती हुई और उसके एक बेटा हुआ। उसने उसका नाम गेर्शोम रखा, क्योंकि उसने कहा, "मैं एक अनजान देश में परदेशी हूँ।" लेकिन उसने अपने ससुर रूएल की आज्ञा से अपनी चमड़ी का खतना नहीं करवाया।
10 और वह फिर से प्रेग्नेंट हुई और उसके एक बेटा हुआ, लेकिन उसने उसका खतना किया और उसका नाम एलीएजेर रखा,

क्योंकि मूसा ने कहा था, क्योंकि मेरे पुरखों के भगवान ने मेरी मदद की और मुझे फिरौन की तलवार से बचाया।
11 और मिस्र के राजा फिरौन ने उन दिनों इस्राएलियों से बहुत ज़्यादा मेहनत करवाई, और इस्राएलियों पर अपना बोझ और भारी करता गया।
12 और उसने मिस्र में यह ऐलान करवाया कि लोगों को ईंटें बनाने के लिए और भूसा मत दो, बल्कि वे जाकर अपने लिए जितना भूसा मिले, इकट्ठा कर लें।
13 और जो ईंटें वे बनाएंगे, उनका हिसाब भी उन्हें हर दिन देना होगा, और उनमें से कुछ भी कम नहीं करना होगा, क्योंकि वे अपने काम में आलसी हैं।
14 और इस्राएल के बच्चों ने यह सुना, और वे दुखी हुए और आहें भरकर, अपने मन की कड़वाहट के कारण यहोवा को पुकारने लगे।
15 और यहोवा ने इस्राएलियों की पुकार सुनी, और देखा कि मिस्री उन पर कितना ज़ुल्म कर रहे थे।
16 और यहोवा को अपने लोगों और अपनी विरासत से जलन हुई, और उसने उनकी आवाज़ सुनी, और उसने उन्हें मिस्र की मुश्किलों से निकालने का फैसला किया, ताकि उन्हें कनान देश उनके कब्ज़े में दे सके।

अध्याय 79

1 उन दिनों मूसा सीन नाम जंगल के पार अपने ससुर मिद्यानी रूएल की भेड़-बकरियों को चरा रहा था, और उसके हाथ में वह छड़ी थी जो उसने अपने ससुर से ली थी।
2 एक दिन ऐसा हुआ कि एक बकरी का बच्चा झुंड से भटक गया, और मूसा ने उसका पीछा किया और वह परमेश्वर के पहाड़ होरेब तक पहुँच गया।
3 और जब वह होरेब के पास पहुँचा, तो यहोवा वहाँ झाड़ी में उसे दिखाई दिया, और उसने झाड़ी को आग से जलते हुए पाया, लेकिन आग में झाड़ी को भस्म करने की शक्ति नहीं थी।
4 और मूसा यह देखकर बहुत हैरान हुआ, क्योंकि झाड़ी जली नहीं थी, और वह इस बड़ी चीज़ को देखने के लिए पास गया, और प्रभु ने मूसा को आग में से पुकारा और उसे मिस्र के राजा फिरौन के पास जाने का हुक्म दिया, ताकि वह इस्राएलियों को उसकी सेवा से भेज दे।
5 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जाओ, मिस्र लौट जाओ, क्योंकि जो लोग तुम्हारी जान लेना चाहते थे, वे सब मर चुके हैं, और तुम फिरौन से कहो कि वह इस्राएलियों को अपनी ज़मीन से निकाल दे।"
6 और यहोवा ने उसे मिस्र में फिरौन और उसकी प्रजा की आँखों के सामने निशान और चमत्कार करते हुए दिखाया, ताकि वे विश्वास करें कि यहोवा ने उसे भेजा है।
7 तब मूसा ने यहोवा की सारी आज्ञा मानकर अपने ससुर के पास लौटकर उसे सारी बात बताई। तब रूएल ने उससे कहा, "शांति से जाओ।"
8 तब मूसा अपनी पत्नी और बेटों को साथ लेकर मिस्र जाने के लिए निकला। जब वह रास्ते में एक सराय में था, तो परमेश्वर का एक दूत नीचे आया और उसके खिलाफ़ कोई बहाना ढूँढ़ने लगा।
9 और वह उसके पहले जन्मे बेटे की वजह से उसे मार डालना चाहता था, क्योंकि उसने उसका खतना नहीं कराया था, और उस वादे को तोड़ा था जो यहोवा ने अब्राहम के साथ किया था।
10 क्योंकि मूसा ने अपने ससुर की बात मान ली थी, जो उसने उससे कही थी कि अपने जेठे बेटे का खतना मत करो, इसलिए उसने उसका खतना नहीं किया।
11 और सिप्पोरा ने प्रभु के दूत को मूसा के विरुद्ध बहाना ढूंढते हुए देखा, और वह जान गई कि यह बात मूसा के उसके बेटे गेर्शोम का खतना न करने के कारण हुई है।
12 तब सिप्पोरा ने जल्दी से वहाँ के नुकीले पत्थर लिए, और अपने बेटे का खतना किया, और अपने पति और बेटे को प्रभु के दूत के हाथ से छुड़ाया।
13 और उस दिन मूसा के भाई अम्राम का बेटा हारून मिस्र में नदी के किनारे टहल रहा था।
14 और प्रभु उस जगह पर उसके सामने प्रकट हुए, और उससे कहा, "अब जंगल में मूसा के पास जाओ।" वह गया और परमेश्वर के पहाड़ पर उससे मिला, और उसे चूमा।
15 तब हारून ने अपनी आँखें उठाईं, और मूसा की पत्नी सिप्पोरा और उसके बच्चों को देखा, और मूसा से पूछा, ये तुम्हारे कौन हैं?
16 तब मूसा ने उससे कहा, "ये मेरी पत्नी और बेटे हैं, जिन्हें परमेश्वर ने मिद्यान में मुझे दिया था।" और हारून को उस औरत और उसके बच्चों के कारण बहुत दुख हुआ।
17 तब हारून ने मूसा से कहा, "उस औरत और उसके बच्चों को विदा कर दो कि वे उसके पिता के घर चले जाएं।" मूसा ने हारून की बात मानकर वैसा ही किया।
18 और सिप्पोरा अपने बच्चों के साथ लौट आई, और वे रूएल के घर गए, और वहाँ तब तक रहे जब तक कि वह समय नहीं आ गया जब यहोवा ने अपने लोगों से भेंट की, और उन्हें फिरौन के हाथ से मिस्र से बाहर निकाला।
19 और मूसा और हारून मिस्र में इस्राएलियों की मंडली के पास आए, और उन्होंने उन्हें यहोवा की सारी बातें सुनाईं, और लोग बहुत ज़्यादा खुश हुए।
20 और अगले दिन मूसा और हारून सुबह-सुबह उठे और फिरौन के घर गए, और अपने हाथ में परमेश्वर की छड़ी ली।
21 और जब वे राजा के गेट पर पहुँचे, तो वहाँ लोहे के औज़ारों से दो जवान शेर कैद थे, और उनके सामने से कोई भी बाहर या अंदर नहीं आ रहा था, सिवाय उन लोगों के जिन्हें राजा ने आने का हुक्म दिया था, जब जादूगर आए और अपने मंत्रों से शेरों को वापस ले गए, और वे राजा के पास पहुँचे।
22 तब मूसा ने जल्दी से शेरों पर लाठी चढ़ाकर उन्हें छोड़ दिया, और मूसा और हारून राजा के घर में आ गए।
23 शेर भी खुशी-खुशी उनके साथ आए, और उनके पीछे-पीछे ऐसे खुश हुए जैसे कुत्ता अपने मालिक के खेत से आने पर खुश होता है।
24 और जब फिरौन ने यह बात देखी तो वह हैरान रह गया, और इस खबर से बहुत डर गया, क्योंकि उनका रूप परमेश्वर के बच्चों जैसा था।
25 फिरौन ने मूसा से कहा, "तुम क्या चाहते हो?" उन्होंने जवाब दिया, "इब्रानियों के परमेश्वर यहोवा ने हमें तुम्हारे पास यह कहने के लिए भेजा है, कि मेरे लोगों को भेज दो ताकि वे मेरी सेवा करें।"

26 जब फिरौन ने उनकी बातें सुनीं, तो वह उनके सामने बहुत डर गया। उसने उनसे कहा, "आज जाओ और कल मेरे पास वापस आना।" उन्होंने राजा की बात मान ली।
27 जब वे चले गए, तो फिरौन ने जादूगर बिलाम, उसके बेटों यन्नेस और यम्ब्रेस, और राजा के सब जादूगरों, जादूगरों और सलाहकारों को बुलाया; और वे सब आकर राजा के सामने बैठ गए।
28 तब राजा ने उन्हें वे सारी बातें बताईं जो मूसा और उसके भाई हारून ने उससे कही थीं। जादूगरों ने राजा से पूछा, "लेकिन ये लोग फाटक पर बंद शेरों की वजह से तुम्हारे पास कैसे आए?"
29 राजा ने कहा, क्योंकि उन्होंने शेरों पर अपनी लाठी उठाई और उन्हें छोड़ दिया, और मेरे पास आए, और शेर भी उन पर ऐसे खुश हुए जैसे कुत्ता अपने मालिक से मिलकर खुश होता है।
30 और बोर के बेटे जादूगर बिलाम ने राजा को जवाब दिया, "ये लोग हमारे जैसे ही जादूगर हैं।"
31 इसलिए अब उन्हें बुलाओ, और वे आएं और हम उन्हें परखेंगे, और राजा ने वैसा ही किया।
32 और सुबह फिरौन ने मूसा और हारून को राजा के सामने बुलाया, और वे परमेश्वर की छड़ी लेकर राजा के पास आए, और उससे कहा,
33 इब्रानियों के परमेश्वर यहोवा ने कहा, मेरे लोगों को भेज कि वे मेरी सेवा करें।
34 राजा ने उनसे कहा, "लेकिन तुम पर कौन विश्वास करेगा कि तुम परमेश्वर के दूत हो और उसके आदेश से मेरे पास आए हो?"
35 इसलिए अब इस मामले में कोई अजूबा या निशान दिखाओ, तब तुम्हारी बातें मानी जाएंगी।
36 तब हारून ने जल्दी से अपने हाथ से छड़ी छीनकर फिरौन और उसके सेवकों के सामने फेंक दी, और छड़ी साँप बन गई।
37 और जादूगरों ने यह देखा और हर आदमी ने अपनी छड़ी ज़मीन पर फेंक दी और वे साँप बन गए।
38 और हारून की छड़ी के साँप ने अपना सिर उठाया और जादूगरों की छड़ियों को निगलने के लिए अपना मुँह खोला।
39 जादूगर बिलाम ने जवाब दिया, "यह बात पुराने ज़माने से चली आ रही है कि साँप अपने साथी को निगल जाता है और जानवर एक-दूसरे को खा जाते हैं।"
40 इसलिए अब इसे पहले जैसी छड़ी बना दो, और हम भी अपनी छड़ें पहले जैसी बना लेंगे, और अगर तुम्हारी छड़ी हमारी छड़ों को निगल जाए, तो हम जान लेंगे कि परमेश्वर की आत्मा तुममें है, और अगर नहीं, तो तुम भी हमारे जैसे ही एक कारीगर हो।
41 और हारून ने जल्दी से अपना हाथ बढ़ाकर साँप की पूंछ पकड़ ली और वह उसके हाथ में एक छड़ी बन गई, और जादूगरों ने भी अपनी छड़ियों से ऐसा ही किया, और हर आदमी ने अपने साँप की पूंछ पकड़ ली, और वे पहले की तरह छड़ियाँ बन गईं।
42 और जब वे फिर से छड़ियों के रूप में बदल गए, तो हारून की छड़ी ने उनकी छड़ियों को निगल लिया।
43 और जब राजा ने यह देखा, तो उसने मिस्र के राजाओं से जुड़ी रिकॉर्ड की किताब लाने का आदेश दिया, और वे रिकॉर्ड की किताब, मिस्र के राजाओं के इतिहास की किताब लाए, जिसमें मिस्र की सभी मूर्तियाँ खुदी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने उसमें यहोवा का नाम खोजने की सोची थी, लेकिन उन्हें वह नहीं मिला।
44 फिरौन ने मूसा और हारून से कहा, देखो, मुझे इस किताब में तुम्हारे परमेश्वर का नाम लिखा हुआ नहीं मिला, और मैं उसका नाम भी नहीं जानता।
45 और सलाहकारों और समझदार लोगों ने राजा को जवाब दिया, "हमने सुना है कि इब्रियों का परमेश्वर समझदारों का बेटा है, पुराने राजाओं का बेटा है।"
46 तब फिरौन ने मूसा और हारून की ओर मुड़कर उनसे कहा, "मैं उस प्रभु को नहीं जानता, जिसके बारे में तुमने बताया है, और न ही मैं उसके लोगों को भेजूंगा।"
47 उन्होंने जवाब दिया, "उसका नाम यहोवा, परमेश्वर का परमेश्वर है, और उसने हमारे पुरखों के ज़माने से हम पर अपना नाम ज़ाहिर किया है, और हमें यह कहकर भेजा है, कि फिरौन के पास जाओ और उससे कहो, मेरे लोगों को भेजो ताकि वे मेरी सेवा करें।"
48 इसलिए अब हमें भेज, कि हम तीन दिन के लिए जंगल में सफ़र करें, और वहाँ उसके लिए बलिदान चढ़ाएँ, क्योंकि जब से हम मिस्र गए हैं, उसने हमारे हाथों से न तो होमबलि, न भेंट, न ही बलिदान लिया है, और अगर तू हमें नहीं भेजेगा, तो उसका गुस्सा तुझ पर भड़केगा, और वह मिस्र को या तो महामारी से या तलवार से मार डालेगा।
49 फिरौन ने उनसे कहा, अब मुझे उसकी ताकत और पराक्रम बताओ; और उन्होंने उससे कहा, उसने आकाश और पृथ्वी, समुद्र और उनकी सभी मछलियाँ बनाईं, उसने रोशनी बनाई, अंधेरा बनाया, पृथ्वी पर बारिश कराई और उसे पानी दिया, और घास-फूस उगाई, उसने इंसान और जानवर और जंगल के जानवर, हवा के पक्षी और समुद्र की मछलियाँ बनाईं, और उसके मुँह से वे जीते और मरते हैं।
50 ज़रूर उसने तुम्हें तुम्हारी माँ के पेट में बनाया, और तुममें जीवन की साँस डाली, और तुम्हें पाला-पोसा और मिस्र की राजगद्दी पर बिठाया, और वही तुम्हारी साँस और आत्मा तुमसे ले लेगा, और तुम्हें उसी ज़मीन पर वापस भेज देगा जहाँ से तुम्हें निकाला गया था।
51 उनकी बातें सुनकर राजा का गुस्सा भड़क उठा, और उसने उनसे कहा, "लेकिन सभी देशों के देवताओं में से ऐसा कौन कर सकता है? मेरी नदी मेरी अपनी है, और मैंने इसे अपने लिए बनाया है।"
52 और उसने उन्हें अपने पास से निकाल दिया, और इस्राएल पर जो मेहनत कल और पहले थी, उससे भी ज़्यादा कड़ी करने का हुक्म दिया।
53 और मूसा और हारून राजा के पास से निकले, और उन्होंने इस्राएलियों को बुरी हालत में देखा, क्योंकि मज़दूरों ने उनसे बहुत ज़्यादा मेहनत करवाई थी।
54 तब मूसा यहोवा के पास लौट आया और कहा, तूने अपने लोगों के साथ बुरा क्यों किया? जब से मैं फिरौन से वह बात कहने आया जो तूने मुझे करने के लिए भेजी थी, तब से उसने इस्राएलियों के साथ बहुत बुरा किया है।
55 और यहोवा ने मूसा से कहा, "देखो, तुम देखोगे कि फिरौन अपने हाथ बढ़ाकर और भारी मुसीबतों के साथ इस्राएलियों को अपनी ज़मीन से निकाल देगा।"
56 मूसा और हारून मिस्र में अपने भाई इस्राएलियों के साथ रहते थे।

57 और इस्राएलियों के लिए मिस्रियों ने भारी काम करके उनकी ज़िंदगी को मुश्किल बना दिया।

अध्याय 80

1 और दो साल के आखिर में, यहोवा ने फिर मूसा को फिरौन के पास भेजा कि वह इस्राएलियों को मिस्र देश से बाहर ले आए।
2 और मूसा फिरौन के घर गया, और उसने उसे यहोवा की बातें बताईं, जिसने उसे भेजा था। लेकिन फिरौन ने यहोवा की बात नहीं मानी, और परमेश्वर ने मिस्र में फिरौन और उसकी प्रजा पर अपनी ताकत दिखाई, और परमेश्वर ने फिरौन और उसकी प्रजा पर बहुत बड़ी और भयानक मुसीबतें डालीं।
3 और यहोवा ने हारून के हाथ से मिस्र का सारा पानी, और उसकी सारी नदियाँ और झरने खून में बदल दिए।
4 और जब एक मिस्री पानी पीने और भरने आया, तो उसने अपने घड़े में देखा, और सारा पानी खून में बदल गया था; और जब वह अपने प्याले से पीने आया, तो प्याले का पानी खून बन गया।
5 और जब कोई औरत आटा गूंधती और खाना पकाती, तो उसका रंग खून जैसा हो जाता था।
6 और यहोवा ने फिर भेजा और उनके सारे पानी में मेंढक पैदा कर दिए, और सारे मेंढक मिस्रियों के घरों में आ गए।
7 और जब मिस्रियों ने पानी पिया, तो उनके पेट में मेंढक भर गए और वे अपने पेट में वैसे ही नाचने लगे जैसे वे नदी में नाचते हैं।
8 और उनके पीने का पानी और खाना पकाने का पानी मेंढक बन गया, और जब वे अपने बिस्तर पर लेटे तो उनके पसीने से मेंढक पैदा हो गए।
9 इन सब बातों के बावजूद यहोवा का गुस्सा उनसे हटा नहीं, और उसका हाथ सब मिस्रियों पर बढ़ा ताकि उन्हें हर तरह की बड़ी मुसीबत से मार डाले।
10 और उसने भेजकर उनकी धूल को जूँओं में बदल दिया, और जूँएँ मिस्र में ज़मीन पर दो हाथ तक बढ़ गईं।
11 मिस्र के सभी रहने वालों में, इंसानों और जानवरों के शरीर में जूँ बहुत ज़्यादा थीं। राजा और रानी पर भी यहोवा ने जूँ भेजीं, और जूँ की वजह से मिस्र बहुत दुखी हुआ।
12 इसके बावजूद, यहोवा का गुस्सा शांत नहीं हुआ, और उसका हाथ मिस्र पर बढ़ा हुआ था।
13 और यहोवा ने मिस्र में हर तरह के जंगली जानवर भेजे, और उन्होंने आकर पूरे मिस्र को, इंसान, जानवर, पेड़ और मिस्र की सभी चीज़ों को खत्म कर दिया।
14 और प्रभु ने आग वाले साँप, बिच्छू, चूहे, नेवले, मेंढक और धूल में रेंगने वाले दूसरे जीव भेजे।
15 मक्खियाँ, ततैया, पिस्सू, कीड़े और मच्छर, हर एक अपनी-अपनी तरह के झुंड में रहते हैं।
16 और सभी तरह के रेंगने वाले जानवर और पंख वाले जानवर अपनी-अपनी तरह से मिस्र में आए और मिस्रियों को बहुत परेशान किया।
17 और पिस्सू और मक्खियाँ मिस्रियों की आँखों और कानों में घुस गईं।
18 और ततैया उन पर आ गिरी और उन्हें भगा दिया, और वे उससे दूर अपने कमरों में चले गए, और उसने उनका पीछा किया।
19 और जब मिस्र के लोग जानवरों के झुंड से डरकर छिप गए, तो उन्होंने अपने दरवाज़े बंद कर लिए, और परमेश्वर ने समुद्र में रहने वाले सुलानूत को हुक्म दिया कि वह ऊपर आकर मिस्र में चला जाए।
20 और उसकी बाहें लंबी थीं, जो एक आदमी के हाथ से दस हाथ लंबी थीं।
21 और वह छतों पर गई और उसने शहतीर और फर्श को उखाड़कर उन्हें काट दिया, और घर के अंदर हाथ बढ़ाकर ताला और कुंडी खोल दी, और मिस्र के घरों को खोल दिया।
22 इसके बाद जानवरों का झुंड मिस्र के घरों में आ गया, और जानवरों के झुंड ने मिस्रियों को खत्म कर दिया, और वे बहुत दुखी हुए।
23 इसके बावजूद यहोवा का गुस्सा मिस्रियों पर से हटा नहीं, और उसका हाथ उन पर बढ़ा रहा।
24 और परमेश्वर ने महामारी भेजी, और वह महामारी मिस्र में फैल गई, घोड़ों, गधों, ऊँटों, बैलों, भेड़ों के झुंडों और इंसानों में।
25 और जब मिस्र के लोग सुबह-सुबह अपने जानवरों को चराने के लिए उठे, तो उन्होंने अपने सभी जानवरों को मरा हुआ पाया।
26 और मिस्रियों के मवेशियों में से दस में से सिर्फ़ एक बचा, और गोशेन में इस्राएलियों के मवेशियों में से एक भी नहीं मरा।
27 और परमेश्वर ने मिस्रियों के शरीर में जलन पैदा कर दी, जिससे उनकी खाल फट गई, और यह सब मिस्रियों के पैरों के तलवों से लेकर सिर की चोटी तक बहुत ज़्यादा खुजली वाला हो गया।
28 और उनके शरीर में बहुत से फोड़े हो गए, और उनका शरीर सड़ने लगा और सड़ने लगा।
29 इसके बावजूद यहोवा का गुस्सा शांत नहीं हुआ, और उसका हाथ पूरे मिस्र पर बढ़ा हुआ था।
30 और यहोवा ने बहुत भारी ओले बरसाए, जिससे उनकी बेलें टूट गईं, उनके फलदार पेड़ टूट गए, और वे सूख गए।
31 और हर हरी घास सूखकर खत्म हो गई, क्योंकि ओलों के बीच आग लगी थी, इसलिए ओलों और आग ने सब कुछ जला दिया।
32 और जो आदमी और जानवर बाहर थे, वे भी आग और ओलों की लपटों से मर गए, और सभी जवान शेर थक गए।
33 और प्रभु ने मिस्र में बहुत सारी टिड्डियां भेजीं, चेसल, सालोम, चारगोल और चागोले, हर तरह की टिड्डियां, जिन्होंने ओलों से बची हुई सारी चीज़ों को खा लिया।
34 तब मिस्र के लोग टिड्डियों को देखकर खुश हुए, हालाँकि उन्होंने खेत की फसल खा ली थी, और उन्होंने उन्हें बहुत सारी टिड्डियाँ पकड़ीं और उन्हें खाकर खा लिया।
35 और यहोवा ने समुद्र में एक तेज़ हवा चलाई जिसने सारी टिड्डियों को, यहाँ तक कि जो नमकीन थीं, उड़ा दिया, और उन्हें लाल सागर में डाल दिया; मिस्र की सीमा के अंदर एक भी टिड्डी नहीं बची।
36 और परमेश्वर ने मिस्र पर अंधेरा कर दिया, जिससे मिस्र और पत्रोस की पूरी ज़मीन तीन दिन तक अंधेरी हो गई, यहाँ तक कि जब कोई आदमी अपना हाथ मुँह तक ले जाता तो उसे दिखाई नहीं देता था।
37 उस समय इस्राएल के बहुत से लोग मर गए जिन्होंने यहोवा के खिलाफ बगावत की थी और मूसा और हारून की बात नहीं

मानी थी, और उन पर विश्वास नहीं किया था कि परमेश्वर ने उन्हें भेजा है।
38 और किसने कहा था, हम मिस्र से बाहर नहीं जाएंगे, नहीं तो हम सुनसान जंगल में भूख से मर जाएंगे, और किसने मूसा की बात नहीं मानी।
39 और यहोवा ने अंधेरे के तीन दिनों में उन पर मुसीबतें डालीं, और इस्राएलियों ने उन दिनों उन्हें दफ़ना दिया, और मिस्रियों को पता भी नहीं चला और वे उन पर खुश भी नहीं हुए।
40 और मिस्र में तीन दिन तक बहुत अंधेरा रहा, और जो कोई भी अंधेरा होने पर खड़ा था, वह अपनी जगह पर खड़ा रहा, और जो बैठा था वह बैठा रहा, और जो लेटा था वह उसी हालत में लेटा रहा, और जो चल रहा था वह उसी जगह ज़मीन पर बैठा रहा; और यह बात सभी मिस्रियों के साथ तब तक होती रही, जब तक अंधेरा दूर नहीं हो गया।
41 और अंधेरे के दिन बीत गए, और प्रभु ने मूसा और हारून को इस्राएलियों के पास यह कहकर भेजा, अपना त्योहार मनाओ और अपना फसह मनाओ, क्योंकि देखो, मैं आधी रात को सभी मिस्रियों के बीच आता हूँ, और मैं उनके सभी पहलौठों को मार डालूँगा, इंसान के पहलौठे से लेकर जानवर के पहलौठे तक, और जब मैं तुम्हारा फसह देखूँगा, तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।
42 और इस्राएलियों ने वही किया जो यहोवा ने मूसा और हारून को आज्ञा दी थी, उन्होंने उस रात वैसा ही किया।
43 और ऐसा हुआ कि आधी रात को प्रभु मिस्र के बीच में निकला, और मिस्रियों के सभी पहलौठों को मार डाला, इंसान के पहलौठे से लेकर जानवर के पहलौठे तक।
44 और फिरौन रात में उठा, वह और उसके सभी सेवक और सभी मिस्री, और उस रात पूरे मिस्र में बहुत रोना-धोना हुआ, क्योंकि ऐसा कोई घर नहीं था जिसमें कोई लाश न हो।
45 और मिस्र के पहिलौठों की जो मूर्तियाँ उनके घरों की दीवारों पर खुदी हुई थीं, वे भी टूटकर ज़मीन पर गिर गईं।
46 यहाँ तक कि उनके पहले जन्मे बच्चों की हड्डियाँ, जो इससे पहले मर गए थे और जिन्हें उन्होंने अपने घरों में दफ़ना दिया था, उसी रात मिस्र के कुत्तों ने उन्हें उखाड़कर मिस्रियों के सामने घसीटकर फेंक दिया।
47 और सब मिस्रियों ने यह विपत्ति देखी जो उन पर अचानक आ पड़ी थी, और सब मिस्री ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठे।
48 और मिस्र के सभी परिवार उस रात रोए, हर आदमी अपने बेटे के लिए और हर आदमी अपनी बेटी के लिए, जो पहली संतान थी, और उस रात मिस्र का शोर दूर तक सुनाई दिया।
49 और फिरौन की बेटी बतिया उस रात राजा के साथ मूसा और हारून को उनके घरों में ढूंढने गई, और उन्होंने उन्हें अपने घरों में, पूरे इस्राएल के साथ खाते-पीते और खुशियाँ मनाते हुए पाया।
50 तब बतिया ने मूसा से कहा, क्या यह उस भलाई का फल है जो मैंने तेरे साथ की, जिसने तुझे पाला-पोसा और बढ़ाया है, और तूने मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर यह विपत्ति डाली है?
51 मूसा ने उससे कहा, "प्रभु ने मिस्र पर दस मुसीबतें भेजी हैं; क्या उनमें से किसी से भी तुम्हें कोई नुकसान हुआ? क्या उनमें से किसी ने भी तुम्हें नुकसान पहुंचाया?" उसने कहा, "नहीं।"
52 मूसा ने उससे कहा, "भले ही तुम अपनी माँ की पहली संतान हो, तुम नहीं मरोगी, और मिस्र में कोई भी बुराई तुम तक नहीं पहुँचेगी।"
53 और उसने कहा, "मुझे क्या फ़ायदा, जब मैं अपने भाई राजा, और उसके पूरे घराने और प्रजा को इस बुराई में देखती हूँ, जिसके पहलौठे मिस्र के सभी पहलौठों के साथ मर रहे हैं?"
54 तब मूसा ने उससे कहा, "ज़रूर तेरे भाई और उसके घराने और मिस्र के लोगों ने यहोवा की बातें नहीं मानीं, इसलिए उन पर यह मुसीबत आई।"
55 तब मिस्र के राजा फिरौन ने मूसा और हारून और इस्राएल के कुछ बच्चों के पास, जो उनके साथ उस जगह पर थे, जाकर उनसे प्रार्थना की,
56 उठो और अपने भाइयों को, यानी इस देश में रहने वाले सभी इस्राएलियों को, उनकी भेड़ों, बैलों और उनके सभी सामान के साथ ले जाओ। वे कुछ भी न छोड़ें, बस मेरे लिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करें।
57 और मूसा ने फिरौन से कहा, "देख, भले ही तू अपनी माँ का जेठा है, फिर भी डरो मत, क्योंकि तू मरेगा नहीं, क्योंकि यहोवा ने हुक्म दिया है कि तू ज़िंदा रहेगा, ताकि वह तुझे अपनी बड़ी ताकत और मज़बूत हाथ दिखा सके।"
58 तब फिरौन ने इस्राएलियों को भेजने का आदेश दिया, और सब मिस्रियों ने उन्हें भेजने की हिम्मत की, क्योंकि वे कहते थे, हम सब नाश हो रहे हैं।
59 और सभी मिस्रियों ने इस्राएलियों को बहुत सारा धन, भेड़-बकरियां, बैल और कीमती चीज़ें देकर भेजा, जैसा कि यहोवा ने हमारे पिता अब्राहम के साथ अपनी कसम खाई थी।
60 और इस्राएलियों ने रात में बाहर जाने में देर कर दी, और जब मिस्री उन्हें बाहर ले जाने के लिए उनके पास आए, तो उन्होंने उनसे कहा, "क्या हम चोर हैं, जो रात में बाहर जाएं?"
61 और इस्राएलियों ने मिस्रियों से चांदी और सोने के बर्तन और कपड़े मांगे, और इस्राएलियों ने मिस्रियों के कपड़े लूट लिए।
62 तब मूसा जल्दी से उठकर मिस्र की नदी पर गया, और वहाँ से यूसुफ का ताबूत उठाकर अपने साथ ले गया।
63 इस्राएल के बच्चे भी अपने-अपने पिता का ताबूत और अपने-अपने कबीले का ताबूत साथ लाए।

अध्याय 81

1 और इस्राएल के बच्चे रामेसेस से सुक्कोत तक चले, लगभग छह लाख आदमी पैदल थे, उनके अलावा उनके बच्चे और उनकी पत्नियाँ भी थीं।
2 उनके साथ मिली-जुली भीड़, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और बहुत सारे जानवर भी गए।
3 और इस्राएलियों का मिस्र देश में कठिन परिश्रम करते हुए रहना दो सौ दस वर्ष का था।
4 और दो सौ दस साल के आखिर में, यहोवा ने अपने मज़बूत हाथ से इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला।
5 और इस्राएल के बच्चे मिस्र, गोशेन और रामेसेस से चले और पहले महीने के पंद्रहवें दिन सुक्कोत में डेरा डाला।
6 और मिस्रियों ने अपने उन सभी पहलौठों को जिन्हें यहोवा ने मारा था, दफ़ना दिया, और सभी मिस्रियों ने अपने मारे हुए लोगों को तीन दिन तक दफ़नाया।
7 और इस्राएल के बच्चे सुक्कोत से चले और जंगल के आखिर में एतोम में डेरा डाला।

8 और जब मिस्रियों ने अपने पहले बच्चों को दफ़ना दिया, तो तीसरे दिन मिस्र से बहुत से लोग निकले और इस्राएलियों के पीछे लग गए ताकि उन्हें मिस्र वापस भेज दें, क्योंकि उन्हें इस बात का पछतावा था कि उन्होंने इस्राएलियों को उनकी गुलामी से निकाल दिया था।
9 और एक आदमी ने अपने पड़ोसी से कहा, "ज़रूर मूसा और हारून ने फिरौन से कहा होगा, हम जंगल में तीन दिन का सफ़र करके अपने भगवान को बलि चढ़ाएंगे।"
10 इसलिए अब हम सुबह जल्दी उठकर उन्हें वापस भेज दें, और अगर वे हमारे साथ मिस्र में अपने मालिकों के पास लौट जाएं, तो हम जान लेंगे कि उनमें विश्वास है, लेकिन अगर वे नहीं लौटेंगे, तो हम उनसे लड़ेंगे, और उन्हें बड़ी ताकत और मज़बूत हाथ से वापस भेज देंगे।
11 और फिरौन के सभी अमीर लोग सुबह उठे, और उनके साथ लगभग सात लाख आदमी थे, और वे उसी दिन मिस्र से निकलकर उस जगह पहुँचे जहाँ इस्राएल के बच्चे थे।
12 और सब मिस्रियों ने देखा, और देखो, मूसा, हारून और सब इस्राएली पी-हाहिरोत के सामने बैठे थे, खा-पी रहे थे और यहोवा का त्योहार मना रहे थे।
13 और सब मिस्रियों ने इस्राएलियों से कहा, "तुमने तो कहा था, हम जंगल में तीन दिन का सफ़र करेंगे, अपने परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाकर लौट आएंगे।"
14 तो अब तुम्हें गए हुए पाँच दिन हो गए हैं, तो तुम अपने मालिकों के पास क्यों नहीं लौटते?
15 तब मूसा और हारून ने उनसे कहा, "क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे बारे में यह गवाही दी है कि तुम अब मिस्र वापस नहीं जाओगे, बल्कि हम उस देश में जाएँगे जहाँ दूध और शहद की धाराएँ बहती हैं, जैसा कि हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारे पूर्वजों से हमें देने की कसम खाई थी।"
16 और जब मिस्र के अमीरों ने देखा कि इस्राएल के लोग उनकी बात नहीं मान रहे हैं, और मिस्र वापस नहीं जा रहे हैं, तो उन्होंने इस्राएल से लड़ने के लिए कमर कस ली।
17 और यहोवा ने इस्राएलियों का दिल मिस्रियों पर इतना मज़बूत किया कि उन्होंने उन्हें बुरी तरह हराया, और लड़ाई में मिस्रियों को बहुत नुकसान हुआ, और सभी मिस्री इस्राएलियों के सामने से भाग गए, क्योंकि उनमें से बहुत से इस्राएलियों के हाथों मारे गए।
18 और फिरौन के अमीरों ने मिस्र जाकर फिरौन को बताया, "इस्राएल के लोग भाग गए हैं, और अब मिस्र वापस नहीं लौटेंगे।" और मूसा और हारून ने हमसे इस तरह बात की।
19 और फिरौन ने यह बात सुनी, और उसका और उसकी सारी प्रजा का दिल इस्राएल के खिलाफ हो गया, और उन्हें पछतावा हुआ कि उन्होंने इस्राएल को भेजा था; और सभी मिस्रियों ने फिरौन को सलाह दी कि वह इस्राएलियों का पीछा करे ताकि वे अपने बोझ के पास लौट आएं।
20 तब उन्होंने अपने-अपने भाई से कहा, "हमने यह क्या किया है कि इस्राएल को अपनी गुलामी से छुड़ा लिया है?"
21 और यहोवा ने सब मिस्रियों का दिल इसराएलियों का पीछा करने के लिए मज़बूत किया, क्योंकि यहोवा मिस्रियों को लाल सागर में हरा देना चाहता था।
22 तब फिरौन उठा, और अपने रथ को ठीक किया, और सब मिस्रियों को इकट्ठा होने का हुक्म दिया, और छोटे बच्चों और औरतों को छोड़कर एक भी आदमी नहीं बचा।
23 और सारे मिस्री फिरौन के साथ इस्राएलियों का पीछा करने के लिए निकल पड़े, और मिस्र की छावनी बहुत बड़ी और भारी थी, जिसमें लगभग दस लाख आदमी थे।
24 और इस कैंप के सभी लोग इस्राएलियों का पीछा करते हुए उन्हें मिस्र वापस ले आए, और वे लाल सागर के किनारे डेरा डाले हुए थे।
25 और इस्राएलियों ने अपनी आँखें उठाकर देखा कि सारे मिस्री उनका पीछा कर रहे हैं, और इस्राएली उनसे बहुत डर गए, और इस्राएली यहोवा को पुकारने लगे।
26 और मिस्रियों की वजह से इस्राएल के बच्चे चार ग्रुप में बंट गए, और वे अपनी राय में बंटे हुए थे, क्योंकि वे मिस्रियों से डरते थे, और मूसा ने उनमें से हर एक से बात की।
27 पहला ग्रुप रूबेन, शिमोन और इस्साकार के बच्चों का था, और उन्होंने समुद्र में कूदने का फैसला किया, क्योंकि वे मिस्रियों से बहुत डरे हुए थे।
28 तब मूसा ने उनसे कहा, डरो मत, खड़े रहो और देखो कि यहोवा आज तुम्हारे लिए क्या उद्धार करेगा।
29 दूसरा ग्रुप जबूलून, बिन्यामीन और नप्ताली के बच्चों का था, और उन्होंने मिस्रियों के साथ मिस्र वापस जाने का तय किया।
30 तब मूसा ने उनसे कहा, "डरो मत, क्योंकि जैसे तुमने आज मिस्रियों को देखा है, वैसे ही तुम उन्हें फिर कभी नहीं देखोगे।"
31 तीसरी टुकड़ी यहूदा और यूसुफ के बच्चों की थी, और उन्होंने मिस्रियों से लड़ने के लिए उनसे मिलने जाने का फैसला किया।
32 तब मूसा ने उनसे कहा, अपनी जगह पर खड़े रहो, क्योंकि यहोवा तुम्हारे लिए लड़ेगा, और तुम चुप रहना।
33 और चौथा ग्रुप लेवी, गाद और आशेर के बच्चों का था, और उन्होंने मिस्रियों के बीच जाकर उन्हें परेशान करने का तय किया, और मूसा ने उनसे कहा, अपनी जगह पर रहो और डरो मत, बस प्रभु को पुकारो ताकि वह तुम्हें उनके हाथों से बचाए।
34 इसके बाद मूसा लोगों के बीच से उठा और उसने यहोवा से प्रार्थना की और कहा,
35 हे सारी धरती के परमेश्वर यहोवा, अब अपने लोगों को बचा ले, जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया है, और मिस्रियों को यह घमंड न करने दे कि ताकत और ताकत उनकी है।
36 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तू मुझसे क्यों रो रहा है? इस्राएलियों से कह कि वे आगे बढ़ें, और तू अपनी लाठी समुद्र पर बढ़ाकर उसे दो भागों में बाँट दे, और इस्राएली उसमें से होकर निकल जाएँ।"
37 और मूसा ने वैसा ही किया, और उसने अपनी लाठी समुद्र पर उठाकर उसे दो भागों में बाँट दिया।
38 और समुद्र का पानी बारह हिस्सों में बँट गया, और इस्राएल के बच्चे जूतों के साथ पैदल ही उसमें से गुज़रे, जैसे कोई आदमी किसी तैयार रास्ते से गुज़रता है।
39 और यहोवा ने मूसा और हारून के ज़रिए मिस्र और समुद्र में इस्राएलियों को अपने चमत्कार दिखाए।
40 और जब इस्राएल के बच्चे समुद्र में घुस गए, तो मिस्री उनके पीछे आए, और समुद्र का पानी उन पर फिर से आ गया, और वे सब पानी में डूब गए, और फिरौन को छोड़कर एक भी आदमी नहीं बचा, जिसने यहोवा का धन्यवाद किया और उस पर विश्वास किया, इसलिए यहोवा ने उसे उस समय मिस्रियों के साथ खत्म नहीं किया।

41 और प्रभु ने एक स्वर्गदूत को आदेश दिया कि उसे मिस्रियों के बीच से ले आए, और उसने उसे नीनवे की भूमि पर फेंक दिया, और वह बहुत समय तक उस पर राज्य करता रहा।
42 और उस दिन यहोवा ने इस्राएल को मिस्र के हाथ से बचाया, और इस्राएल के सभी बच्चों ने देखा कि मिस्री खत्म हो गए हैं, और उन्होंने यहोवा का बड़ा हाथ देखा, जो उसने मिस्र और समुद्र में किया था।
43 तब मूसा और इस्राएल के बच्चों ने यहोवा के लिए यह गीत गाया, उस दिन जब यहोवा ने मिस्रियों को उनके सामने हरा दिया था।
44 और सारे इस्राएल ने एक साथ गाकर कहा, मैं यहोवा के लिए गाऊंगा, क्योंकि वह बहुत महान है, घोड़े और सवार को उसने समुद्र में डाल दिया है; देखो, यह परमेश्वर के कानून की किताब में लिखा है।
45 इसके बाद इस्राएल के बच्चे अपने सफ़र पर निकले और मारा में डेरा डाला। और यहोवा ने इस्राएल के बच्चों को मारा में उस जगह पर नियम और नियम दिए। और यहोवा ने इस्राएल के बच्चों को अपने सभी रास्तों पर चलने और उसकी सेवा करने की आज्ञा दी।
46 और वे मारा से चलकर एलीम पहुँचे, और एलीम में पानी के बारह झरने और सत्तर खजूर के पेड़ थे, और बच्चों ने वहाँ पानी के पास डेरा डाला।
47 और वे एलीम से चलकर सीन के जंगल में पहुँचे, यह मिस्र से निकलने के दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन हुआ।
48 उस समय यहोवा ने इस्राएलियों को खाने के लिए मन्ना दिया, और यहोवा ने इस्राएलियों के लिए हर दिन आसमान से खाना बरसाया।
49 और इस्राएल के बच्चे चालीस साल तक मन्ना खाते रहे, जितने दिन वे जंगल में रहे, जब तक वे कनान देश में आकर उस पर कब्ज़ा नहीं कर लिया।
50 और वे सीन के जंगल से निकलकर आलूश में डेरा डाला।
51 और वे आलूश से आगे बढ़े और रपीदीम में डेरा डाला।
52 जब इस्राएल के बच्चे रपीदीम में थे, तो अमालेक, जो एसाव के बेटे एलीपज का बेटा था और सपो का भाई था, इस्राएल से लड़ने आया।
53 और वह अपने साथ आठ लाख एक हज़ार आदमी, जादूगर और जादूगर लाया, और उसने रपीदीम में इस्राएल के साथ लड़ाई के लिए तैयारी की।
54 और उन्होंने इस्राएल के खिलाफ़ एक बड़ी और कड़ी लड़ाई लड़ी, और यहोवा ने अमालेकियों और उनके लोगों को मूसा और इस्राएलियों के हाथों में, और मूसा के सेवक, एप्राती नून के बेटे यहोशू के हाथों में सौंप दिया।
55 और इस्राएलियों ने अमालेकियों और उसके लोगों को तलवार से मारा, लेकिन युद्ध में इस्राएलियों को बहुत तकलीफ़ हुई।
56 और यहोवा ने मूसा से कहा, "इस बात को अपने लिए एक यादगार किताब में लिख लो, और इसे अपने सेवक यहोशू, नून के बेटे, के हाथ में दे दो, और तुम इस्राएल के बच्चों को यह हुक्म दोगे, कि जब तुम कनान देश में पहुँचोगे, तो अमालेक की याद को आसमान के नीचे से पूरी तरह मिटा दोगे।"
57 तब मूसा ने वैसा ही किया, और उस पुस्तक को लेकर उस पर ये बातें लिखीं,
58 याद रखो कि जब तुम मिस्र से निकले थे, तो रास्ते में अमालेक ने तुम्हारे साथ क्या किया था।
59 जो रास्ते में तुमसे मिले और तुम्हारे पीछे मारे, वे भी जो तुम्हारे पीछे कमज़ोर थे जब तुम थके हुए और कमज़ोर थे।
60 इसलिए जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में, जिसे वह तुम्हें विरासत में देने वाला है, तुम्हारे आस-पास के सभी दुश्मनों से आराम देगा, ताकि तुम उस पर कब्ज़ा कर सको, तो तुम अमालेक का नाम धरती से मिटा देना, और उसे भूलना मत।
61 और जो राजा अमालेक पर, या उसकी याद पर, या उसके वंश पर दया करेगा, सुनो, मैं उससे इसका बदला लूंगा, और उसे उसके लोगों में से निकाल दूंगा।
62 और मूसा ने ये सब बातें एक किताब में लिखीं, और इस्राएलियों को इन सब बातों के बारे में बताया।

अध्याय 82

1 और इस्राएल के बच्चे रपीदीम से चले और उन्होंने मिस्र से निकलने के तीसरे महीने में सीनै के जंगल में डेरा डाला।
2 उस समय मूसा का ससुर मिद्यानी रूएल अपनी बेटी सिप्पोरा और उसके दो बेटों के साथ आया, क्योंकि उसने यहोवा के उन चमत्कारों के बारे में सुना था जो उसने इस्राएल के लिए किए थे, कि उसने उन्हें मिस्र के हाथ से छुड़ाया था।
3 और रूएल मूसा के पास उस जंगल में आया जहाँ वह डेरा डाले हुए था, जहाँ परमेश्वर का पर्वत था।
4 तब मूसा बड़े आदर के साथ अपने ससुर से मिलने के लिए निकला, और सारा इस्राएल उसके साथ था।
5 और रूएल और उसके बच्चे बहुत दिनों तक इस्राएलियों के बीच रहे, और उस दिन से रूएल यहोवा को जानता रहा।
6 और जब इस्राएल के बच्चे मिस्र से निकले, तो तीसरे महीने के छठे दिन, यहोवा ने इस्राएल को सीनै पहाड़ पर दस हुक्म दिए।
7 और सारे इस्राएल ने ये सब आज्ञाएँ सुनीं, और उस दिन सारे इस्राएल ने यहोवा में बहुत आनन्द मनाया।
8 और प्रभु की महिमा सीनै पर्वत पर ठहरी, और उसने मूसा को पुकारा, और मूसा बादल के बीच में आया और पर्वत पर चढ़ गया।
9 और मूसा चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर रहा; उसने न तो रोटी खाई और न पानी पिया, और यहोवा ने उसे इस्राएल के बच्चों को सिखाने के लिए नियम और नियम सिखाए।
10 और यहोवा ने वे दस आज्ञाएँ जो उसने इस्राएल के बच्चों को दी थीं, पत्थर की दो पट्टियों पर लिखीं, जो उसने मूसा को इस्राएल के बच्चों को आज्ञा देने के लिए दी थीं।
11 और चालीस दिन और चालीस रात के बाद, जब प्रभु ने सीनै पहाड़ पर मूसा से बात करना खत्म किया, तब प्रभु ने मूसा को पत्थर की पटियाएँ दीं, जो परमेश्वर की उंगली से लिखी हुई थीं।
12 जब इस्राएलियों ने देखा कि मूसा पहाड़ से नीचे आने में देर कर रहा है, तो वे हारून के पास इकट्ठा हुए और कहने लगे, "इस आदमी मूसा के बारे में हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ है।"
13 इसलिए अब उठो, हमारे लिए एक देवता बनाओ जो हमारे आगे-आगे चले, ताकि तुम मरो नहीं।
14 और हारून लोगों से बहुत डर गया, और उसने उन्हें सोना लाने का हुक्म दिया और उससे लोगों के लिए एक पिघला हुआ बछड़ा बनाया।

15 और पहाड़ से नीचे उतरने से पहले यहोवा ने मूसा से कहा, "नीचे उतर जाओ, क्योंकि तुम्हारे लोग जिन्हें तुम मिस्र से लाए हो, वे बिगड़ गए हैं।"
16 उन्होंने अपने लिए एक पिघला हुआ बछड़ा बनाया है, और उसके आगे झुक गए हैं, इसलिए अब मुझे छोड़ दो, ताकि मैं उन्हें धरती से मिटा दूं, क्योंकि वे जिद्दी लोग हैं।
17 और मूसा ने यहोवा से विनती की, और उसने लोगों के लिए उस बछड़े के लिए जो उन्होंने बनाया था, यहोवा से प्रार्थना की, और उसके बाद वह पहाड़ से नीचे उतरा और उसके हाथों में पत्थर की दो पटियाएँ थीं, जो परमेश्वर ने उसे इस्राएलियों को आज्ञा देने के लिए दी थीं।
18 जब मूसा कैंप के पास पहुँचा और उसने लोगों का बनाया हुआ बछड़ा देखा, तो मूसा का गुस्सा भड़क उठा और उसने पहाड़ के नीचे रखी तख्तियाँ तोड़ दीं।
19 तब मूसा छावनी में आया और उसने बछड़े को लिया और उसे आग में जला दिया, और उसे तब तक पीसकर बारीक चूर्ण बना दिया, और उसे पानी पर छिड़ककर इस्राएलियों को पीने के लिए दिया।
20 और लोगों में से लगभग तीन हज़ार आदमी जो बछड़ा बना रहे थे, एक-दूसरे की तलवारों से मारे गए।
21 और अगले दिन मूसा ने लोगों से कहा, "मैं यहोवा के पास जाऊँगा, शायद मैं तुम्हारे पापों का प्रायश्चित कर सकूँ जो तुमने यहोवा के सामने किए हैं।"
22 तब मूसा फिर यहोवा के पास गया, और चालीस दिन और चालीस रात यहोवा के पास रहा।
23 और चालीस दिनों तक मूसा ने इस्राएल के बच्चों के लिए यहोवा से विनती की, और यहोवा ने मूसा की प्रार्थना सुनी, और यहोवा ने इस्राएल के लिए उससे विनती की।
24 तब यहोवा ने मूसा से कहा कि पत्थर की दो पटियाएँ तराशकर यहोवा के पास ले आओ, और वह उन पर दस आज्ञाएँ लिखेगा।
25 मूसा ने ऐसा ही किया, और वह नीचे आया और दोनों तख्तियाँ तराशकर सीनै पहाड़ पर यहोवा के पास गया, और यहोवा ने उन तख्तियों पर दस हुक्म लिखे।
26 और मूसा चालीस दिन और चालीस रात यहोवा के साथ रहा, और यहोवा ने उसे इस्राएल को देने के लिए नियम और नियम सिखाए।
27 और यहोवा ने उसे इस्राएलियों के बारे में आज्ञा दी कि वे यहोवा के लिए एक पवित्र जगह बनाएँ, ताकि उसका नाम उसमें रहे, और यहोवा ने उसे पवित्र जगह और उसके सभी बर्तनों की बनावट दिखाई।
28 और चालीस दिन के आखिर में मूसा पहाड़ से नीचे उतरा और उसके हाथ में दोनों तख्तियाँ थीं।
29 तब मूसा इस्राएलियों के पास आया और उन्हें यहोवा की सारी बातें बताईं, और उन्हें वे नियम, विधियाँ और न्याय-सिद्धांत सिखाए जो यहोवा ने उसे सिखाए थे।
30 और मूसा ने इस्राएलियों को यहोवा की बात बताई कि उसके लिए एक पवित्र जगह बनाई जाए, ताकि वह इस्राएलियों के बीच रहे।
31 और लोग उन सब भलाई की बातों से बहुत खुश हुए जो यहोवा ने मूसा के ज़रिए उनसे कही थीं, और उन्होंने कहा, हम वह सब करेंगे जो यहोवा ने तुमसे कहा है।
32 और लोग एक आदमी की तरह उठे और उन्होंने यहोवा के पवित्र स्थान के लिए दिल खोलकर भेंट चढ़ाई, और हर आदमी पवित्र स्थान के काम और उसकी सारी सेवा के लिए यहोवा का चढ़ावा लाया।
33 और सब इस्राएली अपने-अपने पास जो कुछ भी था, उसे यहोवा के पवित्र स्थान के काम के लिए ले आए, यानी सोना, चाँदी, पीतल, और पवित्र स्थान के काम आने वाली हर चीज़।
34 और सभी समझदार आदमी जो काम में माहिर थे, वे आए और यहोवा की आज्ञा के अनुसार यहोवा का पवित्र स्थान बनाया, हर आदमी उस काम में लगा हुआ था जिसमें वह माहिर था; और सभी समझदार आदमियों ने पवित्र स्थान, उसका सामान और पवित्र सेवा के लिए सभी बर्तन बनाए, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
35 और पाँच महीने के आखिर में पवित्र जगह का काम पूरा हो गया, और इस्राएलियों ने वह सब किया जो यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
36 और वे पवित्र जगह और उसका सारा सामान मूसा के पास ले आए; जैसा यहोवा ने मूसा को दिखाया था, वैसा ही इस्राएलियों ने किया।
37 और मूसा ने काम देखा, और देखो, उन्होंने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी, और मूसा ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

अध्याय 83

1 बारहवें महीने के तेईसवें दिन, मूसा ने हारून और उसके बेटों को लिया, और उन्हें उनके कपड़े पहनाए, और उनका अभिषेक किया, और जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी, वैसा ही उनके साथ किया, और मूसा ने वे सब भेंटें चढ़ाईं जिनकी आज्ञा यहोवा ने उस दिन दी थी।
2 इसके बाद मूसा ने हारून और उसके बेटों को बुलाया और उनसे कहा, "तुम सात दिन तक डेरे के दरवाज़े पर ही रहना, क्योंकि मुझे यही आज्ञा दी गई है।"
3 और हारून और उसके बेटों ने वह सब किया जो यहोवा ने मूसा के ज़रिए उन्हें आज्ञा दी थी, और वे सात दिन तक तम्बू के दरवाज़े पर रहे।
4 और आठवें दिन, जो पहले महीने का पहला दिन था, इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के दूसरे साल में, मूसा ने पवित्र जगह बनाई, और मूसा ने तम्बू का सारा सामान और पवित्र जगह का सारा सामान रखा, और उसने वह सब किया जो यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।
5 तब मूसा ने हारून और उसके बेटों को बुलाया, और वे अपने और इस्राएल के बच्चों के लिए होमबलि और पापबलि ले आए, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
6 उस दिन हारून के दोनों बेटे, नादाब और अबीहू, अजीब आग लेकर यहोवा के सामने लाए, जिसकी आज्ञा उन्हें नहीं दी गई थी। और यहोवा के सामने से आग निकली और उन्हें भस्म कर दिया, और वे उसी दिन यहोवा के सामने मर गए।
7 फिर जिस दिन मूसा ने पवित्र जगह बनाने का काम पूरा किया, उस दिन इस्राएल के बच्चों के हाकिम वेदी के समर्पण के लिए यहोवा के सामने अपनी भेंट लाने लगे।

8 और वे अपनी भेंट चढ़ाने के लिए एक-एक दिन के लिए, और बारह दिन के लिए एक-एक दिन के लिए एक-एक राजकुमार लाए।
9 और वे सब चढ़ावे जो वे लाए, हर आदमी ने अपने-अपने समय में, यानी एक सौ तीस शेकेल वज़न का चांदी का एक परात, और पवित्र जगह के शेकेल के हिसाब से सत्तर शेकेल का एक चांदी का कटोरा, ये दोनों खाने की भेंट के लिए तेल में मिले हुए मैदे से भरे हुए थे।
10 एक चम्मच, जिसका वज़न दस शेकेल सोने का हो, धूप से भरा हुआ।
11 होमबलि के लिए एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक साल का एक मेमना।
12 और एक बकरा पापबलि के लिये चढ़ाना।
13 और मेलबलि के लिए दो बैल, पांच मेढ़े, पांच बकरे, और एक साल के पांच मेमने।
14 इस तरह इस्राएल के बारह राजकुमारों ने हर दिन, अपने-अपने समय में ऐसा ही किया।
15 और इसके बाद, महीने के तेरहवें दिन, मूसा ने इस्राएल के बच्चों को फसह मनाने की आज्ञा दी।
16 और इस्राएलियों ने महीने के चौदहवें दिन फसह का त्योहार मनाया, जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही इस्राएलियों ने किया।
17 और दूसरे महीने के पहले दिन, यहोवा ने मूसा से कहा,
18 तुम, तुम्हारा भाई हारून और इस्राएल के बारह राजकुमार, इस्राएल के बच्चों में से बीस साल और उससे ज़्यादा उम्र के सभी पुरुषों के मुखियाओं की गिनती करो।
19 और मूसा ने वैसा ही किया, और हारून इस्राएल के बारह राजकुमारों के साथ आया, और उन्होंने सिनाई के जंगल में इस्राएल के बच्चों की गिनती की।
20 और इस्राएल के बच्चों की गिनती, जो बीस साल या उससे ज़्यादा उम्र के थे, उनके पितरों के घरानों के हिसाब से छह लाख तीन हज़ार पाँच सौ पचास थी।
21 लेकिन लेवी के बच्चों को उनके भाई इस्राएल के बच्चों में नहीं गिना गया।
22 और इस्राएल के सब पुरुषों की गिनती, जिनकी उम्र एक महीने या उससे ज़्यादा थी, बाईस हज़ार दो सौ तिहत्तर थी।
23 और एक महीने या उससे ज़्यादा उम्र के लेवी के बच्चों की गिनती बाईस हज़ार थी।
24 और मूसा ने याजकों और लेवियों को, हर एक आदमी को उसकी सेवा और उसके बोझ के लिए, निवास के पवित्र स्थान की सेवा करने के लिए नियुक्त किया, जैसा कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।
25 और महीने के बीसवें दिन, बादल गवाही के तंबू से हट गया।
26 उस समय इस्राएल के बच्चे सिनाई के जंगल से आगे बढ़े, और उन्होंने तीन दिन का सफर तय किया, और बादल पारान के जंगल में रुका; वहाँ यहोवा का गुस्सा इस्राएल पर भड़क उठा, क्योंकि उन्होंने यहोवा से खाने के लिए खाना माँगकर उसे गुस्सा दिलाया था।
27 और यहोवा ने उनकी बात मान ली, और उन्हें खाना दिया जिसे वे एक महीने तक खाते रहे।
28 लेकिन इसके बाद यहोवा का गुस्सा उन पर भड़क उठा, और उसने उन्हें बहुत मारा, और उन्हें वहीं उसी जगह दफ़ना दिया गया।
29 और इस्राएलियों ने उस जगह का नाम केब्रोथ हत्तावा रखा, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफ़नाया था जो शरीर के लालची थे।
30 और वे कबरोत हत्तावा से चले और हसेरोत में डेरा डाला, जो पारान के जंगल में है।
31 जब इस्राएल के बच्चे हसेरोत में थे, तो मूसा के कारण यहोवा का गुस्सा मरियम पर भड़क उठा, और वह बर्फ की तरह सफेद होकर कोढ़ से बीमार हो गई।
32 और उसे सात दिन तक कैंप के बाहर रखा गया, जब तक कि उसके कोढ़ की बीमारी के कारण उसे वापस नहीं ले लिया गया।
33 इसके बाद इस्राएल के लोग हसेरोत से चले गए, और पारान जंगल के आखिर में डेरा डाला।
34 उस समय, प्रभु ने मूसा से कहा कि इस्राएल के बच्चों में से बारह आदमियों को, हर कबीले से एक आदमी को, कनान देश का पता लगाने के लिए भेजो।
35 और मूसा ने बारह आदमियों को भेजा, और वे कनान देश में खोज करने और उसकी जांच करने आए, और उन्होंने सीन के जंगल से लेकर रेकोब तक, जो चामोत तक आता है, पूरे देश की जांच की।
36 चालीस दिन के बाद वे मूसा और हारून के पास आए और जैसा उनके दिल में था, वैसा ही उन्हें बताया। उनमें से दस आदमियों ने इस्राएलियों के सामने उस देश की बुरी खबर दी, जिसे उन्होंने खोजा था। उन्होंने कहा, "हमारे लिए मिस्र लौट जाना इस देश में जाने से बेहतर है, जो अपने रहने वालों को खत्म कर देगा।"
37 लेकिन नून का बेटा यहोशू और यपुनेह का बेटा कालेब, जो उस देश को देखने वालों में से थे, ने कहा, "यह देश बहुत अच्छा है।"
38 अगर यहोवा हमसे खुश है, तो वह हमें इस देश में ले आएगा और इसे हमें दे देगा, क्योंकि यह दूध और शहद से बहने वाला देश है।
39 लेकिन इस्राएलियों ने उनकी बात नहीं मानी, और वे उन दस आदमियों की बातों पर ध्यान देने लगे जिन्होंने देश के बारे में बुरी खबर फैलाई थी।
40 और यहोवा ने इस्राएलियों की बड़बड़ाहट सुनी और वह गुस्से में आया और कसम खाकर कहा,
41 यपुनेह के बेटे कालेब और नून के बेटे यहोशू को छोड़कर, इस बुरी पीढ़ी का कोई भी आदमी बीस साल या उससे ज़्यादा उम्र का होकर देश नहीं देखेगा।
42 लेकिन यह बुरी पीढ़ी ज़रूर इस जंगल में खत्म हो जाएगी, और उनके बच्चे इस देश में आएंगे और उस पर कब्ज़ा कर लेंगे; इसलिए यहोवा का गुस्सा इस्राएल पर भड़क उठा, और उसने उन्हें चालीस साल तक जंगल में भटकने दिया, जब तक कि उस बुरी पीढ़ी का अंत नहीं हो गया, क्योंकि उन्होंने यहोवा का अनुसरण नहीं किया।
43 और लोग बहुत समय तक पारान के जंगल में रहे, और उसके बाद वे लाल सागर के रास्ते से जंगल की ओर चले गए।

अध्याय 84

1 उस समय कोरह, जो लेवी के बेटे केहाथ का पोता और यित्सेर का बेटा था, उसने इस्राएलियों में से बहुत से आदमियों को साथ लिया, और वे उठकर मूसा, हारून और पूरी मंडली से झगड़ने लगे।
2 और यहोवा उन पर गुस्सा हुआ, और धरती ने अपना मुंह खोला, और उन्हें, उनके घरों और उनके सारे सामान को, और कोरह के सारे आदमियों को निगल लिया।
3 इसके बाद परमेश्वर ने लोगों को बहुत दिनों तक सेईर पहाड़ के रास्ते से घुमाकर भेजा।
4 उस समय यहोवा ने मूसा से कहा, "एसाव के बच्चों के खिलाफ़ लड़ाई मत छेड़ो, क्योंकि मैं तुम्हें उनकी कोई भी चीज़ नहीं दूँगा, जिस पर पैर रखा जा सके, क्योंकि मैंने सेईर पहाड़ एसाव को विरासत में दिया है।"
5 इसलिए एसाव के बच्चों ने पहले सेईर के बच्चों से लड़ाई की, और यहोवा ने सेईर के बच्चों को एसाव के बच्चों के हाथ में कर दिया, और उन्हें उनके सामने से खत्म कर दिया, और एसाव के बच्चे आज तक उनकी जगह रहते हैं।
6 इसलिए यहोवा ने इस्राएलियों से कहा, "अपने भाई एसाव के बच्चों से मत लड़ो, क्योंकि उनके देश में कुछ भी तुम्हारा नहीं है, बल्कि तुम उनसे पैसे देकर खाना खरीदकर खा सकते हो, और उनसे पैसे देकर पानी खरीदकर पी सकते हो।"
7 और इस्राएलियों ने यहोवा की बात मान ली।
8 और इस्राएल के बच्चे बहुत समय तक जंगल में घूमते रहे, और सीनै पहाड़ के रास्ते से घूमते रहे, और एसाव के बच्चों को छू तक नहीं पाए, और वे उस इलाके में उन्नीस साल तक रहे।
9 उस समय चित्तिम के बच्चों का राजा लेटीनुस मर गया, उसके राज के पैंतालीसवें साल में, जो इस्राएल के बच्चों के मिस्र से निकलने का चौदहवाँ साल था।
10 और उन्होंने उसे उसी जगह दफ़नाया जो उसने अपने लिए चित्तिम देश में बनाई थी, और अबीमना ने उसकी जगह अड़तीस साल तक राज किया।
11 उन दिनों में, उन्नीस साल के आखिर में, इस्राएल के बच्चे एसाव के बच्चों की सीमा पार करके मोआब के जंगल के रास्ते से गुज़रे।
12 और यहोवा ने मूसा से कहा, मोआब को मत घेरो, और उनसे मत लड़ो, क्योंकि मैं तुम्हें उनकी ज़मीन में से कुछ भी नहीं दूंगा।
13 और इस्राएल के बच्चे उन्नीस साल तक मोआब के जंगल के रास्ते से गुज़रे, और उन्होंने उनसे लड़ाई नहीं की।
14 और जब इस्राएल के बच्चे मिस्र से निकले, तो छत्तीसवें साल में यहोवा ने एमोरियों के राजा सीहोन का दिल दुखाया, और वह युद्ध करने निकला, और मोआब के बच्चों से लड़ने के लिए निकल पड़ा।
15 और सीहोन ने बोर के पास, जो यानास का बेटा था और बिलाम का बेटा था, जो मिस्र के राजा का सलाहकार था, और उसके बेटे बिलाम के पास दूत भेजे, कि वे मोआब को श्राप दें, ताकि वह सीहोन के हाथ में पड़ जाए।
16 और दूत गए और यानास के बेटे बोर और उसके बेटे बिलाम को मेसोपोटामिया के पेथोर से ले आए। बोर और उसका बेटा बिलाम सीहोन शहर में आए और उन्होंने एमोरियों के राजा सीहोन के सामने मोआब और उनके राजा को कोसा।
17 इसलिए सीहोन अपनी पूरी सेना के साथ निकला और मोआब के पास जाकर उनसे लड़ा, और उन्हें हरा दिया। और यहोवा ने उन्हें उसके हाथ में कर दिया। और सीहोन ने मोआब के राजा को मार डाला।
18 और सीहोन ने लड़ाई में मोआब के सभी शहरों पर कब्ज़ा कर लिया; उसने उनसे हेशबोन भी ले लिया, क्योंकि हेशबोन मोआब के शहरों में से एक था, और सीहोन ने अपने हाकिमों और अमीरों को हेशबोन में बसाया, और उन दिनों हेशबोन सीहोन का था।
19 इसलिए कहानी सुनाने वाले बोर और उसके बेटे बिलाम ने ये बातें कहीं, "हेशबोन आओ, सीहोन का शहर बनाया और बसाया जाएगा।"
20 हे मोआब, हाय! हे केमोश के लोगों, तुम खो गए हो! देखो, यह परमेश्वर के कानून की किताब में लिखा है।
21 और जब सीहोन ने मोआब को जीत लिया, तो उसने उन शहरों में पहरेदार तैनात कर दिए जो उसने मोआब से लिए थे, और मोआब के बहुत से बच्चे लड़ाई में सीहोन के हाथ लग गए, और उसने उनके बेटों और बेटियों को बड़ी संख्या में पकड़ लिया, और उनके राजा को मार डाला; इसलिए सीहोन अपने देश लौट गया।
22 और सीहोन ने बोर और अपने बेटे बिलाम को सोने-चांदी के बहुत सारे तोहफ़े दिए, और उन्हें विदा किया, और वे मेसोपोटामिया में अपने घर और देश चले गए।
23 उस समय इस्राएल के सभी लोग मोआब के जंगल के रास्ते से चले गए, और लौटकर एदोम के जंगल को घेर लिया।
24 इसलिए मिस्र से निकलने के चालीसवें साल के पहले महीने में पूरी मंडली सीन के जंगल में आई। और इस्राएल के बच्चे सीन के जंगल के कादेश में रहने लगे। और मरियम वहीं मर गई और उसे वहीं दफ़नाया गया।
25 उस समय मूसा ने एदोम के राजा हदद के पास दूतों को यह कहकर भेजा, "तेरा भाई इस्राएल कहता है, मुझे अपने देश से होकर जाने दे; हम न तो खेत से होकर जाएंगे, न अंगूर के बाग से, न कुएं का पानी पीएंगे; हम राजा के रास्ते से चलेंगे।"
26 तब एदोम ने उससे कहा, "तुम मेरे देश से होकर मत जाना।" तब एदोम एक बड़ी सेना लेकर इस्राएलियों से मिलने के लिए निकल पड़ा।
27 और एसाव के बच्चों ने इस्राएल के बच्चों को अपने देश से होकर जाने से मना कर दिया, इसलिए इस्राएली उनसे दूर चले गए और उनसे नहीं लड़े।
28 क्योंकि इससे पहले यहोवा ने इस्राएलियों को यह हुक्म दिया था कि तुम एसावियों से मत लड़ो, इसलिए इस्राएली उनसे दूर हो गए और उनसे नहीं लड़े।
29 इसलिए इस्राएल के लोग कादेश से चले गए, और सभी लोग होर पहाड़ पर आ गए।
30 उस समय यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने भाई हारून से कहो कि वह वहीं मर जाएगा, क्योंकि वह उस देश में नहीं आएगा जो मैंने इस्राएलियों को दिया है।"
31 और हारून यहोवा की आज्ञा से चालीसवें साल के पाँचवें महीने के पहले दिन होर पहाड़ पर चढ़ गया।
32 जब हारून होर पहाड़ पर मरा, तब वह एक सौ तेईस साल का था।

अध्याय 85

1 और दक्षिण में रहने वाले कनानी राजा अराद ने सुना कि इस्राएली जासूसों के रास्ते से आए हैं, और उसने इस्राएलियों से लड़ने के लिए अपनी सेना तैयार की।
2 और इस्राएल के बच्चे उससे बहुत डर गए, क्योंकि उसके पास एक बड़ी और भारी सेना थी, इसलिए इस्राएल के बच्चों ने मिस्र लौटने का फैसला किया।
3 और इस्राएल के लोग लगभग तीन दिन का रास्ता तय करके मासेराथ बेनी जाकोन लौट गए, क्योंकि वे राजा अराद से बहुत डर गए थे।
4 और इस्राएली अपनी जगह वापस नहीं गए, इसलिए वे तीस दिन तक बेनी जाकोन में रहे।
5 और जब लेवी के बच्चों ने देखा कि इस्राएल के बच्चे पीछे नहीं हटेंगे, तो उन्हें यहोवा की खातिर जलन हुई, और वे उठे और अपने भाई इस्राएलियों से लड़े, और उनमें से एक बड़ी सेना को मार डाला, और उन्हें अपनी जगह, होर पहाड़ पर वापस जाने के लिए मजबूर कर दिया।
6 और जब वे लौटे, तो राजा अराद अभी भी इस्राएलियों के खिलाफ लड़ाई के लिए अपनी सेना तैयार कर रहा था।
7 और इस्राएल ने यह मन्नत मानी, कि अगर तू इन लोगों को मेरे हाथ में कर देगा, तो मैं उनके शहरों को पूरी तरह से तबाह कर दूँगा।
8 और यहोवा ने इस्राएल की बात मानकर कनानियों को उनके हाथ में कर दिया, और उन्हें और उनके शहरों को पूरी तरह से खत्म कर दिया, और उस जगह का नाम होर्मा रखा।
9 और इस्राएल के बच्चों ने होर पहाड़ से कूच करके ओबोथ में डेरा डाला, और वे ओबोथ से कूच करके मोआब की सीमा पर इजे-अबारीम में डेरा डाला।
10 और इस्राएलियों ने मोआब के पास यह संदेश भेजा, "हमें अपनी ज़मीन से होकर अपने घर जाने दो।" लेकिन मोआबियों ने इस्राएलियों को अपनी ज़मीन से होकर जाने नहीं दिया, क्योंकि मोआबियों को बहुत डर था कि कहीं इस्राएली उनके साथ वैसा ही न कर दें जैसा एमोरियों के राजा सीहोन ने उनके साथ किया था, जिसने उनकी ज़मीन ले ली थी और उनमें से बहुतों को मार डाला था।
11 इसलिए मोआब ने इस्राएलियों को अपने देश से होकर जाने नहीं दिया, और यहोवा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी, कि वे मोआब से न लड़ें, इसलिए इस्राएली मोआब से चले गए।
12 और इस्राएल के लोग मोआब की सीमा से चले और अर्नोन के दूसरी तरफ, मोआब की सीमा पर, मोआब और एमोरियों के बीच पहुँचे, और उन्होंने केदेमोत के जंगल में, एमोरियों के राजा सीहोन की सीमा पर डेरा डाला।
13 और इस्राएलियों ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूत भेजे, और कहा,
14 हमें तेरे देश से होकर जाने दे, हम खेतों या अंगूर के बागों की तरफ नहीं मुड़ेंगे, हम राजा के रास्ते से तब तक चलेंगे जब तक तेरी सीमा पार न कर लें, लेकिन सीहोन ने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया।
15 इसलिए सीहोन ने सभी एमोरियों को इकट्ठा किया और इस्राएलियों से मिलने के लिए जंगल में चला गया, और उसने यहाज में इस्राएलियों से लड़ाई की।
16 और यहोवा ने एमोरियों के राजा सीहोन को इस्राएलियों के हाथ में कर दिया, और इस्राएलियों ने सीहोन के सभी लोगों को तलवार से मार डाला, और मोआब के मुकद्दमे का बदला लिया।
17 और इस्राएलियों ने अराम से लेकर याबूक तक सीहोन की ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया, और अम्मोनियों तक पहुँच गए, और उन्होंने शहरों की सारी लूट ले ली।
18 और इस्राएल ने इन सब शहरों पर कब्ज़ा कर लिया, और इस्राएल एमोरियों के सब शहरों में रहने लगा।
19 और इस्राएल के सभी बच्चों ने अम्मोन के बच्चों से लड़ने का फैसला किया, ताकि उनकी ज़मीन भी ले सकें।
20 तब यहोवा ने इस्राएलियों से कहा, "अम्मोनियों को मत घेरो, और न उनके खिलाफ लड़ाई छेड़ो, क्योंकि मैं तुम्हें उनकी ज़मीन में से कुछ नहीं दूंगा।" इस्राएलियों ने यहोवा की बात मानी और अम्मोनियों से लड़ाई नहीं की।
21 और इस्राएल के बच्चे मुड़े और बाशान के रास्ते से बाशान के राजा ओग की ज़मीन पर चढ़ गए। बाशान का राजा ओग इस्राएलियों से लड़ाई करने निकला। उसके साथ बहुत से बहादुर आदमी और एमोरी लोगों की एक बहुत बड़ी सेना थी।
22 और बाशान का राजा ओग बहुत ताकतवर आदमी था, लेकिन उसका बेटा नारोन उससे भी ज़्यादा ताकतवर था।
23 और ओग ने मन में कहा, देखो, इस्राएल का पूरा कैंप तीन परसा की जगह में है, अब मैं उन्हें बिना तलवार या भाले के एक ही बार में मार डालूंगा।
24 और ओग यहाज पहाड़ पर गया, और वहाँ से एक बड़ा पत्थर उठाया, जिसकी लंबाई तीन परसा थी, और उसने उसे अपने सिर पर रखा, और सोचा कि उसे इस्राएलियों के कैंप पर फेंक देगा, ताकि उस पत्थर से सभी इस्राएलियों को मार डाले।
25 और प्रभु का दूत आया और उसने ओग के सिर पर पत्थर मार दिया, और पत्थर ओग की गर्दन पर गिरा, और ओग गर्दन पर पत्थर के वज़न के कारण ज़मीन पर गिर पड़ा।
26 उस समय यहोवा ने इस्राएलियों से कहा, उससे मत डरो, क्योंकि मैंने उसे और उसके सारे लोगों और उसकी सारी ज़मीन तुम्हारे हाथ में कर दी है, और तुम उसके साथ वैसा ही करोगे जैसा तुमने सीहोन के साथ किया था।
27 तब मूसा इस्राएल के कुछ लोगों के साथ उसके पास गया, और मूसा ने ओग के पैरों के टखनों पर एक डंडे से मारा और उसे मार डाला।
28 इसके बाद इस्राएल के लोगों ने ओग के लोगों और उसके सभी लोगों का पीछा किया, और उन्हें तब तक मारा और खत्म किया जब तक कि उनमें से कोई भी नहीं बचा।
29 इसके बाद मूसा ने इस्राएल के कुछ बच्चों को याजेर की जासूसी करने के लिए भेजा, क्योंकि याजेर एक बहुत मशहूर शहर था।
30 और जासूस याजेर गए और उसकी जांच की, और जासूसों ने यहोवा पर भरोसा किया, और वे याजेर के आदमियों से लड़े।
31 और इन लोगों ने याजेर और उसके गांवों पर कब्ज़ा कर लिया, और यहोवा ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया, और उन्होंने वहां रहने वाले एमोरियों को निकाल दिया।
32 और इस्राएलियों ने एमोरियों के दो राजाओं की ज़मीन ले ली, जो यरदन नदी के दूसरी तरफ अर्नोन नदी से लेकर हरमन पहाड़ तक के साठ शहर थे।

33 और इस्राएल के बच्चे आगे बढ़े और मोआब के मैदान में पहुँचे जो यरदन नदी के इस पार, यरीहो के पास है।
34 और मोआब के लोगों ने वह सब बुरा काम सुना जो इस्राएल के लोगों ने एमोरियों के दो राजाओं, सीहोन और ओग के साथ किया था, इसलिए मोआब के सभी लोग इस्राएलियों से बहुत डर गए।
35 और मोआब के बुज़ुर्गों ने कहा, "देखो, एमोरियों के दो राजा, सीहोन और ओग, जो धरती के सभी राजाओं से ज़्यादा ताकतवर थे, वे भी इस्राएलियों का सामना नहीं कर सके, तो फिर हम उनके सामने कैसे खड़े हो सकते हैं?"
36 ज़रूर उन्होंने हमें पहले भी यह मैसेज भेजा था कि वे हमारे देश से होकर गुज़रें, और हमने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। अब वे अपनी भारी तलवारों से हम पर हमला करेंगे और हमें खत्म कर देंगे; और मोआब इस्राएलियों की वजह से परेशान था, और वे उनसे बहुत डर गए थे, और उन्होंने मिलकर सलाह की कि इस्राएलियों के साथ क्या करना है।
37 तब मोआब के बुज़ुर्गों ने तय किया कि वे अपने एक आदमी को, मोआबी सिप्पोर के बेटे बालाक को लेकर उस समय अपना राजा बना देंगे। बालाक बहुत बुद्धिमान आदमी था।
38 तब मोआब के बुज़ुर्गों ने उठकर मिद्यानियों के पास शांति करने के लिए संदेश भेजा, क्योंकि उन दिनों मोआब और मिद्यानियों के बीच बहुत बड़ी लड़ाई और दुश्मनी चल रही थी, एदोम के राजा बेदाद के बेटे हदद के दिनों से, जिसने मोआब के मैदान में मिद्यानियों को हराया था, आज तक।
39 और मोआब के लोगों ने मिद्यान के लोगों के पास संदेश भेजा, और उन्होंने उनके साथ शांति कर ली, और मिद्यान के बुज़ुर्ग मिद्यान के लोगों की तरफ़ से शांति करने के लिए मोआब देश में आए।
40 और मोआब के बुज़ुर्गों ने मिद्यान के बुज़ुर्गों से सलाह की कि इस्राएल से अपनी जान बचाने के लिए क्या करें।
41 तब मोआब के सब लोगों ने मिद्यान के बुज़ुर्गों से कहा, "तो अब इस्राएल के लोग हमारे आस-पास के सब लोगों को ऐसे चाट रहे हैं जैसे बैल खेत की घास चाटता है, क्योंकि उन्होंने एमोरियों के उन दो राजाओं के साथ भी ऐसा ही किया जो हमसे ज़्यादा ताकतवर हैं।"
42 और मिद्यान के बुज़ुर्गों ने मोआब से कहा, "हमने सुना है कि जब एमोरियों के राजा सीहोन ने तुमसे लड़ाई की, जब वह तुम पर हावी हो गया और तुम्हारी ज़मीन ले ली, तो उसने यानास के बेटे बोर और उसके बेटे बिलाम को मेसोपोटामिया से भेजा था, और वे आए और तुम्हें बुरा-भला कहा; इसलिए सीहोन का हाथ तुम पर हावी हो गया, और उसने तुम्हारी ज़मीन ले ली।"
43 इसलिए अब तुम उसके बेटे बिलाम के पास भी भेजो, क्योंकि वह अभी भी अपने देश में रहता है, और उसे उसकी मज़दूरी दो, ताकि वह आकर उन सभी लोगों को श्राप दे जिनसे तुम डरते हो; इसलिए मोआब के बुज़ुर्गों ने यह बात सुनी, और उन्हें बोर के बेटे बिलाम के पास भेजना अच्छा लगा।
44 तब मोआब के राजा सिप्पोर के बेटे बालाक ने बिलाम के पास दूतों को यह संदेश भेजा,
45 देखो, मिस्र से एक लोग निकल आए हैं, देखो, वे धरती को ढक रहे हैं, और मेरे सामने रह रहे हैं।
46 इसलिए अब आओ और इन लोगों को मेरे लिए श्राप दो, क्योंकि वे मुझसे बहुत ताकतवर हैं, शायद मैं उनसे लड़ने में कामयाब हो जाऊँ और उन्हें बाहर निकाल दूँ, क्योंकि मैंने सुना है कि जिसे तुम आशीर्वाद देते हो वह आशीर्वाद पाता है, और जिसे तुम श्राप देते हो वह श्रापित होता है।
47 इसलिए बालाक के दूत बिलाम के पास गए और बिलाम को लोगों को शाप देने के लिए ले आए ताकि वे मोआब से लड़ें।
48 तब बिलाम इस्राएल को श्राप देने के लिए बालाक के पास गया, और यहोवा ने बिलाम से कहा, इस जाति को श्राप मत दो, क्योंकि यह धन्य है।
49 और बालाक हर दिन बालाम से इस्राएल को श्राप देने के लिए कहता रहा, लेकिन बालाम ने यहोवा की बात के कारण बालाक की बात नहीं मानी जो उसने बालाम से कही थी।
50 जब बालाक ने देखा कि बिलाम उसकी बात नहीं मानेगा, तो वह उठकर अपने घर चला गया, और बिलाम भी अपने देश लौट आया, और वहाँ से मिद्यान चला गया।
51 और इस्राएल के लोग मोआब के मैदान से निकले, और यरदन के किनारे बेथ-यसीमोत से लेकर अबेल-शित्तीम तक, जो मोआब के मैदानों के आखिर में है, डेरा डाला।
52 और जब इस्राएल के लोग शित्तीम के मैदान में रहने लगे, तो वे मोआब की बेटियों के साथ बदचलनी करने लगे।
53 और इस्राएल के बच्चे मोआब के पास पहुँचे, और मोआब के बच्चों ने इस्राएल के बच्चों की छावनी के सामने अपने तंबू खड़े किए।
54 और मोआब के लोग इस्राएल के लोगों से डर गए, और मोआब के लोगों ने उनकी सभी सुंदर और सुंदर दिखने वाली बेटियों और पत्नियों को ले लिया, और उन्हें सोने, चांदी और महंगे कपड़े पहना दिए।
55 और मोआब के बच्चों ने उन औरतों को अपने तंबुओं के दरवाज़े पर बैठा दिया, ताकि इस्राएल के बच्चे उन्हें देखकर उनकी तरफ़ मुड़ें, और मोआब से न लड़ें।
56 और मोआब के सभी लोगों ने इस्राएल के बच्चों के साथ ऐसा ही किया, और हर आदमी ने अपनी पत्नी और बेटी को अपने डेरे के दरवाज़े पर खड़ा कर दिया, और इस्राएल के सभी लोगों ने मोआब के बच्चों का यह काम देखा, और इस्राएल के बच्चे मोआब की बेटियों की तरफ़ मुड़े और उनसे प्यार करने लगे, और वे उनके पास चले गए।
57 और ऐसा हुआ कि जब कोई इब्री मोआब के तंबू के दरवाज़े पर आता, और मोआब की बेटी को देखकर अपने दिल में उसे चाहता, और तंबू के दरवाज़े पर उससे अपनी मनचाही बात कहता, तो जब वे आपस में बात कर रहे होते, तो तंबू के आदमी बाहर आकर इब्री से ऐसी बातें कहते:
58 तुम जानते हो कि हम भाई-बहन हैं, हम सब लूत के वंशज हैं और उसके भाई अब्राहम के वंशज हैं, तो फिर तुम हमारे साथ क्यों नहीं रहते, और हमारी रोटी और हमारा बलिदान क्यों नहीं खाते?
59 और जब मोआब के लोगों ने अपनी बातों से उसे इस तरह परेशान कर दिया, और अपनी चापलूसी भरी बातों से उसे फुसला लिया, तो उन्होंने उसे तंबू में बिठाया और उसके लिए खाना बनाया और बलि दी, और उसने उनके बलि और उनकी रोटी खाई।
60 फिर उन्होंने उसे शराब दी और वह पीकर नशे में धुत हो गया। उन्होंने उसके सामने एक खूबसूरत लड़की खड़ी की और उसने उसके साथ जैसा चाहा वैसा किया, क्योंकि वह नहीं जानता

था कि वह क्या कर रहा है, क्योंकि उसने बहुत ज़्यादा शराब पी ली थी।
61 मोआब के बच्चों ने शित्तीम के मैदान में इस्राएल के साथ ऐसा ही किया, और इस बात की वजह से यहोवा का गुस्सा इस्राएल पर भड़क उठा, और उसने उनके बीच महामारी भेजी, और इस्राएलियों में से चौबीस हज़ार आदमी मर गए।
62 शिमोन के वंश में एक आदमी था जिसका नाम जिम्री था, जो सालू का बेटा था, और उसने मिद्यान के राजा सूर की बेटी मिद्यान की कोस्बी के साथ, सब इस्राएलियों के सामने रिश्ता बना लिया था।
63 और हारून याजक के बेटे एलाजेर के बेटे फिनीहास ने जिमरी का यह बुरा काम देखा, और वह भाला लेकर उठा, और उनका पीछा करके उन दोनों को भाला घोंपकर मार डाला, और इस्राएलियों में से महामारी खत्म हो गई।

अध्याय 86

1 उस समय महामारी के बाद, यहोवा ने मूसा और हारून याजक के बेटे एलाजेर से कहा,
2 इस्राएलियों की पूरी जमात के उन मुखियाओं की गिनती करो, जो बीस साल या उससे ज़्यादा उम्र के थे और जो सेना में गए थे।
3 और मूसा और एलाजेर ने इस्राएल के बच्चों को उनके घरानों के हिसाब से गिना, और सब इस्राएलियों की गिनती सात लाख सात सौ तीस थी।
4 और लेवी के बच्चों की गिनती, जिनकी उम्र एक महीने या उससे ज़्यादा थी, 23 हज़ार थी, और इनमें से एक भी आदमी ऐसा नहीं था जिसे मूसा और हारून ने सिनाई के जंगल में गिना था।
5 क्योंकि यहोवा ने उनसे कहा था कि वे जंगल में मरेंगे, इसलिए वे सब मर गए, और यपुनेह के बेटे कालेब और नून के बेटे यहोशू को छोड़कर उनमें से कोई नहीं बचा।
6 इसके बाद यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएलियों से कहो कि वे मिद्यानियों से अपने भाई इस्राएलियों का बदला लें।"
7 और मूसा ने वैसा ही किया, और इस्राएलियों ने अपने में से बारह हज़ार आदमी चुने, जो हर कबीले के लिए एक हज़ार थे, और वे मिद्यान चले गए।
8 और इस्राएल के बच्चों ने मिद्यान के खिलाफ लड़ाई की, और उन्होंने हर आदमी को मार डाला, मिद्यान के पाँचों हाकिमों को भी, और बोर के बेटे बिलाम को भी तलवार से मार डाला।
9 और इस्राएल के बच्चों ने मिद्यान की पत्नियों को, उनके बच्चों, उनके जानवरों और उनके सारे सामान को बंदी बना लिया।
10 और उन्होंने सारा लूट का माल और सारा शिकार लेकर मोआब के मैदानों में मूसा और एलाजेर के पास ले गए।
11 तब मूसा, एलाजेर और मण्डली के सब हाकिम खुशी-खुशी उनसे मिलने के लिए निकले।
12 और उन्होंने मिद्यान की सारी लूट का माल आपस में बाँट लिया, और इस्राएलियों ने अपने भाई इस्राएलियों के कारण मिद्यानियों से बदला लिया।

अध्याय 87

1 उस समय यहोवा ने मूसा से कहा, "देख, तेरे दिन खत्म होने वाले हैं, इसलिए अपने सेवक यहोशू को, जो नून का बेटा है, ले जाकर तम्बू में रख दे, और मैं उसे आज्ञा दूंगा।" और मूसा ने वैसा ही किया।
2 और यहोवा बादल के खंभे में निवास में प्रकट हुआ, और बादल का खंभा निवास के द्वार पर खड़ा था।
3 और यहोवा ने नून के बेटे यहोशू को हुक्म दिया और उससे कहा, "हौसला रखो और हिम्मत रखो, क्योंकि तुम इस्राएलियों को उस देश में ले जाओगे जिसे देने की मैंने कसम खाई है, और मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।"
4 और मूसा ने यहोशू से कहा, "हौसला रखो और हिम्मत रखो, क्योंकि तुम ही इस्राएलियों को देश का वारिस बनाओगे, और यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा, वह तुम्हें न छोड़ेगा और न त्यागेगा, इसलिए डरो मत और निराश मत हो।"
5 तब मूसा ने इस्राएल के सब बच्चों को बुलाकर कहा, "तुमने वह सब भलाई देखी है जो यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने जंगल में तुम्हारे लिए की है।"
6 इसलिए अब इस नियम की सारी बातें मानो, और अपने परमेश्वर यहोवा के मार्ग पर चलो, और जिस मार्ग की आज्ञा यहोवा ने तुम्हें दी है, उससे न तो दाएँ मुड़ो, न बाएँ।
7 और मूसा ने इस्राएल के बच्चों को देश में नियम, नियम और कानून सिखाए, जैसा कि यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।
8 और उसने उन्हें प्रभु का मार्ग और उसके नियम सिखाए; देखो, वे परमेश्वर के नियम की उस किताब में लिखे हैं जो उसने मूसा के हाथ से इस्राएलियों को दी थी।
9 जब मूसा ने इस्राएलियों को आज्ञा देना खत्म किया, तो यहोवा ने उससे कहा, "अबारीम पहाड़ पर चढ़ जाओ और वहीं मर जाओ, और जैसे तुम्हारा भाई हारून इकट्ठा हुआ था, वैसे ही तुम भी अपने लोगों में मिल जाओ।"
10 और मूसा यहोवा की आज्ञा के अनुसार ऊपर गया, और यहोवा के आदेश से मोआब देश में उसकी मृत्यु हो गई, यह इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष में हुआ।
11 और इस्राएल के बच्चे मोआब के मैदानों में मूसा के लिए तीस दिन तक रोते रहे, और मूसा के लिए रोने और मातम मनाने के दिन पूरे हो गए।

अध्याय 88

1 मूसा की मौत के बाद यहोवा ने नून के बेटे यहोशू से कहा,
2 उठो और यरदन पार करके उस देश में जाओ जो मैंने इस्राएलियों को दिया है, और तुम इस्राएलियों को वह देश विरासत में दोगे।
3 जिस भी जगह पर तुम्हारे पैर पड़ेंगे, वह तुम्हारी होगी; लेबनान के जंगल से लेकर परात नाम बड़ी नदी तक, वह तुम्हारी सीमा होगी।
4 तुम्हारी ज़िंदगी भर कोई भी तुम्हारे खिलाफ खड़ा नहीं होगा; जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ भी रहूंगा। बस इतना करना कि तुम मज़बूत और हिम्मत वाले बनो और मूसा ने जो भी नियम तुम्हें बताए हैं, उन्हें मानो, रास्ते से न दाएं मुड़ो और न बाएं, ताकि तुम जो कुछ भी करो उसमें कामयाब हो सको।
5 और यहोशू ने इस्राएल के अफ़सरों को हुक्म दिया, "कैंप में से गुज़रो और लोगों को हुक्म दो, अपने लिए खाना तैयार रखो, क्योंकि तीन दिन में तुम यरदन नदी पार करके ज़मीन पर कब्ज़ा करोगे।"

6 और इस्राएलियों के सरदारों ने वैसा ही किया, और लोगों को आज्ञा दी, और जो कुछ यहोशू ने आज्ञा दी थी, वही किया।
7 और यहोशू ने दो आदमियों को यरीहो देश की जासूसी करने के लिए भेजा, और वे आदमी गए और यरीहो की जासूसी की।
8 और सात दिन के बाद वे कैंप में यहोशू के पास आए और उससे कहा, "यहोवा ने सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है, और उसके रहने वाले हमारे डर से कांप रहे हैं।"
9 इसके बाद, यहोशू सुबह उठा और उसके साथ सारा इस्राएली शित्तीम से चला, और यहोशू और उसके साथ सारा इस्राएली यरदन नदी पार कर गया; और जब यहोशू इस्राएल के साथ यरदन नदी पार कर गया, तब वह बयासी साल का था।
10 और लोग पहले महीने के दसवें दिन यरदन से ऊपर चले गए, और उन्होंने यरीहो के पूर्वी कोने पर गिलगाल में डेरा डाला।
11 और इस्राएल के बच्चों ने महीने के चौदहवें दिन, यरीहो के मैदानों में गिलगाल में फसह मनाया, जैसा कि मूसा के कानून में लिखा है।
12 और उस समय फसह के अगले दिन मन्ना मिलना बंद हो गया, और इस्राएलियों के लिए मन्ना नहीं रहा, और उन्होंने कनान देश की उपज में से खाना खाया।
13 और यरीहो इस्राएलियों के लिए पूरी तरह से बंद कर दिया गया, कोई भी बाहर नहीं आता-जाता था।
14 और दूसरे महीने के पहले दिन, यहोवा ने यहोशू से कहा, "उठो, मैंने यरीहो को उसके सब लोगों समेत तुम्हारे हाथ में कर दिया है; और तुम्हारे सब सैनिक दिन में एक बार शहर का चक्कर लगाएंगे, और तुम छह दिन तक ऐसा ही करोगे।"
15 और पुजारी तुरहियां बजाएंगे, और जब तुम तुरही की आवाज़ सुनोगे, तो सब लोग ज़ोर से चिल्लाएंगे, जिससे शहर की दीवारें गिर जाएंगी; सब लोग अपने-अपने दुश्मन के खिलाफ़ चढ़ जाएंगे।
16 और यहोशू ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उसे आज्ञा दी थी।
17 और सातवें दिन वे शहर के सात चक्कर लगाए, और याजकों ने तुरहियां बजाईं।
18 और सातवें चक्कर में यहोशू ने लोगों से कहा, जयजयकार करो, क्योंकि यहोवा ने पूरा शहर हमारे हाथ में कर दिया है।
19 सिर्फ़ शहर और उसमें जो कुछ है, वह यहोवा के लिए श्रापित होगा, और तुम खुद को श्रापित चीज़ से दूर रखना, कहीं ऐसा न हो कि तुम इस्राएल की छावनी को श्रापित बना दो और उसे परेशान कर दो।
20 लेकिन सारी चांदी, सोना, पीतल और लोहा यहोवा के लिए पवित्र किया जाएगा, वे यहोवा के खजाने में आएंगे।
21 और लोगों ने तुरहियां बजाईं और ज़ोर से चिल्लाया, और यरीहो की दीवारें गिर गईं, और सब लोग ऊपर चढ़ गए, हर आदमी अपने सामने, और उन्होंने शहर पर कब्ज़ा कर लिया और उसमें जो कुछ भी था, आदमी और औरत, जवान और बूढ़े, बैल, भेड़ और गधे, सबको तलवार की धार से पूरी तरह खत्म कर दिया।
22 और उन्होंने पूरे शहर को आग से जला दिया; केवल चांदी, सोने, पीतल और लोहे के बर्तनों को उन्होंने यहोवा के खजाने में डाल दिया।
23 और उस समय यहोशू ने कसम खाकर कहा, "शापित हो वह आदमी जो यरीहो को बनाएगा; वह अपने जेठे बेटे से उसकी नींव डालेगा, और अपने छोटे बेटे से उसके फाटक खड़े करेगा।"
24 और आकान, जो यहूदा के बेटे, ज़ेरह के बेटे, जब्दी का बेटा, कर्म्मी का बेटा था, उसने श्रापित चीज़ के मामले में धोखा किया, और उसने श्रापित चीज़ में से कुछ लेकर उसे तंबू में छिपा दिया, और यहोवा का गुस्सा इस्राएल पर भड़क उठा।
25 और इसके बाद जब इस्राएल के लोग यरीहो को जलाकर लौटे, तो यहोशू ने ऐ की जासूसी करने और उससे लड़ने के लिए भी आदमी भेजे।
26 तब वे लोग ऊपर गए और ऐ की जासूसी की, और लौटकर कहा, "सारे लोग तुम्हारे साथ ऐ मत जाओ, बस लगभग तीन हज़ार आदमी जाओ और शहर को हरा दो, क्योंकि वहाँ के आदमी बहुत कम हैं।"
27 और यहोशू ने ऐसा ही किया, और उसके साथ इस्राएलियों में से लगभग तीन हज़ार आदमी गए, और उन्होंने ऐ के आदमियों से लड़ाई की।
28 और इस्राएल के खिलाफ़ लड़ाई बहुत भयानक थी, और ऐ के आदमियों ने इस्राएल के छत्तीस आदमियों को मार डाला, और इस्राएली ऐ के आदमियों के सामने से भाग गए।
29 जब यहोशू ने यह देखा, तो उसने अपने कपड़े फाड़े और इस्राएल के बुज़ुर्गों के साथ यहोवा के सामने ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ा, और उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली।
30 तब यहोशू ने कहा, हे यहोवा, तू इन लोगों को यरदन नदी के पार क्यों ले आया? जब इस्राएली अपने दुश्मनों से मुँह मोड़ लेंगे, तो मैं क्या कहूँ?
31 इसलिए अब इस देश के सभी कनानी लोग यह बात सुनकर हमें घेर लेंगे और हमारा नामोनिशान मिटा देंगे।
32 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, तू मुँह के बल क्यों गिर पड़ा है? उठ, यहाँ से चला जा, क्योंकि इस्राएलियों ने पाप किया है, और श्रापित वस्तु ले ली है; जब तक वे अपने बीच से उस श्रापित वस्तु को नष्ट नहीं कर देते, मैं उनके साथ नहीं रहूँगा।
33 तब यहोशू उठा और लोगों को इकट्ठा किया, और यहोवा के आदेश से ऊरीम ले आया, और यहूदा के गोत्र को पकड़ लिया गया, और कर्मी के बेटे आकान को पकड़ लिया गया।
34 तब यहोशू ने आकान से कहा, "बेटा, मुझे बता कि तूने क्या किया है?" आकान ने कहा, "मैंने लूट में शिनार का एक सुंदर कपड़ा, दो सौ शेकेल चांदी, और पचास शेकेल वज़न का सोने का एक टुकड़ा देखा है। मैंने उनका लालच करके उन्हें ले लिया, और देखो, वे सब तम्बू के बीच में ज़मीन में छिपे हुए हैं।"
35 तब यहोशू ने कुछ आदमियों को भेजा जो जाकर उन्हें आकान के तंबू से ले आए, और वे उन्हें यहोशू के पास ले आए।
36 तब यहोशू ने आकान को, इन बर्तनों को, और उसके बेटों, बेटियों और उसके सारे सामान को लेकर आकोर घाटी में पहुँचा दिया।
37 और यहोशू ने उन्हें वहीं आग में जला दिया, और सभी इस्राएलियों ने आकान को पत्थरों से मारा, और उसके ऊपर पत्थरों का ढेर लगा दिया, इसलिए उसने उस जगह का नाम आकोर की घाटी रखा, जिससे यहोवा का गुस्सा शांत हो गया, और उसके बाद यहोशू शहर में आया और उससे लड़ा।
38 और यहोवा ने यहोशू से कहा, "डरो मत, और घबराओ मत; देखो, मैंने ऐ को, उसके राजा और उसके लोगों को तुम्हारे हाथ में कर दिया है, और तुम उनके साथ वैसा ही करोगे जैसा तुमने यरीहो और उसके राजा के साथ किया था; बस तुम उसका लूटा

हुआ माल और उसके जानवर अपने लिए ले लोगे; शहर के पीछे घात लगाओ।"
39 इसलिए यहोशू ने यहोवा की बात मानकर, सैनिकों में से तीस हज़ार बहादुर सैनिकों को चुना, और उन्हें भेजा, और वे शहर के लिए घात लगाकर बैठ गए।
40 और उसने उन्हें हुक्म दिया, "जब तुम हमें देखोगे तो हम चालाकी से उनके सामने से भाग जाएँगे, और वे हमारा पीछा करेंगे, तब तुम घात लगाकर शहर पर कब्ज़ा कर लेना।" और उन्होंने ऐसा ही किया।
41 और यहोशू ने लड़ाई की, और शहर के लोग इस्राएल की तरफ़ निकल पड़े, उन्हें पता नहीं था कि वे शहर के पीछे उनकी घात में बैठे हैं।
42 और यहोशू और सब इस्राएलियों ने उनके सामने थके होने का नाटक किया, और वे चालाकी से जंगल के रास्ते भाग गए।
43 और ऐ के आदमियों ने शहर में मौजूद सभी लोगों को इकट्ठा किया ताकि वे इस्राएलियों का पीछा करें, और वे बाहर निकले और शहर से दूर खींचे गए, एक भी नहीं बचा, और उन्होंने शहर को खुला छोड़ दिया और इस्राएलियों का पीछा किया।
44 और जो लोग घात लगाए बैठे थे, वे अपनी जगहों से उठे और शहर की तरफ़ तेज़ी से बढ़े और उस पर कब्ज़ा करके आग लगा दी। और ऐ के लोग वापस लौटे, और देखा कि शहर का धुआँ आसमान में उठ रहा था, और उनके पास पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं बचा था।
45 और ऐ के सारे आदमी इस्राएल के बीच में थे, कुछ इस तरफ़ और कुछ उस तरफ़, और उन्होंने उन्हें ऐसा मारा कि उनमें से एक भी नहीं बचा।
46 और इस्राएल के बच्चों ने ऐ के राजा मेलोश को ज़िंदा पकड़ लिया, और उसे यहोशू के पास ले आए, और यहोशू ने उसे एक पेड़ पर लटका दिया और वह मर गया।
47 और इस्राएल के बच्चे शहर को जलाकर वापस लौटे, और उन्होंने उसमें रहने वाले सभी लोगों को तलवार से मार डाला।
48 और ऐ के मारे गए आदमियों में से, चाहे मर्द हों या औरत, उनकी गिनती बारह हज़ार थी; लेकिन उन्होंने सिर्फ़ जानवर और शहर की लूट का माल अपने पास रख लिया, जैसा कि यहोवा ने यहोशू से कहा था।
49 और यरदन के इस पार के सभी राजाओं, यानी कनान के सभी राजाओं ने सुना कि इस्राएलियों ने यरीहो और ऐ के साथ क्या बुरा किया है, और वे इस्राएल से लड़ने के लिए इकट्ठा हुए।
50 लेकिन गिबोन के रहने वाले लोग इस्राएलियों से लड़ने से बहुत डरते थे, कहीं वे खत्म न हो जाएं। इसलिए उन्होंने चालाकी से काम लिया और यहोशू और पूरे इस्राएल के पास जाकर उनसे कहा, "हम दूर देश से आए हैं, इसलिए अब हमारे साथ एक वादा करो।"
51 और गिबोन के रहने वाले इस्राएलियों पर हावी हो गए, और इस्राएलियों ने उनसे एक वादा किया, और उन्होंने उनके साथ शांति की, और मंडली के हाकिमों ने उनसे कसम खाई, लेकिन बाद में इस्राएलियों को पता चला कि वे उनके पड़ोसी हैं और उनके बीच रहते हैं।
52 लेकिन इस्राएलियों ने उन्हें नहीं मारा; क्योंकि उन्होंने यहोवा की कसम खाई थी, और वे लकड़ी काटने वाले और पानी भरने वाले बन गए।
53 तब यहोशू ने उनसे कहा, "तुमने हमसे यह काम क्यों करवाया, और मुझे धोखा क्यों दिया?" उन्होंने उसे जवाब दिया, "क्योंकि तुम्हारे सेवकों को वह सब बताया गया था जो तुमने एमोरियों के सभी राजाओं के साथ किया था, और हम अपनी जान के डर से बहुत डर गए थे, इसलिए हमने यह काम किया।"
54 और उस दिन यहोशू ने उन्हें लकड़ी काटने और पानी भरने के लिए नियुक्त किया, और उसने उन्हें इस्राएल के सभी गोत्रों के लिए दास के रूप में बाँट दिया।
55 और जब यरूशलेम के राजा अदोनिजेडेक ने सुना कि इस्राएलियों ने यरीहो और ऐ के साथ क्या किया है, तो उसने हेब्रोन के राजा होहम, यरमूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा याफिया और एग्लोन के राजा देबेर के पास यह संदेश भेजा,
56 मेरे पास आओ और मेरी मदद करो, ताकि हम इस्राएलियों और गिबोन के निवासियों को मार सकें, जिन्होंने इस्राएलियों के साथ शांति कर ली है।
57 और वे इकट्ठा हुए और एमोरियों के पाँचों राजा अपने-अपने कैंपों के साथ ऊपर चढ़ गए, वे एक ताकतवर लोग थे जो समुद्र किनारे की रेत जितने अनगिनत थे।
58 और ये सभी राजा आए और गिबोन के सामने डेरा डाला, और वे गिबोन के निवासियों से लड़ने लगे, और गिबोन के सभी लोगों ने यहोशू के पास यह संदेश भेजा, "जल्दी से हमारे पास आओ और हमारी मदद करो, क्योंकि एमोरियों के सभी राजा हमसे लड़ने के लिए इकट्ठा हुए हैं।"
59 और यहोशू और सब लड़ने वाले लोग गिलगाल से ऊपर चले गए, और यहोशू अचानक उनके पास आया, और उन पाँचों राजाओं को बहुत मार डाला।
60 और यहोवा ने उन्हें इस्राएलियों के सामने परेशान कर दिया, और उन्होंने गिबोन में उन्हें बुरी तरह मारा, और बेथ होरोन से मक्केदा तक जाने वाले रास्ते पर उनका पीछा किया, और वे इस्राएलियों के सामने से भाग गए।
61 और जब वे भाग रहे थे, तो यहोवा ने उन पर आसमान से ओले बरसाए, और उनमें से ज़्यादा लोग ओलों से मरे, बजाय इसके कि इस्राएल के बच्चे मारे गए।
62 और इस्राएलियों ने उनका पीछा किया, और वे उन्हें रास्ते में मारते रहे, और आगे बढ़ते रहे।
63 और जब वे मार रहे थे, तो दिन ढलकर शाम हो रही थी, और यहोशू ने सब लोगों के देखते हुए कहा, हे सूर्य, तू गिबोन पर और हे चंद्रमा, अजालोन की घाटी में तब तक रुक, जब तक कि देश अपने दुश्मनों से बदला न ले ले।
64 और यहोवा ने यहोशू की बात मान ली, और सूरज आसमान के बीच में रुक गया, और वह साढ़े छह पल तक रुका रहा, और चाँद भी रुका रहा, और पूरे दिन डूबने की जल्दी नहीं की।
65 और ऐसा कोई दिन नहीं था, न उससे पहले और न उसके बाद, जब यहोवा ने किसी आदमी की बात सुनी हो, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी थी।

अध्याय 89

1 जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को यहोशू और इस्राएलियों के हाथ में कर दिया था, उस दिन यहोशू ने यह गीत गाया, और सारे इस्राएलियों के सामने कहा,

2 हे यहोवा, तूने बड़े काम किए हैं, तूने बड़े-बड़े काम किए हैं; तेरे जैसा कौन है? मेरे होंठ तेरे नाम का गुणगान करेंगे।
3 हे मेरी अच्छाई और मेरे किले, मेरे ऊंचे टॉवर, मैं तेरे लिए एक नया गाना गाऊंगा, शुक्रिया अदा करते हुए मैं तेरे लिए गाऊंगा, तू ही मेरे बचाने की ताकत है।
4 धरती के सभी राजा तेरी तारीफ़ करेंगे, दुनिया के राजकुमार तेरे लिए गाएंगे, इस्राएल के बच्चे तेरे उद्धार में खुश होंगे, वे गाएंगे और तेरी शक्ति की तारीफ़ करेंगे।
5 हे प्रभु, हमने तुझ पर भरोसा किया; हमने कहा कि तू हमारा परमेश्वर है, क्योंकि तू हमारे दुश्मनों के खिलाफ हमारी पनाह और मज़बूत किला था।
6 हमने तुझसे प्रार्थना की और शर्मिंदा नहीं हुए, तुझ पर भरोसा किया और बचाए गए; जब हमने तुझसे प्रार्थना की, तो तूने हमारी आवाज़ सुनी, तूने हमारी जान को तलवार से बचाया, तूने हम पर अपनी कृपा दिखाई, तूने हमें अपनी मुक्ति दी, तूने अपनी ताकत से हमारे दिलों को खुश किया।
7 तू हमारे उद्धार के लिए निकला, अपने हाथ से तूने अपने लोगों को छुड़ाया; तूने अपनी पवित्रता के स्वर्ग से हमें उत्तर दिया, तूने हमें लाखों लोगों से बचाया।
8 सूरज और चाँद आसमान में रुक गए, और तू अपने गुस्से में हमारे जुल्म करने वालों के खिलाफ खड़ा रहा और उन पर अपने फैसले सुनाए।
9 धरती के सारे राजकुमार खड़े हो गए, देशों के राजा इकट्ठा हो गए, वे तेरे आने से नहीं हिले, वे तेरे साथ लड़ना चाहते थे।
10 तू अपने गुस्से में उनके खिलाफ़ उठा, और उन पर अपना गुस्सा उतारा; तूने अपने गुस्से में उन्हें खत्म कर दिया, और अपने दिल में उन्हें काट डाला।
11 तेरे गुस्से से देश भस्म हो गए, तेरे गुस्से की वजह से राज्य खत्म हो गए, तूने अपने गुस्से के दिन राजाओं को घायल किया।
12 तूने उन पर अपना गुस्सा उतारा, तेरे गुस्से ने उन्हें जकड़ लिया; तूने उनका गुनाह उन पर डाल दिया, और उनकी बुराई में उन्हें काट डाला।
13 उन्होंने जाल बिछाया, वे उसमें फंस गए, जाल में वे छिप गए, उनका पैर फंस गया।
14 तेरा हाथ तेरे उन सब दुश्मनों के लिए तैयार था जो कहते थे, 'उन्होंने अपनी तलवार से देश पर कब्ज़ा किया, अपने हाथ से वे शहर में बसे हैं;' तूने उनके चेहरों को शर्म से भर दिया, उनके सींग ज़मीन पर गिरा दिए, तूने अपने गुस्से में उन्हें डरा दिया, और अपने गुस्से में उन्हें खत्म कर दिया।
15 तेरे तूफ़ान की आवाज़ से धरती कांप उठी और हिल गई, तूने उनकी आत्माओं को मौत से नहीं बचाया, और उनके जीवन को कब्र में उतार दिया।
16 तूने अपने तूफ़ान में उनका पीछा किया, तूने उन्हें अपने बवंडर में खत्म कर दिया, तूने उनकी बारिश को ओलों में बदल दिया, वे इतने गहरे गड्ढों में गिरे कि वे उठ नहीं सके।
17 उनकी लाशें सड़कों के बीच में फेंके गए कूड़े की तरह थीं।
18 तेरे गुस्से में वे भस्म हो गए और खत्म हो गए, तूने अपनी ताकत से अपने लोगों को बचाया।
19 इसलिए हमारे दिल तेरे कारण खुश हैं, हमारी आत्मा तेरे उद्धार से गर्व करती है।
20 हमारी ज़बानें तेरी ताकत का बखान करेंगी, हम तेरे कमाल के कामों का गुणगान करेंगे और गाएँगे।
21 क्योंकि तूने हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, तूने हमें उन लोगों से छुड़ाया जो हमारे खिलाफ़ उठे थे, तूने उन्हें हमारे सामने से खत्म कर दिया और हमारे पैरों तले दबा दिया।
22 हे प्रभु, तेरे सारे दुश्मन इसी तरह खत्म हो जाएंगे, और बुरे लोग हवा से उड़ती हुई भूसी की तरह हो जाएंगे, और तेरे प्यारे लोग पानी के किनारे लगाए गए पेड़ों की तरह हो जाएंगे।
23 इसलिए यहोशू और उसके साथ सारा इस्राएल गिलगाल में कैंप में लौट आया। उसने सभी राजाओं को हरा दिया था, और उनमें से कोई भी नहीं बचा था।
24 और पाँचों राजा अकेले ही लड़ाई से पैदल भाग गए, और एक गुफा में छिप गए; और यहोशू ने लड़ाई के मैदान में उन्हें ढूँढा, पर वे उसे नहीं मिले।
25 इसके बाद यहोशू को बताया गया, "राजा मिल गए हैं, और देखो, वे एक गुफा में छिपे हुए हैं।"
26 तब यहोशू ने कहा, गुफा के मुँह पर लोगों को रखो, जो उनकी रक्षा करें, कहीं वे भाग न जाएं; और इस्राएलियों ने वैसा ही किया।
27 तब यहोशू ने सारे इस्राएलियों को बुलाया और युद्ध के सरदारों से कहा, इन राजाओं की गर्दन पर अपने पैर रखो, और यहोशू ने कहा, यहोवा तुम्हारे सब शत्रुओं के साथ ऐसा ही करेगा।
28 इसके बाद यहोशू ने हुक्म दिया कि राजाओं को मारकर गुफा में डाल दिया जाए, और गुफा के मुँह पर बड़े-बड़े पत्थर रख दिए जाएं।
29 इसके बाद यहोशू उन सभी लोगों के साथ जो उस दिन उसके साथ थे, मक्केदा गया और उसने उसे तलवार से मार डाला।
30 और उसने शहर के लोगों और उसके सभी लोगों को पूरी तरह से खत्म कर दिया, और उसने राजा और लोगों के साथ वैसा ही किया जैसा उसने यरीहो के साथ किया था।
31 और वह वहाँ से लिब्ना को गया और उससे लड़ा, और यहोवा ने उसे उसके हाथ में कर दिया, और यहोशू ने उसे तलवार से मार डाला, और उसके सब प्राणों को भी मार डाला, और उसने उसके और उसके राजा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने यरीहो के साथ किया था।
32 वहां से वह लाकीश से लड़ने के लिए आगे बढ़ा, और गाजा का राजा होराम लाकीश के आदमियों की मदद करने के लिए ऊपर गया, और यहोशू ने उसे और उसके लोगों को तब तक मारा जब तक कि उसके पास कोई नहीं बचा।
33 तब यहोशू ने लाकीश और उसके सब लोगों को ले लिया, और उसके साथ वैसा ही किया जैसा उसने लिब्ना के साथ किया था।
34 तब यहोशू वहां से आगे बढ़कर एग्लोन को गया, और उसे भी ले लिया, और उसे और उसके सब लोगों को तलवार से मार डाला।
35 और वहाँ से वह हेब्रोन गया और उससे लड़ा, उसे ले लिया और पूरी तरह तबाह कर दिया, और वहाँ से पूरे इस्राएल के साथ दबीर लौटा और उससे लड़ा और उसे तलवार से मार डाला।
36 और उसने उसमें रहने वाले हर एक जीव को मार डाला, किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा, और उसके और उसके राजा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने यरीहो के साथ किया था।
37 और यहोशू ने कादेश-बरने से लेकर अज़ा तक एमोरियों के सभी राजाओं को हराया, और उसने तुरंत उनका देश ले लिया, क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी थी।

38 और यहोशू सब इस्राएलियों के साथ गिलगाल के कैंप में आया।
39 उस समय जब काज़ोर के राजा याबीन ने सुना कि यहोशू ने एमोरियों के राजाओं के साथ क्या किया है, तो याबीन ने मिद्यान के राजा योबात, शिमरोन के राजा लाबान, अक्षाफ के राजा यफाल और एमोरियों के सभी राजाओं के पास यह संदेश भेजा,
40 जल्दी से हमारे पास आओ और हमारी मदद करो, ताकि हम इस्राएलियों को हरा सकें, इससे पहले कि वे हम पर हमला करें और हमारे साथ वैसा ही करें जैसा उन्होंने एमोरियों के दूसरे राजाओं के साथ किया है।
41 और इन सभी राजाओं ने चज़ोर के राजा याबीन की बातें मान लीं, और वे अपने सभी कैंपों के साथ निकल पड़े, यानी सत्रह राजा, और उनके लोग समुद्र किनारे की रेत जितने अनगिनत थे, साथ में अनगिनत घोड़े और रथ भी थे, और वे मेरोम के पानी पर आकर एक साथ डेरा डाले, और वे इस्राएल से लड़ने के लिए एक साथ आए।
42 और यहोवा ने यहोशू से कहा, उनसे मत डरो, क्योंकि कल इसी समय मैं उन सबको तुम्हारे सामने मार डालूंगा, तुम उनके घोड़ों की नसें काट देना और उनके रथों को आग में जला देना।
43 और यहोशू ने सब योद्धाओं के साथ अचानक उन पर हमला किया और उन्हें मार डाला, और वे उनके हाथ में पड़ गए, क्योंकि यहोवा ने उन्हें इस्राएलियों के हाथ में कर दिया था।
44 इसलिए इस्राएलियों ने इन सभी राजाओं का उनके कैंपों के साथ पीछा किया, और उन्हें तब तक मारा जब तक उनमें से कोई नहीं बचा, और यहोशू ने उनके साथ वैसा ही किया जैसा यहोवा ने उससे कहा था।
45 और उस समय यहोशू कज़ोर लौटा और उसे तलवार से मार डाला, उसमें रहने वाले हर इंसान को मार डाला और उसे आग में जला दिया। फिर कज़ोर से यहोशू शिमरोन गया और उसे मार डाला और पूरी तरह से खत्म कर दिया।
46 वहां से वह अक्षाफ के पास गया और उसने उसके साथ वैसा ही किया जैसा उसने शिम्रोन के साथ किया था।
47 वहां से वह अदूलाम गया और वहां के सभी लोगों को मार डाला, और अदूलाम के साथ वैसा ही किया जैसा उसने अक्षाफ और शिम्रोन के साथ किया था।
48 और वह उनके पास से उन सभी राजाओं के शहरों में गया जिन्हें उसने हराया था, और उनमें से जो लोग बचे थे उन सभी को मारा और उन्हें पूरी तरह से खत्म कर दिया।
49 इस्राएलियों ने सिर्फ़ लूट का माल और जानवर ही अपने लिए ले लिए, लेकिन जितने भी इंसानों को उन्होंने मारा, उनमें से किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ा।
50 जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी, वैसा ही यहोशू और सारे इस्राएल ने किया; वे किसी बात में चूके नहीं।
51 इसलिए यहोशू और सभी इस्राएलियों ने कनान के पूरे देश पर हमला किया, जैसा कि यहोवा ने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने उनके सभी राजाओं को मार डाला, जो 31 राजा थे। और इस्राएलियों ने उनका पूरा देश ले लिया।
52 इसके अलावा, सीहोन और ओग के राज्य जो यरदन नदी के उस पार थे, मूसा ने उनके कई शहरों को जीत लिया था, और मूसा ने उन्हें रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया था।
53 और यहोशू ने यरदन नदी के पश्चिम में इस पार के सभी राजाओं को हरा दिया, और उन्हें इस्राएल के नौ गोत्रों और आधे गोत्र को विरासत में दे दिया।
54 यहोशू ने पाँच साल तक इन राजाओं से लड़ाई की, और उनके शहर इस्राएलियों को दे दिए, और एमोरियों और कनानी लोगों के शहरों में लड़ाई के बाद देश शांत हो गया।

अध्याय 90

1 उस समय, जब इस्राएल के बच्चे यरदन नदी पार कर चुके थे, और पाँचवें साल में, जब इस्राएल के बच्चे कनानियों के साथ अपनी लड़ाई से आराम कर चुके थे, उस समय एदोम और चित्तिम के बच्चों के बीच बड़ी और भयानक लड़ाइयाँ हुईं, और चित्तिम के बच्चों ने एदोम के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
2 और चित्तिम का राजा अबियानुस उसी साल, यानी अपने राज के इकतीसवें साल में, चित्तिम के बच्चों के ताकतवर आदमियों की एक बड़ी फौज लेकर निकला, और वह एसाव के बच्चों से लड़ने के लिए सेईर गया।
3 और एदोम के राजा हदद ने उसकी खबर सुनी, और वह एक बड़ी सेना और ताकतवर सेना के साथ उसका सामना करने के लिए निकला, और एदोम के मैदान में उससे लड़ाई की।
4 और चित्तियों का हाथ एसाव के बच्चों पर हावी हो गया, और चित्तियों ने एसाव के बच्चों में से 22,000 आदमियों को मार डाला, और सब एसाव के बच्चे उनके सामने से भाग गए।
5 और चित्तिम के लोगों ने उनका पीछा किया और वे एदोम के राजा हदद तक पहुँचे, जो उनके आगे दौड़ रहा था। उन्होंने उसे ज़िंदा पकड़ लिया और चित्तिम के राजा अबियानुस के पास ले आए।
6 और अबियानुस ने उसे मार डालने का आदेश दिया, और एदोम का राजा हदद अपने राज के अड़तालीसवें साल में मर गया।
7 और चित्तिम के लोग एदोम का पीछा करते रहे, और उन्होंने उन्हें बहुत मारा, और एदोम चित्तिम के लोगों के अधीन हो गया।
8 और चित्तिम के बच्चों ने एदोम पर राज किया, और एदोम चित्तिम के बच्चों के हाथ में आ गया, और उस दिन से एक राज्य बन गया।
9 और उस समय से वे फिर सिर नहीं उठा सके, और उनका राज्य चित्तियों के बच्चों के साथ एक हो गया।
10 और अबियानस ने एदोम में अधिकारी नियुक्त किए और एदोम के सभी बच्चे अबियानस के अधीन हो गए और उसके अधीन हो गए, और अबियानस अपनी भूमि, चित्तिम वापस लौट गया।
11 और जब वह लौटा तो उसने अपनी सरकार को नया किया और अपने लिए शाही घर के तौर पर एक बड़ा और मज़बूत महल बनवाया, और चित्तिम और एदोम के लोगों पर सुरक्षित रूप से राज किया।
12 उन दिनों में, जब इस्राएल के बच्चों ने सभी कनानी और एमोरी लोगों को भगा दिया था, तब यहोशू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया था।
13 और यहोवा ने यहोशू से कहा, "तुम बूढ़े हो गए हो, तुम्हारी उम्र बढ़ गई है, और ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा अभी भी कब्ज़ा करने के लिए बाकी है।"

14 इसलिए अब इस ज़मीन को नौ गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र में विरासत के तौर पर बाँट दो। यहोशू उठा और उसने वही किया जो यहोवा ने उससे कहा था।
15 और उसने पूरी ज़मीन को इस्राएल के गोत्रों को उनके हिस्सों के हिसाब से विरासत के तौर पर बाँट दिया।
16 लेकिन लेवी के कबीले को उसने कोई हिस्सा नहीं दिया, यहोवा के चढ़ावे ही उनके हिस्से हैं, जैसा कि यहोवा ने मूसा के ज़रिए उनके बारे में कहा था।
17 और यहोशू ने हेब्रोन पहाड़ यपुनेह के बेटे कालेब को उसके भाइयों से एक हिस्सा ज़्यादा दिया, जैसा कि यहोवा ने मूसा से कहा था।
18 इसलिए हेब्रोन कालेब और उसके बच्चों की विरासत बन गया और आज तक बना हुआ है।
19 और यहोशू ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार सारी भूमि को चिट्ठियों से सारे इस्राएलियों में विरासत के लिए बाँट दिया।
20 और इस्राएलियों ने लेवियों को अपनी विरासत में से शहर, उनके जानवरों के लिए चरागाह और ज़मीन दी, जैसा यहोवा ने मूसा को हुक्म दिया था, वैसा ही इस्राएलियों ने किया, और उन्होंने ज़मीन को छोटी-बड़ी चिट्ठियों से बाँट लिया।
21 और वे अपनी-अपनी सीमाओं के अनुसार भूमि का अधिकार लेने चले गए, और इस्राएल के बच्चों ने नून के बेटे यहोशू को अपने बीच एक विरासत दी।
22 यहोवा के कहने पर उन्होंने उसे वह शहर दिया जो उसने मांगा था, यानी एप्रैम पहाड़ पर तिमनाथ-सेराक, और उसने वह शहर बनाया और उसमें रहने लगा।
23 ये वो विरासतें हैं जिन्हें एलाजेर पुजारी और नून के बेटे यहोशू और गोत्रों के पिताओं के मुखियाओं ने शिलोह में यहोवा के सामने, तंबू के दरवाज़े पर चिट्ठी डालकर इस्राएलियों को बाँटा, और उन्होंने ज़मीन का बँटवारा करना छोड़ दिया।
24 और यहोवा ने वह देश इस्राएलियों को दे दिया, और उन्होंने उस पर अधिकार कर लिया, जैसा यहोवा ने उनसे कहा था, और जैसा यहोवा ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी।
25 और यहोवा ने इस्राएलियों को उनके आस-पास के सभी दुश्मनों से आराम दिया, और कोई भी उनके खिलाफ खड़ा नहीं हुआ, और यहोवा ने उनके सभी दुश्मनों को उनके हाथ में कर दिया, और जो भी अच्छा काम यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, उसमें से एक भी काम पूरा नहीं हुआ, बल्कि यहोवा ने सब कुछ पूरा किया।
26 तब यहोशू ने इस्राएल के सभी बच्चों को बुलाया और उन्हें आशीर्वाद दिया, और उन्हें यहोवा की सेवा करने की आज्ञा दी, और उसके बाद उसने उन्हें विदा किया, और वे सब अपने शहर और अपनी विरासत में चले गए।
27 और इस्राएल के बच्चे यहोशू के सारे दिनों में यहोवा की सेवा करते रहे, और यहोवा ने उन्हें चारों ओर से आराम दिया, और वे अपने शहरों में सुरक्षित रहने लगे।
28 और उन दिनों ऐसा हुआ कि चित्तिम का राजा अबियानस अपने राज के अड़तीसवें साल में मर गया, यानी एदोम पर उसके राज का सातवां साल, और उसे उसी जगह दफ़नाया गया जो उसने अपने लिए बनाई थी, और लेटीनस ने उसकी जगह पचास साल तक राज किया।
29 और अपने राज में उसने एक सेना भेजी, और जाकर ब्रिटानिया और कर्नानिया के रहने वालों, यावान के बेटे एलीशा के बच्चों से लड़ा, और उन पर जीत हासिल करके उन्हें गुलाम बना लिया।
30 फिर उसने सुना कि एदोम ने चित्तिम के हाथ से बगावत कर दी है, और लेटीनस उनके पास गया और उन्हें हराकर अपने काबू में कर लिया, और उन्हें चित्तिम के बच्चों के हाथ में कर दिया, और एदोम हमेशा के लिए चित्तिम के बच्चों के साथ एक ही राज्य बन गया।
31 और कई सालों तक एदोम में कोई राजा नहीं था, और उनका राज चित्तिम के बच्चों और उनके राजा के हाथ में था।
32 और जब इस्राएल के बच्चे यरदन नदी पार कर चुके थे, उसके छब्बीसवें साल में, यानी इस्राएल के बच्चे मिस्र से निकले हुए छियासठवें साल में, यहोशू बूढ़ा हो गया था, उसकी उम्र बहुत ज़्यादा थी, उन दिनों वह एक सौ आठ साल का था।
33 जब यहोवा ने सब इस्राएलियों को उनके आस-पास के सब दुश्मनों से आराम दे दिया, तो यहोशू ने सारे इस्राएलियों को, उनके बुज़ुर्गों, जजों और अफ़सरों को बुलाया। यहोशू ने इस्राएल के बुज़ुर्गों और उनके जजों से कहा, "देखो, मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मेरी उम्र बहुत हो गई है, और तुमने देखा है कि यहोवा ने उन सब जातियों के साथ क्या किया है जिन्हें उसने तुम्हारे सामने से भगा दिया है, क्योंकि यहोवा ही तुम्हारे लिए लड़ा है।"
34 इसलिए अब तुम मूसा के कानून की सारी बातों को मानने और उन पर चलने के लिए खुद को मज़बूत करो, न तो उससे दाएं मुड़ो और न बाएं, और न ही उन जातियों के बीच जाओ जो देश में बची हुई हैं; और न ही उनके देवताओं का नाम लो, बल्कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा से लिपटे रहो, जैसा कि तुम आज तक करते आए हो।
35 और यहोशू ने इस्राएल के बच्चों को बहुत हिम्मत दी कि वे जीवन भर यहोवा की सेवा करें।
36 और सब इस्राएलियों ने कहा, हम और हमारे बच्चे, और हमारे पोतों के बच्चे, और हमारी संतान हमेशा के लिए अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे।
37 और उस दिन यहोशू ने लोगों के साथ एक वादा किया, और उसने इस्राएल के बच्चों को विदा किया, और वे सब अपनी-अपनी विरासत और अपने शहर को चले गए।
38 और उन दिनों में, जब इस्राएल के बच्चे अपने शहरों में सुरक्षित रहते थे, तो उन्होंने अपने पुरखों के कबीलों के ताबूतों को दफ़नाया, जिन्हें वे मिस्र से लाए थे, हर आदमी को उसके बच्चों की विरासत में, इस्राएल के बच्चों ने याकूब के बारह बेटों को दफ़नाया, हर आदमी को उसके बच्चों की विरासत में।
39 और ये उन शहरों के नाम हैं जिनमें याकूब के बारह बेटों को दफ़नाया गया, जिन्हें इस्राएल के बच्चे मिस्र से लाए थे।
40 और उन्होंने रूबेन और गाद को यरदन के इस पार रोमिया में दफ़नाया, जो मूसा ने उनके बच्चों को दिया था।
41 और शिमोन और लेवी को उन्होंने मौदा शहर में दफ़नाया, जो उसने शिमोन के बच्चों को दिया था, और शहर का बाहरी इलाका लेवी के बच्चों के लिए था।
42 और यहूदा को उन्होंने बेतलेहेम के सामने बिन्यामीन शहर में दफ़नाया।
43 और इस्साकार और जबूलून की हड्डियों को उन्होंने सीदोन में दफ़नाया, जो उनके बच्चों को मिला।
44 और दान को उसके बच्चों के शहर एशताएल में दफ़नाया गया, और नफ़्ताली और आशेर को कादेश-नफ़्ताली में दफ़नाया

गया, हर आदमी को उसकी जगह पर जो उसने अपने बच्चों को दी थी।
45 और यूसुफ की हड्डियाँ उन्होंने शेकेम में ज़मीन के उस हिस्से में दफ़ना दीं, जिसे याकूब ने हमोर से खरीदा था, और जो यूसुफ को विरासत में मिला था।
46 और उन्होंने बिन्यामीन को यरूशलेम में यबूसी के सामने दफ़नाया, जो बिन्यामीन के बच्चों को दिया गया था; इस्राएल के बच्चों ने अपने-अपने पिता को उनके बच्चों के शहर में दफ़नाया।
47 और दो साल के आखिर में, नून का बेटा यहोशू, जो एक सौ दस साल का था, मर गया। और यहोशू ने इस्राएल पर अट्ठाईस साल तक राज किया, और इस्राएल ने अपनी पूरी ज़िंदगी यहोवा की सेवा की।
48 और यहोशू के दूसरे काम और उसकी लड़ाइयाँ और उसकी डाँटें जिनसे उसने इस्राएल को डाँटा, और जो कुछ उसने उन्हें हुक्म दिया था, और उन शहरों के नाम जो इस्राएलियों ने उसके दिनों में अपने कब्ज़े में लिए थे, देखो, वे सब यहोशू की इस्राएलियों से कही बातों की किताब में और यहोवा की लड़ाइयों की किताब में लिखे हैं, जिसे मूसा और यहोशू और इस्राएलियों ने लिखा था।
49 और इस्राएलियों ने यहोशू को उसकी विरासत की सीमा में, तिमनाथ-सेराक में दफ़नाया, जो उसे एप्रैम पहाड़ पर दिया गया था।
50 उन दिनों में हारून का बेटा एलाज़र मर गया, और उसे एप्रैम पहाड़ पर उसके बेटे फिनीआस की पहाड़ी पर दफ़नाया गया।

अध्याय 91

1 उस समय, यहोशू की मौत के बाद भी, कनानी लोग उस देश में थे, और इस्राएलियों ने उन्हें बाहर निकालने का फैसला किया।
2 और इस्राएलियों ने यहोवा से पूछा, "हमारी तरफ से सबसे पहले कनानियों के पास उनसे लड़ने कौन जाएगा?" यहोवा ने कहा, "यहूदा जाएगा।"
3 और यहूदा के बच्चों ने शिमोन से कहा, "हमारे साथ हमारे हिस्से में चलो, और हम कनानियों से लड़ेंगे और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे हिस्से में चलेंगे।" इसलिए शिमोन के बच्चे यहूदा के बच्चों के साथ चले गए।
4 और यहूदा के लोग ऊपर गए और कनानियों से लड़े, इसलिए यहोवा ने कनानियों को यहूदा के लोगों के हाथ में कर दिया, और उन्होंने बेजेक में दस हज़ार लोगों को मार डाला।
5 और वे बेजेक में अदोनीबेजेक से लड़े, और वह उनके सामने से भाग गया, और उन्होंने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया, और उसे पकड़कर उसके अंगूठे और पैर के अंगूठे काट दिए।
6 और अदोनिबेजेक ने कहा, "तेस सौ राजाओं ने अपने अंगूठे और पैर के अंगूठे काटकर मेरी मेज़ के नीचे अपना खाना इकट्ठा किया, जैसा मैंने किया है, वैसा ही परमेश्वर ने मुझे बदला दिया है, और वे उसे यरूशलेम ले आए और वह वहीं मर गया।"
7 और शिमोन के लोग यहूदा के लोगों के साथ गए, और उन्होंने कनानियों को तलवार से मार डाला।
8 और यहोवा यहूदा के बच्चों के साथ था, और उन्होंने पहाड़ पर कब्ज़ा कर लिया, और यूसुफ के बच्चे बेतेल तक गए, जो लूज़ भी कहलाता है, और यहोवा उनके साथ था।
9 और यूसुफ के बच्चों ने बेतेल की जासूसी की, और पहरेदारों ने एक आदमी को शहर से बाहर जाते देखा, और उन्होंने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, "हमें शहर का रास्ता दिखाओ और हम तुम पर मेहरबानी करेंगे।"
10 और उस आदमी ने उन्हें शहर का रास्ता दिखाया, और यूसुफ के बच्चों ने आकर शहर को तलवार से मार डाला।
11 और उस आदमी को उसके परिवार के साथ भेज दिया गया, और वह हित्तियों के पास गया और उसने एक शहर बनाया, और उसका नाम लूज़ रखा, इसलिए सभी इस्राएली अपने शहरों में रहने लगे, और इस्राएल के बच्चे अपने शहरों में रहने लगे, और इस्राएल के बच्चे यहोशू के सारे दिनों में, और उन बुज़ुर्गों के सारे दिनों में, जिन्होंने यहोशू के बाद अपने दिन बढ़ा लिए थे, और यहोवा के उन बड़े कामों को देखा था, जो उसने इस्राएल के लिए किए थे, यहोवा की सेवा करते रहे।
12 और यहोशू की मौत के बाद बुज़ुर्गों ने सत्रह साल तक इस्राएल का न्याय किया।
13 और इस्राएल के सभी बुज़ुर्गों ने भी कनानियों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी और यहोवा ने कनानियों को इस्राएलियों के सामने से भगा दिया, ताकि इस्राएलियों को उनकी ज़मीन पर बसाया जा सके।
14 और उसने वे सारी बातें पूरी कीं जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से कही थीं, और वह कसम भी पूरी की जो उसने उन्हें और उनके बच्चों को कनानियों की ज़मीन देने की कसम खाई थी।
15 और यहोवा ने इस्राएलियों को कनान की पूरी ज़मीन दे दी, जैसा उसने उनके पुरखों से कसम खाई थी, और यहोवा ने उन्हें उनके आस-पास के लोगों से आराम दिया, और इस्राएली अपने शहरों में सुरक्षित रहने लगे।
16 प्रभु सदा धन्य है, आमीन, और आमीन।
17 खुद को मज़बूत करो, और तुम सब जो प्रभु पर भरोसा रखते हो, उनके दिलों में हिम्मत हो। अंत।